

000 00 \$0) मणिमाला अर्थात रतने विज्ञानका ग्रन्थ। श्री शौरोन्द्रमोहन ठाकुर मिउजिक डातार, नाइट कमार्खार अब दि अहार अब तिओपोल्ड अब बेलजियम, नाइट कमार्ग्डार अव दि माप्ट क्वास अव दि अर्डार अव आलवार्ट अव साकसनि, सिभे लियर अव्दि इस्मिरियेल अर्डार अव्से ड्जिडि अव्टार्कि, श्याम देशका नाइट अव दि अर्डार अव वसवसाला, नेपालका नाइट अव दि गुरखा अर्डार अव सरखती, सङ्गीत नायक, सङ्गीत सागर, वङ्ग-सङ्गीत-विद्यालयका प्रतिष्ठापक और सभापति. कलकत्ताका इडनिभार सिटिका फेलो, अनरेरि माजिष्टेट, जांष्टर अब टि पिस, घेट बिटन और आयरलगडने रएल आसियाटिक सोसाइटिका से स्वर. साहित्यने रएल सोसाइटिका फेलो, सुद्रडेनका राजधानी प्रकृत्त्वसका सङ्गीत विद्याके एकाडामिका अनरोरि में स्वर, फानसका राजघानी पारिसके आफिसार डिला इनछ कसनु पवलिक और एकाडामिका काफिसार, वेत्तजियमका णित्य साहित्य और विज्ञानके रएत एक।डाभिका एसोसिएट से ब्वर. जामष्टार डामका सङ्गीत विद्याका सोसाइटिका करे सुपरिएडं मे ब्बर, निदारल एडस्य हेग नगरका रएल फाइललजिकेल एथनायाफिकेल भारतवधीय इनिष्टिटिउसनका फरेन मेक्बर, जिनिभा नगरका विश्व-विद्यालयका करे स्परिष्ड' से स्वर, रोम राज्यस्य सेएटसिसिलियाका रएल एकाडा मिका सोसिओ अनरेरिओ. इटाली राज्यस्य सोसाइटा डिडासकालिकाका सोसिओ अनरेरियो. फ्रोरेन्त नगरका रएल सिउजिकेल इनिष्टिटिउट एकाडामि एकाडामिकोका करे सपराडे रिट और अरियेण्टल एकाडामिका अर्डिनारि से स्वर, इटालीका उर्तिनोका राफेलोका रएल एकाडा मिका सोसिओ कर सपर्रेडीएट. पार साका रएल विश्व-विद्यालयका वेनिसे रिटो. नेपलस राज्यका पिटागोरिकाका एकाडासिका सोसिओ कोयापरिटर. वोजोगनाका फिलचार मणिक एकाडामिका सोसिओ अनरेरिओ, योसका एघेन्स नगरका आरचिओलजिकेल सोसाइटिका सेस्वर, सिसिलि होपस्य पालारभोका रएल एकाडामिका सोसिओ अनरेरिओ. सार डिनिया दीपस्य सेसेरिका विश्व-विद्यालयका पेट्रन, अष्टेलियास्य मेलवोरनुका फिल हार्मणिक सोसाइटिका अनरोरि में ब्बर इत्यादि उपा धिक कर्त्तुक प्रणीत और प्रकाशित। कलकत्ता में ग्रन्थकार से प्रकाशित। 6AB



MA<u>N</u>I-MÁLÁ, A TREATISE ON GEMS.

D

SOURINDRO MOHUN TAGORE, MUS. Doc.,

KNIGHT COMMANDER OF THE ORDER OF LEOPOLD OF BELGIUM ; KNIGHT COMMANDER OF THE 1ST CLASS OF THE ORDER OF ALBERT OF SAXONY ; CHEVALIER OF THE IMPERIAL ORDER OF MEDJIDLE OF TURKEY ; KNIGHT OF THE SIAMESE ORDER OF BUSABÁ-MÁLÁ ; KNIGHT OF THE GURKHÁ ORDER OF SARASWATI, SANGITA NÁYAKA AND SANGITA SÁGARA OF NEFAUL ;

FOUNDER AND PRESIDENT OF THE BENGAL MUSIC SCHOOL ; HONORARY MAGISTRATE, JUSTICE OF THE PEACE AND FELLOW OF THE UNIVERSITY OF CALCUTTA ; MEMBER OF THE ROYAL ASIATIC SOCIETY, AND FELLOW OF THE ROYAL SOCIETY OF LITERATURE, GREAT BRITAIN AND IRELAND ;

HONORARY MEMBER OF THE ROYAL SWEDISH MUSICAL ACADEMY, STOCKHOLM; OFFICIER DE L'INSTRUCTION PUBLIQUE AND OFFICIER D'ACADEMIE, PARIS; ASSOCIATE MEMBER OF THE ROYAL ACADEMY OF SCIENCES, LETTERS AND FINE ARTS OF BELGIUM;

CORRESPONDING MEMBER OF THE MUSICAL SOCIETY OF AMSTERDAM; FOREIGN MEMBER OF THE ROYAL PHILOLOGICAL AND ETHNOGRAPHICAL INSTITUTION OF NETHERLANDS INDIA AT THE HAGUE; CORRESPONDING MEMBER OF THE UNIVERSITY OF GENEVA; SOCIO ONORARIO OF THE ROYAL ACADEMY OF ST. CECILIA, ROME;

SOCIO ONORARIO SOCIETA DIDASCALICA ITALIANA ; ACCADEMICO CORRISPONDENTE OF THE ACADEMY OF THE ROYAL MUSICAL INSTITUTE AND ORDINARY MEMBER OF THE ORIENTAL ACADEMY OF FLORENCE ;

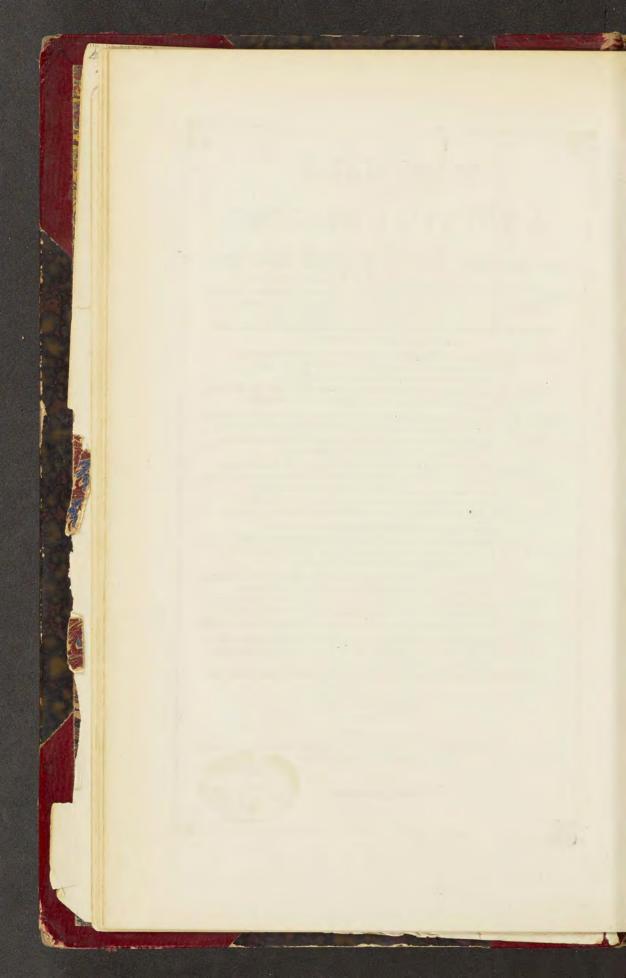
SOCIO CORRISPONDENTE OF THE ROYAL ACADEMY OF RAFFAELLO, URBINO, ITALY; BENEMERITO OF THE ROYAL UNIVERSITY OF PARMA; SOCIO CO-OPERATORE OF THE ACADEMY OF PITTAGORICA, NAPLES; SOCIO ONORARIO OF THE PHILHARMONIC ACADEMY OF BOLOGNA; HONORARY MEMBER OF THE ARCHÆOLOGICAL SOCIETY OF ATHENS, GREECE;

SOCIO ONORARIO OF THE ROYAL ACADEMY OF PALERMO, SICILY ; PATRON OF THE ATHENEUM OF THE ROYAL UNIVERSITY OF SASSARI, SARDINIA ; AND HONORARY MEMBER OF THE PHILHARMONIC SOCIETY OF MELBOURNE, AUSTRALIA ; &C., &C.,

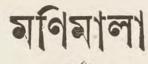


CALCUTTA: PRINTED BY I. C. BOSE & CO., STANHOPE PRESS, 249, BOW-BAZAR STREET, AND PUBLISHED BY THE AUTHOR.

> 1879. [All rights reserved.]



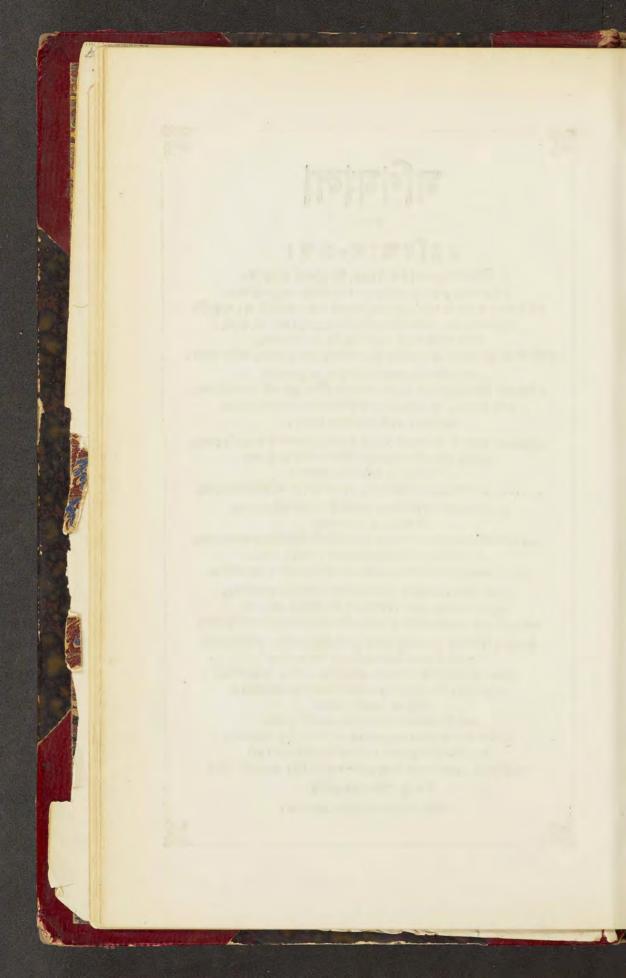




সথাৎ

तञ्ति आ न- ध र।

জীশৌরীন্দ্রমোহন ঠাকুর, মিউজিকৃ ডাক্তার, নাইট কমাণ্ডার অব দি অর্ডার অব লিওপোল্ড অব বেল্জিয়ম, নাইটু কমাণ্ডার অবু দি ফাষ্ট' ক্লাস অবু দি অর্ডার অব আলবার্ট অবু সাকুসনি, সিভেলিয়র অব দি ইম্পিরিয়েল অর্ডার অব মেডজিডি অব টার্কি, শ্যামদেশের নাইট অব দি অর্ডার অব্ বসবমালা, নেপালের নাইট অবু দি গুখা অর্ডার অবু সরস্বতী, সঙ্গীত নারক, সঙ্গীত সাগর ; বঙ্গ-সঙ্গীত বিদ্যালয়ের প্রতিষ্ঠাতা ও সভাপতি, কলিকাতার ইউনিভারসিটির ফেলো, অনরেরি মাজিষ্ট্রেট, জ্বন্টিস, অবু দি পিস, গ্রেটন ও আয়রলণ্ডের রএল আসিয়াটিকু সোসাইটির মেম্বর, সাহিত্যের রএল সোসাইটির ফেলো; স্কইডেনের রাজধানী ষ্টকুহলমের সঙ্গীত বিদ্যার একাডেমির অনরেরি মেম্বর, ফান্সের রাজধানী পারিসের আফিসার ডিলা ইনষ্ট্রকসন্ পবলিক ও একাডামির আফিসার, বেলজিয়মের শিপ্প সাহিত্য বিজ্ঞানের রএল একাডেমির এসোসিয়েট মেম্বর, আমষ্টারডামের সঙ্গীত বিদ্যার সোসাইটির করেম্পণ্ডিং মেম্বর, নিদারলণ্ডস্থ হেগ নগরের রএল ফাইললজিকেল এথ্নাথ্রাফিকেল ভারতবর্ষীয় ইনষ্টিটিউসনের ফরেন মেম্বর, জিনিভানগরের বিশ্ববিদ্যালয়ের করেম্প্রণিওং মেম্বর, রোম রাজ্যস্থ সেণ্ট সিসিলিয়ার রএল একাডেমির সোসিও অনরেরিও, ইটালী রাজ্যস্থ সোসাইটা ডিডাস্থকালিকার সোসিও অনরেরিও, ফ্রোরেন্স নগরের রএল মিউজিকেল ইনিষ্টিটিউট একাডেমি একাডেমিকোর করেম্পণ্ডেণ্টি, ও ওরিয়েণ্টাল একাডেমির অর্ডিনরি মেম্বর, ইটালীস্থ উর্বিনোর রাকেলোর রয়েল একাডেমির সোসিও করিম্পণ্ডেণ্টি, পারমার রয়েল বিশ্ববিদ্যালয়ের বেনিমেরিটো, নেপলস রাজ্যের পিটাগোরিকার একাডেমির সোসিও কোয়াপরিটর, বোলোগ্নার ফিল্হার্মণিক একাডেমির সোসিও অনরেরিও, ত্রীসের এথেন্স নগরের আরচিওলজিকেল সোসাইটির অনরেরি মেম্বর, সিসিলি দ্বীপস্থ পালার্মার রয়েল একাডেমির সোসিও অনরেরিও, সার্ডিনীয়া দ্বীপস্থ সেসেরির বিশ্ব-বিদ্যালয়ের পেটরন্, অষ্ট্রেলিয়াস্থ মেল্বোরণের ফিল্ছার্মণিক সোসাইটির অনরেরি মেম্বর, ইত্যান্থ্যপাধিককর্ত্তক প্রণীত। কলিকাতায় গ্রন্থকার কর্তৃক প্রকাশিত।



भूमिका ।

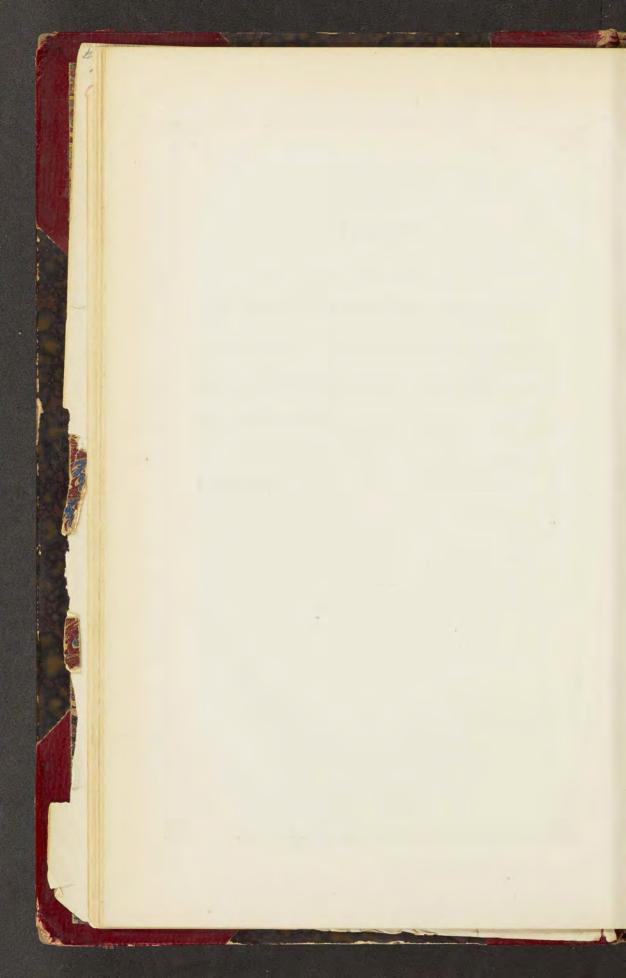
66

आर्याणां पुराणादिशास्त्राकरेभ्यो रत्नान्याह्तत्येवं "मणिमात्ता" हिन्दीं-राजी-संस्कृत-वङ्गीयभाषाचतुष्ठयसूत्रैर्यधिता । प्रतिरत्नविवरणान्ते रचनाया दृढ़तासम्पादनार्थं ग्रन्थिखरूपमिउरोपीयरत्नतत्त्वविदां मतं सन्निवेश्रितं। ग्रन्थश्वे मात्तार्याधतरत्नविषयकवर्ष्यनपरिश्रोभितमध्यमणि-रूपपरिश्रिष्ठकं योजितम्।

ग्रन्थकार:।

Se .

e la



भूमिका।

Se.

चार्थन-जातिका पुराण, चौर चन्य चन्य शास्त्रस्वरूप चाकरसे रत सव सङ्गु इ करके यह "मण्णिमाला" चांरेजी, हिन्दो, वाङ्गाला चौर संख्नुत यह चारो भाषा खरूप चारो सूत्र करके वनाया। प्रत्येक रतके वर्णनाके शेषभागमे रचनाका टएता करनेकेवासे इउरोपका रततत्त्वच पण्डित लोगके मत ग्रन्थि खरूप कल्पित भये। यह मालामे नाना रत्नके विषयका वर्णन करके परिश्लोभित मध्यमण्विके खरूप एक परिश्लिष्ठ स'युक्त भया।

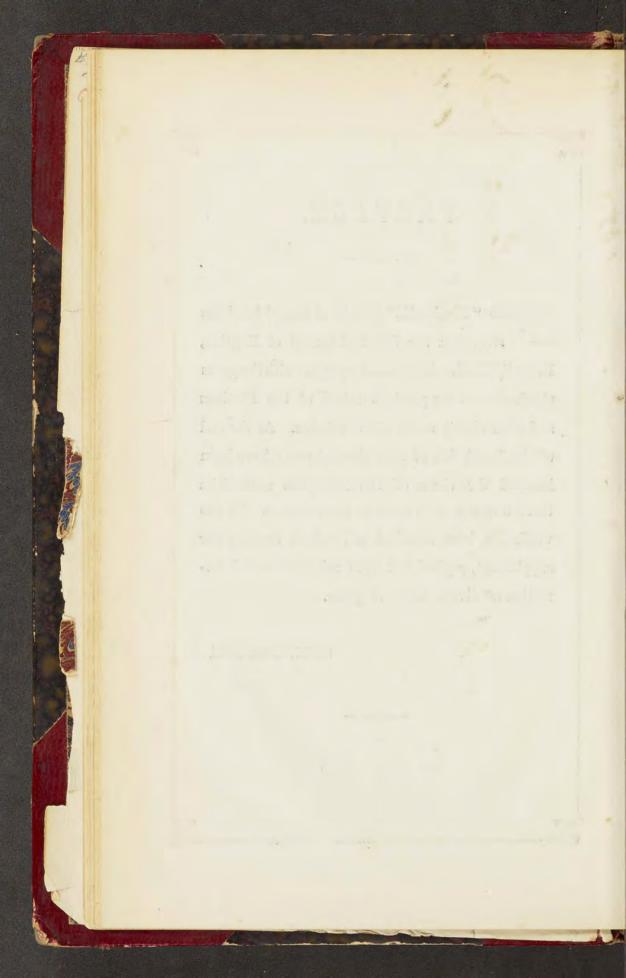
ग्रन्धकार।



PREFACE.

HIS "Mani-málá" (Chain of Gems) has been strung on the four-fold thread of English, Bengali, Hindi and Sanskrit languages, with the gems obtained from the precious mines of the Puránas and other classic works of the Hindus. At the end of the description of each class of gems_have been inserted the views of the European authorities thereon as a knot in order to compactness. To the whole has been attached a Pendant forming the supplement, replenished with miscellaneous information on diverse kinds of gems.

S. M. TAGORE.



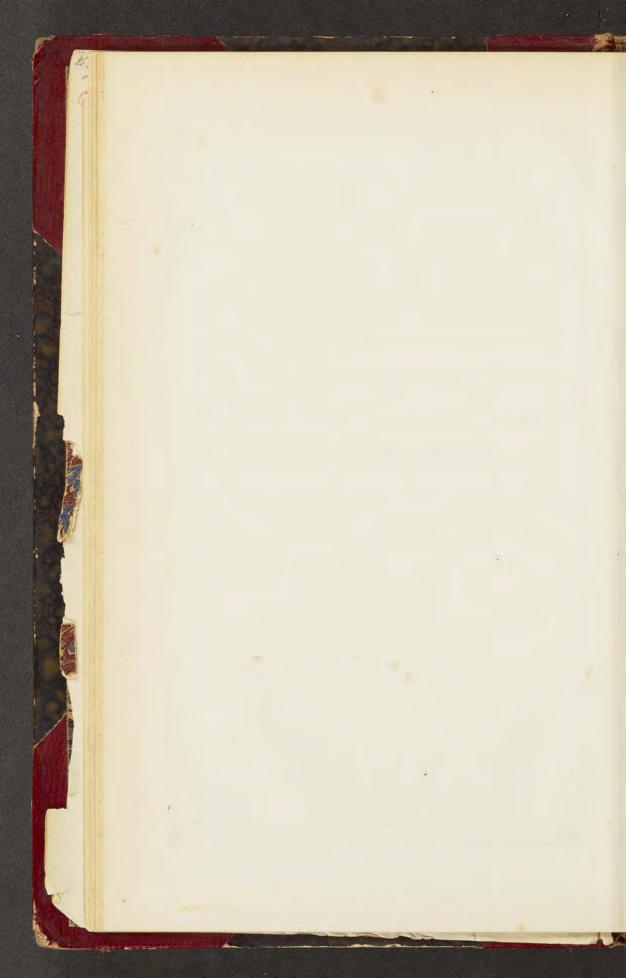
ভূমিকা।

E.

e e

আর্য্যজাতির পুরাণ ও অন্যান্য পুরাতন গ্রন্থসমূহরপ আকর হইতে রত্ন সমুদায় আহরণপূর্ব্যক এই "মণিমালা" ইংরাজী, বাঙ্গালা, হিন্দী ও সংস্কৃত এই চারি ভাষারূপ চারি গাছি হুত্রদ্বারা গ্রথিত হইয়াছে। প্রত্যেক রত্নের বর্ণনার শেষভাগে রচনার দৃঢ়তা সম্পাদনের নিমিত্ত ইউরোপীয় রত্নতত্ত্ববিদ্দিগের মত গ্রন্থিরূপে কল্লিত হইয়াছে। এই মালাতে নানা রত্নবিষয়িণী বর্ণনা দ্বারা পরিশোভিত মধ্যমণিস্বরূপ একটী পরিশিষ্ট সংযুক্ত হইয়াছে।

গুন্থকার ৷



THE HON'BLE SIR ASHLEY EDEN, K.C.S.I., Wientenant-Governor of Bengal,

Ê

T.

THIS

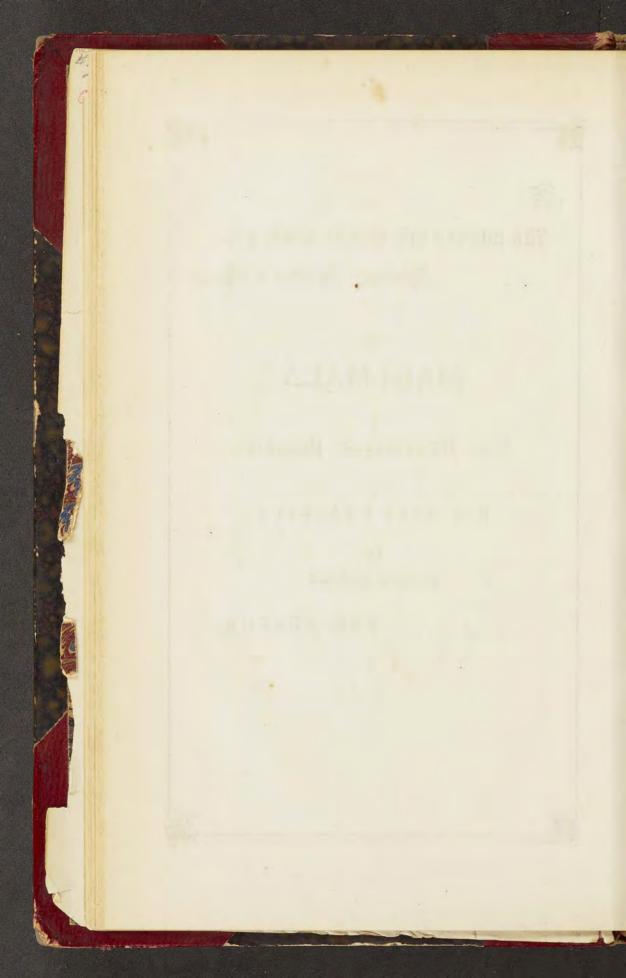
MANI-MÁLÁ

MOST RESPECTFULLY DEDICATED

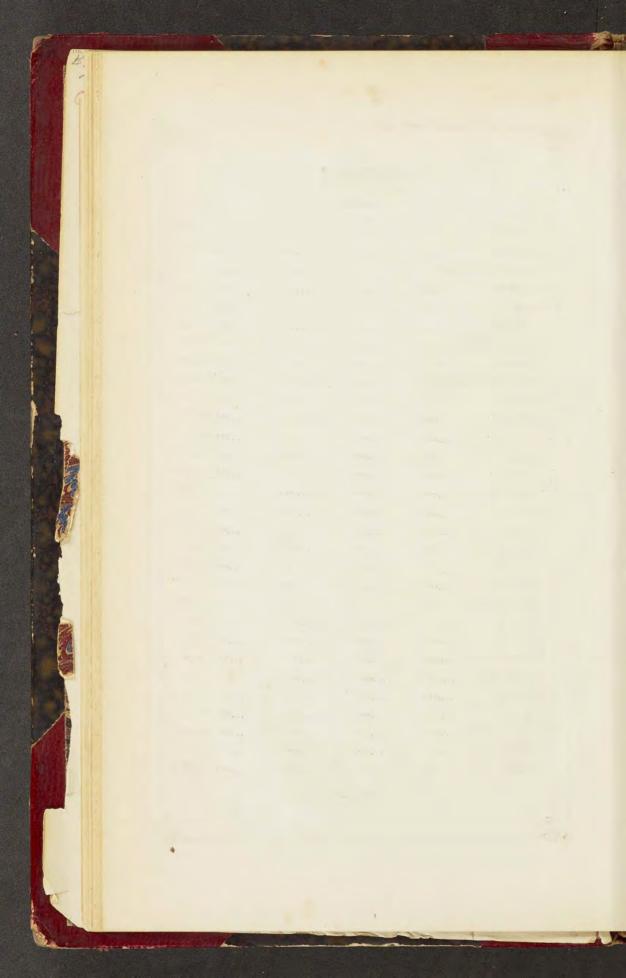
BY HIS MOST GRATEFUL

> AND OBLIGED SERVANT

> > THE AUTHOR.



					2
		सूचीपवर	E I		
		d'alada	2.		
विषयः ।					মন্ত্র
रतजातिः					8
स्यमन्तकोपाखा	नम				V
नवरतानि					50
वज्म्					03
वजरोधाः		***			888
वज्मारणविधिः		***			१३६
माणिकाम्					くちゃ
माणिकास्य काय	ादयः				२०२
वैदूर्य्यम्		***			२५२
वेदूय्यगणाः		•••			२५६
वेदूर्य्यदीषाः		***			२५८
मुक्ता					२७२
मुत्तागुर्याः		•••	•••		\$80
मुत्तादीषाः				***	इरद
ग्रोमेदः					३५८
विद्रमम्					इर्द
मरकतम्		***		***	इत्ह
मरकतदीषाः		***	***		535
मरकतगरणाः				***	835
मरकतच्छाया	•••	***	***	•••	354
पुष्परागः	***	•••	•••	•••	820
रन्द्रनीतः	•••	•••			858
इन्द्रनीचगुर्याः	***	•••	***		880
रन्द्रनीचरोघाः कर्केतनम्		•••	•••		885
		***	•••	•••	840
पुलकम्		•••			8年二
वधिराखम्	•••		•••		820
फाटिकम्	•••	•••		•••	855
भौषाम्		•••	•••	***	85 €
					78



सूचीपत ।

Je Contraction

E.

विषय ।				মূহ
रतना जात	• •••		•••	1
स्युमन्तन मण्डिना वय	লে	•••		*
नौरलका वयान				10:
च्चीरेके वयान		•••		E
चीरेका अयेव				28
हीरेका मारनेका उप	ाय			231
माणिकका वयान				200
माणिकका काया वगे	33			200
चम्यनियेका वयान				२५:
चयुनियेका ग्रा				२५
चयुनियेका खयेव				247
मोतिका वयान				200
मोतिका गुग्रा				35
मोतिका अयेव				385
गोमेदका वयान				इप्
मंग्रेका वयान				इदंह
पानना वयान				300
पान्नेका अयेव				35
पान्नेका गुगा				35
पानेका काया				35
युखराजका वयान				820
नीलम्का वयान				838
नीचाना ग्या				880
नीलाका अयेव				883
ककेतकका वयान				850
युचनका वयान				850
रुधिराख्यका वयान				800
स्फटिकका वयान				800
भोषाका वयान				824



CONTENTS.

E

e a

				j	Page
Invocation					3
History of Syamantaka					9
General Remarks on G	ems		***		73
DIAM	OND, pa	ge 91—18	5.		
Defects of Diamond					115
Process of Refining a I					137
Diamond : Its Properti	es			•••	142
Diamonds-where foun					144
Colored Diamond					151
Mode of Cutting-Indi	an and				153
Engraving on Diamond		Laropean			157
Price of Diamond, it			ote · mo	de of	701
Testing	D T. TO WD	and Dere	:cts; mo		159
Supernatural and Med	liginal	Duomontion	attaibut	tod to	109
the Diamond	aicinal .	rioperties	attribui		163
Celebrated Diamonds,	Kahi no	***		***	
Great Mogul		01			165
		***	***		168
Pitt or Regent Diamon		***		814	170
Orloff or Amsterdam I Nassuck Diamond	Jiamond	***		***	171
	***	***	***		173
Nizam Shah of Persia	***		***		23
	***	***		***	. 39
Pacha of Egypt			***		174
Mattam Diamond		***	4.0.1		29
Sancy Diamond			***		175
Charles the Bold's Dian	mond				176
Florentine Brilliant					177
Braganza		***			178
Pigott Diamond					179
Hope Diamond			***		22
Eugénie Brilliant					39
Cumberland Diamond					180
Star of the South		***			22
Polar Star					33
Other large Diamonds					181
% Le					×.

ii	CONTENTS.			
				Page
R	UBY, page 187-	-250.		0
Shades and other Qua	lities of Rubies			203
Ruby : Its Properties				230
Rubies-where found				233
Mode of Cutting				236
Ruby, as known to th	e Ancients			237
Engraving on Rubies				238
Engraving on Rubies Price of the Ruby,	its Flaws and I	Defects; mo	de of	
Marvellous and Med				240
	icinal Powers at	ttributed to	o the	
Ruby			***	243
Celebrated Rubies	*** ***			245
OAT'S	-EYE; page 253-	-270.		
Qualities of the Cat's	-eve			257
Defects of the Cat's-e				259
Defects of the Cat's-e Cat's-eye : Its Proper	ties			266
Cat's-eyes-where fou	ind			267
Mode of Cutting				23
Its price, Flaws and I		f Testing		>>
Its Marvellous Powers		***		269
Celebrated Cat's-eyes				33
PEA	RL, page 273-	352.		
Properties of Pearls				311
Defects of Pearls				317
Pearl : Its Properties				326
Original Formation o	f Pearls			327
Pearls-where found :		s		331
Mode of Boring and	Polishing			339
Pearls, as known to th	ne Ancients			340
Price of Pearls : Imit		· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	***	344
Marvellous and Medic	inal Virtues of t	the Pearl		348
Celebrated Pearls		•••	***	349
··· Gomeda or	ZIRCON, &c., pa	ge 355-36	5.	
Zircon, Hyacinth or Ja	cinth : Its Prop	perties		360
Zircon, &c.,-where for	und			361
Mode of Cutting and	Polishing			362
ircon, Jacinth or Hya	cinth, as known	to the Anci	ents:	
Engravings				363
Price of the Zircon;	its Flaws and D	Defects; mo	de of	
Testing	and the star			"
Marvellous Properties	attributed to th	e Zircon		365

CONTENT	s.		iii &
1		-	Page
CORAL, page	367-385.		U
Coral : Its Properties			378
Corals-where found : Coral Fis	heries		379
Cutting and Boring of Coral			381
Engraving on Corals			
Coral, as known to the Ancients			382
Price of Coral : Its Imitations			000
Marvellous and Medicinal Powe	rs attributed to Co.		
EMERALD, pag	e 307-110.		000
Defects of the Emerald			393
Good Properties of the Emerald		***	395
Shades of the Emerald			397
Emerald : Its Properties			402
Emeralds-where found		111	404
Emerald, as known to the Ancie	ents		407
Engravings on Emerald	***		411
Cutting of Emerald			412
Price of the Emerald; its Flaw	s and Defects : Im	ita-	
tions	***	***	
Marvellous and Medicinal Prope	rties	***	415
Celebrated Emeralds	***	***	417
TOPAZ, page	421-433.		
Topaz : Its Properties			426
Topazes-where found : Varietie	es of the Topaz		427
Topaz, as known to the Ancients			428
Cutting and Engraving			
Its price : Imitations			430
Marvellous and Medicinal Prop	erties attributed to	the	
Topaz			101
Celebrated Topazes			432
SAPPHIRE, pag			
	C 100-100.		
Qualities of the Sapphire	***		441
Defects of the Sapphire			443
Sapphire: Its Properties			450
Sapphires-where found	***		451
Sapphire, as known to the Ancie	ents		"
Engraving and Cutting			452
Its price, Flaws and Defects : In	mitations		453
Marvellous and Medicinal Prope	erties attributed to	the	140
Sapphire			
Celebrated Sapphires	***	• •	458
12 ¹			05
			2

iv CONTENTS.			1
Currynan ar All	400		Page
CHRYSOBERYL, page 461	1→400.		
Chrysoberyl : Its Properties	***		464
Chrysoberyls-where found	***		465
Mode of Cutting	***		"
Chrysoberyl, as known to the Ancient Its price		***	,19
aus price	***	•••	466
GARNET, page 469-	-479		
Garnet : Its Properties	0.00		472
Its varieties—where found			39
Cutting and Engraving		***	474
Garnet, as known to the Ancients		***	476
Its price : Imitations Marvellous and Medicinal Properties	***	•••	477
Celebrated Garnets		***	479
ectostated dariets		***	35
CARNELIAN, page 481-	-487.		
Carnelian : Its Properties			482
Carnelians-where found			,,
Cutting and Engraving			483
Carnelian, as known to the Ancients	***		484
Its price Marvellous and Medicinal Virtues at			485
Carnelian			100
Carifonate	***		486
QUARTZ, page 489-	495.		
Quartz: Its varieties			494
Der G			
ROCK-CRYSTAL, page 4			
Rock-Crystal: Its Properties: Where	found:	Cutting	
and Engraving	+	***	502
Rock-Crystal, as known to the Ancien Its price : Imitations	us: Its U		503
Marvellous and Medicinal Properties	***		504 505
Celebrated Rock-Crystals	***		
			23
Brown High Broking research			

जाही	পত্ৰ	1	
201	19	6	

E.

-	a
00	
0	A
1	et l
25	
	3

পৃষ্ঠা বিষয় ৷ রত্নজাতি ¢ শ্ৰমন্তকোপাথ্যান 2 90 নবরত্ব 22 বজ্র বা হীরক 336 বজের দোষ 509 বজ্রমারণবিধি মাণিক 369 মাণিকের ছায়াদি 200 বৈদ্য্য 200 देवमूर्यात खन ... 209 বৈদুর্য্যের দোষ 200 মুক্তা 290 মুক্তার গুণ 055 মুক্তার দোষ ... 059 220 গোমেদ বিদ্রুম 039 মরকত 029 মরকতের দোষ 020 মরকতের গুণ ... 260 মরকতচ্ছায়া ... 029 পুষ্পরাগ 825 रेखनील 308 ইন্দ্রনীলের গুণ 885 ইন্দ্রনীলের দোষ 880 কর্কেতন 855 ...

...

...

...

...

...

পুলক

স্ফটিক

ভীম্ম

Se.

<u>কৃধিরাখ্য</u>

...

...

...

...

...

...

...

...

...

...

...

...

...

...

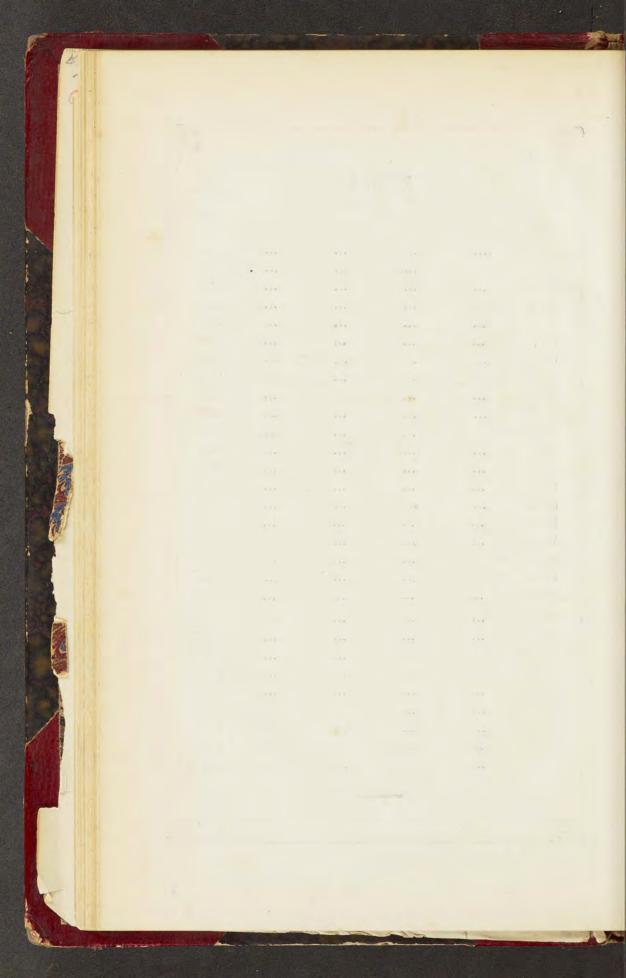
833

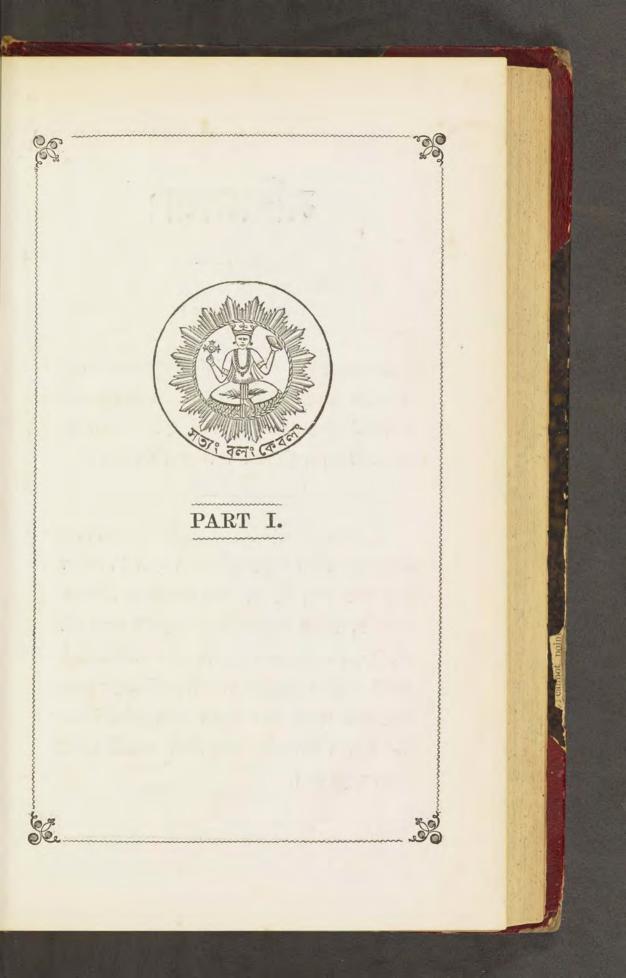
853

853

829

Se.





मणिमाला।

मङ्गलाचर राम्।

चज्ञानश्वान्त इन्त्री विधिच्चरिगिरि भेः क्रूयमाना प्रभान्ता स्वेताओजे वसन्ती चिमकरखरुचिः स्वेतभूषाटता या। वीणादग्र्डं दधाना कमु दृढ्ममलं युक्तनं विभुती तां वन्दे वाणीं प्रयन्ना परिचरति यथाजानतां भं ददाति ॥

जो चच्चानरूप चांधेरेको नाथ कर्ति है, ब्रह्मा, विष्णु चौर महेश सर्वदा जांहा खुति कर्ते रहते हैं, जिस्की मूरत चति शाना है, जो सफेद कमलफुलके वनमे वास कर्ति है, जिस्के चज़्की किरण चन्द्रमाके समान शुक्त वर्ष, जिस्का सर्व्वाङ्ग सफेद गइनेंामे सुधित है, चौर जिस्के कमलके समान हाथमे कभी वीण चौर कभी उम्दा पुस्तक श्रोमा देति है, वह प्रसन्न होकर मनुष्यकी मुर्खताको नाथ चौर कल्याण करे, बही वाग्वादिनी सरस्तती देवीको वन्दना कर्ता हों।

MANI-MÁLÁ,

A Treatise on Gems.

THE INVOCATION.

AIL to the goddess who chases away the darkness of ignorance ! Her, who is ceaselessly adored by the Holy Triad, whose form is gentleness, who dwells constantly in the lotus forest, whose lustre resembles that of the moon, whose person is decked all over with milk-white ornaments, whose hand sometimes holds the hard handle of the *Viná*, at others, the neat volume, whose favor reclaims people from ignorance and brings about their good, —hail to the word-presiding goddess, Saraswati !

যিনি অজ্ঞানতারূপ অন্ধকার বিনাশ করেন, ব্রহ্মা, বিষ্ণু ও মহেশ্বর সর্ব্বদা যাঁহার স্তব করিয়া থাকেন, যাঁহার মূর্ত্তি অতি প্রশান্ত, যিনি শ্বেতকমল-কাননে নিরন্তর বাস করেন, যাঁহার অঙ্গের আভা নিশাকরসদৃশ, যাঁহার সর্ব্বাঙ্গ থ্বেত অলঙ্কারে ভূষিত, যাঁহার কর-কমলে কখন কঠিন বীণা-দণ্ড, কখন বা পরিচ্ছন্ন পুস্তক শোভা পায়, যিনি প্রসন্ন হইলে মানবগণের মূর্যতা নাশ ও কল্যাণ বিধান করেন, সেই বাগ্-বাদিনী সরস্বতীদেবীকে বন্দনা করি ॥

मगिमाला।

£ 4

मूलम्। रत्न' निधारयेत् कोषे ग्रुईं सग्रुणमञ्चयं। सद्रत्नानामतो जातिं ग्रुणं तेषां परीचयेत्॥ १॥ सुखदा मणयः ग्रुड्वा दुःखदा दोषग्रालिनः। त्रतो मणीनां वच्यामि लच्चणादीनि तत्त्वतः॥ २॥ तत्रादी रत्नजातयः।

वज्रमुकागोमेद्सपद्मरागाः समरकताः प्रोकाः । चपचिन्द्रनीलमणिवरवेदूर्याच पुष्परागाच ॥ ३ ॥ कर्केतनं सपुलकं रुधिराख्यसमन्वितं तथा स्फटिकं । विद्रममणिच यत्नादुद्दिष्टं संग्रहे तज्त्तीः ॥ ४ ॥

तर्जमा।

समस्त रतनी जात और ग्रुण पहिले परीचा कर्के जी विग्रुद्व और ग्रुणयुक्त बोध घोए, बघी सब खाजाने मे रख्नेके योग है। १।

वे खयेब रत जिस्प्रकार मनुष्यके नानाप्रकारके सुखका निदान है, उसी प्रकारसे दोषयुक्त रत नाना-प्रकारके दु:खका हेतु है; खतएव रतना ययार्थ लच-णादि लिखा जाता है। २।

रतका जात।

रत-परौचा-पण्डित कचते हैं, के हौरा, मति, गोमेदक् माणक, पान्ना, नीलम् वा लीला, लघुनिया, पोखराज, कर्केतक्, ताम्डा, नरम्, फटिक्, और सुंगा पदार्थकी रत्नमे गणति है, स्रौर यत्नपूर्व्वक सम्घय और तन्नास कर्ते है। ३। ४।

R

TRANSLATION.

1. Of the various kinds of gems, those only that, on examination, turn out to be sterling, should be treasured up.

2. As a pure jewel is a source of manifold blessing to man, so a flawy one is the cause of diverse troubles. I shall therefore expose the real properties of precious stones.

3—4. According to authorities in the science of precious stones, the following classification well nigh exhausts the more important ones : diamond, pearl, zircon, ruby, emerald, sapphire, cat's eye, topaz, cymophane, garnet, spinel or balas ruby, quartz and coral.

অহুবাদ।

প্রথমে রত্ন সমুদায়ের জাতি এবং গুণ পরীক্ষা করিয়া যে গুলিকে বিশুদ্ধ ও গুণযুক্ত বলিয়া বোধ হইবে, তৎসমুদায়-কেই ধনাগারে স্থাপন করা বিধেয় ॥ ১ ॥

বিশুদ্ধ রত্ন যেমন মানবগণের অশেষ স্থথের নিদান, দোষান্বিত রত্নও তদ্রপ নানা চুঃখের হেতু; অতএব রত্ন-সমূহের যথার্থ লক্ষণাদি বলা যাইতেছে ॥ ২ ॥

রত্ন-পরীক্ষক পণ্ডিতেরা হীরক, মুক্তা, গোমেদ, মাণিক বা চুণি, পামা, নীলম্ বা নীলমণি, লস্থনে বা বিড়ালচক্ষু, পোখ-রাজ, কর্কেতন, তাম্ড়া, নরমচুণি, স্ফটিক ও পলা প্রভৃতিকে রত্নমধ্যে পরিগণিত করেন, এবং অতি যত্নসহকারে এই সকল রত্নের অন্যুসন্ধান ও সংগ্রহ করিতে বিধি দেন ॥ ৩ ॥ ৪ ॥



मग्रिमाचा।

मूलम्। श्वाक्ततिवर्णौ प्रथमं ग्रुणदोषे तत्फलं परीचा च। मूल्यच्च रतनुप्रलैविज्ञेयं कर्वरतानां ॥ ५ ॥ कुलग्ने प्रूपजायन्ते यानि चापघतेऽघनि । दोषैसान्युपयुज्यन्ते घीयन्ते गुणसम्पदा ॥ ६ ॥ परीचा परिग्रद्वानां रतानां ष्टयिवीभुजा । धारणं संग्रघो वापि कार्य्यः त्रियमभीप्सता ॥ ७ ॥ शास्त्रज्ञा: कुण्लाचापि रत्नभाजः परीचकाः । त एव मुल्यमाचायाण्चे त्तारः परिकल्पिताः ॥ ८ ॥

तर्जमा।

रत्नपार्ची-परिएडत पहिले रत्नका कई, रङ्ग, ऊजनर, चयवेव और नफा, नोकशान परीचा कर्के वाद उस्के किमत करेङ्गे । पू ।

जो रत कुदिन और कुलग्नमे पयदा घोता छै, सोई रत गुणचीन और दोषी घोते है। ६।

जो राजा चप्ने मङ्गलको कामना कर्ते हैं, उन्को उचित है, पहिले रत्नकी परीचा कर्के उस्मे जो निईं ाघ होए, उसीको संग्रह चौर धारण करेड्ने । ७।

जो मनुष्य रत्नशास्त्रमे निपुणः सर्व्वदा रत्नका व्यवचार कर्ते हैं, किस् रत्नका केया दाम उचित है, उस्के विशेष जान्नेवाले, चौर रत्न क्षेदनमे परिपक्क हैं, वच्ची लोग रत्नपार् ची हैं। प्र1

7 20

TRANSLATION.

5. The worth of gems is ascertained by persons skilled in the knowledge of them, after examination of their figure, color, flawlessness or otherwise, and the effects deducible therefrom.

6. Stones originating on inauspicious days and at unlucky moments are not only void of any beneficial quality, but are positively harmful.

7. Those princes that are desirous of securing good fortune, should procure and wear jewels of spotless chastity.

8. Only such persons as have mastered the knowledge of gems, use them habitually, can judge their value with precision, and are skilled in the lapidary art, should be reckoned as connoisseurs of precious stones.

অহ্বাদ।

রত্নবিৎ পণ্ডিতেরা প্রথমে রত্নের আকৃতি, বর্ণ, গুণ, দোষ এবং গুণদোষের ফলাফল পরীক্ষা করিয়া পশ্চাৎ মূল্য নিরূপণ করিবেন ॥ ৫ ॥

যে সকল রত্ন কুদিনে কুলগ্নে উৎপন্ন হয়, সেই সকল রত্নই গুণহীন অথচ দোষান্বিত॥ ৬॥

যে রাজা নিজ মঙ্গল কামনা করেন, তাঁহার কর্ত্তব্য, অগ্রে রত্নের পরীক্ষা করিয়া তন্মধ্যে যে গুলিকে বিশুদ্ধ বলিয়া বোধ হইবে, সেই গুলিই সংগ্রহ বা ধারণ করেন ॥৭॥

যে সকল ব্যক্তি রত্নশান্ত্রনিপুণ, সর্ব্বদা নানারত্নের ব্যব-হার করেন, কোন্ রত্নের কিরূপ মূল্য হওয়া উচিত, ইহার বিশেষজ্ঞ, রত্ন-চ্ছেদন-পরিপক তাঁহারাই রত্ন-পরীক্ষক বলিয়া পরিগণিত হইতে পারেন ॥ ৮ ॥



मगिमाला।

रतानां गुणदोषप्रभावतो जनानाभिष्टानिष्टे भवितुमईत इति प्रकटीकर्त्तुं उप्रतेव स्थमनाकोपाख्यानग्रहतम् ।

> मूलम् । स्यमन्तकोपाखग्रानम् ।

अनमिचान्निन्नः निन्नस्य प्रसेनसचाजितौ । तस्य च सचा-जितस्य भगवानादित्यः सखा अभवत् । १।

एकदा तु आसोधे सीरसंत्रयः सूर्थं सचाजितसुष्टाव। तन्मनस्कतया च भाखान भिष्ट्रयमानोऽग्रतसाख तस्यौ। असप्ट-मूर्त्तिधरं चैनमालो क्य सचाजितः सूर्य्यमाच ययैव व्योसि लां वज्ज्ञिपिर्ण्डोपममच्चमपर्थं तयैवाद्याग्रतो गतमप्यच न किञ्चिद्वगवता प्रसादीक्वतं विश्वेषसुपलच्चयामि। १०।

रत्नोके गुण्पदोधके प्रभावसे आदमीओंके शुभ और अशुभ होने सके, यह बात प्रकाश करणेकेवास्ते यह जगहोंमे खमन्तकके बयान योग किया है।

तर्जमा।

खनमिचका लेखका निन्न, और निन्नके दो लेड्के। वड्का नाम सचाजित, और कोटेका नाम प्रसेन। अगवान् सुर्य्यदेव सचाजितके परम मिच थे। ८।

एक समये सचाजित ससुद्रके किनारे वयेठ कर सूर्यत्रकी आराधना कर्ते थे। एकदिल घोकर सूर्यत्रका स्तोच पाठ कर्ते थे, उस समये सूर्यत उनके पाश आये। सचा-जित्ने सूर्यत्रकी मूर्त्त साष्ठभावे ना देखकर कघा, "भगवन! मैं आकाश्रमे आपको जिसतरइसे आगके पिराइके समान देखता इरं, आज आप घमारे सामने मौजुद हैं, लेकेन उस परभी मैं आपको उसी तरइसे देखता इरं। आपके कपाका कोई चिच्च मैंने नहि देखा।" १०।

In order to illustrate the influence which gems exercise over the destinies of individuals, I shall narrate the history of the classic gem, Syamantaka.

TRANSLATION.

The History of Syamantaka.

9. Nighna, the son of Anámitra, had two sons, Satrájita and his younger brother Prasena. A. great intimacy is said to have subsisted between Satrájita and the divine sun.

10. Once Satrájita took up his abode in the seacoast for the purpose of spending his time in worshipping the sun. After he had prayed long and intently, the 'king of day' appeared before him. Satrájita, not perceiving the god distinctly, said,— "Lord, why, notwithstanding your personal appearance before me, do I see in you the same globe of fire that crests the welkin? I see no signs of your favor."

রত্নসমূহের গুণদোষ প্রভাবে মানবর্গণের গুভাগুভ ঘটনা হইতে পারে, তাহাই প্রকাশ করিবার জন্য এস্থলে স্যমন্তকোপাখ্যান যোজিত হইল।

অহুবাদ।

স্যমন্তকোপাখ্যান।

অনমিত্রের পুত্র নিম্ন, নিম্নের ছুই পুত্র, জ্যেষ্ঠের নাম সত্রাজিত ও কনিষ্ঠের নাম প্রসেন। তগবান্ সূর্য্যদেব সত্রা-জিতের পরম মিত্র ছিলেন। ৯।

এক সময়ে সত্রাজিত সমুদ্রকূলে অবস্থান করিয়া সূর্য্যের উপাসনা করেন। একাগ্রচিত্তে স্তুতিপাঠ করাতে দিবাকর তাঁহার সমিহিত হইলেন। সত্রাজিত দিবাকরের মূর্ত্তি স্পষ্ট-তাবে দেখিতে না পাইয়া বলিলেন, ভগবন্ ! আমি নভো-মণ্ডলে আপনাকে যে প্রকার অগ্নিপিগুসদৃশ দেখিতে পাই, আজ আপনি আমার সম্মুখে উপস্থিত হইয়াছেন, কিন্তু তথাপি আপনাকে সেইরূপই দেখিতেছি। আপনার প্রসম-তার কোন চিহ্নুই দেখিতে পাইতেছি না। ১০।

B

S.	10	
	10	

मगिमाला।

मूचम्।

द्रत्येवसुक्ते (भगवता) सूर्य्येण निजकण्टादुन्मुच्य स्वमन्तक-नामा मणिरवतायें र एकान्ते न्यस्तः । ततस्तमाताम्रोज्जूल-इस्ववपुषं ईषदापिङ्गलनयनमादित्यमद्राच्चीत् । इतप्रणि-पातस्तवादिकच्च सचाजितमाच भगवान् वरमस्त्रत्तोऽभिमतं टणीघ्वेति । स च तदेव मणिरतमयाचत । स चापि तस्त्री तत् दत्त्वा वियति खंधिष्णाप्रमाक्रोड । ११ ।

सचाजितोऽपि अभलमणिरत्सनायकण्टतया स्य इव

तेजोभिरशेषदिगन्तराण्युद्भासयन् दारकां विवेश । १२। तर्जमा।

सचाजितके इस् तरहक कहनेसे सूर्यग्रदेवने अपने गलेसे स्वमन्तकनामे मणि खोलकर रख दि। वाद उस्के सचाजितने सूर्यग्रदेवका प्रत्यच्च दर्भन किया। उनका रङ तांवेके समान थोडा लाल और उज्जूल, कोटा कद, आंख थोडी पिङ्ग्जवर्थ, खर्थात् थोडा नीला और वज्जत् पीला मिला ज्ज्या। वाद उस्के सचाजितने प्रणाम करके स्तुति किया, तब सूर्यग्रदेवने उनको कहा, के सचाजित ! तुम हमसे अपने इच्छापूर्वक बर मांगो। सचाजितने मूर्यग्रदेवकी यह वात भोनकर वही मणिरतको मांगा। सूर्यग्रदेवकी यह वात भोनकर वही मणिरतको मांगा। सूर्यग्रदेवने सचा-जितको वह मणि देकर अपने ख्यानको गमन किया। १९। सचाजित उस् वेकीमत मणिरतकोा अपने गलेमे पहरतेही सूर्यग्रके समान तेजस्वी होकर अपने तेजको चारों आर प्रकाभ कर्ते ज्ज्ये दरका नगरीमे दाखिल ज्ज्ये। १२।

11 \$

×

TRANSLATION.

11. On being thus accosted, the divine sun took out the gem Syamantaka from his neck, and laid it out. Satrájita could now see his real form. His complexion was reddish like copper, and lustrous; his body was under the middle stature; his eyes were slightly tawny. After Satrájita had worshipped him duly, the divinity said,—"Satrájita, do you ask for some recompense for your merit." Satrájita thereupon asked for the gem. The sun accordingly gave it him and went away.

12. On wearing the jewel over his neck, he appeared refulgent like the sun, and entered Dváraká.

অহুবাদ।

সত্রাজিত এই কথা বলিবামাত্র সূর্য্যদেব আপনার কণ্ঠ হইতে শুমন্তক মণি উন্মোচন করিয়া এক পার্শ্বে রাখিলেন। তদনন্তর সত্রাজিত সূর্য্যদেবকে প্রত্যক্ষ দর্শন করিলেন। তাঁহার বর্ণ তাত্রের ন্যায় ঈষৎ লোহিত, উজ্জ্বল, শরীর খর্ব্ব, চক্ষু ঈষৎ পিঙ্গলবর্ণ। অনন্তর সত্রাজিত প্রণিপাতপূর্ব্বক স্তবাদি করিলে সূর্য্যদেব তাঁহাকে বলিলেন, সত্রাজিত ! তুমি আমার নিকট অভিলম্বিত বর প্রার্থনা কর। সত্রাজিত সূর্য্য-দেবের এই বাক্য শ্রবণ করিয়া সেই মণিরত্ন প্রার্জিত কে প্রদান করিয়া স্বস্থানে প্রেয়ার সেই মণিরত্ব স্ত্রাজিতকে প্রদান করিয়া স্বস্থানে প্রেয়ান করিলেন। ১১।

সত্রাজিত সেই অমল মণিরত্ন কণ্ঠে ধারণ করিবামাত্র সূর্য্যের ন্যায় তেজস্বী হইয়া স্বতেজে দশদিক্ উজ্জ্বল করিয়া দ্বারকানগরীতে প্রবেশ করিলেন। ১২। 12

मणिमाला।

मूलम्।

दारकावासिजनपदस्तु तमायान्तमवेच्च भगवन्तमनादि-युक्तषं युक्त्षोत्तमं चवनिभारावतारणायांग्रेन मानुषरूप-धारिणं प्रणिपत्याइ भगवन् ! भगवन्तमयं नूनं द्रष्टुमाया-त्यादित्य: । इत्याकर्ण्य प्रइस्य च तानाइ भगवान् नायमादित्यः सचाजितोऽयमादित्यदत्तं स्यमन्तकार्खं महामर्णि विभ्व-दचोपायाति । तदेनं विचव्याः पश्चत इत्युक्तास्ते ययुः । ९३। स च तं स्यमन्तकार्ख्यं महामणिमात्मनिवेग्रने चक्रे । ९८। प्रतिदिनच्च तन्मणिरत्मवरमष्टौ कणकभारान् सुवति । १५।

तर्जमा ।

दरकानिवासी आदमी सचाजितको आते देखकर ष्टथ्वीके भारके नाम करनेवाले अंग्ररूप मनुष्यरूप अनादि पुरुषोत्तमके पास जाकर प्रणाम करके वोले, भगवन्! आपके देखनेकेवासे सूर्यप्रदेव आते हैं। आठल्पा उन्की बछ वात ग्रुनकर हास्ते हास्ते वोले, तुम् लोग जिस्को सूर्यप्र खेयाल कर्ते हो, वह सूर्यप्र नहि है, वह राजा सचाजित हैं। उच्चने सूर्यप्रकी दीडियी स्यमन्तक-नामे महामणिको पहरकर याहां आगमन किया है, द्रस्-लिये तुम लोग निर्भये उनको देखो। आठल्पकी दूस् वातको ग्रुनकर सन दरकानिवासी चले गये। १३।

सचाजितने वच्ची स्थमन्तकनामे मचामणिको अपने मकानमें रख्खा। १४।

वची खेछ मणिरत इर रोज खाट भार सोणा देता। १५।

13

TRANSLATION.

13. When the inhabitants saw him coming, they hastened to that Incarnation of the Deity and Bearer of our sins—Krishna, and, bowing themselves down before him, said,—"Lord! the divine sun is coming hither to see you." On hearing this, Krishna replied, with a smile, "He whom you take for the sun, is king Satrájita. He is coming hither, decked in the great gem obtained by him from the sun. You may therefore see him without fear." Thus enlightened, they went their way.

14. Satrájita kept Syamantaka in his palace.

15. This matchless gem every day produced eight loads* of gold.

অহুবাদ।

দ্বারকানিবাসী জনগণ সত্রাজিতকে আগমন করিতে দেথিয়া পৃথিবীর ভার অবতরণের জন্থ অংশে মন্থ্যরূপী অনাদি পুরুষ পুরুষোত্তমের সমিধানে গমন করত প্রণিপাত-পূর্ব্বক বলিল, ভগবন্ ! আপনাকে দর্শন করিবার আশয়ে সূর্য্যদেব আসিতেছেন । জ্রীকৃষ্ণ তাহাদিগের এই কথা শুনিয়া স্মিতমুথে বলিলেন, তোমরা যাঁহাকে সূর্য্য বলিয়া বিবেচনা করিতেছ, তিনি সূর্য্য নহেন, রাজা সত্রাজিত। ইনি সূর্য্যদত্ত স্থমন্তকনামে মহামণি ধারণ করত এখানে আসিতেছেন, অতএব তোমরা অশঙ্ক মনে ইহাঁকে দেখ। জ্রীকৃষ্ণের এই কথা শুনিয়া তাহারা প্রস্থান করিল ॥ ১৩ ॥

সত্রাজিতও সেই অমন্তকনামক মহামণি আপনার নিকেতনে রক্ষা করিলেন । ১৪।

সেই শ্রেষ্ঠ মণিরত্ন প্রত্যহ আট ভার স্থবর্ণ প্রদব করিত। ১৫।

* Sanskrita, vára=20 Tolás=2,000 Palas of gold .- Williams.

26	1
J.	
p as	14

मणिमाचा।

मूलम्।

तत्प्रभावाच सकलस्यैव राष्ट्रस्य उपसर्गा चनादृष्टि-व्यालाग्निचौरदुर्भिचादिभयं न भवति । १६ । चच्युतोऽपि तद्रत्नुसुयसेनस्य भूपतेर्योग्यमेतदिति लिप्सा-चको गोचभेदभयाच श्रकोऽपि न जच्चार । १७ । सचाजितोऽप्यच्युतो सामेतत् याचिष्यतीत्यवगतरत्नुलोभः सम्बाचे प्रसेनाय तद्रत्रं दत्तवान् । १८ ।

तर्जमा।

स्वमन्तकमणिके प्रभावसे राजमे पाणि ना वर्षना, सांप, चाग, चोर चौर दुर्भिच इस् सवका भय ना था। १६। उस् महारतको राजा उग्रसेनके लायेक समम्मकर त्रीक्रष्णने उस्के लेनेके चाभिलाषी होकरमी जातके भगडके भयसे बावजुद शक्ति चौर ताकतके उम्को जोरसे न लिया। १७।

इस्मणि पर क़ब्णुको लोभ पयदा ऊवा है, समझते हैं, के पीक्वे इमारे पास यह प्रार्थना करेंगे। इस् भवसे सचाजितने चपने भादू प्रसेनको वह मणि दे दिया। ९८०।

15

R.

TRANSLATION.

16. Through its magical influence, the kingdom became free from draught, serpents, conflagration, thieves and famines.

17. The gem having been deemed worthy of Ugrasena in the opinion of Krishna, he was anxious to have it, but the fear of family feud restrained him from taking possession of it by force.

18. "I understand that Krishna covets this jewel." Lest he asked for it of him, Satrájita transferred it to his brother, Prasena.

অন্থবাদ।

স্তমন্তক-মণি-প্রভাবে রাজ্যমধ্যে অনার্ন্তি, সর্প, অগ্নি, চোর ও চুর্ভিক্ষাদির ভয় থাকে না। ১৬।

সেই মহারত্ন মহারাজ উগ্রসেনের উপযুক্ত বিবেচনায় শ্রীক্তৃষ্ণ তাহা গ্রহণাভিলাযুক হইয়াও জ্ঞাতিবিরোধ আশ-স্কায় সামর্থ্যসত্ত্বেও বলপ্রকাশ করিয়া তাহা গ্রহণ করি-লেন না। ১৭।

এই মণির প্রতি কৃষ্ণের লোভ জন্মিয়াছে, বুঝিতে পারিতেছি, পাছে আমার নিকট ইহা প্রার্থনা করেন, এই ভয়ে সত্রাজিত নিজসোদর প্রসেনকে তাহা সমর্পণ করিলেন ।১৮।

OF	
E.	16

मणिमाचा।

मूलम्।

तच्च शुचिना धियमाणमशेषखवर्णमावादिकं ग्रणमुत्-पादयति अन्यया य एव धारयति तमेव इन्तीति । अमा-वपि प्रसेनः स्यमन्तकेन कण्टासकोनाखमारुद्धाटव्यां चगया-मगच्छत् । तच च सिंहात् वधमाप । साखच्च तं निहत्य सिंहोऽष्यमलमणिरत्नमास्याग्रेणादाय गन्तुसुद्यतः ऋच्चाधि-पतिना जाम्ववता दृष्टो घातितच्च । जाम्ववानष्यमलं तन्मणि-रत्नमादाय स्वविलं प्रविवेश सुकुमारकसंज्ञाय च वालकाय कोद्दनमकरोत् । १९८ ।

तर्जमा।

पविच होकर पहरने से वह मणि सोणा देगी, उस्के बिपरीत होने से चर्यात् च गुद्ध रहने से निखय उस्के नाशका कारण होगी। किसी समय मे प्रसेन वही मणि चपने गले मे पहरकर घोड़े पर स्यार होकर शिकार खेलनेको वन मे गये थे। वन मे याते ही एक सेरने उस्को चौर उस्के घोड़े के मारा, चौर उस् मणिको सहम लेकर चला; उसी समय मे मालुक के राजा जाम्बुवन्तने उस्को मारकर उस् निर्म्यल मणिको ले लिया, चौर चपने घरमे चला गया। चौर सकुमारकना मे चपने लेड् केको खेलने के लिये हावया ले किया। १ थ्।

R

TRANSLATION.

17 %

19. When worn by a clean man, it produces gold, but to an unclean person it indubitably proves fatal. On one occasion, Prasena, decked in this gem, rode a-hunting into the forest. There a lion slew both the horse and the horseman, and was about to depart holding the gem in his mouth, when Jámbabán, king of bears, slew him in turn, took the spoil home to his cell and gave it to his son as a gewgaw.

অহুবাদ।

পবিত্র হইয়া ধারণ করিলে সেই মণিরত্ন স্থবর্ণ প্রদাদি করে, তদন্যথায় অর্থাৎ অপবিত্র শরীরে ধারণ করিলে অব-শ্যই তাহার বিনাশের নিদান হয়। কোন সময়ে প্রসেন সেই অমন্তক মণি নিজকণ্ঠে পরিধান করিয়া অশ্বারোহণে মৃগয়াভিলাষে বনমধ্যে গমন করেন। বনমধ্যে প্রবেশ-মাত্র এক সিংহ তাঁহাকে ও তাঁহার অশ্বকে বিনাশ করিয়া সেই মহামণি শুমন্তক মুখে ধারণপূর্ব্বক গমন করিতে উদ্যত হইলে ঋক্ষাধিপতি জাম্ববান্ তাহাকে বিনাশ করত সেই অমল মণিরত্ন গ্রহণ করিয়া নিজ আবাসগর্ত্তে প্রবেশ করিল এবং স্থকুমারকনামে আত্মজকে ক্রীড়নার্থ প্রদান করিল। ১৯।

C

5	
De	10
	10

मणिमाला।

म्लम्।

अनागच्छति च तस्मिन् प्रसेने कृष्णो मणिरत्नमभि-लघितवान् न च प्राप्तवान् नूनमेतदस्य अर्म्म नान्येन प्रसेनो इन्यत इत्यखिल एव यदुलोकः: परसरं कर्णाकर्ण्यं कथयत् । २०।

विदितलोकापवाददृत्तान्तच भगवान् यदुसैन्यपरिवारः प्रसेनाखपदवीमनुससार ददर्भे चात्र्वसमेतं प्रसेनं निइतं सिंहेन। चाखिलजनपदमध्ये सिंहपददर्भनकतपरिभुद्धिः सिंह-पदमनुससार। २१।

तर्जमा।

मोकरर वक्तपर जब प्रसेन फिरकर नहिं आया, तब सब यदुवं शी आपसमे काना फुसकी करने लगे, के आहष्णाने स्यमन्तकमणिके बावत् अपनि इच्छा प्रकाश कि-थी। परन्तु वह प्राप्त नहि ऊई। दूस् कारण हम लोगेंा-के समभ्तमे हाष्णाहीने प्रसेनको मारकर मणि लिया है; और किसीने प्रसेनको मारा नहि। २०।

त्रीक्षणने इस् भुठी वातको ग्रुनकर यदुवं ग्रीयोंकी सेना एककट्टा करके प्रसेनके घोड़े के पात्रोंके चिच्च अनुसार बनमे घुसकर देखा, के प्रसेन घोड़े सचित सेरके पच्चोसे मारा ऊया जमीनपर पड़ा है। त्रीक्षणाने त्रपने साथी लोगोंको प्रसेनके च्तक ग्ररीरको त्रीर सेरके पच्चोके निग्रानको देखाकर चपना कलज्ज दूर किया। बाद उस्के सेरक पच्चोके निग्रानके चनुसार चलना सुरु किया। २९।

J.

TRANSLATION.

20. When the Jádavas saw that the hour for Prasena's return had gone by, they concluded that, without doubt, Krishna had murdered him and appropriated the gem, he having been before known to covet it.

21. When intelligence of this false accusation came to the knowledge of Krishna, he assembled the Jadu host, and entering the forest by tracing the hoof-marks of Prasena's horse, discovered the dead body of Prasena and his steed. By showing the prints of the lion's paws, he exculpated himself from the blame laid at his doors; and then began to search for the lion guided by the paw-marks.

অহ্বাদ।

প্রত্যাগমনকাল অতিক্রান্ত হইলেও যখন প্রদেন প্রত্যা-গত হইলেন না, তখন যাবতীয় যতুবংশীয় ব্যক্তি পরস্পর বলাবলি করিতে লাগিল যে, জ্রীকৃষ্ণ স্থমন্তকের প্রতি অভিলাষ প্রকাশ করিয়াছিলেন, কিন্তু তাহা প্রাপ্ত হন নাই, অতএব আমাদিগের বিবেচনায় কৃষ্ণই প্রদেনকে বিনাশ করিয়া মণি গ্রহণ করিয়াছেন, অন্ত কোন ব্যক্তি প্রদেনকে বিনাশ করে নাই। ২০।

শ্রীকৃষ্ণ এই মিথ্যাপবাদের কথা কর্ণপরম্পরায় গ্রবণ করিয়া যন্থসৈন্থসমবেত হইয়া প্রসেনের অশ্বের পদচিহ্ন অনুসারে বনমধ্যে প্রবেশ করিয়া দেখিলেন, প্রসেন অশ্বের সহিত সিংহকর্ত্তক নিহত হইয়া ভূমিতে পতিত রহিয়াছেন। শ্রীকৃষ্ণ স্বসমভিব্যাহারী ব্যক্তিবর্গকে প্রসেনের মৃতদেহ ও সিংহের পদচিহ্ন দেখাইয়া নিজকলঙ্কাপনয়ন করিলেন, পশ্চাৎ সিংহের পদচিহ্নানুসারে তাহার অনুসরণ করিতে লাগিলেন। ২১।

19 20

20

 म्लम्।

इच्चविनिष्ठतञ्च सिंहमप्यत्ये भूमिभागे हुयुा ततत्व तद्र ल-गौरवाहचत्त्यापि पदान्यनुययौ । गिरितटे च सकलमेव यदुसैन्यमवस्थाप्य तत्पदानुसारी इट्चविलं प्रविवेश । अर्ड-प्रविष्टस्व धाचगा: स्रकुमारकमुद्धापयन्तग्रा वाणीं शुत्राव । २२।

सिंहः प्रसेनमवधीत् सिंहो जाम्ववता इतः । सुकुमारक मा रोदीसाव द्योष स्यमन्तकः ॥ २३ ॥

तरजमा।

त्रीकृष्णने सेरके पद्भोके निशानसे कुछ टूर जाकर देखा, के सेरभी किसी भालुकके घातसे मरकर जमीनपर गिरा है। बाद उस्के उस् स्यमन्तकमणिको बज्जत् दर्लम समफकर भालुकके पात्रोंके निशानके चनुसार चलना सुर किया। योढ़े घी टूर जानेपर एक पाघाड़के करिवकी जमीनपर सब सेनाको रखकर भालुकके पान्चोंके निशानके चनुसार उस्के ग्रुष्टातक पज्जंके। उस् ग्रुष्टामे योडी टूर जातेघी सुकुमारककी दाईकी नीचे लिखे ज्जये लेडका खेलानेकी चावाज शुनी। २२।

सुकुमारक ! तुम रो मत, एक सेरने प्रसेनको मारकर यो मणि लिया था, तुद्धारे बाप भालुकके राजाने उस् सेरको मारकर उस् मणिको लाकर तुद्धा दिया है; यह मणि खब तुद्धारीही हैं । २३।

21

R

TRANSLATION.

22. After proceeding some way, he lighted upon the carcass of the lion. Having regard to the rarity of such a gem as syamantaka, he then proceeded to search for the bear in the direction pointed out by the traces of his paws. After having advanced awhile, he stationed his army in a valley; and himself entered the den of the bear. When he had advanced only half way, he heard the following soothing-speech addressed to Sukumára by his nurse :—

23. "Hush, child ! Don't you know that the gem of which the prince of bears, your father, forcibly possessed himself by slaying the lion, has been given to you, and that now it is your own?"

অন্থবাদ।

শ্রীকৃষ্ণ সিংহের পদচিষ্ণ ধরিয়া কিয়দ্দুর গমন করিয়া দেখিলেন, সিংহও কোন ঋক্ষকর্ত্তৃক নিহত হইয়া ভূমিতে পতিত রহিয়াছে। পরে সেই স্যমন্তকের তুর্লভত্ব জ্ঞানে ঋক্ষের পদচিহ্হান্যুসারে গমন করিলেন। কিয়দ্দুর গমনের পর এক পর্ববতসমিহিত ভূভাগে সমুদায় যত্নসৈন্থ স্থাপন করিয়া ঋক্ষের পদচিহ্হান্যুসারী হইয়া ঋক্ষের বিবরমধ্যে প্রবেশ করিলেন। বিবরের অর্দ্ধমাত্র প্রবেশ করিয়াই স্থকুমারকের প্রতি ধাত্রীর নিম্নলিখিত সান্ত্বনাবাদ শুনিতে পাইলেন। ২২।

স্থকুমারক ! তুমি রোদন করিও না, এক সিংহ প্রদেনকে বিনাশ করিয়া যে মণিরত্ন গ্রহণ করে, তোমার পিতা ঋক্ষরাজ সেই সিংহকে বিনাশ করিয়া সেই মণি আনয়ন করিয়া তোমাকে দিয়াছেন, এক্ষণে এই মণিরত্ন তোমারই হইল। ২৩।

200°	
Do.	00
2 00	22

मणिमाला।

मूलम्। इत्याकर्ण्ये खव्यस्यमन्तकोदन्तोऽन्तःप्रविष्टः कुमारक-कीडुनकीकृतच्च धाचीचक्ते तेजोभिर्ज्ञाज्वल्यमानं स्यमन्तकं ददर््य। २४।

तञ्च स्यमन्तकाभिलाषचचुषमपूर्वे पुरुषमागतमवेच्य धाची चाहि चाहीति व्याजहार । २५ू ।

तदार्भनादअवणानन्तरचामर्षपूर्णेद्धदयः स जास्ववनाज-गाम तयोच परस्परं युध्यतोईयोर्युद्वमेकविंग्रतिदिनान्यभवत्।

तर्जमा।

त्रीक्षणाने यह बात गुनतेही स्यमन्तक मणिका हाल मालुम करके गुहामे प्रवेश किया। देखा, वही स्यमन्तक मणि लेडुकेके खेलनेके लिये दाईके हाधमे है, और उसके तेजसे चारें। तरफ प्रकाशमान है। २४।

दाईने देखा के एक चादमीके जिस्को नहि कभी देखा या, फकत उस्मणिको देखता है, हमको वचाचो, इमको बचाचो ऐसा सोरकर ऊठी । २५ू ।

जास्वबन्त दाईका ऐसा सोर ग्रुनकर क्रोधातुर घोकर जसीदम उस्जगद चा मौजद ऊट्या; चौर चीक्षणासे दन्दू युद्व करने लगा। चौर वह्र लडाई एकिश दिनतक ऊद्द।

23 8

TRANSLATION.

24. On learning this, Krishna came forward, and found syamantaka lying in the hand of the nurse and illumining the spot.

25. When the eyes of the nurse fell upon a person whom she had never seen before, and who eyed eagerly the prize in her hand, she cried out, "help, help! O."

26. Alarmed by her cries, Jámbabán immediately appeared on the spot, filled with wrath, and entered into a fierce combat with Krishna. Thislasted for twenty-one days.

অহুবাদ।

শ্রীক্নফ্ব এই কথা শুনিবামাত্র স্তমন্তকের সংবাদ অবগত হইয়া বিলমধ্যে প্রবেশ করিলেন, দেখিলেন, সেই স্তমন্তক বালকের ক্রীড়ার নিমিত্ত ধাত্রীহস্তে অস্ত রহিয়াছে, এবং তাহার তেজে চতুর্দ্দিক আলোকিত হইয়াছে। ২৪।

ধাত্রী সেই অদৃষ্টপূর্ব্ব অথচ স্থমন্তকের উপর সতৃষ্ণদৃষ্ঠি পুরুষকে দেখিয়া আমাকে রক্ষা কর, রক্ষা কর, বলিয়া চীৎকার করিয়া উঠিল। ২৫।

জাম্ববান্ ধাত্রীর এই প্রকার সভীতি চীৎকার শ্রবণে ক্রোধে পরিপূর্ণ হইয়া তৎক্ষণাৎ সেই স্থানে উপস্থিত হইয়াই শ্রীকৃষ্ণের সহিত ঘোরতর দ্বন্দ্বযুদ্ধ আরম্ভ করিল। সেই যুদ্ধে একবিংশতি দিন গত হইল।

2 Po	
60	01
0 00	24

मणिमाला।

म्लम्।

ते च यदुसैनिकासत्तच सप्ताष्ट दिनानि तन्निष्कृान्ति-सुदीच्छमाणास्तस्थुः। चनिष्क्रममाणे च मधुरिपौ चमाववछ्य-मच विलेऽत्यन्तनाशमाप्तो भविष्यत्यन्यया तस्य कयमेता-वन्ति दिनानि शचुजये व्यात्तेपो भवतीति क्रताध्यवसाया दारकामागता इतः क्रष्ण इति कथयामासुः । २६ ।

तच चास्य युध्यमानस्यातित्रद्वादत्तविश्विष्टपाचोपयुकान्न-तोयादिना क्रष्णस्य वलप्राणपुष्टिरभूत्। २८०।

तर्जमा।

और इधर यदुबंशोयेंगंकी सेनाने जीक्तव्याकी ग्रहासे बाहार होनेके इनतिजारमे सात जाट दिनतक काटा; जब देखा, के जीकव्या सात जाट दिनतकभी फिरकर नहि जावे, तब उनलोगेंगने तजबीज किया, के जीकव्याने जरुर ग्रहामे ज्यपना प्राण कोड़ दिया; जीते रहन से दुसमनके मारने मे इली देर नो होति; यही निज्यय करके उन-लोगेंगने दरकामे फिर जाकर यह बात ममूरकी, के जीकव्याने प्राण कोड़ दिया है। २६।

भाइबन्धने बज्जत् अद्वासे अन्न पानि औक्षणाके हेत दान किया। और वही अन्न पानि लड़ाइ करते ज्वये औकृषणके बलका मजबृत् करने वाला ज्या। २८८।

K

25 20

TRANSLATION.

When the Jadu army found that he did not return after a week had passed they concluded him dead; for had he lived, (thought they) he would certainly have returned by this time. Under this conviction, they returned to Dwáraká, and gave out that Krishna had given up the ghost.

27. On receiving this tidings, the friends of Krishna performed his funeral ceremonies.

28. The various articles of food offered to his manes contributed but to impart a fresh accession of strength, while engaged in the combat.

অনুবাদ।

এখানে যতু-সৈনিকেরা জ্রীকৃষ্ণের গর্ত্ত হইতে নিক্ষুমণ অপে-ক্ষায় সাত আট দিন অতিবাহিত করিল। যখন দেখিল, জ্রীকৃষ্ণ সাত আট দিনের পরেও প্রত্যাগত হইলেন না, তখন তাহারা স্থির করিল যে, অবশ্যই জ্রীকৃষ্ণ গর্ত্তমধ্যে লীলা সম্বরণ করিয়াছেন, জীবিত থাকিলে কখনই শত্রুজয় করিতে তাহার এত বিলম্ব হইত না। এইরপে কৃতনিশ্চয় হইয়া তাহারা দ্বারকায় প্রত্যাগমনপূর্ব্বক এই কথা রটাইয়া দিল যে, জ্রীকৃষ্ণ প্রত্যাগ করিয়াছেন। ২৬।

জীক্নফের বন্ধুবান্ধবেরা এই কথা শ্রবণ করিয়া তৎ-কালোচিত প্রেতকার্য্য সমুদায় সম্পন্ন করিল। ২৭।

বন্ধুগণ অতি শ্রদ্ধাপূর্ব্বক অন্নপানাদি শ্রীক্নফের উদ্দেশে দান করাতে তদ্ধারা যুদ্ধে ব্যাপৃত শ্রীকৃফের বলাদির পুষ্ঠি-সাধন হইল। ২৮।

D

100	
De	90
	26

मूलम् ।

इतरस्तानुदिनमतिगुरुपुरुषमिद्यमानस्तातिनिष्ठुरप्रघार-पौडिताखिलावयवस्त्र निराचारतया वलचानिः । निर्जितञ्च भगवता जाम्ववान् प्रणिपत्याच्च अपुरपुरयचगन्धर्व्वराचसा-दिभिरप्यखिलैभगवान् न जेतुं शक्यः किसुतावनिगोचरैरज्य-वीर्व्येर्नरावयवभूतेच तिर्य्यग्योन्यनुष्टतिभिः किं पुनरसादिधे-रवस्तं भगवतोऽस्तत्स्वामिनो नारायणस्त्र सकलजगत्परा-यणस्त्रांश्वेन भगवता भवितव्यमित्युक्तः । २९ ।

तर्जमा।

भुखे ऊये और प्रवलवलवान औक्षणके वर्ड भारी सक्त मारसे तामाम बदन चूर चूर छोजाने से जाख्नुवन्त वल-छीन होकर गिर पड़ा। श्रीक्षणाने खनायास उसको परा-जित किया। जाख्नुवन्त इस् तरहसे हारकर श्रीक्षणाको प्रणाम करके वोला, भगवन! जिस् समय सब खर, अखर, यद्य और गत्थर्व्व वगयरह प्राणीमाच एक कट्टे होकर कभी खाएको पराजयकर नहि सक्ते, तब प्रय्वीके रहने वाले कमताकत मनुष्य-खाक्तति तिर्य्यग् योनि-खनुसारी हम ऐसे खादमी घापको हारावें, यह कभी खेयालमे नहि खा सक्ता। हमको सच यकीन ज्ज्या है, को जो सब जगत्का एकमाच खाधार हमारा प्रभु वही नारायणके खंग्रके खाप अवतार हैं। २८।

TRANSLATION.

29. What through privation, and what owing to the many and deep wounds inflicted by his powerful adversary, Jámbabán at length succumbed. Being thus defeated, he bowed humbly to Krishna, and said, "Lord! when all the Gods and Asuras,* Jakshas† and Gandharvas‡ could not defeat thee, what is the chance of a weak beast like me, although in a human form? On my life, thou partakest of the nature of that Universal God who is the author of my life as of all else that breathe."

অন্থবাদ।

নিরাহারে এবং প্রবল পরাক্রান্ত শ্রীকৃষ্ণের গুরুতর নিষ্ঠুর প্রহারে সর্ববাঙ্গ ক্ষতবিক্ষত হওয়াতে জাম্ববান্ এক-বারে নিস্তেজ হইয়া পড়িল, স্নতরাং শ্রীকৃষ্ণ অনায়াসেই তাহাকে পরাজিত করিলেন। জাম্ববান্ এইরপে পরাজিত হইয়া শ্রীকৃষ্ণকে প্রণিপাতপূর্ববক কহিল, ভগবন্ ! যথন সমুদায় স্থর, অস্থর, যক্ষ ও গন্ধর্ব প্রভৃতি প্রাণিচয় একত্র হইয়াও কথনই আপনাকে পরাজয় করিতে সমর্থ হয় না, তথন যে, পৃথিবীস্থ, অল্পসত্ব, নরাকার, তির্য্যগ্যোনির অন্থ-সারী অম্মদ্বি ব্যক্তি আপনাকে পরাজয় করিবে, ইহা কথনই সন্তবপর নহে। আমার নিশ্চয় বোধ হইতেছে, যিনি সমুদায় জগতের একমাত্র আধার, আমার প্রভু সেই নারায়ণের অংশে আপনি আবির্ভূ ত হইয়া থাকিবেন। ২৯।

* Adversaries of the Gods.

+ Demi-gods who are attendants on Kuvera, the God of wealth, and employed on the care of his garden and treasures.—(WILLIAMS.) ‡ Celestial musicians who form the orchestra at the banquets of the gods, and who belong to Indra's heaven.—(*ibid.*)

7 20

28

मगिमाला।

मू चम्।

तसौ भगवानखिलमवनिभारावतारमाचचचे। ३०। प्रीत्याच्चितकरतलस्पर्शनेन चैनमपगतयुद्धखेदं चकार।३१। स च प्रणिपत्यैनं युनरपि प्रसाद्य जाम्बवतीं नाम कन्यां ग्रहागमनार्घे प्रमृतां ग्राहयामास। ३२।

स्यमन्तकमणिमप्यसौ प्रणिपत्य तस्मै प्रद्दौ। अच्युतो-ऽप्यतिप्रणतात् तस्तादयाद्यमपि तन्त्रणिरत्नमात्मशोधनाय जयाहा ३३।

तर्जमा ।

त्रीक्तव्याने जास्वुवन्तनी यह बात गुनकर कहा, के ष्टथ्वीके बोक्तेके उतारनेकेवासी हम उग्रंग अवतार ज्वये हैं। ३०।

जाम्बुवन्त श्रीकषणकी बातसे सन्तुष्ट चोकर बदनपर चाय फेरकर युद्धका कष्ट दूर किया । ३१ ।

उस्के बाद जाम्बुवन्त ष्टय्वीपर माथा रखकर प्रणाम करके त्रीडवणको प्रसन्न करके उस्के मकानपर त्रीडवण द्याये हैं, दूस् कारण पूजाके स्वरूप त्रपनी लेडुकी जाम्ब-वतीको दिया। ३२।

जाम्बुवन्तने फेर प्रणाम करके स्यमन्तक मणिभी अोक्रष्णको इवाले किया। अगर के आक्रष्णने अपने भक्तोंकी चिज लेना, गयेर मनासिफ समआ, लेकिन नाचार होकर अपना कलज्ज टूर करनेकेवास्ते वह्न मणि लेना पड़ा। ३३।

29 20

TRANSLATION.

30. At this, Krishna frankly confessed to his incarnation for bearing the sins of this world.

31. Highly satisfied at this frank avowal, Jámbabán began to shampoo Krishna's body, with a view to relieving the pain incident to the late combat.

32. Jámbabán again reverentially bowed, and, by way of paying suitable respect to Krishna for having condescended to come to his dwelling, bestowed on him the hand of his daughter, Jámbabatí.

33. He also presented his divine guest with the gem Syamantaka. Although fully alive to the impropriety of depriving his friendly host of the jewel, Krishna was obliged to accept it, in order to wipe out the stigma that had attached to his name.

অহ্বাদ।

শ্রীকৃষ্ণ জান্ববানের এই কথা শুনিয়া তিনি যে, পৃথিবীর ভারাপনোদনের জন্ত অংশাবতাররূপে অবতীর্ণ হইয়াছেন, এ কথা তাহাকে বলিলেন। ৩০।

জাম্ববান্ শ্রীকুঞ্চের বাক্যে প্রীত হইয়া অঙ্গে হস্তামর্যণ দ্বারা তাঁহার সংগ্রামজনিত ক্লেশ অপনীত করিল। ৩১।

তৎপরে জাম্ববান্ প্রণিপাতপূর্ব্বক পুনরায় জ্রীকৃষ্ণকে প্রসন্ন করিয়া তাহার ভবনে যে, কৃষ্ণ আগমন করিয়াছেন, তাহার অর্য্যস্বরূপ জাম্ববতী নাম্বী নিজতনয়াকে তাঁহাকে সম্প্রদান করিল। ৩২।

জাম্ববান্ পুনরায় ক্নতপ্রণাম হইয়া স্তমন্তক মণিও শ্রীকৃষ্ণকে প্রদান করিল। এরপ অন্থগত ব্যক্তির নিকট হইতে সেই মণি গ্রহণ অতিঅকর্ত্তব্য বিবেচনা করিয়াও শ্রীকৃষ্ণ শুদ্ধ আত্মকলঙ্কাপনোদনের জন্ম অগত্যা তাহা গ্রহণ করিলেন। ৩৩।

Æ



मणिमाला।

मूलम्।

सङ जास्ववत्या दारकामाजगाम। भगवदागमनोझूत-इर्घोत्कर्षस्य दारकावासिजनस्य कष्णावलोकनानुचणमेवाति-परिणतवयसोऽपि नवयौवनमिवामवत्। ज्रानकदुन्ट्भिञ्च दिष्ट्रपादिष्टेरति च सकलयादवाः स्लियञ्च सभाजया-मास्तः। ३४।

भगवानपि यथानुभूतमश्रेषयादवसमाजे यथावदाचचचे स्वमन्तकच सचाजिताय दत्त्वा मिथ्राभिश्रस्तिविशुद्धिमवाप जाम्बवतीच्चान्तः पुरे निवेश्ययामास। सचाजितोऽपि मयास्या-भूतमलिनमारोपितमिति जातसन्त्वासः स्वमुतां सत्यभामां भगवते मार्थ्यां ददौ । ३५ ।

तर्जमा।

उस्के बाद त्रीक्षणा जाम्बवती सहित हरकामे फिर आये। त्रीक्षणाके फेर आनेसे हरकानिवासी लोगके एँसे आनन्द ऊये, के वूढ़े आदमी जवानके एँसे ताकतदार होगये और तमाम यदुवंशी स्त्री पुरुष वसुदेवके पाम जाकर बऊत आनन्द जाहेर करने लगे। ३४।

इस् मणिके मध्ये जो जो ऊटाया, श्रीकृष्णने सवसे कहा। श्रीर सचाजितको वही मणि देकर अपने भुठ कलङ्कसे कुटे। उस्के बाद जाक्ववतीको अन्तः पुरमे भेजवा दिया। सचाजितने जो श्रीकृष्णको भुठा कलङ्क लगायाया, उस्के सवबसे बज्जत भयभीत होकर अपनी लेडकी सत्यभामाको हवाले कर दिया। ३५ू।

TRANSLATION.

34. Then Krishna returned to Dwáraká with Jámbabatí. His unexpected return infused such joy into the people, as made even the old young. All the men and women of the Jadu race flocked to Vasudeva and expressed their heart-felt congratulations.

35. Krishna now related all that had befallen the gem; and finally bestowing it on Satrájita, wiped out the 'damned spot' on his fair fame. He then sent Jámbabatí to the inner apartments. Satrájita now became a prey to fear for having groundlessly blamed Krishna, and married his daughter Satyabhámá to him, by way of conciliation.

অনুবাদ।

অনন্তর শ্রীকৃষ্ণ জাম্ববতীর সহিত দ্বারকায় প্রতিগমন করিলেন। শ্রীকৃষ্ণের পুনরাগমনে দ্বারকানিবাসী জনসমূ-হের এরপ আনন্দোদয় হইল যে, শ্রীকৃষ্ণকে দর্শন করিয়া রদ্ধ ব্যক্তিরাও নব-যুবকের ত্যায় বলশালী হইল, এবং যত্ন-বংশীয় সমুদায় স্ত্রী পুরুষ বস্থদেবের নিকট গিয়া মহা আনন্দ প্রকাশ করিতে লাগিল। ৩৪।

এই মণিসন্বন্ধে যাহা যাহা ঘটিয়াছিল, জীকৃষ্ণ সর্ব-সমক্ষে তাহা ব্যক্ত করিলেন, এবং সত্রাজিতকে সেই অম-ন্তক মণি প্রদান করিয়া নিজ মিথ্যাপবাদ হইতে যুক্ত হই-লেন। পরে জাম্ববতীকে অন্তঃপুরে প্রেরণ করিলেন। সত্রাজিতও জ্রীকৃষ্ণের প্রতি অকারণ কলঙ্কারোপ করিয়া-ছিলেন বলিয়া অত্যন্ত ভীতান্তঃকরণ হইয়া তাঁহাকে নিজ তন্য়া সত্যভামাকে প্রদান করিলেন। ৩৫।

31 2

S 32

म्लम् ।

ताञ्चाकूरक्ततवर्म्भ शतधन्वप्रसुखा यादवाः पूर्व्वं वरयामासुः । ततस्तत्प्रदानादवज्ञातमात्मानं मन्यमानाः सचाजिते वैरानु-वन्धं चक्रुः । चक्रूरक्तवर्म्म प्रसुखाच शतधन्वानमूचुः चय-मतिहरात्मा सचाजितो योऽस्माभिर्भवता चार्थ्यार्थतोऽप्यात्मजा-मस्तान् भवन्तं चाविगण्य्य कृष्णाय दत्तवान् । तदलमनेन जीवता, घातयित्वैनं तन्मचारत्नं त्वया किं न गृद्यते । वयमप्यस्युपपत्स्यामः यद्यच्युतस्तवापि वैरानुवन्धं करि-ष्यतीति । इई ।

तर्जमा ।

अक्रूर, छतवर्मा और ग्रतधन्वा यदुवं ग्रीयोंने पहिले सत्यभामाके सादिकरनेके लिये सचाजितसे कहाया। अव सत्यभामाको औछषणके हावाले करनेसे जन समेंनें आपनि वे इजती समझकर सचाजितसे दुसमनी करनेको तैयार ऊये। अक्रूर और छतवर्म्या वगयरह यदुवं ग्री ग्रतधन्वासे बोले, के देख, सचाजित बड़ा दुरात्मा है। इमने और तुमने सचाजितसे सत्यभामाकी दरखास्त कियी, लेकिन उसने हम दोनोमेसे किसीको न दिया, और अवज्ञा करके श्रीक्षण्णकी दिया; इस्लिये हमारे तुमारे सलामे उसको जीता रखना मनासिफ नहि। खुब हो, जो उसको मारकर वह मणि लेलेवो। अगर छष्ण इस बाबमे तुमसे दुसमनी करेंगे, तो हम साफ कहते हैं, के जरुर हमलोग तुम्लारी मदद करेंगे। ३६।

33 20

TRANSLATION.

36. Akrura, Kritabarmá, Satadhanvá and other jádavas had before this sought the hand of Satyabhámá. Now seeing that Satrájita gave her away to Krishna, they felt insulted and plotted against the father. Akrura, Kritabarmá, &c., said to Satadhanvá—"Lo! Satrájita is a villain: see, he has given away Satyabhámá to Krishna, slighting us. Down with him! Why do you not slay him and possess yourselves of the matchless jewel held by him? If Krishna prove hostile to you, depend upon it, we shall be at your back."

অহ্বাদ।

অক্রুর, কুতবর্দ্মা ও শতধরা প্রভৃতি যাদবগণ পূর্ব্বে সেই সত্যভামাকে বিবাহার্থ সত্রাজিতের নিকট প্রার্থনা করিয়া-ছিলেন। এক্ষণে সেই কন্থা একস্বিঞ্চকে সমর্পণ করাতে তাঁহারা সকলে আপনাদিগকে অবমানিত বোধ করিয়া সত্রাজিতের প্রতি বৈরানুষ্ঠানে রত হইলেন। অক্রও কৃতবন্মা প্রভৃতি যদ্রবংশীয়েরা শতধন্বাকে কহিলেন; দেখ, সত্রান্ধিত অতি তুরাত্মা, কারণ, তুমি এবং আমরা ইহার নিকট সত্যভামাকে যাচ্ঞা করিয়াছিলাম, কিন্তু সে তোমাকে ও আমাদিগকে অবজ্ঞা করিয়া এখন কি না রুষ্ণকে সেই কন্থা দান করিল; অতএব আমাদিগের বিবেচনায় ইহাকে জীবিত রাখা কর্ত্তব্য নহে। তবে তুমি যে, কেন ইহাকে বিনাশ করিয়া সেই মহামণি গ্রহণ করিতেছ না, বলিতে পারি না। যদি জ্রীরুষ্ণ এ বিষয়ে তোমার সহিত বৈরতা করেন, আমরা মুক্তকণ্ঠে বলিতেছি, অবশ্যই তোমার সাহায্য করিব। ৩৬।

R



26	
S	94
0	34

मणिमाता।

मलम्।

एवसुक्तस्तघेत्यसावष्याच्च। जतुगृच्चदग्धानाच्च पार्ण्डु-नन्दनानां विदितपरमार्थौऽपि भगवान् दुर्येप्राधनप्रयत्न-भौथिल्यार्थं कुल्यकरणाय बारणावतं गत: । ३७।

गते च तस्मिन् सुप्तमेव सचाजितं श्रतधन्वा जघान मणिरत्नच्चाददे। पित्वधामर्वपूर्णां च सत्यभामा शीघृं स्वत्दन-मारूढा वारणावतं गत्वा भगवते ऽइं प्रतिपादितेति उचचान्ति-मता श्रतधन्वना उस्मत्पिता व्यापादितः तच्च स्वम-न्तकमणिरत्नमपच्चतं। तदियमस्यावच्चासना। तदालोच्य यदच युक्तं तत् क्रियतामिति रूष्णमाच्च। ३८०।

तर्जमा।

श्रतधन्वाने अकरूती यह बात गुनकर कवुल किया। बाद उस्के औछष्णने यह बात गुनके पाग्डवगण लाचा-ग्रुहमे ज्वलकर मरगये हैं। दुर्योधन जिसमे फेर पाग्डकी तलास ना करे, इस अभिप्रायंसे इन्द्रप्रखमे आहु कराने-वास्ते चले गये। ३७।

त्रीक्षण के इन्द्रप्रस्वके जानेके बाद शतधन्वाने सचा-जितको सोते ऊथे मारकर स्यमन्तक मणिको चोराय लिया। सत्यभामा बापके मरेजानेके दुःखसे कोधातुर होकर उसी समये रथपर सवार हो इन्द्रप्रस्वको पऊंच गई, और त्रीक्षण्यस कहा, हमारे बापको तुद्धारे माथ हमारे सादि होनेके सबकसे शतधन्वाने मारडाला, अव आप इस बाबमे जो मनासिफ हो, सो किजीये। ३८।

TRANSLATION.

37. Satadhanvá consented. In the meanwhile, Krishna with a view to confirming Durjyodhana in his belief that the Pándavas had been burnt to death in the house of lac, went to Báranábata in order to perform their funeral obsequies.

38. Taking advantage of his absence, Satadhanvá murdered Satrájita while asleep and took possession of Syamantaka. Satyabhámá, all grief for the death of her father, immediately went to Báranábata and said to Krishna, "Satadhanvá has murdered my father and stolen the gem Syamantaka, because he gave away my hand to you; now. I leave it to you to do the needful."

অন্থবাদ।

শতধন্বা অক্রাদির কথায় সম্মত হইলেন। পরে ত্রীকৃষ্ণ পাণ্ডবেরা জতুগৃহে দগ্ধ হইয়াছেন, এই সম্বাদ প্রবণে তুর্য্যোধন যাহাতে তাঁহাদিগের অন্বেষণে আর অধিক যত্ন না করেন, এই অভিপ্রায়ে পাণ্ডু-নন্দনদিগের প্রেত-কার্য্য করিবার জন্ম বারণাবতে গমন করিলেন। ৩৭।

শ্রীকৃষ্ণ বারণাবতে গমন করিলে পর, শতধন্বা সত্রাজিতকে স্থপ্রাবস্থায় সংহার করিয়া স্তমন্তকমণি অপহরণ -করিলেন। সত্যভামা পিতৃবধামর্যপূর্ণা হইয়া তৎক্ষণাৎ রথারোহণে বারণাবতে উপস্থিত হইলেন, এবং শ্রীকৃষ্ণকে কহিলেন যে, আমার পিতা আপনাকে আমায় দান করাতে শতধন্বা তাঁহার প্রাণ বিনাশ করিয়া স্তমন্তক মণি অপহরণ করিয়াছে। এক্ষণে এ বিষয়ে আপনার যাহা কর্ত্র্ব্য হয়, করুন। ৩৮।

35 20

36

मणिमाला।

म्लम्।

तया चैवसुतः: परितुष्टान्तः करणोऽपि रुष्णः सत्यभामा-ममघताम्रलोचनः प्राह्व सत्ये ! ममैषाव हासना नाह मेतां तस्य दुरात्मनः सहिष्ये । नह्य नुल्ल ङ्घ्य वरपाद पंतत् रुतनीडुा-व्ययिणो विह्तद्या वध्यन्ते । ३९ ।

तदलमत्यर्थमसुनासात्पुरतः शोकप्रेरितवाक्यपरिकरेण इत्युक्त्वा द्वारकामभ्येत्य वलदेवमेकान्ते वासुदेव: प्राइ च्यगया-गतं प्रसेनमटव्यां च्यगपतिर्जधान । सचाजितोऽप्यधुना शतघन्वना निधनं प्रापित: । तदुमयविनाशात् तन्मणिरत्न-मावाभ्यां सामान्यं भविष्यति । ४०।

तर्जमा।

सत्यभामाको यह बात ग्रुनकर मनहीं मनमे बज्जत सन्तुष्ट होकर बनावटकी सुख आंखे करके सत्यभामासे बोले, हे सत्ये ! यह तुद्धारे बापका मारना नहि है, बलके हमारि बेद्रजुदी है । हम कभी एँ से दुरात्माका अपमान सह ना सकेंगे । गाइको पहिले न कटनेसे उसके रहनेवाले पत्तीको मारना सुसकील है । ३९ ।

तुम चव इमसे दुःखकी वात मत कहो । जीकृष्ण इस-तरहसे सत्यभामाको ग्रान्त करके दरका फेराकर वल-रामको एकान्तमे लेजाकर वोलें, के प्रसेन सिंहके हायसे वनमे मरागया, जब सचाजित ग्रतधन्वाक हायसे बध इवा। इस कारण उम्के मरेजानेसे स्वमन्तक हमारे तुद्धारे दो जादमीका होगा । ४० ।

H

TRANSLATION.

39. Although this intelligence filled Krishna with delight, (the cause whereof will appear in the sequel), he feigned wrath and with blood-shot eyes, said, "O Satye! This proceeding of Satadhanvá has not disgraced your sire but me, and woe unto the wretch for it. Unless you ascend the tree where the bird has taken shelter, you can not kill it."

40. "Pray, fobear to bewail the loss of your father." Thus having soothed Satyabhámá, Vásudeva returned to Dwáraká and taking Baladeva aside, said, "Prasena, as you know, was slain in the forest by a lion, now Satrájita also has been killed by Satadhanvá. These two having died, Syamantaka will be ours."

অহ্বাদ।

সত্যভামা এই কথা বলিলে, শ্রীক্নম্ব মনে মনে অতি-শয় সন্তুষ্ট হইয়াও কৃত্রিম ক্রোধভরে চক্ষুর্দ্ব লোহিতবর্ণ করিয়া সত্যভামাকে কহিলেন, সত্যে! ইহা ত তোমার পিতার অবমাননা নহে, আমারই অপমান করা হইয়াছে। আমি কদাপি সেই ছুরাত্মকৃত এই অবমাননা সন্থ করিব না। আশ্রয়তরুকে অগ্রে উল্লজ্ঞান না করিলে তদাশ্রিত পক্ষীকে কথনই বিনাশ করিতে পারা যায় না। ৩৯।

তুমি আমার নিকট আর শোকব্যঞ্জকবাক্য প্রয়োগ করিও না। বাস্থদেব সত্যভামাকে এইপ্রকার সান্ত্বনাবাক্য বলিয়া দ্বারকায় প্রত্যাগমনপূর্ব্বক বলদেবকে নির্জনেডাকিয়া বলিলেন; দেখুন, প্রসেন ত বনমধ্যে সিংহকর্তৃক নিধনপ্রাপ্ত হইয়াছে, অধুনা সত্রাজিতও শতধন্বাকর্তৃক নিহত হইয়া-ছেন। অতএব এই উভয় ব্যক্তির বিনাশ হওয়াতে অমন্তক আমাদিগের তুই জনের হইবে। ৪০।

37 20

0	
2 B	38
	00

मगिमाला ।

मुलम्।

तदुत्तिष्ठ चारुद्धातां रथ: शतधनुर्निधनायोद्यमं कुरु इत्यभिच्चितस्तयेति समन्वौप्सितवान् ! कतोद्योगौ च तावुभा-वुपलस्य शतधन्वा कतवस्ताणिसुपेत्य पार्ष्णि पूरणकर्म्मनिमित्त-मचोदयत् । चाच्च चैनं कतवस्तां नाच्चं वलभद्रवास्उदेवास्यां मच्च विरोधायालम् इत्युक्तच्चाक्नूरमचोदयत् ! चाच्च चासावपि नच्चि कच्चित् भगवता पादप्रचारपरिकस्यितजगत्त्र्येण चस्रर-वरवनितावैधव्यकारिणा प्रवलरिपुचकाप्रतिच्न्तचक्रेण चक्रिणा

तर्जमा।

चाप उठिये, चौर रषपर सवार होकर ग्रतधन्वाके मारनेकेवाक्ते तैयार ऊजीये। वलदेवने चीक्रणाकी यह वात ग्रुनकर कहा, ऐसाही होगा। क्रष्णवलराम उस्की लड़ाइकेवाक्ते तैयार ऊये हैं, ग्रतधन्वाने यह वात ग्रुनकर कृतवर्मांसे मदद चाही, उसने कहा, के हम कृष्णवलरामसे लडाइ न कर सकेंगे। तब ग्रतन्वाने चक्रूरके पास जाकर मदद चाही। चक्रूर वोले के जिङ्कर्ते एक लायसे तिनों लोगको कम्पायमान करदियाया, चौर जिनका बड़ा प्रवल पराक्रम है, चौर चर्छरोंकी स्त्रीयेंको जिङ्ग्रने विधवा कर दिया है, चौर चर्फरोंकी स्त्रीयेंको जिङ्ग्रने विधवा कर दिया है, चौर चप्रभारी भगवान चीक्रणाके साय,

39 20

Ś

TRANSLATION.

41. "Do you therefore, Sir, get up, and prepare for slaying Satadhanvá." Baladeva replied :—" Be it so." Hearing that Krishna and Balaráma were preparing for battle against him, Satadhanvá asked the aid of Kritabarmá. "I shall not be able to compete with Krishna and Balaráma," was the answer of Kritabarmá. Satadhanvá now applied to Akrura. Akrura said, "He who by one kick shook the three worlds, who has brought about the widowhood of the wives of mighty Asuras, who by his discus subdues powerful enemies, is an overmatch

অন্থবাদ।

আপনি গাত্রোত্থান করুন, রথারড় হইয়া শতধন্বাকে বিনাশ করিবার জন্য উদেযাগী হউন। বলদেব জ্রীরুষ্ণের এই কথা শুনিয়া তথাস্ত বলিয়া স্বীরুত হইলেন। রুষ্ণ বলরাম তাঁহার বিরুদ্ধে সংগ্রামার্থ সজ্জিত হইয়াছেন, এই কথা শুনিয়া শতধন্বা রুতবর্শ্মার নিকট সাহায্য প্রার্থনা করিলেন। আমি রুষ্ণ বলদেবের সহিত সংগ্রামে সমর্থ হইব না, রুতবর্শ্মা শতধন্বাকে এই কথা বলিলে শত-ধন্বা অক্রুরের নিকট সাহায্য প্রার্থনা করিলেন। অক্রুর বলিলেন, যিনি এক পদাঘাতে জগল্রয় কম্পিত করিয়া-ছিলেন, যিনি এক পদাঘাতে জগল্রয় কম্পিত করিয়া-ছিলেন, যিনি অতি প্রবল পরাক্রান্ত অস্থরগণের বনিতাবর্গের বৈধব্য-সম্পাদন করিয়াছেন, যিনি স্বীয় চক্রে প্রবল রিপু-চক্র দলন করেন, সেই চক্রী ভগবান জ্রীরুষ্ণ্রের সহিত 6 40

मणिमाचा।

म्लम्।

मदमुद्तिनयनावलोकितारिवलविशातनेन अतिग्रुक्वेरिवार-णाकर्षणाविष्कृतमचिमोक्सीरेण सीरिणा च सच्च सकल-जगदन्द्रानाममरवराणामपि योद्दुं समर्थः किमुताच्चम्। तदन्यत: श्ररणमनिलघ्यताम्। ४९।

इत्युक्तः शतधनुराच्च यद्यस्नत्परिचाणासमर्थं भवानात्मान-मवगच्छति तदयमस्नन्मणिः संग्रद्ध रच्चताम्। इत्युक्तः सोऽष्याच्च यद्यन्तायामष्यवस्थायां न कसौचिङ्गवान् कथयिष्यति

तर्जमा।

चौर जो सुरापानसुदितनयनकटात्तसे सब शचुकी सैन्य संहार कर सक्ते हैं, चौर शचुरूप प्रबल सब छाथीको पकड़-नैसे जिसकी महिमा प्रकाश ऊयी है, ऐसे वलरामके साथ युद्ध करनेको लोगपूजित देवता लोग समर्थ नहि छोते, तब इम लोग केया हैं। इस् कारण तुम चौर लोगेंाको पास शरणागत छो। 8१।

भ्रतधन्वाने अक्रूरकी यह बात ग्रुनकर कहा, के अगर आप हमारे रचा नहि करते हैं, तो यह मणि अपने पाप राखिये । अक्रूरने ग्रतधन्वाकी यह बात ग्रुनकर कहा,के देख, तुम अगर मरते कक्त किसीसे यह बात जाहेर ना करो,

TRANSLATION.

for even the gods, not to speak of weak men like us; and who again can take the field against him whose half-shut eyes (through drink)* can disperse adverse hosts by his side-glances, and who has achieved immortal fame by drawing by main force a herd of elephants which had arrayed themselves against him—namely the mighty Haláyudha? You must therefore seek for help in other quarters.

42. Hearing this, Satadhanvá replied, "If you don't think you can assist me, you will, I hope, oblige me so far as to keep this gem with you." "I can comply with your request," said Akrura, "on condition that you engage never to give this fact out—

অহ্বাদ।

এবং যিনি স্থরাপানমুদিত-নয়নকটাক্ষে সকল শক্রটেনন্থ সংহার করিতে পারেন, অত্যন্ত প্রবল শক্রুরপ দন্তিযুথ আকর্ষণ করাতে যাঁহার মহিমা প্রচারিত হইয়াছে, সেই হলায়ুধের সহিত যুদ্ধ করিতে লোকপূজিত-দেবগণও যথন সমর্থ হন না, তখন আমরা কোথায় আছি ! অতএব তুমি অন্থ কোন ব্যক্তির শরণাগত হইতে চেফ্টা কর । ৪১ ।

শতধন্বা অক্রুরের এই কথা শুনিয়া বলিলেন, যদি আপনি আমাকে রক্ষা করিতে পারিবেন না, এরূপ বোধ করেন, তাহা হইলে এই মণিটী গ্রহণ করিয়া আপনার নিকট রাখুন। অক্রুর শতধন্বার উক্ত বাক্য শুনিয়া কহিলেন, দেখ, যদি তুমি আপনার চরম-দশাতেও একথা কাহারও নিকট প্রকাশ না কর,

* Baladeva is a staunch votary of Bacchus as also Krishna although in a lesser degree. The former is always 'tottering' and 'reeling.' *Vide Horivansa*, a chapter of *Mahábhárata*, and a highly interesting and entertaining paper by Dr. Rajendra Lala Mittra in No. CLXXX. of th Asiatic journal.

F

42

मणिमाचा।

मूलम्।

तदच्चमेनं ग्राचीष्यामि । तथेतुत्रको अकूरस्तन्मणिरलं जग्राच। ४२।

श्रतधतुरप्यतुलवेगां शतयोजनवाचिनीं वद्धवामारुद्याप-क्रान्तः । श्रैव्यसुग्रीवमेधपुष्पवलाचकाश्वचतुष्टययुक्तरथा-वस्थितो वलदेववासुदेवो तमनुप्रयातौ । ४३।

साच वडवा शतयोजनप्रमाणं मार्गमतीत्य युनरपि वाद्यमाना मिथिलावनोद्देशे प्राणानुत्समर्ज्ज। शतधनरपि तां परित्यच्य पदातिरेवाद्रवत्। ४४।

तर्जमा।

तो इम इस मणिको कबुल कर सते हैं। ग्रतधन्वाने वही मानाकर मणि चक्राूरके हावाले की, चक्राूरनेभी वह मणि ग्रहण किया 18२।

श्रतधन्वाने अक्रूरको मणि देकर रोज चार शौ को श जानेवाले घोड़े पर सवार चोकर आगा। क्रण्णवलरामने श्रतधन्वाके भागने का चाल गुनकर शैव्य, सुग्रीव, मेघ पुष्प और बलाचक नामे चार घोड़ें को रथमे लगा सवार चोकर श्रतधन्वाके पिक्वे पिक्वे दौड़े। ४३।

श्रतधन्वाके घोड़ी एकदिनमे चार शौ कोश जाकर फेर चलनेसे मिथिलादेशके करिव जङ्गलमे घुसकर मरगयी। श्रतधन्वा उस मरा घोडीको कोडकर पायदल भागा। 88।

43 20

TRANSLATION.

nay, not even in your death-bed." Satadhanvá, agreeing to this, Akrura accepted the gem.

43. Having given the jewel to Akrura, Satadhanvá mounted a mare which could go a hundred *jojanas*^{*} a day, and departed. On hearing of his escape, Krishna and Balaráma yoked to a car the four horses named Saivya, Sugriva, Meghapushpa and Baláhaka and hastened in pursuit of the fugitive.

44. After having gone a hundred *jojanas* in one day, the mare of Satadhanvá died of fatigue in a woodland tract close to Mithilá.⁺ So he was obliged to continue his journey on foot.

অনুবাদ।

তাহা হইলে আমি তোমার বাক্যে সম্মত হইতে পারি। শতধন্বা তাহাই স্বীকার করিয়া মণিটী অক্রুরকে প্রদান করাতে অক্ররও গ্রহণ করিলেন। ৪২।

শতধন্বা অক্রুরকে মণিরত্ন প্রদান করিয়া দিবসে শত-যোজন-বাহিনী, অত্যন্ত বেগশালিনী ঘোটকীতে আরোহণ-পূর্ববক তথা হইতে নিজ্র্লান্ত হইলেন। কৃষ্ণ বলরাম শতধন্বার পলায়নসমাচার প্রাপ্তে শৈব্য, স্থগ্রীব, মেঘপুষ্প ও বলাহক নামে অশ্বচতুফ্টয়যোজিত রথে আরোহণ করিয়া শতধন্বার পশ্চাৎ ধাবমান হইলেন। ৪৩।

শতধন্বার বড়বা এক দিবদের মধ্যে শত যোজন পথ গমন করিয়া পুনরায় চালিত হওয়াতে মিথিলার সমিহিত বনপ্রদেশে প্রাণত্যাগ করিল। শতধন্বা মৃত বড়বাকে ত্যাগ করিয়া পদত্রজেই গমন করিতে লাগিলেন। ৪৪।

* A particular measure of distance, sometimes regarded as about equal to an European league, (*i.e.* four or five English miles, but more correctly =4 krosās or about nine miles; according to other calculations $=2\frac{1}{2}$ English miles, and according to some =8 krosās) (WILLIAMS) vide also Mr. BROODLEY's interesting paper on Buddistic Remains of Behar, page 211, No. CLXXX, of the Journal of the Aciatic Society.

+ The Modern Oude.

0	6	
16	D	
6	20	4
<u>}</u>		-

मगिमाला।

म्लम् ।

कषणोऽपि वलभद्रमाइ तावदचैव खन्दने भवता खेयम्। अइमेनमधमाचारं पदातिरेव पदातिमनुगम्य यावद् घात-यामि। अच इि भूभागे दृष्ठदोषा इया नैतेऽस्वा भवतेमं भूमिभागमुद्धङ्घत्र नेयाः । ४५ ।

तथेत्युक्ता वलमद्रो रथ एव तस्थौ । क्रष्णोऽपि दिकोग-मार्च भूमिभागमनुद्धत्य दूरस्पस्यैव चर्कं चित्रा ग्रतधनुषः ग्रिरचिच्छेद । तच्छरीराम्बरादिषु च वज्जप्रकारमन्विष्यन्नपि स्वमन्तकं मणिं नावाप यदा तदोपगस्य वलभद्रमाइ टये-वास्ताभिः घातित: ग्रतधनुर्ने प्राप्तं अखिलजगत्सारभूतं तन्त्रणिरतं। दूत्याकर्ण्य उद्वतकोपो वलदेवो वास्डदेवमाइ

तर्जमा ।

श्रीक्वष्ण वलरामसे बोले, आप दूस जगइ दूस रथपर रहिये; इम एकेलेको पायदल उस अधम-आचार शत-धन्वाको मारकर आते हैं। इमारे घोड़ेंग्ने दूस जगइ अनिष्ट देखा है, दूस कारण दून घोड़ेंग्को दूहांसे आगे लेजाना मनासिफ नहि हैं। ४५ू।

बलराम इस बातको मानकर उस रघपर बयठे रहे। अीक्षण्णने दो को भरे चक्र फेककर भतधन्वाका भिर काठ उाला। और उसके कपड़ों में मणिको तलास किया, मगर न पया। तब बलरामरे चाकर कहा, के इमने बेफयदा भतधन्वाको मारा। जो मणि तमाम दुनि-याकी दौलतका मूल है, वह न मिलि। बलमद्र अीक्षण्णकी यह बात भुनकर बऊत् को ध करके बोले

45 20

E

TRANSLATION.

45. When Krishna came to the spot, he said to Balaráma! "Please stay here, while I go to have the life of this slave. Our horses has come upon this unsightly spectacle here. They should not therefore go forward."

46. Baladeva accordingly remained in the car. After having proceeded only two miles or more, Krishna sent his discus from a distance and cut off the head of the fugitive. Next he examined Satadhanvá's body and searched his clothes for Syamantaka, but in vain. He returned to Baladeva and communicated his disappoinment. "We have slain Satadhanvá to no purpose, because that pink of perfection, Syamantaka was not with him." At this Balaráma flew into a towering rage—

অহুবাদ।

কৃষ্ণ বলরামকে কহিলেন, আপনি এই স্থানেই স্তন্দনে অবস্থিতি করুন; আমি একাকীই পদব্রজে সেই অধমাচার পদাতি শতধন্বার অন্থগমনপূর্ব্বক তাহার প্রাণ সংহার করিয়া আসিতেছি। আমাদিগের অশ্বগণ এই ভূভাগে অনিষ্ট ঘটনা দর্শন করিয়াছে, অতএব ইহাদিগকে এ স্থান অতিক্রম করিয়া স্থানান্তরে লইয়া যাওয়া আপনার উচিত নহে। ৪৫।

বলদেব তাহাতে সম্মত হইয়া রথেই অবস্থান করিতে লাগিলেন। মিরুষ্ণ ক্রোশদ্বয়মাত্র গমন করিয়াই দূর হইতেই চক্র নিক্ষেপ করত শতধন্বার শিরশ্চেদন করিলেন। পরে তাহার অঙ্গবন্ত্রাদি বিশেষরূপে অন্যুসন্ধান করিয়াও যথন স্থমন্তক মণি প্রাপ্ত না হইলেন, তখন বলদেবের নিকট আসিয়া বলিলেন, আমরা অকারণ শতধন্বাকে বিনাশ করিলাম, যেহেতু সমস্ত জগতের সারভূত সেই মণিরত্ন পাইলাম না। বলভদ্র জ্রীকৃষ্ণের এই কথা জ্রবণ করিয়া অত্যন্ত কোপপ্রকাশপূর্ব্বক কহিলেন, A 46

मणिमाचा।

मूलम्।

धिक् लां यस्त्वमर्थलिप् सुः । एतच्च ते भ्वात्यत्वान्मर्थये तदयं पन्या स्वेच्छया गस्यतां न मे दारकया न त्वया न वन्धुभिः कार्य्यम्। चलमेभिर्ममाग्रतोऽलीक शपर्यैः। इत्याचिष्य तं तथा प्रमाद्यमानोऽपि न तस्थी विदेइ पुरीं प्रविवेश् । 8६ ।

जनकद्याध्रपूर्वकमेवेनं ग्रहं प्रवेग्रयामास। स तचीव च तस्थौ। वास्डदेवोऽपि दारकामाजगाम। यावच्च जनकराजगृहे

तर्जमा।

के कथ्ण ! तुमको धिकार है, तुम एसे दुनियाके लोभी हो ! इमने तुमको भाद समभक्तर चमा किया ; अगर कोई दसरा होता, कभी मेरे हायसे न वाचता । यही सिधा राखा है, जिधार चाये चले जात्रो । हमको दरकासे प्रयोजन नहिं, और न तुद्धारे एसे भादकी जरुरत है, और न भादवन्धुकी दरकार है । तुम वेफयदा व्यं हमारे पाथ मुठ कसम खाते हो ? वल-देवने दूस प्रकारसे कथ्णको तिरस्कार करके राखा लिया । क्रष्णने वज्जत् तरह विनय किया, परन्तु जरा-साभी न टहरकर बिदेह नगरको चले । 8 ई ।

बिदेइ नगरका राजा जनक बलरामके पायेंको धोकर अपने मकानपर ले गया, और वह वही रहे, और क्रष्ण दरकामे लौट आवे । बलराम जिस समय जनकके मकानपर

TRANSLATION.

"O fie! Krishna," exclaimed he, "Your cupidity has struck me dumb. I forgive you in this matter, as you are my brother, but had it been any body else, by Heaven, he would never have raised his head more. The path lies before you, go wherever you like. As for me, I have no further need of Dwáraká, no further need of such a brother as you, no further need of friends and relatives. A truce to your false protestations." After having thus vented his rage, Baladeva left the scene, notwithstanding the reiterated attempts of Krishna to dissuade him; and went to Videha.

47. The king of that place lavished costly presents upon him and conducted him to his palace. Balaráma became domiciled there. Krishna returned to Dwáraká. While Baladeva was staying under the roof

অন্থবাদ।

কৃষ্ণ তোমাকে ধিক্ ! তুমি এমন অর্থলোভী ! আমি তোমাকে ভাতা বলিয়াই এ বিষয়ে ক্ষমা করিলাম, অন্থ কেহ হইলে কখনই তাহাকে ক্ষমা করিতাম না । এই সোজা পথ রহি-য়াছে, তোমার যথায় ইচ্ছা চলিয়া যাও, আমার আর দ্বারকায় প্রয়োজন নাই ! তোমার মত ভ্রাতায় প্রয়োজন নাই ! বন্ধু-বান্ধবেও প্রয়োজন নাই ! তুমি আর অকারণ কেন আমার নিকট অলীক শপথ করিতেছ? বলদেব এই প্রকারে জীকৃষ্ণকে তিরস্কার করিয়া প্রস্থান করিলেন । কৃষ্ণ বহুবিধ অন্থনয় করিলেও বলদেব ক্ষণকাল তথায় অবস্থান না করিয়া বিদেহনগরীতে গমন করিলেন । ৪৬ ।

বিদেহ রাজ জনক অর্ঘ্য প্রদান করিয়া বলদেবকে নিজালয়ে লইয়া গেলেন, তিনি সেই খানেই থাকি-লেন । এদিকে কৃষ্ণও দ্বারকানগরীতে প্রত্যাগমন করিলেন । বলরাম যৎকালে জনকের আলয়ে



मणिमाचा।

मूलम्।

वलमद्रोऽवतस्थे तावत् धार्त्तराष्ट्रो दुर्योधनस्रत्मकाणाट्-गदाणिचामणिचत । ४७ ।

वर्षेचयान्ते च वस्त्रुयसेनप्रस्तिभिर्यावदैर्ने तद्रत्नं कष्णे-नापच्चतमिति क्वतावगतिभिर्विदेच्रपुरीं गत्वा वलदेवः संप्रत्याय्य दारकामानीतः । ४८ ।

चकूरोऽपि उत्तममणिसमुझूतसुवर्णेध्यानपरः ततो यज्ञानीजे । ४९८ ।

सवनगतौ हि च्चियवैश्वौ निघुन् ब्रह्म हा भवतीत्यतो दीचाकवचं प्रविष्ट एव तस्यौ द्विषष्टि वर्षाणि । ५०।

तर्जमा।

थे, उस समय धतराष्ट्रका लेडुका दुर्योधन गदायुद्ध वर्चा शिखता था। ४७।

तिन बरस गुजरे बाद बख्नु और उग्रसेन आदि यादब-लोग बिदेइपुरीमे जाकर बलरामसे यह बात बोले, के छष्णने वह्न मणि चोरीकर न लिया। दूस तरहका बिखास देलाकर वलदेबको फेर दरकामे ले आए। ४८०।

त्रकर उस महामणिके सोणे पयदा ऊवेसे बज्जत् तरहके यागयज्ञ से समय काटने लगे। ८९।

यज्ञवती होने से चचि और कैश्वभी अगर मारा जाय, तो उसके मारनेकी हत्या ब्रह्महत्याके पापके समान हैं। मालूम होता है, के अक्रूर इस उपायसे अपनी जान बाचा-नेकेवास्ते वासट बरसतक दीचारूप कवचसे अपना बट्न इपाय राखा था। प्रू ।

49 80

TRANSLATION.

of king Janaka, Duryodhana, son of Dhritaráshtra, learnt from him the principles of mace-warfare.

48. After three years had elapsed, Babhru, Ugrasena and other Jádavas, visited the palace of the king of Videha and creating in Baladeva the belief that Krishna had not appropriated Syamantaka, prevailed upon him to return to Dwáraká.

49. Furnished with immense gold through Syamantaka, Akrúra spent his time in celebrating various jajnas.*

50. A man who slays a Kshetriya or a Vais'ya engaged in a *jajna*, is guilty of killing a Bráhmin.† It was perhaps this which shielded him for no less than sixty-two years from any hostile manifestations on the part of Krishna.

অহুবাদ।

অবস্থিতি করেন, সেই সময়েই ধৃতরাষ্ট্রাত্মজ হুর্য্যোধন তাঁহার নিকট গদাযুদ্ধ শিক্ষা করেন। ৪৭।

তিন বৎসর অতীত হইলে বক্রু ও উগ্রসেনাদি যাদবগণ বিদেহপুরীতে গমন করত রুষ্ণ সেই স্যমন্তক মণি অপহরণ করেন নাই, এইরূপ বিশ্বাস জন্মাইয়া দিয়া বলদেবকে পুন-রায় দ্বারকায় আনয়ন করিলেন। ৪৮।

অক্রুরও সেই মহামণিপ্রসূত স্থবর্ণরাশিদ্বারা বিবিধ যজ্ঞানুষ্ঠান করত কালযাপন করিতে লাগিলেন। ৪৯।

যন্তে ব্রতী ক্ষল্রিয় এবং বৈশ্র্যের প্রাণ বধ করিলে ব্রহ্ম হত্যার পাপগ্রস্ত হইতে হয়; বোধ হয় অক্রুর এই উপায়ে আত্মরক্ষার নিমিত্তই দ্বিষষ্ঠি বৎসর কাল অনবরত দীক্ষারূপ কবচদ্বারা আত্নত থাকিতেন। ৫০।

* A general name for certain ceremonies presided over by priests, in which oblations are presented and sometimes sacrifices made. + According to MANU the slaying of a Bråhmin is one of the five capital sins, mahápátakas, (vide the Institutes by SIR W. JONES.)

G



मणिमाचा।

मलम्।

एवं तन्मणिरत्नप्रभावात् तच उपसर्गेदुर्भिचमरकादिकं नासूत् । पूरु ।

अधाकरपचीयेभोंजें: ग्रचुन्ने सालतस्य प्रपौचे व्यापा-दिते भोजें: सचाकरो दारकामपचाय अपकान्त: । ५२।

तदपकान्तिदिनादारभ्य तत्रोपसर्गव्यालानाष्टछिमरका-द्युपद्रवा वभूवुः । त्रय यादववलभद्रोग्रसेनसमवेतोऽमन्त्रयत् भगवानुरगारिकेतनः कियदिदमेकदैव प्रचुरोपद्रवागमन-मेतदालोच्यताम् । प्रु ।

तर्जमा।

उसी समय उस मणिके प्रमाबसे दरकानगरीमे कोई उपद्रव, दुर्मिच, मरिका भय न था। ५१।

इस प्रकारसे कुच दिन व्यतीत होने पर अक्रूरके दोस्त भोजगण नामेने सात्वतके परपोते श्रचुन्नको मारडाला। दूस भयसे अक्रूर भोजगणके साथ दरका क्रोडुकर भाग गया। प्रूर।

जिस दिन अक्रूर भागा, उसी दिनसे दरकामे नाना-प्रकारका उपद्रव, सांपका भय, अनाष्टष्टि और महामारी होने लगी। उस्के बाद आक्रष्ण, बलराम, उग्रसेन और यादवलोग वगयरह एककट्ठे होकर सला करने लगे। के किस कारण यह सब देवी बिपत्त होने लगी, इसका निखय करना अवश्य है। ५३।

51 20

H

TRANSLATION.

51. During all this time, through the influence of this gem, Dwáraká enjoyed perfect freedom from wars, rebellions, famines, pestilences, &c.

52. Afterwards, the bhojas of Akrúra slew Satrughna, the grandson of Sátvata. Alarmed at this Akrúra fled from Dwáraká with them.

53. His departure was the signal for the prevalence of snake-bites, droughts, pestilences and other calamities. Krishna, Baladeva, Ugrasena and others met together and seriously addressed themselves to the ascertaining of the causes of the miseries which the people were groaning under.

অহ্বাদ।

তৎকালে সেই মণির প্রভাবে দ্বারকানগরীতে কোন উপদ্রব, তুর্ভিক্ষ ও মরকাদির ভয় ছিল না। ৫১।

এইরূপে কিছু দিন গতে অক্রুরের পক্ষ ভোজগণ সাত্বতের প্রপৌত্র শত্রুত্বকে বিনাশ করে। তাহাতে অক্রুর ভীত হইয়া ভোজগণের সহিত দ্বারকা পরিত্যাগপূর্ব্বক পলায়ন করিলেন। ৫২।

যে দিবস অক্রুর পলায়ন করেন, সেই দিবস হইতেই দারকাতে নানা উপসর্গ, সর্পাদিভীতি, অনারৃষ্ঠি ও মরকা-দির উপদ্রব হইতে লাগিল। তাহার পর শ্রীক্নয়ু, বল-দেব ও উগ্রদেন প্রভৃতি যাদবগণ একত্র সমবেত হইয়া মন্ত্রণা করিতে আরম্ভ করিলেন। কি কারণে অকস্মাৎ একেবারে এই সমস্ত দৈববিড়ম্বনা উপস্থিত হইতে লাগিল, তাহা নির্নপণ করা অবশ্য কর্ত্রব্য। ৫৩। 52

E Contraction

मणिमाला।

म्लम्।

इत्युक्ते अन्धकनामा यदुदृद्धः प्राइ अस्याक्रू रस्य पिता म्बफल्को नाम यच यचामूत् तच तच दुर्भिचमरकानादृष्ट्रा-दिकंच नाभूत् । ५४।

काशिराजस्य विषयेऽत्यन्तानाटछ्रां श्रुफल्कोऽनीयत। ततस्तत्त्त्तणादेव देवो ववर्ष। काशिराजस्य पत्न्राञ्च गर्भे कन्या पूर्व्वमासीत् । ५ू५।

सापि पूर्णेऽपि प्रसूतिकाले नैव निश्वकाम। एवच्च तस्य गर्भस्य दादश्य वर्षाण्यनिष्कृामतों ययुः। काशिराजस्तु ता-मात्मजां गर्भस्थामाइ पुचि! कस्मान्न जायसे निष्कृस्य ताम् आस्थं

तर्जमा।

सबने जब यह बात कही, तब अन्धक नामे एक ब्ट्ढा अदमी यदबंशीयोंनेसे बोला, देख, हमने देखा है, के अक्रूरका बाप फ़्रफल्क जिस जिस जगह रहा, वहां कभी दुर्भिच, मरी, और अनाटष्टि वगयरहका भय नहिं होता था। ५४।

एक समय काशिराजके राजमे अत्यन्त अनाइष्टि होनेसे खफल्कको उस जगह लेगये। अप्रफल्कके राजमे जातेही देवराज इन्ट्रने वर्षण प्रारस्भ कर दिया। उस समय काशिराजकी स्त्रीके गर्भने एक कन्या थी। प्रुप्र।

लेडुका पयदा होनेके समयके व्यतीत हो जानेके बादभी लेडुकी पयदा न ऊर्द्र। दूस प्रकारसे बारह वर्ष व्यतीत ऊए। तबभी कन्या पयदा न ऊर्द्र। एक रोज काणिराज गर्भस्थ कन्यासे बोले, हे पुचि! तुम किसवास्ते गर्भसे वाहर नहि होती, वाहर आत्रो, हम तुह्यारे सुख

53 20

TRANSLATION.

54. An old Jádava, Andhaka by name, said, "I have remarked that wherever Saphalka, the father of Akrúra, resides, the natural calamities cannot approach.

55. "Once the provinces of Kásiráj were suffering terribly from drought; but no sooner Saphalka entered the kingdom than the Thunderer* began to send down heavy showers. A daughter was then residing in the womb of the royal spouse.

56. She was not delivered of her burden even when the proper time had gone by. Twelve weary years passed in this manner. Once the king addressed his embryonic daughter thus : "O daughter, why are you yet delaying to come out? Do, I beseech you, come out. How my soul longs to see your dear face !

অন্থবাদ।

সকলে এই কথা বলিলে অন্ধকনামক এক জন যতুত্বদ্ধ কহিলেন, দেখ, আমি দেখিতেছি অক্রুরের পিতা শ্বফল্ক যে যে স্থানে অবস্থিতি করেন, সেই সেই স্থানে কথনই তুর্ভিক্ষ, মরক ও অনাব্বপ্তি প্রভৃতি উপদ্রব সংঘটিত হয় না । ৫৪ । এক সময়ে কাশিরাজের রাজ্যমধ্যে অত্যন্ত অনাব্বপ্তি উপস্থিত হওয়াতে শ্বফল্ককে তথায় লইয়া যায় । শ্বফল্ক রাজ্যমধ্যে প্রবিষ্ট হইবামাত্র দেবরাজ ইন্দ্র প্রচ্ন বর্ষণ আরম্ভ করিলেন । তৎকালে কাশিরাজের পত্নীর গর্ভে

এক কন্থা অবস্থান করিতেছিল। ৫৫।

প্রসব সময় উত্তীর্ণ হইলেও সেই কন্থা গর্ভহইতে নিঃস্থত হইল না। এইরপে দ্বাদশ বর্ষ গত হইল,তথাপি কন্যা ভূমিষ্ঠ হইল না। একদা কাশিরাজ সেই গর্ভস্থ কন্যাকে সম্বোধন করিয়া কহিলেন, পুজ্রি! তুমি কি নিমিত্ত ভূমিষ্ঠ হইতেছ না ? গর্ভ হইতে নির্গত হও, আমি তোমার মুখচন্দ্র

* Indra, the supreme god in the Vedic hierarchy, the Hindu Zeus.

54

मणिमाला।

मूलम्। ते द्रष्ठु मिच्छामि । खत्राच्च मातरं किमिति चिरं क्षे श्र यसि इत्युका सा गर्भस्थैव व्याजचार तात ! यद्येकैकां गां दिने दिने वाद्धाणेस्थ: प्रयच्छसि तदाच्च मन्यैस्त्रिभिवर्षे रस्ताद् गर्भात् तावदवम्धं निष्कु मिष्यामीति । एतच तदचनमाकर्ण्य राजा वाद्धाणाय दिने दिने गां प्रादात् । सापि तावता कालेन जाता । ततस्तस्याः पिता गान्दिनीति नाम चकार । ताच्च गान्दिनीं कन्यां श्रुफल्कायोपकारिणे ग्रडागतायार्घ प्रभूतां प्रादात् । साच गान्दिनौ प्रतिदिनं यावज्जीवं वाद्धाणाय गां दत्तवती । तस्यामयमक्रूरः श्रुफल्कात् जन्न्रे । तस्वैवं ग्रुणमियुनादुत्पत्तिः । प्रे ह्

तरजमा।

देखनेको बज्जन् व्याकुल हैं, और एतने दिन किसवाक्ते अपनी माको गर्भभार धारण करनेका क्रुग्न देती हो। काशि-राजका द्रस प्रकारका बचन शुनकर कन्या गर्भमेसे बोली, पिता ! आप अगर आजसे हर रोज एक एक बाह्मणको एक एक गौ दान करें, तो उसके तिन बरस बाद में गर्भसे बाहर आउंगी। काशिराजने गर्भस्थित कन्याके कहनेके अनुसार प्रतिदिन बाह्मणको एक एक गौ दान करने लगे। द्रस प्रकार तिन वरस व्यतीत होनेसे कन्या उत्पन्न ऊर्द्र । दिन दिन गौ दान करनेसे कन्या उत्पन्न ऊर्द्र ॥ द्रस कारण उसका नाम गान्दिनी रक्षा गया। जिस समय खफल्कके आनेसे अनादृष्टि दूर ऊर्द्र, उस समय उसको गान्दिनी कन्या दान किया। वह गान्दिनीभी प्रतिदिन बाह्मणको एक एक गौ दान देती थी। अफल्कके बीजसे गान्दिनीके गर्भमे अन्नूरका जन्म है। एसे युणसम्पन्न स्तीपुरुषसे अन्नूर जन्मे हैं। प्रेह ।

6A

55 20

TRANSLATION.

Why are you, again, inflicting so much hardship upon your mother?" "If you, dear father," replied the daughter, "henceforth daily offer a cow to a Bráhmin, I shall be born only after three years." Kásiráj complied with this. After three years had thus passed, the daughter saw the light. Having regard to the unique circumstances that preceded her birth, her father called her Gándini.* By way of rewarding Saphalka, the king bestowed Gándini on him. She also daily bestowed a cow on a Bráhmin. This lady bore her husband Akrúra. Sprung from such parents, Akrúra should naturally partake of their wonderful virtues.

অন্থবাদ।

দর্শনের জন্য অতি উৎস্থক হইয়াছি। এবং এত দিন ধরিয়া স্বজননীকে কি কারণে এই গর্ভভার-বহন-ক্লেশ দিতেছ ? কাশিরাজ এইপ্রকার বাক্য বলিলে সেই কন্যা গর্ভ হইতে বলিল, পিতঃ! আপনি যদি অদ্যাবধি প্রতিদিন ব্রাহ্মণদিগকে এক একটা গো দান করেন, তাহা হইলে আর তিন বৎসর পরেই আমি ভূমিষ্ঠ হইব। কাশিরাজ গর্ভস্থ কন্যার কথানু-সারে প্রতিদিন ব্রাহ্মণদিগকে এক একটা গো দান করিতে লাগিলেন। এইরপে তিন বৎসর অতিক্রান্ত হইলে কন্যা ভূমিষ্ঠ হইল। দিন দিন গো দান করাতে কন্যা প্রসূত হইয়াছিল বলিয়া কন্যার নাম গান্দিনী রাখিলেন। যৎকালে শ্বফল্কের আগমনে রাজ্যমধ্যে অনার্ষ্টি নিবারিত হয়, সেই সময় তাঁকে গান্দিনী কন্যা সম্প্রদান করেন। সেই গান্দিনীও প্রতি দিন ব্রাহ্মণদিগকে এক এক গো দান করিতেেন। শ্বফল্-কের উরসে এবং সেই গান্দিনীর গর্ভে অক্রুরের জন্ম হয়। এই প্রকার গুণসম্পন্ন দম্পতী হইতে অক্রুরের জন্ম । ৫৬।

* The word, through the particle π_{T} , alludes to the singular circumstance of the offering of kine.



मणिमाला।

मूलम्।

तत् कथमसिम चपकान्तेऽच मरकदुर्भिचाद्यपट्रवा न भवि-ष्यन्ति । तदयमानीयतामिति खलमचाति युणवत्यपराधान्वे-षणेन इति । ५७।

यदुष्टद्वस्यान्धकस्य एतद्वचनमाकर्ण्यं केशवोग्रसेन-वलभद्रपुरोगमेयदुभिः कतापराधतितिच्चाभवमभयं दत्त्वा श्वाफल्किः स्वपुरमानीतः । तच चागत एव तत्स्वस्वमन्तक-मर्णेः चनुभावादनाष्टष्टिमरकदुभिच्च व्यालाद्युपद्रवः श्रशाम । कृष्ण्यं चिन्तयामास स्वत्यमेतत् कार्णं यद्यं गान्द्रिन्यां श्वफल्केनाकूरो जनितः सुमहांचायमनाष्टष्टिदुर्भिचमरका-द्यपश्मनकारी प्रभावः । प्रूप्त ।

तर्जमा।

जब के ऐ से चक्रूर दरकाकें को ड़कर गये, तब क्यं उस जगह मरी, चौर दुर्भिच नहिं होगा। हमारी सलाहमे चक्रूरको फेर इस जगह लाना मनासिफ है। चगर चक्रूरने महा चपराधमी किया है, परन्तु जिसका ऐसा चधिक गुण है, उसका चपराध पकड़ना उचित नहिं। प्रू ।

क्रष्ण, उग्रसेन और बलदेव आदि यांदवगण अन्धकती यह बात ग्रुनकर खफल्क-पुच अकरका पहिला अपराध चमा करके अभय देकर फेर दरकामे लाए। अकरके नगरमे प्रवेश करते हो उस स्थमन्तक मणिके प्रभावसे अना-टष्टि, मरी, दुभिच्च और सांपका भय सब निवारण हो गया। आठाष्ण अकरकी यह बढ़ाद्द देखकर आखय्य होकर चिन्ता करने लगे, के अकर गान्दिनोके गर्भमे खफल्कके बीजसे पयदा इए हैं, यह बइत योड़ा कारण है, बलके अनाट्ट हि, दुभिच्च और मरीका टूर होना बइत् भारी है। पूट।

Ľ

TRANSLATION.

57 50

H

57. "What wonder, then, that natural calamities should befall the land on which he has turned his back? My voice is for bringing him back. Although I grant that he has committed wrong, yet what may not be forgiven to such as he?"

58. Agreeably to this sage advice, Kes'ava, Ugrasena, Baladeva and other Jádavas, brought the son of Saphalka over to Dwáraká, condoning his past transgressions. Anon the drought, plague, famine, snake-bites, &c. ceased to rage by virtue of Syamantaka, which was with him. The sudden change led Krishna to reflect :—"Akrúra's having sprung from the loins of Saphalka and the womb of Gándini," thought he, "is no sufficient reason. To a certainty, this extraordinary phenomenon must owe its origin to a far more potent cause.

অন্থবাদ।

যথন সেই অক্রুর এই দ্বারকা পরিত্যাগ করিয়া গিয়া-ছেন, তখন কেনই বা এখানে মরক ছর্ভিক্ষাদি না হইবে ? আমার বিবেচনায় অক্রুরকে পুনরায় এখানে আনয়ন করা কর্ত্তব্য। যদি চ অক্রুর মহা অপরাধ করিয়াছেন বটে, কিন্তু যাহার এত অধিক গুণ, তাহার অপরাধ ধর্ত্তব্যই নহে। ৫৭।

কেশব, উগ্রদেন, বলদেব প্রভৃতি যাদবগণ যতুরদ্ধ অন্ধ-কের এই যুক্তিযুক্ত বাক্য শ্রবণ করিয়া শ্বফল্কস্থত অক্রুরের পূর্ব্বক্নত অপরাধ ক্ষমা করিয়া অভয় দিয়া প্রান্যায় তাঁহাকে দ্বারকায় আনয়ন করিলেন। অক্রুর নগরে প্রবেশ করিবামাত্র তাঁহার নিকটস্থিত স্তমন্তকপ্রভাবে অনার্ষ্টি, মরক, হুর্ভিক্ষ ও সর্পাদির উপদ্রব প্রশমিত হইয়া গেল। জ্রীক্নয় অক্রুরের এই অসাধারণ ক্ষমতা দর্শনে বিস্মিত হইয়া চিন্তা করিতে লাগিলেন। অক্রুর গান্দিনীর গর্ভে এবং শ্বফল্কের উর্সে জন্মিয়াছেন, ইহা অতি সামান্য কারণ, কিন্তু এই অনার্ষ্টি, দুর্ভিক্ষ ও মরকাদি নিরাকরণপ্রভাব অত্যন্ত গুরুত্ব। ৫৮। 58

मणिमाला।

म्लम्।

तन्नूरनमस्य सकाशे स महामणिः स्यमन्तकाखासिष्ठति। तस्य ह्येवंविधाः प्रभावाः अूयन्ते। अयमपि यज्ञादनन्तरं अन्यत् क्रत्वन्तरं तस्तात् यज्ञान्तरं यजतीति। अस्तोपा-दानञ्चास्य। असंशयमचासौ वरमणिस्तिष्ठतीति छताध्यव-सायोऽन्यत् प्रयोजनसुद्दिस्य सकलयादवसमाजमात्मगेहे एवाचीकरत्। तत्र चोपविष्टेषुखिलेषु यादवेषु पूर्व्यप्रयोजनः सुपन्यस्य पर्य्यवस्तिते च तस्तिन् प्रसङ्गागतपरिष्ठासकया-मकूरेण सष्ठ छत्वा जनाईनस्तमक्रूरमाष्ठ। प्रूट।

तर्जमा।

इमको निखय मालुम होता है, के अक्रूरके पास वह स्वमन्तक महारत है। हमने गुना है, उसके प्रभावसे यह सव उपद्रव ग्रान्त होता है। अक्रूर एक यज्ञके बाद उसरा यज्ञ, तिसरा यज्ञ, इसीतरह हमेसा करता रहता है। इसकी दौलतभी ऐसी नहिंहे, जिसके द्वारा एतने यज्ञ हो संकें। हमसे यही निखय मालुम होता है, वह स्वमन्तक मणि इसीके पास है। अीक्रव्णाने मनही मनमे यह निखय करके एकदिन अपने मकानपर एक काम ठहराकर सव यादवगणको एकच किया; और उस कामके आखेर हो जानेके वाद आक्रिष्ण अक्रूरके साथ तरह तरहकी दिल लागि करके वोले। प्रूट।

59 80

TRANSLATION.

59. "It is odds he has got the magical Syamantaka with him. I have heard people attribute wonderful properties to the gem, whereby natural calamities can be removed. What, again, enabled Akrúra to celebrate jajnas* without number, if he were not furnished with heaps of gold by Syamantaka?" Having come to this conclusion, Krishna brought together the whole body of the Jádavas on some occasion. The avowed purpose of the meeting having been accomplished, Krishna began to talk with Akrúra in a light vein. The conversation having been brought to the intended pass, the former said :—

অহ্বাদ।

আমার নিশ্চয় বোধ হইতেছে অক্রুরের নিকট সেই স্যমন্তক মহারত্ন আছে, আমি শুনিয়াছি তাহারই প্রভাবে এই সকল উপদ্রব প্রশমিত হয়। অক্রুর এক যজ্ঞের পর অপর যজ্ঞ, তাহার পর অন্য যজ্ঞ, এইরপে অনবরতই যজ্ঞান্মন্তান করে, ইহার বিভব ত এত অধিক নহে, যাহা দ্বারা এতাধিক যজ্ঞ সম্পন্ন হয়। ইহা দ্বারাও নিশ্চয় বোধ হইতেছে যে, সেই স্যমন্তক ইহারই নিকট আছে। জ্রীরুষ্ণ মনে মনে এইরপ নিশ্চয় করিয়া কোন অন্য একটা উপলক্ষে নিজালয়ে সমুদায় যাদবকে সমবেত করিলেন। যাদবগণ উপবিষ্ট হইলে যে উপলক্ষে তাহাদিগকে আহ্বান করা হইয়াছিল, তাহা শেষ হইলে জ্রীরুষ্ণ প্রস্কা তাহাদেগকে বলিলেন। ৫৯।

* Vide anté.

0	9-
63	60
0	0

मगिमाला।

म्लम्।

दानपते ! जानीम एव वयं यथा शतधन्वना ऋखिल-जगत्मारभूतं स्वमन्तकर लंभवतः सका शे समर्पितं । तदेत-द्राष्ट्रीपकारकं भवतः सका शे तिष्ठतीति तिष्ठतु सर्व्व एव वयं तत्प्रभावफलभुजः किन्ते ष वलमद्रोऽस्पाना शक्तितवान् । तदस्तत्प्रीतये दर्श्य इत्यभिह्तिः सरतः सोऽचिन्तयत् । किमचानु छेयम् । उप्रया चेत् व्रवीस्य इं तत्केवलास्वर-तिरोधानमन्विष्यन्तो रत्नमेते द्रच्यन्तीति उप्रतोऽन्वेषणं न चेममिति संचिन्ता तमखिल जगत्का रणभूतं नारायणमा हा-करूरः भगवम् ! ममैतत् स्यमन्तकमणिरत्नं श्रतधनुषा मर्मापतम् । ६० ।

तर्जमा।

हे दानपते ! शतधन्वाने जो चापके पास सव जगत का सार खमन्तक मणि रक्खा था, सो इम जानते हैं, वह मणिरत राजका बज्जत उपकारी है, चगर वह चापके पास है, रहे, हम सवही उसका फलभोग करते हैं, मगर वलदेव हमारेही पर हमेसा सन्देह करते हैं । दूसीवाक्त हमारे सन्तोषके लिये वह मणि एकवार देखला दो। त्रीडाव्याकी यह बात शुनकर चक्रूर मनही मनमे चिन्ता करने लगे, के मणि तो हमारे पासही है, दूस समय केया कहें। चगर कुठ कहें, तो यह पता लगाकर हमारे कापड़ें। मे-से नेकाल लेगे, चौर सब देखेंगे। यह चगर तलास करें, तो हमारा चाच्छा न होगा। चक्रूरने यह सव बात विचार कर सकल जगत्के कारणस्ररूप नारायणसे वोले, मगवन् ! शतधन्वाने हमको स्वमन्तक मणि दि थी। ६०।

61 20

TRANSLATION.

60. "O Lord of Dánavas," that Satadhanvá has kept with you the incomparable Syamantaka is wellknown to us. That gem is a blessing to the land ; and we don't grudge you the possession of it: enough that it is with one of us. But Baladeva suspects me of having appropriated it—in order to disabuse him of this false notion, please show it me once before this assembly." In this dilemma, Akrúra thought, "The gem is with me: now, what shall I say? If I deny, they will search my body, and will surely find it out. Nor will this be a happy circumstance for me. O Lord," he then said to the Great Cause of this Universe, "Satadhanvá did lodge the jewel with me.

অনুবাদ।

দানপতে! শতধরা যে, আপনার নিকট সেই সমস্ত জগতের সারভূত স্যমন্তক মণি রাথিয়াছিলেন, তাহা আমরা জানি। সেই মণিরত্ন রাজ্যের অশেষ উপকারী, তাহা আপনার নিকট আছে, থাকুক, আমরা সকলেই ত তাহার ফলভোগী,বলদেব কিন্তু আমার প্রতিই সর্বদা সন্দেহ করেন, অতএব আমার সন্তোষের জন্য সেই মণিটী একবার দেখান। জ্রীকুঞ্চের এইরূপ বাক্য গ্রবণ করিয়া অক্রুর মনে মনে চিন্তা করিতে লাগিলেন, মণি ত আমার নিকটেই রহিয়াছে, এক্ষণে কি বলি ? যদি মিথ্যা বলি, তাহা হইলে ইহারা অন্থসন্ধান করিবে, বন্ত্রমধ্য হইতে বাহির হইয়া পড়িবে, সকলেই দেখিতে পাইবে। ইহারা যদি অন্বেষণ করে, সেটা আমার পক্ষে মঙ্গলজনক হইবে না। অক্রুর এই সকল বিষয় পর্য্যালোচনা করিয়া সকল জগতের কারণ স্বরূপ নারায়ণকে বলিলেন। ভগবন্! শতধন্বা আমার নিকট এই স্যমন্তক মণি সমর্পণ করিয়াছিলেন। ৬০।

* Hindu 'Titans who warred on' the Suras (gods.)

10°	
33	62

मणिमाला।

मूचम्।

अपगते च तस्तिन् अद्य छः परछो वा भगवान् मां याचिष्यतीति छतमतिरतिकच्छ्रेणेतावन्तं कालमधारयम् अस्य च धारणक्ती शेनाइम शेषोपभो गेषु सजि़मानसी न वेद्मि स्र स्र खकलामपि । ६१ ।

एतावन्माचमश्रेषराष्ट्रोपकारि धारयितुं न शकोतीति मां भगवान् मंखत इत्यात्मना न चोदितम् । ६२ ।

तदिदं स्यमन्तकरतः ग्रह्यताम् दूच्छ्या यस्याभिमतं तस्य समर्प्यताम् । ततः सोऽधरवस्त्रनिगोपितातिलघु कणक-ससुद्गकं प्रकटोक्वतवान् । ६३ ।

तर्जमा।

भतधन्वाके मरने बाद चाज, या काल, या परशें जरुर चाप इमसे यह मणि माज़ते, यह विचार करको मैंने बऊत् कष्टसे एतने दिन रचा किया। इसके रखनेसे इमको बड़ा लोभ ऊया है। मैं सब उपसोगसे बच्चित होकर सब खख कोड़ दिया। ई१।

पाके चाप मनमे कहेगें के चकूर चयोग्य है, के समु-दाय राजका चाग्रेष मज़ल्ल करनेवाली मणिको रख न सका। इस भयसे एतने दिनतक मैंने चापके बिना मांगे दिया नही। ६२।

दूस समय आप यह स्यमन्तक मणि सुत्मे लेकर जिसको मनासिफ हो, उसको दिजौए | अक्रूरने कृष्णके यह बात कहकर अपने कापड़े से एक क्रोटौसी सोनेकी डिविया बाहर नेकाली | इ.३ |

63 \$

TRANSLATION.

61. "I have kept it in my possession so long, in the hope of bestowing it on you after the death of Satadhanvá. Alas! sir, it has been a thorn in my side.

62. "I did not give it to you so long, lest you should think me incapable of bearing about a gem of such mighty virtues.

63. "Now accept it, sir, and bestow it on whomsoever you please." Having delivered himself thus, Akrúra took out a small golden box from his dress.

অহ্বাদ।

শতধন্বার মৃত্যুর পর আজ হউক, কাল হউক, বা পরশ্বই হউক, অবশ্ঠই আপনি এক দিন আমার নিকট চাহিবেন, এই ভাবিয়া আমি অতি কফ্টে এতকাল ইহা রক্ষা করিয়াছিলাম, ইহার ধারণে আমার এত রেশ হই-য়াছে যে, আমি সমুদায় উপভোগে বঞ্চিত হইয়া কাল-যাপন করিতেছি, স্থথের লেশমাত্রও অন্থভব করিতে পারি নাই ৷ ৬১ ৷

পাছে আপনি মনে করেন, অক্রুর এমনই অক্ষম যে, সমুদায় রাজ্যের অশেষ উপকারক মণিরত্নও ধারণ করিতে পারিল না, এই ভয়ে এতদিন আমি স্বয়ং উপযাচক হইয়া আপনাকে ইহা সমর্পণ করি নাই। ৬২।

এক্ষণে সেই স্থমন্তক রত্ন গ্রহণ করিয়া যাঁহাকে অভি-মত হয়, তাঁহাকেই সমর্পণ করুন। অক্রুর কৃষ্ণকে এই কথা বলিয়া নিজ পরিধেয় বস্ত্রমধ্য হইতে একটী ক্ষুদ্র স্থবর্ণ কৌটা বাহির করিলেন। ৬৩।

2	00	
6	De	0
0	00	6

मगिमाला।

म्लम्।

ततच निष्कृाम्य स्यमन्तकमर्णितच यदुसमाजे सुमोच। मुक्तमाचेच तेनातिकान्तत्रा तदखिलमास्थानसुइग्रोतितम् । ६४।

त्रयाहाक्रूरः स एष मण्पिः ग्रतधन्वनासाकं समर्पितः यस्यायं स एनं ग्रज्जात्विति। तन्मणिरत्नमालोक्य सर्व-यादवानां साधु साध्विति विस्तितमनसां वाचोऽत्रूयन्त। तमालोक्य ममायमच्युतिनैव सामान्यः समन्वीप्सितः इति वलसद्रः सस्पु होऽभवत्। ६५ू।

तर्जमा।

उसके बाद अक्रूरने उस सोनेकी डिवियासे वह स्यम-न्तक मणि नेकाल कर उपस्थित यादवगणको देखलाया। वाइर नेकलते ही उसके दमक चमकसे तामाम समामग्रडल प्रकाश्मान हो गया। ई8।

बाद उसके अकूर वोले, के शतधन्वाने इमारे पास जो मणि रक्खी थी, वह मणि यही हैं। यह जिसकी चिज हो, वह लेवे। यादवगण उस मणिके दर्शन करते ही बऊत आवर्थ से चारों तरफसे बाहवाका शब्द उच्चारण करने लगे, वलदेब देखकर उस मणिकेवास्ते वज्जत आपक-चित्त होकर मनही मनमे कहने लगे, के छष्णने पहिले ही कहा है, के यह मणिरत हम दोनो आदमीकी होगी। ६५।

65

×

TRANSLATION.

64. And laid Syamantaka before the assembled Jádavas. The gem sent a gleam far into the bosom of the apartment.

65. "Listen, princes," said Akrúra, "this is the gem which Satadhanvá lodged with me. Let him who is its rightful owner claim it." The Jádavas were struck with surprise at the sight, and were lavish in their praises. Baladeva secretly pined for possessing it, and thought within himself, "Krishna promised formerly that this gem should be our common property."

অন্থবাদ।

পরে অক্রুর সেই কোটা হইতে স্থমন্তক বাহির করিয়া উপস্থিত যাদবগণকে প্রদর্শন করিলেন। বাহির করিবামাত্র তাহার প্রভায় সমুদায় সভামণ্ডপ আলোকিত হইয়া উঠিল। ৬৪।

অনস্তর অক্রুর কহিলেন, শতধন্বা আমার নিকট যে মণি রাথিয়াছিলেন, সেই মণি এই; ইহা যাঁহার বস্তু, তিনি গ্রহণ করুন। যাদবগণ সেই মণি দর্শনমাত্র অত্যন্ত বিশ্বয়ের সহিত চতুর্দ্দিক হইতে সাধুবাদ প্রদান করিতে লাগিলেন। বলদেব দেথিয়া তাহার প্রতি অত্যন্ত আসক্তচিত্ত হইয়া মনে মনে কহিতে লাগিলেন, জ্রীকৃষ্ণ পূর্ব্বে অঙ্গীকার করিয়াছেন যে, এই মণিরত্ন আমাদিগের উভয়ের সম্পত্তি হইবে। ৬৫।

L



मगिमाता।

मूलम्। समैवेदं पिटधनमित्यतीव च सत्यभामापि स्पृच्च्या-ञ्चकार । वलसत्याननावजोकनात् कष्णोऽप्यात्मानं चका-न्तरावस्थितमिव मेने । ६६ ।

सकलयादवसमच्चचाकूरमाच एतद्वि मणिरतमात्न-शोधनायेषां यदूनां दर्शितम्। एतच्च नम वलभद्रस्य च सामान्यं पित्वधनच्चेतत् सत्यभामाया नान्यस्य। ६७।

एतच सर्व्वेकालं गुचिना ब्रह्मचर्य्यगुणवता ध्रियमाण-मग्रेषराष्ट्रस्टोपकारकम् चग्रुचिना ध्रियमाणमाधारमेव इन्ति । ६८ ।

तर्जमा।

सत्यभामा मनमे कइने लगी, के यह इमारे वापकी चिज है, यह इमको ही मिलना चाहिये। ठाष्ण वलदेव चौर सत्यभामाके सुखका माव देखकर अकुएकी तरफ हो गये। ६६।

वाद उस्के श्रीकृष्ण समुदाय यादवगणके सामने वोले, के देख, सैंने केवल अप्नै कल क्वके दूर करणेकेवास्ते सवको यह मणिरत देखलाया। पहिले मैंने कवुल किया था, के यह मणिरत बलदेवकी और हमारे साभेकी चिज होगी, लेकिन यह सत्यभामाके वापके धन है, इस कारण सत्यभामाहीकी मिलना उचित है, दुसरेको लोभ करणा मनासिफ नहिं। ६७।

यह मणि पविच और व्रह्मचर्ये व्रती होकर धारण करणेंसे राजका मङ्गल करणेवाला है, लेकिन अपविच अदमीके धारण करणेसे उसका नाथ करणेवाला है। ६८।

67 80

TRANSLATION.

66. Satyabhámá thought that since Syamantaka was the property of her father, it should now be hers. Seeing the countenances of Baladeva and Satyabhámá, Krishna became embarrassed.

67. Then addressing Akrúra, he said, "You must know, Sir, that I have shown this gem, only to remove the stain which had attached itself to my reputation. Formerly I promised that it should be the joint property of Baladeva and myself. But, it is *Satyabhámá's* paternal possession, and now ought to be hers. None else should covet it.

68. "When a man who is clean and who is engaged in *Brahmacharjya*,* wears it, it conduces to his good; but it is destructive to an unclean person.

অহুবাদ।

সত্যভামা মনে করিতে লাগিলেন ইহা যখন আমার পিতৃ-সম্পত্তি, তখন আমারই হওয়া উচিত। রুষ্ণ বলদেব ও সত্যভামার মুখভঙ্গি দর্শনে আপনাকে চক্রান্তপতিত ব্যক্তির ন্থায় বিবেচনা করিতে লাগিলেন। ৬৬।

পরে শ্রীকৃষ্ণ সমুদায় যাদবের সমক্ষে অক্রুরকে সম্বোধন করিয়া বলিলেন, দেখুন, আমি কেবল নিজ কলঙ্কাপ-নোদনের জন্মই এই মণিরত্ন সকলকে দেখাইলাম। পূর্ব্বে আমি স্বীকার করিয়াছিলাম যে, এই মণিরত্ন বলদেব ও আমার সাধারণ সম্পত্তি হইবে, কিন্তু ইহা সত্যভামার পিতৃধন, অতএব সত্যভামারই হওয়া উচিত; অন্যের ইহাতে লোভ করা বিধেয় নয়। ৬৭।

এই মণি পবিত্র ও ব্রহ্মচর্য্যব্রতী হইয়া ধারণ করিলেই রাজ্যের মঙ্গল-জনক হয়, কিন্তু অপবিত্র ব্যক্তিকর্ভৃক ধৃত হইলেই তাহার মৃত্যুর কারণ হইবে। ৬৮।

*The condition of a young Brahmin or student in the first period of his life, involving much rigorous prayer and fasting. Vide The Commentaries.

68 68

मूलम् । चतः च्रह चाख घोदशस्त्रीयद्यस्परिग्रहात् चयममर्थो धारणे । ६८ ।

कथच्चैतत् सत्यभामा स्वीकरोतु । आर्थ्येण वलभद्रेणापि मदिरापानाद्यशेषोपभोगपरित्यागः कथं कार्य्यः । तदयं यदुलोकोऽयं वलभद्रोऽईं सत्या चुत्वां दानपते प्रार्थयामः एतद्भवानेव धारवितुं समर्थः । त्वत्स्यच्चास्य राष्ट्रस्योपकारकं तद्भवानशेषराष्ट्रोपकारनिमित्तमेतत् पूर्व्ववत् धारयतु । त्वयान्यया न वक्तव्यमित्युक्ते दानपतिः तथेत्युक्ता जग्राष्ट ।

तर्जमा ।

द्रम चालतमे किस तरच्से उसके धारण करणेके में योग्य ऊं। केसेवास्ते के मेरी घोल चाजार स्त्री हैं। इट ।

सत्यभामाभी इस्को किम तरहमे घारण करेगी। वह केया इस मणिकेवास्ते वन्ह्सचय्य व्रत धारण करेगी। चौर वलदेवभी इस मणि धारण करणेकेवास्ते सुरापान चादि सव भोगको त्याग करणेको सामर्थ होगे ? हे दाता चक्रूर! चौर किसीको देनेकी में तजविज नहिं कर्ता। यही यादवगण, वलदेव, सत्यभामा चौर में सवलोग कहते हैं, के चादवगण, वलदेव, सत्यभामा चौर में सवलोग कहते हैं, के चाय सवराजके मङ्गलकेवास्ते यह स्यमन्तक मणि धारण करें। यह चापके पास रहनेसे राजका मङ्गल होगा। इस कारण चाप धारण करें। दूस्के सेवाय चौर दुसरी वात खेयाल न करें। चीठाणाकी यह वात पुन-कर चक्रूर वोले वज्जत् चाच्छा। हमारेही पास रहे, यह कहेकर वह मणि चाप उन्ह्याने ले लिया।

69 80

A.

TRANSLATION.

69. "How then can I wear it, considering that I have no less than sixteen thousand queens?

70. "How again can Satyabhámá use it? Shall she engage in *Brahmacharjya* for the sake of the jewel? Shall the respected Baladeva renounce the convival cup and other pleasures in order that he could grace his person with *Syamantaka*? O Lord of Dánavas, no use of my endeavours. Here are these Jádavas, here is Baladeva, here is Satyabhámá, and here am I. We all beseech you, do you wear the gem for the good of this kingdom. "Pray, do not disregard this advice." "Be it so"

অহুবাদ।

এরূপ অবস্থায় আমি কিরূপে ইহা ধারণ করিতে সক্ষম হই ? যেহেতু আমার যোড়শসহস্র মহিষী। ৬৯।

সত্যভামাই বা কি প্রকারে ইহা ধারণ করিবেন ? তিনি কি মণির অন্থরোধে ভ্রহ্মচর্য্য-ভ্রতাবলম্বন করিবেন ? এবং আর্য্য বলদেব কি এই মণি ধারণের উদ্দেশে স্থরাপানাদি সমস্ত উপভোগ পরিত্যাগ করিতে সমর্থ হইবেন ? দান-পতে ! অপর চেস্টায় প্রয়োজন করে না, এবং যাদবগণ,এই বলদেব, এই সত্যভামা এবং আমি, আমরা সকলেই আপ-নাকে অন্থরোধ করিতেছি, সমস্ত রাজ্যের কল্যাণের জন্য এই মণিরত্ন আপনি ধারণ করুন ৷ ইহা আপনার নিকট থাকিলেই রাজ্যের মঙ্গলকর হইবে ৷ অতএব আপনিই ধারণ করুন, ইহার অন্থথা করিবেন না ৷ শ্রীক্নফ্ষ এই কথা বলিলে অক্রুর তথাস্ত বলিয়া সেই মণিরত্ন গ্রহণ করিলেন ৷



मगिमाला।

मू लम्।

तन्मचामणिरतः ततः प्रभृति चाक्रूरः प्रकटेनैवातीव तेजसा जाज्वल्यमानेनात्मकण्टासक्तेनादित्य इवांग्रुमाली चचार।७०।

्रत्येतां भगवतो मिथत्राभिश्वक्तिचालनां यः स्नरति न तस्य कदाचिद्खापि मिथत्राभिशक्तिभैवति खव्याइतेन्द्रिय-खाखिलपापमोच्चमवाप्नोति । ७१ ।

इति खमन्तकोपाखानम्।

तर्जमा।

उसीदिनसे अक्रूर बच्च मचारत मणि अपने गलेमे पचरकर अत्यन्त तेजः पुद्ध कलेवर दुस्रे सूर्य्यके समान फिरने लगे। ७०।

जो खदमी भगवान झौक़ष्णका यह फुट कलङ्क टूर होनेको कथा ग्रुनेगा, खथवा मनमे लावेगा, कभी थोड़ाभी कलङ्क उस्को न छुये गा, खौर उस्की सब दून्द्रियभी ठिक रहेंगी, खौर शेषमे वह खदमी सब पापसे सुक्त होकर वैकुण्ड वास करेगा। ७९।

खमन्तकका वयान आखर।

71 80

E

TRANSLATION.

said Akrúra, who continued to wear Syamantaka, and ranged Dwáraká like a second sun."

71. When a man remembers the false accusation of Krishna mentioned above, he can bear with equanimity lesser false charges against him, and is finally absolved from all sin.

End of the History of Syamantaka.

অন্নবাদ।

সেই অবধি অক্রুর সেই মহারত্ন নিজকণ্ঠে ধারণ করিয়া অত্যন্ত তেজঃপুঞ্জকলেবর দ্বিতীয় সূর্য্যের ন্যায় বিচরণ করিতে লাগিলেন। ৭০।

যে ব্যক্তি ভগবান জ্রীক্নফের এই মিথ্যা কলঙ্কাপনোদন-ব্বত্তান্ত স্মরণ করে, কখনই তাহাকে সামান্য মিথ্যাপবাদ স্পর্শও করিতে সমর্থ হয় না, তাহার ইন্দ্রিয় সমুদায় অবিকৃত থাকে এবং পরিশেষে সে ব্যক্তি সমুদায় পাপ হইতে নিষ্কৃতি লাভ করে। ৭১।

ইতি স্তমন্তকোপাখ্যান।



मणिमाला।

नवरत्नानि ।

मूचम्। वज्रमाणिक्यवे दूर्थं मुक्तागोमेदविद्रुमं। मरकतं पुष्परागञ्च नीचच्चेति ययाक्रमं॥

तर्जमा ।

हीरा, माणिक, लयुनिश, मोति, गोमेरक, मुङ्गा, पाझा, पोखराज, और नोलम वा नीला यही नौ प्रकारका रतके नवरत कहते है।

TRANSLATION.

The Diamond, Ruby, Catseye, Pearl, Zircon, Coral, Emerald, Topaz and Sapphire are called the nine precious gems.

অন্থবাদ।

হীরক, মাণিক্য, বৈদূর্য্য অর্থাৎ লগুনিয়া, মুক্তা, গোমেদ, বিদ্রুম অর্থাৎ প্রবাল, মরকত অর্থাৎ পানা, পুষ্পরাগ অর্থাৎ পুখ্রাজ এবং ইন্দ্রনীল অর্থাৎ নীলম্ এই নয় প্রকার রত্ন নবরত্নমধ্যে পরিগণিত। ৭২।

ees for the Boon

600

100

GENERAL REMARKS.

HE taste for gems and precious stones can be traced to the most remote ages, and though it is now a hopeless task to point out the country where they were first discovered, or the nations by whom they were first worn, there are many circumstances which materially help us in concluding that India was their birth-place. For every luxury and comfort that man enjoys, for everything rare and beautiful in nature, for every delight that charms his senses and gratifies his vanity, for perfection in plants, flowers, perfumes, animals, birds, insects, music,* gems, pearls, &c., we are indebted to the East.

Mention is made of gems and jewels in the earliest writings of the Hindus. The Vedas speak of a place illuminated by rubies and diamonds which gave out a light as refulgent as that of the planets. Precious stones play a prominent part in the mythologies of the Hindus; in their traditions, poems and legends. In the two great epics of Hindustan, the Rámáyana and the Mahábhárata, frequent

* The country which affords us the most ancient memorials of a perfect language, of an advanced civilization, of a philosophy where all directions of human thought find their expression, of a poesy im-mensely rich in every style, and of a musical art corresponding with the lively sensibility of the people,—India appears to have given birth to bow-instruments, and to have made them known to other parts of Asia, and afterwards to Europe.—F. J. FETIS. There is nothing in the West which has not come from the East.—

F. J. FETIS.

J

GENERAL REMARKS.

6 3 74

mention is made of stones and pearls with which the kings and the people of the period used to decorate their persons. Amongst the other ancient nations of the East, the Persians had a great taste for gems. The Phœnicians are known to have brought from the East precious stones and jewels to Egypt and Greece. The Egyptians are noted to have been very fond of them. The belles of ancient Egypt used to adorn their brows with diadems of Pearls, and their throats with necklaces of four rows of precious stones. The fingers of the men were loaded with rings. Five or six centuries before Christ, the Grecian kings and rulers of the neighbouring countries used ornamental and signet rings made with cut stones. Onomacritus, a priest and founder of Hellenic mysteries, is said to have treated of precious stones and their supernatural powers (500 B. C.). Heredotus mentions, (besides the Emerald in Polycrates' ring,) signet rings such as that of Darius, and also speaks of the so-called Emerald column in the temple of Hercules in Tyre, which emitted a splendid light at night. Plato makes mention of the Sard, Jasper and Emerald. Aristotle had a better knowledge of stones than those authors that preceded him. His scholar, Theophrastus, has left a work on the subject. Alexander the Great had his breast-plate set with stones, and his mantle embroidered with gold and gems. When the Romans conquered Egypt and Greece, they took away, as the spoils of their

75 %

E.

successful invasions, all the luxuries of the subjugated countries, and thus imbibed, among others. a taste for gems and stones. Cæsar and Cleopatra are said to have met in a hall of tortoise-shell. studded with Emeralds and Topaz. Caligula adorned his horse with a collar of Pearls; the shoes of Heliogabalus were studded with gems, and the statues of the gods had eyes of precious stones,-a custom borrowed evidently from the East. Even now, the horses of the Oriental Princes are brought out, on festive processions, studded all over with Pearls and other gems. In the time of the Ptolemies, jewels were used in profusion for ornamenting arms, drinking cups, and even the altars of the gods, and were also set in the frames in which the sacred pictures were put. Constantine is said to have entered Rome in a chariot of gold, adorned with dazzling gems, and in his time the Royal Crown was first set about with precious stones. This custom still prevails throughout the civilized world. Pliny and Strabo make prominent mention of gems and jewels in their works. The Bible gives descriptions of various kinds of stones known to the Hebrews. The twelve stones which were in the breast-plate of the High Priest were-the Sard, the Topaz, the Carbuncle (or Ruby), the Emerald, the Sapphire, the Diamond, the Ligure, the Agate, the Amethyst, the Beryl, the Onyx and the Jasper. The twelve Apostles were also represented by gems, called the Apostle stones :--

6 76

GENERAL REMARKS.

- 1.—The hard and solid Jasper, representing the rock of the Church, was the emblem of *Peter*.
- 2.—The bright-blue *Sapphire* was emblematic of the heavenly faith of *Andrew*.
- 3.-The Emerald, of the pure and gentle John.
- 4.-The white Chalcedony, of the loving James.
- 5.-- The friendly Sardonyx, of Philip.
- 6.—The red Cornelian, of the martyr, Bartholomew.
- 7.-The Chrysolite, pure as sunlight, of Mathias.
- 8.—The indefinite Beryl, of the doubting Thomas.
- 9.—The Topaz, of the delicate James the younger.
- 10.— The Chrysophrase, of the serene and trustful Thaddeus.
- 11.—The Amethyst, of Mathew the Apostle.
- 12.—The pink *Hyacinth* of the sweet-tempered *Simeon*, of Cana.

Sidorus, the Bishop of Seville, is said to have written a work on stones (630 A.C.) The number of properties attributed to precious stones at this time was wonderful; they were said to have the power of conferring health, wealth, beauty, honor, good fortune, and influence. Men and women used to carry them about their persons and called them amulets. These were also thought to have some connection with the stars and seasons. A particular stone was supposed to be sacred to each month. The following are what were known as the Zodiac stones :—

77 80

20

S

January		Jacinth (Hyacinth), or Garnet
February		Amethyst.
March		Bloodstone, or Jasper.
April		Sapphire.
May		Agate.
June		Emerald.
July		Onyx.
August		Cornelian.
September		Chrysolite.
October		Aquamarine, or Beryl.
November		Topaz.
December		Ruby.
	1 . 0	1 1 1 11 11 1 1

Supernatural influences have been attributed to particular stones, which are still believed in by the superstitious. The Ruby is known to be a sovereign remedy for pestilence and poison; it also drives away evil spirits and bad dreams. The Jacinth, if worn on the finger, procures sleep, and brings riches, honor, and wisdom. The Amethyst dispels drunkenness and sharpens the wit. The Balas Ruby restrains passion and fiery wrath, and is a preservative from lightning. The Emerald discovers false witnesses by suffering alteration when it comes in contact with such persons; the Sapphire procures royal favor, and frees men from The Chrysolite was said to cool enchantment. boiling water, and soften wrath, and if placed in contact with poison, it lost its brilliancy until re-Opinions, of course, differ as to these moved. attributes, according to the fancy of the writers.

GENERAL REMARKS.

C 78

The superstitions attached to these stones were not confined to the ancients only. The Empress Eugenie of France, it is said, would not wear a precious Opal, because it was known to have brought ill-luck to the wearer. But our Most Gracious Majesty the Queen Victoria, Empress of India, having no superstition on the point, has presented each of her daughters, on their marriage, with a parure of Opals and Diamonds.

It has now become a fashion to have fingerrings set with certain stones, so arranged that the initials of their names would give a desired name. The following alphabetical list of precious and half-precious stones will be of great use in forming the names :—

Transparent.

Opaque.

A	 Amethyst			Agate.
В	 Beryl			Basalt.
С	 Chrysober	yl		Cacholong.
D	 Diamond			Diaspore.
Е	 Emerald			Egyptian pebble.
F	 Felspar			Fire-stone.
G	 Garnet			Granite.
н	 Hyacinth			Heliotrope.
Ι	 Idocrase			
J	 			Jasper.
K	 Kyanite		***	Krokidolite.
L	 Lynx-Sapp	hire		Lapis-Lazuli.
M	 Milk-Opal			Malachite.
N	 Natrolite			Nephrite.
0	 Opal			Onyx.

H

000

79 80

	Transpare	ent.	Opaque.
Р	 Pyrope	***	 Porphyry.
Q	 Quartz		 Quartz Agate.
R	 Ruby		 Rose Quartz.
S	 Sapphire		 Sardonyx.
т	 Topaz		 Turquoise.
U	 Uranite		 Ultra-marine.
V	 Visuvianit	te	 Verd-antique.
W	 Water-Saj	ophire	 Wood-Opal.
X	 Xanthite	1	 Xylotile.
Y	 		
Z	 Zircon		 Zurlite.

Thus, the name "Charles" may be represented by Chrysoberyl, Hyacinth, Amethyst, Ruby, Lapis-Lazuli, Emerald and Sapphire. The Prince of Wales, on his marriage with the Princess Alexandra, gave her a ring which represented his own name "Bertie." It was set with stones in the following order—Beryl, Emerald, Ruby, Turquoise, Jacinth and Emerald.

The following account of precious stones, as supposed to be found on reptiles and animals, is taken from "All the Year Round" of the 1st June, 1878:—

"Among the Arabians, serpents were supposed to possess precious stones of inestimable virtue. This belief was current through many ages. Mathew Paris relates the story of a miserly Venetian, named Vitalis, who was rescued from a terrible death—having fallen into a pit in which were a lion and a serpent—by a wood-cutter, to whom he \$ 80

GENERAL REMARKS.

promised half his property for this deliverance. The lion and the serpent, who take advantage of the ladder by which Vitalis is brought to the surface, also testify their gratitude to the woodcutter, by crouching at his feet. While the poor man is having his humble repast in his little hut, the lion enters with a dead goat as a present. The serpent also enters, bringing in his mouth a precious stone, which he lays in the country-man's plate. He next goes to Venice, and finds Vitalis in his palace, feasting with his neighbours in joy for his deliverance. On being reminded of his promise, the rich man denies having seen the woodcutter, and orders his servants to cast him into prison ; but before this could be effected, the rustic escapes and tells his story to the judges of the city. At first they are incredulous; but on showing the jewel, and proving further the truth, by conducting them to the dens of the lion and the serpent. where the animals again fawn on their benefactor, Vitalis is compelled to perform his promise. This story, adds Mathew Paris, was told by King Richard, to expose the conduct of ungrateful men.

"In Timberlake's discourse of the Travels of two English Pilgrims to Jerusalem, Gaza, &c., (1611), we find an account of a great jewel which was taken from a serpent's head, and used in conjuring. In Alphonso's Clericalis Disciplina, a serpent is mentioned with eyes of real Jacinth. In the romantic history of Alexander, he is said to have

81 20

found serpents in the Vale of Jordan with collars of huge Emeralds growing on their backs. Milton gives his serpent eyes of Carbuncle. A marvellous stone was said to be found in the serpent's brain, but in order to secure its lustre and potent influences, it was to be extracted from the living animal.

"The Draconius, described by Albertus Magnus as of a black-color and pyramidical form, was also taken out of the heads of dragons, while they lay panting. To the snake-stone a popular superstition is still attached in the East. In the narrative of a voyage in Her Majesty's ship Samarang, Captain Sir Edward Belcher says :-- "At my last interview with the Sultan of Guning Taboor, he conveyed into my hand-suddenly closing it with great mystery-what they term here as the snakestone. This is a polished globe of Quartz, about the size of a musket-ball, which he described as of infinite value, an heir-loom, and reported to have been extorted from the head of an enchanted snake." Allusions to serpent-stone are frequent in the early writers. We read in the Gesta Romanorum that the Emperor Theodosius the Blind ordained that the cause of any injured person should be heard on his ringing a bell, which was placed in a public part of his palace. A serpent had a nest near the spot where the bell-rope hung. In the absence of the serpent, a toad took possession of her nest; the serpent, twisting itself round

K

E

ore.

GENERAL REMARKS.

S 82

the rope, rang the bell for justice, and at the Emperor's special command the toad was killed. A few days afterwards, as the Emperor was reposing on his couch, the serpent entered the chamber, bearing a precious stone in its mouth, and, crawling up to the Emperor's face, laid it on his eyes, and glided out of the apartment; the monarch was immediately restored to sight.

"Apropos of the burglarious toad, the philosophers taught that though ugly and venomous, "it wears yet a precious jewel in its head." Lupton, in his Book of Notable Things, instructs his reader how to procure it; "you shall know whether the tode-stone be the ryghte or perfect stone, or not. Hold the stone before a tode, so that he may see it, and if it be a ryghte and true stone, the tode will leap towarde it, and make as though he would snatch it. He envieth so much that none should have that stone." If swallowed, it was a certain antidote against poison; and it was usual to take it as a precautionary pill—rather a hard one before eating.

"In the Philosophical Transactions, vol. vi., p. 21, we find that the toad-stone was supposed, in the Highlands, to prevent the burning of houses and the sinking of boats, and if the Commander in the field had one about him, he would either be sure to win the day, or all his men would die on the spot!

83 20

"The bezoar was a stone procured from the cervicebra, a wild animal of Arabia, and was supposed to have been formed of the poison of serpents which had bitten the creature, combined with the counteracting matter with which Nature had furnished it. There was a belief in the Middle Ages that the bezoar was a potent charm against the plague and poison.

" The wonderful effects of stones found in various animals are too numerous to mention. The brain of a tortoise contained one that had the effect of a fire-annihilator in extinguishing flames; moreover, whoever did at a proper time-having first washed his mouth-carry it under his tongue, inspiration to foretell future felt a divine Birds were particularly distinguished events. for the possession of talismanic stones. The hyæna was very properly hunted; not, however, for its ferocious propensities, but for a precious stone in one of its eyes, full of mystic virtues. One of the most curious superstitions, and one which has been a favorite theme with writers of all ages, is connected with the Carbuncle, or Ruby. Ælian has a singular story on this subject, how a certain widow, Herculia, had tended a young stork which had broken its leg, and how the grateful bird, returning from its annual migration, dropped into her lap a precious stone, which on her awaking 84

GENERAL REMARKS.

00

2 Con

at night, lighted up her chamber like a blazing torch.

"The fabulous animal called the carbunculo, said to have been seen in some parts of Peru, is represented to be about the size of a fox,* with long black hair, and is only visible at night, when it slinks slowly through the thickets. If followed, it is said to open a flap, or valve, in the forehead, from which an extraordinary and brilliant light issues. The natives believe that the light proceeds from a precious stone, and that any person who may venture to grasp at it rashly is blinded : then the flap is let down, and the animal disappears in the darkness."

The following lines from the journal of Sir Jerome Horsay, who was employed as a special messenger between Ivan the Terrible of Russia and Queen Elizabeth, sufficiently prove the superstitions that existed with respect to precious stones at that period (1584).

"The old emperor was carried every day in his chair to the treasury. One day he beckoned me to follow. I stood venturously and heard him call for some precious stones and jewels. He told the princes and nobles present before and about him the virtue of such and such, which I observed, and do pray I may a little digress to declare for my

^{*} A variety of the fox known as the *oolka-mookhee* (Sans. Dwiptajeeva) exists in Bengal, from the mouth of which a bluish light is known to issue. This is called by the ignorant natives, the "will-o'-thewisp."

85 20

memory's sake : ' the loadstone, you all know, hath great and hidden virtue, without which the seas that encompass the world are not navigable, nor the bounds nor circles of the earth cannot be known. Mahomet, the Persian's Prophet, his tomb of steel hangs on their Rapetta at Dorbent most miraculously.' He caused the waiters to bring a chair of needles touched by this loadstone, and hanged all one by the other. 'This fair coral and this fair turcas, you see. Take it in your hand. Of his nature and orient colors put them on my hand and arm. I am poisoned with disease. You see they show their virtue by the change of their pure colour into pale-declares my death. Reach out my staff royal, an unicorn's horn, garnished with very fair diamonds, rubies, sapphires, emeralds, and other precious stones that are rich in valuecost seventy thousand marks sterling of David Gower from the fowlkers of Ausborghe. Seek out for some spiders.' He caused his physician, Johannes Lloff, to scrape a circle thereof on the table, put within it one spider, and so one other that died, and some other alive, then run apace from it. 'It is too late, it will not preserve me. Behold these precious stones, the diamond is the orient's richest and most precious of all others. I never affected it. It restrains fury and luxury, gives abstinence and chastity. The least parcel of it in powder will poison a horse, given in drink, much more a man.' Points at the ruby, 'ah, this

GENERAL REMARKS.

86

is most comfortable to the heart, brain, vigour, and memory of man, clarifies congealed and corrupt blood.' Then at the emerald : 'The nature of the rainbow, this precious stone is an enemy to uncleanness. The sapphire I greatly delight in; it preserves and increaseth courage, joys the heart, pleasing to all the vital senses, precious and very sovereign for the eyes, cheers the sight, takes away blood-shot, and strengthens the muscles and sinews thereof.' Then takes the onyx in hand. 'All these are God's wonderful gifts, secrets in nature and yet reveals them to man's use and contemplation as friends to grace and virtue, and enemies to vice. I faint, carry me away till another time.' "

The following lines about the supernatural properties attributed to precious stones are also taken from "All the Year Round" of the same date :—

"Innumerable were the effects produced by certain precious stones; among others the Heliotrope had special virtues. It was called by necromancers the "Babylonian gem," and if rubbed over into the juice of the herb of its own name, it rendered the wearer invisible. In the Middle Ages, the Heliotrope which contained many red spots, were highly valued from a belief that the blood of Christ was diffused through the stone. The Moonstone was, as its name implies, venerated from its supposed lunar attractions. It is one of the prettiest, though most common of precious stones in Ceylon. Pliny describes it as containing an image of the moon,

.00

87 80

63

69

"which, if the story be true," he observes, "daily waxes, or wanes, according to the state of that luminary." Chalcedony hung about the neck, dispersed sadness, and if a person carried one perforated with the hairs of an ass run through it, he would overcome all disasters. Crystal dispelled witch-craft. The Chrysophrasus gladdened the heart, the Chrysolite expelled phantoms, and what was more servicable rid people of their follies. The Onyx, in the Middle Ages, was believed to prevent ugly dreams by night, and law-suits by day. The Jasper was a charmer of scorpions and spiders, and was worn as a talisman by the Roman athlete. Burton, in the Anatomy of Melancholy, tells us that, "if hung about the neck, or taken in drink, it much resisteth sorrow and recreates the heart." The same qualities were attributed to the Hyacinth and Topaz. The Crystal has been the most popular of all oracular stones: a favorite stone was the Beryl, "which," says Aubrey in his Miscellanies, "is a kind of Crystal that has a weak tincture of red; in this magicians see visions." The custom was to consecrate, or "charge" them, as the modern term is, for which purpose set forms were used, which are described in Reginald Scotts' Discovery of Witch-crafts. The famous Crystal of that prince of quackery, Dr, Dee, is preserved in. the Ashmolean Museum at Oxford.

"The properties of the Ruby were endless; bruised in water it was a panacea for all com-

GENERAL REMARKS.

8 88

plaints; it had the peculiarity, wherever worn, of discovering its presence by its lustre, which would shine through the thickest clothes. Powdered Agate was an infallible remedy for " all the ills that life is heir to." Pliny quotes the Magii, as teaching in Persia that storms could be averted by burning Agates. The Amethyst would prove a boon to modern tipplers, if, as the ancients asserted, it prevented intoxication. The Sapphire and the Emerald strengthened the sight, a property said to have been also possessed by the Turquoise; but it could confer a still more wonderful gift on its wearer; "whoever," says Van Helmont, "wears a Turquoise, so that it, or its gold setting, touches the skin, may fall from any height and the stone attracts to itself the whole force of the blow, so that it cracks and the person is safe." The Romans regarded the Diamond with superstitious reverence and Pliny tells us that it baffles poison, keeps off insanity, and dispels vain fears."

According to ancient authorities, all composite substances consist of the four elements—fire, air, earth and water : the difference between gems and common pebbles being caused by the predominance of water in the former, and of earth in the latter. The water condensed and congealed by the dryness of the earthy particles was supposed to give to precious stones their brilliance and transparency. Aristotle asserted that the first cause of stones was *viscous mud*, a sap that shrinks and is congealed by

89 %

20

L

cold. in which water predominates over earth : to these he adds stony fragments and particles of stone, and another special sap, which he calls lapidific Theophrastus taught that "stones were sap. made of pure, equal and compact substance, after its perlocation, the which substance, being in certain places become petrified by flowing, or in some other manner." Avecenna only says mud or foul, stagnant water composes stones. Falopius thinks stones to be the produce of a very pure juice. Cardan says that "they are engendered between the rocks by means of a sap, which is distilled through their concavity even as the babe in the maternal blood." This last assertion gave rise to a new theory, the object of which was to establish that the engendering of precious stones was not to be attributed to the same causes as that of inert nature, but that it proceeded from causes absolutely similar to those of animated living being. Bœtius de Boot, a physician of the 17th century, attributes the formation of the stones to the almost direct intervention of the Deity.

The precious stones and pearls are mostly obtained from Ceylon, India, Brazil, Australia, California, Siberia and South Africa.

In the widest interpretation of the term, a gem or a precious stone is nothing but a mineral—hard, of a beautiful color, or absolutely colorless; usually transparent, of great rarity and value. Minerals possessed of these properties have been generally divided into two classes—(1) jewels or gems, perfectly pure; (2) half-pure precious stones, colored or tinted. The first class includes in its province those rare minerals which are distinguished by colors at once bright and dazzling, soft and tender; also by transparency, high lustre, great density and capability of polish. The so-called precious stones which have these characteristics, but in a much less degree, come under the category of the 2nd class. 90

मणिमाला।

म्राय वज्न । मूलम्।

मचाप्रभावं विवुधैर्यसादच्रमुदाइन्तं । वच्चपूर्व्वा परीचेयं ततोऽस्ताभिः प्रकीर्त्त्यते ॥ ७३ ॥ चैममातज्जसौराष्ट्रा: पौख्डकालिज्जकोश्रलाः । वेण्यातटीयसौवीरौ वच्चस्याष्टविधाकराः ॥ ७४ ॥

हीरेकी वयान।

तर्जमा ।

देवताचौंने समस्त रत्नोमे घीरेको चेष्ठ कघा है, तदनुसार पहिले घीरेका विषय लिखा जाता है। ७३।

हैम (हिमालय प्रदेश), मातङ्ग (दाचिणात्यने अन्त-गंत ऋष्यसुख पर्व्वतके निकट पम्पा नदीके किनारेका देश), सौराष्ट्र (खराट), पौण्ड (रङ्गपुर, दिनाजपुर, राजसाही, वौरभूम, सुरसिदावाद, नवदीप, वर्ड्वमान, और मेदिनीपुर वगयरह प्रदेश), कलिङ्ग (ट्राविड, और डड्ग्याके मध्य-वर्त्ती प्रदेश), कलिङ्ग (ट्राविड, और डड्ग्याके मध्य-वर्त्ती प्रदेश), कोशल (खयोध्या), महाराष्ट्र देशके गोदावरी नदीकी डपनदी वेण्या अथवा वेणगङ्काके तीर, सौवीर (शतद्र खर्थात् शतलज और सिन्धु नदके मध्यदेश), इच्चि आट जगहोंने हीरेकी खान है 1981

91 #

THE DIAMOND. TRANSLATION.

73. The Gods have considered the diamond as the best of gems. I shall accordingly describe it first.

The diamond is produced in the following 74. eight places :--

Haima,* Mátanga,† Sauráshtra,† Paunda,§ Kalinga, Kosala, Venwa, ** or the shores of the Vena-Gangá, and Saubíra. ++

হীরক ৷

অন্থবাদ।

দেবতারা সমুদায় রত্নের মধ্যে হীরককেই সর্ব্ব-রত্ন-শ্রেষ্ঠ বলিয়া কল্পনা করিয়াছেন, স্নতরাং তদন্মপারে প্রথমেই হীরকের বিষয় বলা যাইতেছে। ৭৩।

হৈম (হিমালয় প্রদেশ), মাতঙ্গ (দাক্ষিণাত্যের অন্তর্গত ঋষ্যমুখ পর্ব্বতের নিকটস্থ পম্পা নদীর তীরবন্ত্রী প্রদেশ). (मोताष्ट्रे (छत्रांठ), (পोछ (त्रक्रपूत, फिनाजपूत, तांजमांही, বীরভ্রম, মুরসিদাবাদ, বর্দ্ধমান ও মেদিনীপুর প্রভৃতি স্থান), কলিঙ্গ (দ্রাবিড় ও উড়িষ্যার মধ্যগত প্রদেশ), কোশল (অযোধ্যা), বেণা বা বেণ-গঙ্গার তীর (মহারাষ্ট্রের অন্তর্গত গোদাবরীর উপনদীর কল), সৌবীর (পাশ্চাত্যে শতদ্রু ও সিন্ধু নদের মধ্যবর্ত্তী প্রদেশ), এই আট স্থানে হীরক উৎপন্ন হয়। ৭৪।

* The country of the Himalayas.

+ The lands adjacent to the shores of the river Pampa near the Hrishyamukha mountains in the Deccan.

1 Surat.

§ Rungpore, Dinagepore, Rajshahye, Beerbhoom, Moorshedabad, Burdwan, Midnapore, &c.

The provinces between Orissa and Drávira.
 The modern Ajodhyá.
 ** A tributary of the River Godávari in the Maharatta country.

++ The tract lying between the Satadru and the Indus.

10.	
De	~~
- 20	92

मचम्।

चाताम्रा हिमग्रैलजाः ग्रंगिनिभा वेणातटीयाः गुभाः सौवीरास्तु सिताल्जमेघमदृशास्ताम्रास्त्र सौराष्ट्रजाः । कालिङ्गाः कनकावदातरुचिराः पीतप्रभाः कौग्रलाः ग्र्यामाः पुराइभवा मतङ्गविषये नात्यन्तपीतप्रभाः ॥ ७५ ॥ प्रथिव्यापौ वियत्तेजो मरुद्वैवेति पञ्चभिः । वज्रसुत्यद्यते ब्रह्मन् कथितं वज्रकोविदैः ॥ ७६॥

तर्जमा।

हिमालय प्रदेश, खर्थात् हिमालय पर्व्वतके निकटके स्थानों में जो हीरा पयदा होता है; उस्के रङ्गमे तांवापन अलक्ता है; वेण गङ्गाके किनारे जो हीरा पयदा होता है; वह चन्द्रमाके समान उज्जुल चमक्ता है; मौवीर देशमे जो हीरा पयदा होता है, उस्का रङ्ग खेत कमलके समान खयवा सादे वादलके समान होता है; स्रराट प्रदेशमे जो हीरा पयदा होता है, उस्का रङ्ग तांवेके समान होता है; कलिड्ग प्रदेशमे जो हीरा पयदा होता है, उस्का रङ्ग मोनेके समान होता है; खरोध्यामे जो हीरा पयदा होता है; उस्का रङ्ग पीला होता है; पौष्ड प्रदेश-मे जो हीरा पयदा होता है, उस्का रङ्ग स्थामवर्ण होता है; स्रीर मातङ्ग प्रदेशमे जो हीरा पयदा होता है, उस्का रङ्ग हाल्का जरदवर्ण होता है। ७५।

वजू-विद्याके कुण्रल परिएडत कइते है, के हीरेमे प्टयूी, जल, आकाण, तेज और वायु यही पञ्च महाभूत सामान्य विश्रेष कर्के है। ७६।

93 \$

TRANSLATION.

75. The diamonds of the Himalayas are slightly copper-colored, those found on the shores of the Venwa are lustrous like the moon, those of Saubíra resemble in hue the white lotus or the silvery cloud, those of Surat are copper-colored, those of Kalinga dart golden rays, those of Kosala are yellow, those of Paunda, sable, and those of Mátanga, yellowish.

76. According to persons versed in the knowledge of jewels, diamonds vary in the preponderance of one or other of the five primal elements earth, water, the sky, energy and the air.

অহ্বাদ।

হিমালয় পর্ব্বতে ঈষৎ তাত্রবর্ণ, বেণ্যুতীরে চন্দ্রের ন্যায় শুরুবর্ণ, সৌবীরে শ্বেতপদ্ম অথবা শুভ্র মেঘসদৃশ, সৌরাষ্ট্র প্রদেশে তাত্রবর্ণ, কলিঙ্গ প্রদেশে স্থবর্ণবর্ণ, কোশলে পীত-বর্ণ, পৌণ্ড-প্রদেশে শ্যামবর্ণ, মাতঙ্গ-প্রদেশে ঈষৎ পীতবর্ণ হীরক উৎপন্ন হয়। ৭৫।

বন্ধ্র-পরীক্ষা-কুশল পণ্ডিতেরা কহেন, হীরকবিশেষে ক্ষিতি, অপ, আকাশ, তেজ ও বায়ু এই পঞ্চ মহাভূতের প্রাধান্য লক্ষিত হয়। ৭৬।

2	@°	
0	De	0
•	~	94

मणिमाचा।

मूलम्।

महाप्रभावं सदलं खुशोभं पार्थिवं विदुः । सिग्धं च्टु धनं खच्छमाप्यमाज्ञः परं वुधाः ॥ ७७ ॥ विमलं शुचि तीच्नाग्रं वैयतं वज्रमुच्यते । पद्मभूतात्मकं वज्रं तैजसं प्रायशो भवेत् । लघु तीच्नं खरसर्श्वं वायव्यं परिकस्प्राते ॥ ७८ ॥ समस्तां ष्टयिवीं पाति पार्थिवस्य विधारणात् । हप्तिच्यीर्यशः कीर्त्तिराप्यवज्रस्य धारणात् ॥ ७९ ॥

तर्जमा।

जिस् हीरेमे ष्टयीका चंग्र ज्यादा है, वह हीरा गांट्ठा होता है; जिस्मे जलका चंग्र ज्यादा है, वह हीरा घन, समान, घर्यात् स्नेन, घमकदार चौर स्वच्छ होता है। ७७।

जिस्मे आकाशका अंग्र अधिक है, वह हीरा निकाल, पविच और तीच्नाग्र होता है; जिस्मे तेजका अंग्र अधिक है, वह हीरा रक्तवर्ण होता है; और जिस्मे वायुका अंग्र ज्यादा है, वह हीरा हालका, तीच्नाग्र और खुर्धरा होता है। ७८ ।

जिस् हीरेने एयीका अंग्र अधिक है, उसको जो धारण करे, वह राजा हैं; जिस् हीरेने जलका अंग्र अधिक है, वह हीरा धारण करनेसे मनका टप्ति, लच्मी, यग्र और कीर्त्ति लाभ होए। ७८।

95 %

TRANSLATION.

77. The diamonds in which earthy matter forms the base are thick, while those in which water preponderates are dense, smooth, cool and transparent.

78. Diamonds mainly composed of the sky, are exceedingly flawless, clean, and sharp-ridged; those having for their base, energy, are almost always blood-red; and those preponderated by the air are exceedingly light, sharp-pointed and rough.

79. The wearing of earthy diamonds leads to universal dominion; and the watery kind brings contentment, riches, fame and renown.

অহ্বাদ।

যে সকল হীরকে পার্থিবাংশের আধিক্য থাকে, সেই সকল হীরক দলে পুরু; যাহাতে জলীয়াংশের প্রাধান্য থাকে, তাহা অতি ঘন, মস্থণ, স্নিগ্ধ এবং স্বচ্ছ। ৭৭।

আকাশাংশের প্রাধান্যে হীরক অতি নির্ম্মল, পবিত্র ও তীক্ষাগ্র হইয়া থাকে; তেজঃপ্রধান হীরক প্রায়ই রক্তবর্ণ হয় এবং যাহাতে বায়ুর প্রাধান্য থাকে, সেই হীরক অতি লঘু, তীক্ষাগ্র ও খরস্পর্শ হয়। ৭৮।

পার্থিবাংশপ্রধান হীরকধারণে সমস্ত পৃথিবীর আধিপত্য লাভ হয়; জলীয় হীরকধারণে মানসিক তৃপ্তি, লক্ষ্মী, যশ ও কীর্ত্তি লাভ হয়। ৭৯।

9	6	-	
6	J.	0	r
0	~	9	1

मणिमाला।

मूलम्।

उत्साइप्रियदृष्टित्वं वायव्यस्य विधारणात् । तथा सम्पत्तयः सर्व्वा वैधतस्य विधारणात् । प्रतापः शौर्थ्यमुत्साइक्तेजसस्य विधारणात् ॥ ८०॥ इिमकुन्ट्रेन्ट्धवलं षट्कोणाष्टदलं तथा । तीच्नं वारिभवं वर्ज्ञं धनमङ्काशकान्तिमत् । त्रस्व कारे च दीष्येत तज्ज्ञोयं वज्रमुत्तमं ॥ ८२ ॥ गुणाढंत्र तीच्नुधारं यत्सपेदर्पनिवारणं । तस्य धारणमाचेण विधरोगः प्रशास्यति ॥ ८२ ॥

तर्जमा।

जिस् हीरेमे वायुका चंग्र चधिक है, वह हीरा धारण करनेसे उत्साहकी टहि, और लोगोंमे प्रिय होए; जिस् हीरेमे चाकाशका चंग्र चधिक है, उस् हीरेको धारण कर्नेसे सम्पत्ति लाभ होए; जिस् हीरेमे तेजका चंग्र चधिक है, वह हीरा धारण कर्नेसे प्रताप, वीरत्व, चौर उत्साह टहि होए। ८०।

जो घीरा वरफ, कुन्टफुल, सफेद वादल, और चन्द्रमाके सभान ग्रुकुवर्णे घोता है, और ककोण अथवा आटकोण-युक्त, तोचुधार, जलमे उत्पन्न घोता है; और आंधेरेमे प्रकाग पाता है; वह घोरा अति उत्तम है। ८१।

ग्रणयुक और तीचधार हीरा धारण कर्नेसे सपैका विष और खन्यान्य विषधर जन्तुका बिष नष्ट होता है। ८२।

TRANSLATION.

80. The airy sort give heart and gracefulness; and the skyey diamonds bring about the possession of all kinds of wealth. The use of energy-preponderated diamonds adds to puissance, heroism and hope.

81. Those diamonds that are white like hailstones, the Kunda flower,* white clouds or the moon, possessed of six or eight corners and sharp-ridged, that have originated from water, and that shine even in darkness, are the acme of excellency.

82. The wearing of a genuine and sharp diamond leads to instant cure from snake-bite, and proves efficacious in neutralizing the effects of other poisons.

অন্থবাদ।

বায়বীয়াংশপ্রধান হীরকধারণে উৎসাহ ও প্রিয়দর্শনত্ব জন্মে; আকাশপ্রধান হীরকধারণে সর্ব্ব প্রকার সম্পত্তি লাভ হয়। তৈজস হীরকধারণে প্রতাপ, শৌর্য্য, ও উৎসাহ বর্দ্ধিত হয়। ৮০।

যে বজ্র করকা, কুন্দপুষ্প, শুক্ল মেঘ অথবা চন্দ্রসদৃশ ধবল বর্ণ; ষট্ বা অফকোণবিশিষ্ট; তীক্ষণার; জলোৎপন্ন এবং অন্ধকারেও দীপ্তি পায়, সেই হীরকই উৎকৃষ্ট। ৮১।

গুণযুক্ত অথচ তীক্ষধার হীরক ধারণ করিবামাত্র সর্প-দফ ব্যক্তি আরোগ্য লাভ করে, এবং তদ্ধারা অপরাপর জন্তুর বিষও শমতা প্রাপ্ত হয়। ৮২।

* Jasaminum Multiflorum or Pubescens.

M

R.	9
0	90

मगिमाचा।

मू लम्।

कोटिसूर्य्यप्रतीकार्श कोटिचन्ट्रस्रशीतलं । चन्धकारहर वज्र विज्ञे वं महदुत्तमं । तस धारणमाचे ण सर्व्वरोगः प्रशास्यति ॥ ८३ ॥ तप्ते दुग्धे जले तेले घते चिप्तोऽपि यः पविः । श्रीततां नाययेस्पद्यः स ज्ञेयः स्डरदुर्लभः ॥ ८४ ॥ बह्मच्चिविट् स्र्ट्रभेदास्तस्य चतुर्विधाः । क्रमशो लच्चर्णं तेषासुच्यते दिजसत्तूम ॥ ८५ ॥

तर्जमा।

जो हीरा कोट सूर्य के समान प्रकाशमान, खौर कोट चन्द्रमार्क समान शीतल, और आंधेरेमे प्रकाश पाता है, वह हीरा सबमे अन्न है, और उस्के पहेरनेसे सब विमारी नष्ट होते है। ८३।

जो घीरा गरम जल, गरम दुध, गरम घत और गरम तैलमे फेंक दिया जाय, और उसी समय उन् वस्तुकी गरमि दूर हो जाय, ऐसा हीरा देवतांको दुर्लम है। ८४।

मनुष्यगणमे जिस् प्रकारके ब्राह्मण, चचि, वैश्व, और गूद्र यडी चार वर्षे डैं; उसी प्रकार डौरामेभी ब्राह्मण, चचि, वैश्व और गूद्र यही चार वर्षे है, ष्टयक् ष्टयक् कर्के उस्का लच्चण लिखता ऊं। ८५ू।

TRANSLATION.

83. A diamond which is refulgent like myriads of suns, while deliciously cool as numberless moons, which illumines even palpable darkness, is excellent, and proves a panacea as soon as worn.

84. The diamond which, on being thrown into hot water, milk, oil, or clarified butter, extinguishes the heat, is coveted by the gods.

85. Like men, diamonds are divided into Brahmins, Kshetriyas, Vaisyas and Sudras. The distinctive features of each caste I will now set forth.

অন্থবাদ ৷

যে হীরা কোটি সূর্য্যের ন্যায় ভাস্বর, অথচ কোটি চন্দ্রের ন্যায় স্থশীতল, এবং অন্ধকারেও দীপ্তি পায়, সেই হীরক সর্ব্বশ্রেষ্ঠ; তাহা ধারণ করিবামাত্র সর্ব্ব প্রকার রোগের শান্তি হর। ৮৩।

যে হীরা উষ্ণ জল, জুগ্ধ, তৈল বা ঘ্নতের মধ্যে নিক্ষিপ্ত হইয়া তৎক্ষণাৎ উক্ত পদার্থনিচয়ের উষ্ণতা বিনাশ করে, সেই হীরক দেবতাদিগের তুর্লভ। ৮৪।

মন্নুয্যগণের ন্যায় হীরকেরও ব্রাহ্মণ, ক্ষল্রিয়, বৈশ্য ও শৃদ্র এই চারি প্রকার জাতিভেদ আছে। ক্রমশঃ তাহা-দিগের লক্ষণাদি নির্দ্দেশ করা যাইতেছে।৮৫।

2	0°			
6	Je .	1	00)
2	~	1	01	

मणिमाला।

मूलम् ।

विप्रच शङ्घकुमुदस्फटिकावदात: स्टात् चचियच श्रशवक्रवित्तोचनाभः । वैश्वच कान्तकदलीदलसद्गिकाश: शूद्रच धौतकरवालसमानदीप्ति: ॥ ८६ ॥ विप्रचचियवैश्वानां शूद्रजातेयेयाक्रमं । खेता रता तथा पीता कष्णा च्छायाच्चतुर्विधाः ॥ ८७ ॥ यत्त्र दीनैक्तपोभिच यदाप्नोति तदाप्नुयात् । युणयुक्तस्य वज्रस्य विप्रजातेच धारणात् ॥ ८८ ॥

तर्जमा।

जो हीरा शङ्ख, कुसुदफुल, चौर स्फ्राटिकके समान शुक्लवर्ण, वह हीरा बाह्मणवर्ण हैं; जो हीरा खरगसके चांखके समान रक्तवर्ण, वह हीरा चचिवर्ण हैं; जो हीरा नये केलेके पातके समान सबुजवर्ण, वह हीरा वैश्ववर्ण हैं; चौर जो हीरा परिष्कार खड़के समान, वह हीरा शूट्र-वर्ण हैं। द्र है।

वाह्मणवर्णे हीरेका छाया सफेद; चचिवर्ण हीरेका छाया रक्तवर्ण; वैश्ववर्ण हीरेका छाया पीलावर्ण चौर भूट्रवर्ण हीरेका छाया छष्णवर्ण होगा। ८७।

यज्ञ, दान, और कठिन तपस्याके दारा मनुष्य जो फल जाभ करता है, गुणयुक्त वाह्यणवर्ण हीरा धारण करनेसे बही फल पाता है। ८८ ।

TRANSLATION.

86. Diamonds white like the conch, waterlily, or crystal, are Vipras (Brahmins); those which are red like the eyes of the hare, are Kshetriyas; those which are verdant like the cool plantain-leaf, are Vaisyas; and those which resemble in color the cleaned sword, are known as Sudras.

87. The Brahmin, the Kshetriya, the Vaisya and the Sudra, cast around white, red, yellow and black gleams respectively.

88. The fruit which is reaped through the celebration of various sacrifices, munificence, and the austerest devotion, is also gained by wearing superior Brahman diamonds.

অহুবাদ।

যে হীরক শশ্ব, কুমুদ-পুপ্প, বা ক্ষটিকের ত্যায় শুক্লবর্ণ, তাহা বিপ্রজাতি; যাহা শশকের চক্ষুর ত্যায় রক্তবর্ণ, তাহা ক্ষত্রিয় জাতি; যাহা স্নিগ্ধ কদলীদলের ত্যায় হরিদ্বর্ণ, তাহা বৈশ্যজাতি এবং যাহা পরিষ্কৃত করবালসদৃশ শ্যামবর্ণ, তাহা শুদ্রজাতি বলিয়া পরিচিত হয়। ৮৬।

ব্রাক্ষণ, ক্ষল্রিয়, বৈশ্য ও শৃদ্র এই চারি জাতীয় হীরক হইতে ক্রমান্বয়ে শ্বেত, রক্ত, পীত ও কুষ্ণবর্ণ ছায়া নির্গত হয়। ৮৭।

মানবগণ বিবিধ যজ্ঞ, অসামান্ম দান, ও অতি কঠোর তপদ্যা দ্বারা যে ফল লাভ করেন, গুণযুক্ত ব্রাহ্মণবর্ণ-হীরক ধারণ করিলেও সেই ফল প্রাপ্ত হইতে পারেন। ৮৮।

101



मणिमाला।

मूलम्। जयः पराक्रमस्तस्य भचुनाभय जायते । गुणवत चचजातीयं वज्रं वसति यद्ग्रहे ॥ प्र्रे ॥ कलाकुभलता तस्य प्रज्ञा चेमं यभो महत् । गुणिनः पविरतस्य वैश्वजातेय धावणात् ॥ ८० ॥ परोपकारिता चेमं धनधान्यसमृद्वयः । गुणयुक्तस्य वज्रस्य भूट्रजातेय धारणात् ॥ ८१ ॥ वर्जुं सुवर्णयुक्तं देवानामपि परिग्रहः प्रोक्तः । वर्णेभ्यया विभागः कार्य्यो वर्णाययादेव ॥ ८२ ॥

तर्जमा।

गुणयुक चचिवर्ण चीरा जिस्के घरमे रहता है, उसके सव कार्य्यमे जयलाम, पराक्रमष्टद्वि और भचुका नाभ होता है। ८८।

जो मनुष्य गुणयुक्त वैग्यवर्ण चीरेको धारण करे, वच्च मनुष्य कलाकुण्रल, वज्जदर्शो, चरोगी चौर यग्रखी चोता है। ८०।

जो मनुष्य गुणयुक्त शूट्रवर्ण चीरेके धारण करे, वच्च मनुष्य चात्यन्त परोपकारी, चरोगी, चौर धनधान्य चादिसे समुद्विशाली चोए ! ८१ ।

सोनेमे जड़ा ऊया घीरा देवता लोगभी पण्रन्द कर्ते चै; और वर्णके संज्ञासे ही घीरेकी भिन्नता बुभाद देति है। ८२।

103 \$

R

TRANSLATION.

89. The better sort of the Kshetriya class bring about uniform success, accession of power, and destruction of foes.

90. First-rate diamonds belonging to the Vaisya caste are productive to their wearers of wisdom, cure, fame and skill in the elegant arts.

91. The higher order of the Sudra class induce benevolence in their master, and make him hale and wealthy.

92. Diamonds set on gold are an acceptable offering to the gods. They are classified according to color.

অহ্বাদ।

গুণান্বিত ক্ষত্রিয়বর্ণহীরক যাহার গৃহে থাকে, তাহার সকল বিষয়ে জয়লাভ, পরাক্রমর্দ্ধি ও শত্রুবিনাশ হয়।৮৯।

গুণশালী বৈশ্যবর্ণহীরকধারী মানবগণ কলাকুশলতা, বিজ্ঞতা, আরোগ্য ও যশ লাভ করিয়া থাকেন। ৯০।

যে ব্যক্তি গুণযুক্ত শূদ্রবর্ণহীরক ধারণ করে, সে ব্যক্তি অত্যন্ত পরোপকারী, অরোগী এবং ধনধান্যাদি সমৃদ্ধিশালী হয়। ৯১।

স্থবর্ণপ্রতিবদ্ধ হীরক দেবতাদিগেরও গ্রান্থ। হীরক বর্ণান্মসারেই বিভাগার্হ। ৯২।



मणिमाचा।

मूलम् ।

हरितसितपीतपिङ्गलतामुग्धामाः खभावतो रुचिराः । हरिवरुणग्रम्नज्ञतवह्तपिटपतिमरुतां खका वर्णाः ॥ ८३ ॥ हो वजुवर्णे प्रथिवीपतीनां सङ्गिः प्रदिष्टौ नतु सार्व्वजन्यं । यः स्याज्जवाविद्रुमभङ्ग्रोणो यो वा हरिट्रारससंविकाग्रः ॥८८॥ ईग्रत्वात् सर्व्वणीनां ग्रुणवत् सार्व्ववर्णिकं । कामतो धारयेट्राजा न त्वन्योऽन्यं कथञ्चन ॥ ८५ ॥

तर्जमा।

सबुज, सफेद, पौला, पिङ्गल (नीला और पीला मित्रित) तांवेके समान और ग्शाम यद्यी क्षप्रकारका रङ्ग घीरेमे घोता है। नारायण, वरुण, इन्द्र, घानि, यम और वायु इस्क रङ्ग मज्कुरेवालेके क्र देवता है। १३।

बही कप्रकार वर्णयुक्त हीरेके मध्य कनेल फुल, उपया सुङ्गेके समान रक्तवर्ण, उपयवा हल्दीके समान पीलारङ्ग यही दो वर्णविग्रिष्ट हीरा राजा लोगेंको ग्रुभदायक है। ८४।

खगर किसी एक हीरेंमे क प्रकारका रज़ पाया जावे, तो उस् हीरेको राजा धारण कर सक्ता है, लेकिन क प्रकार रज़का क. हीरा एकदफे कभी धारण नहि करेगा। ८५ू।

R

TRANSLATION.

105

N

93. Diamonds are generally green, white, yellow, brown, copper-colored or black; and the classes are presided over by Náráyana, Varuna, Indra, Agni, Yama and Váyu respectively.

94. Of the six classes, those that are red like the China rose or coral, or yellow like turmeric, are productive of good fortune to princes.

95. They can wear a diamond whose hue is a medley of all the colors enumerated above, but never diamonds of diverse colors at one and the same time.

অহ্বাদ।

হীরকে হরিত, শুক্ল, পীত, পিঙ্গল, তাত্রবৎ ঈষৎ লোহিত ও শ্যাম, এই ছয় প্রকার বর্ণই স্বভাবতঃ হইয়া থাকে, এবং নারায়ণ, বরুণ, ইন্দ্র, অগ্নি, যম ও বায়ু এই ছয় দেবতা উক্ত ছয়বর্ণের এবং তদন্ম্পারে উক্ত ছয়বর্ণ-বিশিষ্ট হীরকেরও অধিষ্ঠাত্রী দেবতা। ৯৩।

উল্লিখিত ছয় প্রকার বর্ণবিশিষ্ট হীরকের মধ্যে জবা-কুস্থম বা প্রবালের ন্যায় রক্তবর্ণ, অথবা হরিদ্রারসের ন্যায় গীতবর্ণ বিশিষ্ট হীরকই রাজাদিগের শুভজনক। ৯৪।

যদি একখানি হীরকে উক্ত সর্ব্বপ্রকার বর্ণ থাকে, তাহা হইলে রাজারা সে হীরক ধারণ করিতে পারেন, কিন্তু একদা বিভিন্ন বর্ণের ভিন্ন ভিন্ন হীরক কথনই ধারণ করি-বেন না । ৯৫।

S.		0	C
0 00	1	0	b

मणिमाला।

मूलम्। चधरोत्तरवत्ता चि याद्दक्षे स्थाद्वर्षे सङ्गरः। ततः कष्टकरो वजुवर्षानां सङ्गरो मतः ॥ ८६ ॥ कोव्यः पार्क्षानि धाराख षड्ष्टौ दाद्ग्रेति च। उत्तुङ्ग्समतीच्नाग्रां वजुस्थाकरजा ग्रुष्णः ॥ ८७ ॥ उत्तुङ्ग्समतीच्नाग्रां वज्रुस्थाकरजा ग्रुष्णः ॥ ८७ ॥ ग्रुष्णः पच्च समाखाता दोषाः पच्च प्रकीर्त्तिताः । छाया विज्ञे याच्यत्वारो वज्राषां रत्नकोविद्दैः॥ ८८ ॥ षट्कोणत्वं लघुत्वच्च समाष्टद्लता तथा । तीच्णाग्रता निर्मलत्वमिमे पच्च ग्रुषाः साताः ॥ ८८ ॥

तर्जमा ।

जिस् प्रकार मनुष्यमे बाह्मण, चचिय, वैश्व और प्रूद्रके परस्पर संयोग घोनेसे सङ्गरवर्णका उत्पत्ति घोती है, उसी किसिम्से घीरेके विभिन्नवर्ण संयोग घोनेसे सङ्गरवर्ण घोरा घोता है; बघी सङ्गरवर्ण घीरा मनुष्यके कष्टदायक है। ८६ ।

क्रकोण, अष्टपार्श्वता (आटो आंसघाट) वार धार (गेरदा घाट) गट्ठा, समान, और तीच्नाग्रता बच्ची सव गुण चौरेमे खभाविक पयदा घोता है। ८७।

रत्न शास्त्रको परिएडत छीरेके पांच ग्रुण, पांच दोष चौर चार काया तज्विज किया है। ८८० ।

ककोण, हाल्का, आठो आंस घाट, तीच्नाग्रता, और निर्म्यलता यही पांच ग्रुण हीरेने होता हैं। ८८।

107 %

X

TRANSLATION.

96. As the promiscuous intercourse of one caste with another gives rise to mixed castes among mankind, so it is with diamonds, the mixed classes of which are fraught with great troubles to man.

97. The qualities of being six-cornered, eightsided, twelve-edged, high, smooth and sharp, diamonds bring from their quarries.

98. Persons skilled in the knowledge of jewels enumerate five good, and as many bad qualities of diamonds; and have also mentioned four kinds of shades as proper to them.

99. The qualities of being six-cornered, light, sharp-edged, and pure, as well as the state of having eight equal sides are the five good properties of diamonds.

অহ্বাদ।

ত্রাহ্মণাদি বিভিন্ন বর্ণের সংযোগে মন্ট্রয্যগণের মধ্যে যেমন সঙ্করবর্ণের উৎপত্তি হয়, হীরকেও সেইরূপ ভিন্ন ভিন্ন বর্ণের পরস্পর সহযোগে সঞ্চরবর্ণ হইয়া থাকে, হীরকের সঙ্করবর্ণ মন্ট্রয্যগণের পক্ষে অতি কন্টদায়ক। ৯৬।

ষট্কোণতা, অফ্টপার্শ্বতা, দ্বাদশধার, উত্তুঙ্গতা সমান অথচ তীক্ষাগ্রতা এই কয়প্রকার গুণ হীরকের স্বভাবসিদ্ধ, অর্থাৎ আকর হইতেই এই গুণসমূহ উৎপন্ন হয়। ৯৭।

রত্নবিৎ পণ্ডিতেরা হীরকের পাঁচ প্রকার গুণ, পাঁচ-প্রকার দোষ ও চারি প্রকার ছায়া নির্দ্দেশ করিয়া গিয়াছেন। ৯৮।

ষট্কোণত্ব, লঘুর, সমান-অফ্টদলন্থ, তীক্ষাগ্রন্থ ও নির্শ্মলত্ব এই পাঁচটী হীরকের গুণ। ৯৯। 108

मणिमाचा।

म्लम्।

षट्कोणग्रुह्वममलं ग्रुचि तीच्णधारं वर्णान्वितं लघु सुपार्श्व मपेतदोषं। इन्द्रायुधांग्रुविच्छतिच्छरितान्तरीचः-मेवंविधं मुवि भवेत् सुलमं न वज्रं। ९००। ज्रत्ययं लघु वर्णतञ्च ग्रुणवत् पार्श्वे षु सस्यक् सम रेखाविन्दकलाङ्काकपदकचासादिभिवर्ज्जितं। लोकेऽस्मिन् परमाणुमाचमपि यद्दज्ञं कचिद्द्र्य्यते तस्मिन् देवसमाज्ययो द्यवितयसीचाग्रधारं यदि। ९०९।

तर्जमा।

जो घीरा विशुद्ध, क्रकोण युक्त, चत्यन्त निर्म्सल चर्थात् बज्जत साफ, तीच, धार, उत्तम वर्ण विशिष्ठ घाल्का चाच्छा घाटदार, वेच्घवेव, चौर जिस् के इन्द्रधनुकके समान चाभा निक्ले, ऐसा घीरा पृथ्वी पर बज्जत नायाव चे १९००।

बद्धत चाल्का, उत्तम वर्षे युक्त, ग्रुणयुक्त, वरावर घाट, तीच्णाग्र, चर्यात् चुटीदार, चिर, क्रिटा, दाग, काकपद, गड्हा, यही सव चयेववर्ज्जित, हीरेके कोटे तारेके समान जिस जगहमे रहे, उसी जगहमे जरुर देवताका वास होगा। १०१।

109 %

TRANSLATION.

100. The diamond which is free from defect, sixcornered, pure, sharp, possessed of an agreeable color, light, beautifully shaped, flawless and irisgleaming is a rarity in the world.

101. The place where there is even a particle of such a diamond as is sharp, equal-sided, exceedingly light, possessed of an excellent color and of other good properties, and free from Rekhá, Vindu, Kalanka,* Kákapada, Trása, &c., is certainly frequented by the gods.

অহ্বাদ।

যে হীরক বিশুদ্ধ, ষট্কোণবিশিষ্ট, অতি নির্শ্মল, তীক্ষণ ধার, উত্তমবর্ণভূষিত, লঘু, স্থপার্শ, নির্দ্দোষ এবং যাহা হইতে শত্রুধন্বুর প্রভা নিঃস্থত হয়, সেপ্রকার হীরক পৃথি-বীতে অতি দ্বর্লভ। ১০০।

অত্যন্ত লঘু, উৎকৃষ্ট বর্ণান্বিত, সগুণ, সমপার্থ, তীক্ষাগ্র এবং রেখা, বিন্দু, কলঙ্ক, কাকপদ ও ত্রাসাদি দোষবিবর্চ্জিত হীরক পরমাণুপরিমাণে যে স্থানে থাকে, সে থানে অবশ্র্টই দেবতাদিগের সমাগম হইয়া থাকে। ১০১।

* A dark spot.

S 110

Č

मूलम्। तीच्चाग्रं विमलमपेतमर्व्वदोषं धत्ते यः प्रयततनुः सदैव बज्रुं। दृद्धिसं प्रतिदिनमेति यावदायुः त्रीसम्पत्छतधनधान्यगोपशूनां॥ १०२। यत्तु सर्व्वगुर्णेर्थुक्तं वज्रं तरति वारिणि । रतवर्गे समस्तेऽपि तस्य धारणमिष्यते॥ १०३। चम्मस्तरति यदजुमभेद्यं विमलच्च यत्। तथा संशुद्धषट्कोणं लघु मार्गवनन्ट्न॥ १०४॥ प्रभा च शक्रचापामा यस्यार्काभिमखी मवेत्। तदच्चं धारयन् राजा सव्वौन् जयति शाचवान्॥ १०५॥

तर्जमा।

जो खदमी चोठीदार, साफ, खौर वेखयेव हौरा यतन कर्के पहेरे, वह खदमी जेत्ने दिन जीता रहेगा, उत्ने दिन दौलत, सम्पत, खौनाद, धन, धान्य, गौ खौर पशुका मालिक रहकर जीन्दिगी भर बज्जत खुसीसे बसर करेगा। १०२।

जो घीरा तामाम तारिफोंचे मौसुफ घोकर पाणिपर तैरेगा, वच्ची सब रत्नोमे बड़ा है, चौर उसके पहेरनेसे बज्जत फयदा है। १०३।

जो हीरा वज्जत् साफ, अभेद अर्थात् जिस्को भेद ना कर सके, ककोण, बज्जत हाल्का, पाणिपर तरता हो, और सूर्य्यके सामने रखनेसे दून्द्र धनुकके समान आभा देवे, वही हीरा पहेरनेसे राजा लोग सब जगह जय पानेवाले होते हैं। १०४। १०५।

111 \$

Ř

TRANSLATION.

102. The man who carefully keeps about him a sharp-pointed, spotless and genuine diamond, is blessed with the life-long possession of riches, good fortune, sons, corn, kine and other beasts.

103. The diamond which crowned with every good property, floats on water, is the very pink of perfection; and the use of such a gem is attended with greater good.

104-105. The possession of such a diamond as is exceedingly flawless, impervious, six-cornered and light to a degree, as forms the rainbow on being exposed to the sun, and as does not sink in water, renders a prince victorious over every enemy.

অহুবাদ।

যে ব্যক্তি তীক্ষাগ্র, নির্ম্মল এবং নির্দ্দোষ হীরক অতি যত্নসহকারে ধারণ করে, সে ব্যক্তি যাবজ্জীবন লক্ষ্মী, সম্পদ, পুত্র, ধন, ধান্য, গো ও পশুর আধিপত্য লাভ করিয়া কাল যাপন করিতে পারে। ১০২।

যে হীরক সর্ববগুণালক্ষত হইয়া জলে ভাসমান হয়, সমস্ত রত্নমধ্যে সেই হীরকই উৎকৃষ্ট, এবং তাহা ধারণেও অধিক ফল লাভ হয়। ১০৩।

যে হীরক অতি নির্ম্মল, অভেদ্য, ষট্কোণবিশিষ্ট, অতি-শয় লঘু, জলে ভাসমান, সূর্য্যাভিমুখে ধৃত হইলে ইন্দ্রধন্মর প্রভা বিস্তার করে, এপ্রকার হীরক ধারণ করিলে রাজগণ সর্ব্বত্রই সকল শত্রুকে জয় করিতে সমর্থ হন। ১০৪।১০৫।

e.	
33	112

मलम्।

यत्तु वारिभवं नाम दूर्व्वापचजलच्छवि । सुवर्णमाच तुलया तदज् कोटिमाजनं ॥ १०६ ॥ यद्यपि विश्वीर्णकोटिः सविन्दु रेखान्वितो विवर्णी वा । सोऽपि च धनधान्यसुतान् करोति सेन्द्रायुधो वजुः ॥ १०७॥ सौदामिनीविस्फुरिताभिरामं राजा यथोक्तं कुलिशं दधानः । पराक्रमाक्रान्तपरप्रतापः समस्तसामन्तभुवं भुनक्ति ॥ १००८ ॥

तर्जमा।

जो घीरा पाणिसे पयदा घोता है, और जिसका रङ्ग सबुज घासके पाणिके वूंद्के समान, और ओजनमे एक तोला भारी घो, उस घीरेके दाम क्रोर रूपेया घोता है। १९६।

टुटाकोेणा, क्रिटा, चिर, और बदरङ्ग यही सब अयेवदार हीरासे अगर इन्द्रधनुकके समान आभा प्रकाश पावे, तभी पहेरनेसे धन, दौलत और आवोलातकी तर-किक होये। १०७।

जो राजा पहिले वयान किये गये वेत्रयेव और विज-लोके समान आभा प्रकाशित हीरा पहेरे, वह बढा़ एक वालमन्द होकर तामाम जमीनका राज लाभ करे। १०००।

113 %

TRANSLATION.

106. The diamond which has originated from water, which weighs one told,* and which is transparent as the dew-drop on a blade of grass, is worth ten millions.

107. Even a diamond which is cracked, spotted, striped, discoloured, or otherwise defective, leads to wealth and increase of children, if it possesses the power of forming the iris.

108. The sovereign who wears a diamond possessed of the good qualities mentioned above, and laughing like the lightning's flash, attains to universal dominion.

অন্থবাদ।

যে হীরক জল হইতে উৎপন্ন, যাহার বর্ণ দূর্ব্বাদলো-পরি পতিত জল-বিন্দুর ন্যায় স্বচ্ছ, এবং ওজনে এক তোলাপরিমিত, তাহার মূল্য কোটি মুদ্রা। ১০৬।

ভগ্নকোণ এবং বিন্দু, রেখা ও বৈবর্ণ্য ইত্যাদি দোষ-দূষিত হীরক হইতে যদি ইন্দ্রধন্থর প্রভা প্রকাশ পায়, তাহাও ধৃত হইলে ধন, ধান্য, ও সন্ততি রুদ্ধি করে। ১০৭।

যে রাজা পূর্ব্বোক্ত গুণসমূহে ভূষিত এবং সৌদামিনীর ন্থায় প্রভাপ্রকাশক হীরক ধারণ করেন, তিনি অতিশয় পরাক্রমশালী হইয়া সমস্ত পৃথিবীর আধিপত্য লাভ করেন। ১০৮।

* A weight of gold or silver, calculated at 12 māshās, Jeweller's Weight, and equivalent to nearly 210 grains; but actually it is of the same weight as the sicca or $179\frac{2}{3}$ grains.— Williams.

0

\$ 114

60

मणिमाला।

ग्रथ वज्जदोषाः।

मूलम्।

मलो विन्दुस्तथा रेखा चासः काकपदस्तथा। एते दोषाः समाख्याताः पञ्च वज्रेषु कोविदैः ॥ १०९ ॥ मले मलिनता ख्याता विन्दी सर्व्वार्थनाश्रनं। रेखायां दंष्ट्रिणो भौतिः चासे चासः चयः पदे ॥ ९१० ॥ दोषेषु विन्दुरावर्त्तः परिवर्त्ती यवाक्ततिः। चतुर्विधाः समाख्याता विन्दवो वजुर्संत्रिताः ॥ १९१ ॥

हीरेका ग्रयेव।

वर्जमा।

रत्न शास्त्रके परिएडत मयला, किटा, चिर, गड्डा और काकपद यही पांच प्रकारके हीरेके खयेव कहे गये हैं। १० ८।

मजिन घीरेके पहेरनेसे मन मयला घोता है, किटेदार घीरेके पहेरनेसे सर्व्वनाग्र घोता है, चिरदार घीरेके पहेरनेसे सांपका भय घोता है, गड़ घादार घीरा पहेरनेसे घमेसा मनके दु:ख रहता है, चौर काकपदचिक्न युक्त घोरा पहेरनेसे खदमी बज्जत जल्द नाग्रको प्राप्त घोता है। ११०।

हीरेमे जो किटा है, वह प्रकारभेदसे बिन्दु, आवर्त्त, परिवर्त्त और यवाक्तति यही चार प्रकार होता है। १११।

DEFECTS OF DIAMOND.

TRANSLATION.

109. Authorities in matters of precious stones mention five bad qualities of diamonds; namely, mala,* vindu,† rekhá,‡ trása§ and kákapada.||

110. The first defect causes impurity, the second brings down destruction on the wearer, the third renders him apprehensive of snake-bite, the next infuses constant fear into the mind, and the last leads to ruin.

111. Diamond spots are divided (according to the respective character of each) into four classes, namely; vindu (or the spot proper), ávarta, parivarta, and jabákriti.¶

হীরকের দোষ।

অন্থবাদ।

রত্নতত্ত্বজ্ঞ পণ্ডিতেরা মল, বিন্দু, রেখা, ত্রাস, ও কাক-পদ এই পাঁচ প্রকারকে হীরকের দোষ বলিয়া উল্লেখ করিয়া গিয়াছেন। ১০৯।

মলিন হীরকে মনের মালিন্স জন্মে; বিন্দুযুক্ত হীরক সর্ববাশের নিদান; রেখাবিশিষ্ট হীরক সর্পাদি দংষ্টি ভয়োৎ-পাদক; ত্রাসযুক্ত হীরক সর্ব্বদা ত্রাসজনক এবং কাকপদ-চিহ্নিত হীরক মন্তুষ্যের ক্ষয়কারক বলিয়া কথিত আছে। ১১০।

হীরকস্থিত বিন্দু প্রকারভেদে বিন্দু, আবর্ত্ত, পরিবর্ত্ত ও যবাকুতি এই চতুর্বিধ হইয়া থাকে। >>>।

* Impurity. † Spot. ‡ Stripe. § Fear. 1 ¶ Literally, that which is shaped like a barley corn.

|| Crowfoot.

115 80

10-	
Do	
	110

मणिमाचा।

मूलम्।

रकोऽच वर्त्तुलो विन्दुरावर्त्तो मध्यवर्त्तुलः । रकत्य परिवर्त्तस्तु रक्त एव यवाकतिः ॥ ९१२ ॥ विन्दुरायुधनं चन्यादावर्त्तो भयमादिग्रेत् । परिवर्त्ते अवेद्व्याधिर्यवे तत्फलसुच्यते ॥ ९१३ ॥ रक्तवर्णे यवे ख्यातं गजाम्बस्य विनाग्रनं । यवे पीते कुलस्यान्तं धनमायु:च्चयं अवेत् । एवं दोषाः समाख्याता यवविन्दोरग्रेषतः ॥ ११४ ॥

तर्जमा।

रक्त वर्ण गोल चिच्चको विन्टु घर्थात् क्रिटा कघते हैं, मध्यगोलाकार चिच्चको घावर्त्त कघते हैं, सामान्य रक्तवर्ण चिच्चको परिवर्त्त कघते हैं, घौर रक्तवर्ण जव चिच्चको जवाक्तति कघते हैं। १९२।

जो छोरा क्रिटेदार है, वह्र उमर घौर दौलतको नाग करता है, आवर्त्तका अयेवदार छोनेसे बज्जत प्रकारका खौफ पयदा करता है, परिवर्त्त अयेवदार छोनेसे बिमारी करता है, और जवाछति अयेवदार छोनेसे वही अयेव होता है। १९३।

किसी परिइतके मतानुसार जवके समान निशान स्नुख चोनेसे चाती और घोड़ाको नाश करे, और पीला घोनेसे कुल, धन और उमर नाश करे। जव चिच्चसे यच्ची सव चयेव चोता है। १९४।

117 20

TRANSLATION.

112. A blood-red, circular spot is a vindu, a circular spot situated in the middle is called an *avarta*, a simple red speck is entitled a *parivarta*, while a *Jabákriti* is a blood-red mark shaped like a barley corn.

113. A vindu-marked diamond is inimical to life and property; an *ávarta*-spotted one gives rise to various fears; a *parivarta*-specked and a *jabákriti*-spotted one are fraught with disease.

114. According to some, if the barley corn-shaped speck is red, it is destructive to horses and elephants; and when it is yellow, loss of family dignity and of wealth and curtailment of life are the consequences.

अञ्चर्गन ।

রক্তবর্ণ বর্ত্তুলাকার চিহ্নকে বিন্দু, মধ্যবর্ত্তুলাকার চিহ্নকে আবর্ত্ত, সামান্য রক্তবর্ণ চিহ্নকে পরিবর্ত্ত ও রক্তবর্ণ যবচিহ্নকে যবাকৃতি কহে। ১১২।

বিন্দুযুক্ত হীরক আয়ু ও ধন নাশ করে, আবর্ত্ত-দোষা-ন্বিত হীরক নানা ভয়ের উৎপাদক, পরিবর্ত্ত ও যবাকৃতি-দোষদূষিত হীরক নানাব্যাধিজনক হয়। ১১৩।

কাহারও মতে রক্তবর্ণ যবচিহ্ন হস্তী ও অশ্বের বিনাশক এবং পীতবর্ণ যবচিহ্ন কুলনাশক এবং ধনায়ুঃক্ষয়কারক হয়। যবচিহ্নের এই সকল দোষ উক্ত হইয়াছে। ১১৪।

Ľ.	118

मगिमाला।

मूलम्।

मव्यवका ग्रुमा रेखा वामवका मयद्भरी । केदभुान्तिकरी च्छेदा रेखा श्रस्त्रमयप्रदा ॥ १९५ ॥ पच्च हयप्रदृश्या या केदा सा परिकीर्त्तिता । रेखा वन्धुविनाशाय जायते वजुसंश्रया ॥ १९६ ॥ सव्या चैवापसव्या च केदा रेखोर्ड्वगामिनी । सव्या चात्मभिदा ज्ञे या अपसव्या धनच्छिदा । जर्ड्डा चार्सप्रहाराय केदा केदाय वन्धुभिः । १९७ ॥

तर्जमा।

चिर घगर दाहिने तरफ टेड़ा घोए, तो वइ उत्तम फल देवे, बांधे तरफ टेड़ा घोए. तो बज्जत तरच्चेका खौफ पयदा करे, चौर जिस् चिरसे घीरा फाटा मालुम घोए, वइ चिर घोनेसे तलवारका खौफ घोए । ११५ ।

घीरेमे जो चिर पत्तीके परके समान घोए, उसे केदा कचते हैं, चौर केदा निग्रान भाद वन्धुके विनाग्रका कारण घोता है। ९९६ ।

केदा निणान चगर वांथे तरफ टेढा घोष, तो चापने कुल्वेके साधमे कलच पयदा करे, दत्तिण तरफ टेढा घोष, तो दौलतका नाण करे चौर सिधा घोष, तो दोस्तीमे दुस्सुनि करावे । ११७ ।

119 %

K

TRANSLATION.

115. If the above-mentioned stripe appears in a bent form on the right side, it is productive of good consequences; but the same appearance on the left occasions various fears; again, the streak which looks like a cleft renders one liable to blows from weapon.

116. That stripe in a diamond which resembles a bird's wing is termed *chheda*. This mark brings about loss of friends.

117. When the *chhedá* mark is visible in a crooked form on the left, it leads to dissension with kindred; a like mark on the right side entails loss of wealth, and if pointing upwards, brings on difference with friends.

অন্থবাদ।

রেখাচিহ্ন দক্ষিণে বক্র হইলে শুভ ফল প্রসব করে, বামদিকে বক্র হইলে নানা ভয়ের কারণ হয়, এবং যে রেখা দ্বারা হীরককে ফাটা বলিয়া বোধ হয়, সেই রেখা হইতে শন্ত্রাঘাতের ভীতি উৎপন্ন হয়। ১১৫।

হীরকস্থিত যে রেখা দেখিতে পক্ষীর পক্ষের ত্যায়, তাহাকে ছেদা কহে, ছেদা চিহ্ন বন্ধুবিনাশের নিদান। ১১৬।

ছেদা চিহ্ন বামবক্রা হইলে আত্মীয় জনের সহিত কলহ সজ্ঞটন, দক্ষিণবক্রা হইলে ধনহানি এবং ঊর্দ্ধগামিনী হইলে বন্ধু বিচ্ছেদ করে। ১১৭।

1	3 .		
3	D		
	~	120	

मणिमाचा।

मूलम् ।

चक्वः काकपदाकारो दृग्धते यो मलाचितः । स मृत्युमादिशत्याशु धनं वासग्रहं हरेत्॥ ११८ ॥ भग्नाग्रं भग्नधारच्च दल्त्त्डीनच्च वर्त्तुलं । कान्तिच्चीनच्च यदजुं दोषाय न ग्रुणाय तत्॥ ११८ ॥ भिन्नस्वान्तिकर: चास: स चार्स जनयेद् घ्रुवं । एवं दोषा गुणा: प्रोक्ता वजुाणां सोमभूभुजा ॥ १२० ॥

तर्जमा।

जो दाग कौएके पांचोके समान होए, और वही दाग मलिन होए, उसे काकपद अयेव कहते है, जो खदमो एसा हीरा पहेरे, उस्का सर्वनाश होए, और मौड़ होए। ११८।

जिस् हीरेका आगेका हिस्सा, अथवा कोही किनारा टुटा होए, और जो हीरा दलहीन अर्थात् पल्वा, तेजहीन और देखनेसे गोलाकार, यही हीरा वडा अथेवी, और तर तरके अथेवका पथदा करनेवाला है। ११८।

जिस् सवव्से चीरेको टटा समजकर सक् पयदा घोेए, उस्को चास कचते हैं, और चासयुक्त चीरा घमेसा सव कामोमे चास चर्यात् भय देवे, सोमराज परिएडतोने दूसी तरहसे चीरेका सिफत चौर चयेवको लिखा है। १२०।

TRANSLATION.

118. The spot which is like the claw of a crow as well as dirty, is called $k\dot{a}kapada$. Death and ruin are near the man who wears a diamond marked with $k\dot{a}kapada$, and a stranger shall lord it over his home.

119. That diamond, the top or any side of which has been rifted, which does not show a leaflike arrangement of parts, which is devoid of lustre and which is globular, is not only void of any good property, but is positively productive of a variety of evils.

120. The mark the existence of which in any diamond imparts to it an air of apparent brokenness, is denominated *trasa*. Such a diamond always gives rise to fear. These good and bad qualities of diamonds have been described by Rájá Soma.

অহ্বাদ।

হীরকস্থিত যে দাগ কাকের পাদের চিষ্ণের অন্থরূপ, অথচ মলিন, তাহাকে কাকপদ দোষ কহে। যে ব্যক্তি কাকপদ-দোষ-ভূফ্ট হীরক ধারণ করে, তাহার সর্ববাশ, বাসগৃহ পরিত্যাগ, এমন কি মৃত্যু পর্য্যন্ত আসন্ন। ১১৮।

যে হীরকের অগ্রভাগ বা কোন একধার ভগ্ন, যাহা দলশৃন্য অথচ কান্তিহীন, দেখিতে গোলাকার, সে হীরক অতি নিগুর্ণ এবং নানা দোষের আকর। ১১৯।

যে চিহ্নদারা হীরককে ভগ্ন বলিয়া ভ্রান্তি জন্মে, তাহাকে ত্রাস কহে, ত্রাসদোষান্বিত হীরক সর্ব্বদা সর্বব বিষয়ে ত্রাস উৎপাদন করে। সোমরাজকর্তৃক হীরকের এই সকলপ্রকার গুণদোষের বিষয় উল্লিখিত হই-য়াছে। ১২০।

p

121

F	
J.	122
	THE

मूलम्।

एकमपि यस्य भुद्धं विदलितमवलोक्यते विश्वोर्षेम्वा । गुणवदपि तन्न धार्थ्यं वज्रं त्रेयोऽथिभिर्भवने ॥ १२१ ॥ स्फुटिताग्रविश्वीर्षेभुद्भदेशं मलवर्षेः पृषतेरुपेतमर्थं । नहि वजुन्धतोऽपि वजुमाशु त्रियमन्यात्रयनाशं विधत्ते ॥१२२॥ यस्वैकदेशे चतजावभासो यदा भवेन्नोहितवर्षेचित्तं । न तन्न कुर्यादपि वजुमाशु सुखस्य मृत्योरपि जीवितान्तं ॥१२३॥

तर्जमा ।

जिस् हीरेका आगा टुटा, या विश्वीर्ण होए, वह वज्जत् गुणयुक्त अर्थात् सव तारिफोंसे अरा होए, तभी वही हीरा अप्ना भाला चाहनेवालेको कभी अप्ने पाश रख्ना मनासिफ नहि। १२१।

जिस् चीरेका चागेका हिस्सा फाटा, ग्रृङ्ग टुटा चौर वीचका चिस्सा सलिन चोए, ऐसा घीरा इन्द्रके समान दौलतको नष्ट कर्नेवाला चैं। १२२।

जिस् घीरेका कोई हिस्सा लज्जके क्रिटेके समान निशान रख्ता घोए, या कुल हिस्मा लज्जके क्रिटेके संमान भरा घोए, वह घीरा त्राच्छे भाले खदमीका जल्द मौतका सवव्.है। १२३।

123 \$

K

TRANSLATION.

121. The diamond, the peak of which shews breaches, or which is decayed, no man who seeks his welfare should keep in his house, although it should be otherwise furnished with every perfection.

122. A diamond, the face of which is cracked, whose top is rent, and whose centre is full of dirt, can deprive even Indra of His highest Heaven.

123. If any diamond is marked with a blood-red spot, or if it is throughout red-spotted, it brings a speedy death to the most hale man.

অহুবাদ।

যে হীরকের শৃঙ্গ ভগ্ন বা বিশীর্ণ, তাহা অশেষ গুণযুক্ত হ'ইলেও নিজহিতাভিলাষী ব্যক্তি কদাচ গৃহে রাখিবে না। ১২১।

যে হীরকের অগ্রভাগ ফাটা, শৃঙ্গ বিশীর্ণ, এবং মধ্য-ভাগ মলপূর্ণ, সেই হীরক ইন্দ্রের ইন্দ্রন্থ পর্য্যন্ত অন্য ব্যক্তির করতলগত করিতে সক্ষম। ১২২।

যে হীরকের কোন অংশ রক্তবর্ণ চিহ্নে চিহ্নিত অথবা সমুদায় অংশ লোহিতবর্ণে চিত্রিত, সেই হীরক অতি স্থস্থ ব্যক্তিরও আশু মৃত্যুর কারণ হয়। ১২৩।



मूलम्। प्रथमं ग्रुणसम्पदाभ्युपेतं प्रतिवद्वं समुपैति यत्सदोषं । चलमाभरणेन तस्य राज्ञो ग्रुणचीनोऽपि मणिन भूषणाय॥१२४॥ यस्य च्वते भवेच्छोयो दाचो वा ज्वर एव वा । तच चिमिचिमायेत तदजुं दुष्टमुच्चते । वर्केशं ग्रुष्त् यद्वज्ञं न तद्वारयते नृपः ॥ १२५ ॥ चिकोणं कलचायं स्याच्चतुष्कोणं भयावर्डं । पञ्चकोणे भवेन्मृत्युः षट्कोणं श्रुभमादिश्चेत् ॥ १२६ ॥

तर्जमा।

जो घीरा पहिले गुणयुक्त समभा जाय, और फेर सोनेमे जड़वानेमें उस घीरेमे अयेव पयदा घोए, अर्थात् वच्च पाणि और वच्च चमक वाकी ना रहे, तो ऐसा घीरा गचनेमे जड़वानेके लायेक नचि, किस्लियेके अयेवी वस्तु कभी सूषणके योग नर्द्धि । १२४।

जिस् हीरेके जखम पर क्वेंगानेसे जखमम े शोध पयदा होए, बुखारमे दाहको छद्धि और चङ्ग चिम चिम करे, वह हौरा नेहाएत खाराफ होए, दूस कारण उम्को मकानमे रखना मनासिफ नहिं; और जो हीरा चोजनमे भारी, नेहाएत हाम्बार, वज्जत कर्कश, वह हीरा काजाको किसी तरहसे पहेर्ना उचित नहिं। ९२५।

तिनकोणा चीरा भागड़ेका, चौकोणा चीरा बज्जत् तरहके खौपका, पांचकोणा चीरा मौतका कारण घोर, चौर ककोणा चीरा मङ्गल करनेवाला चै। ९२६।

125 %

TRANSLATION.

124. The diamond which at first appears possessed of good qualities, but which on being set on gold, &c., betrays defects, should never be selected for ornamentation; since a thing devoid of good properties should never be used for such a purpose.

125. A diamond the touch of which causes swelling in a wound and an increased sensation of burning in a fever and which brings on a sensation of fainting, is a bad gem and must not be treasured. The diamond which is rough is not acceptable to kings, although it may be weighty.

126. A three-cornered diamond gives rise to quarrel, a four-cornered one occasions various fears, a five-cornered one brings death, but a six-cornered diamond is productive of good.

অহ্বাদ।

যে হীরককে প্রথমে গুণযুক্ত বলিয়া প্রতীয়মান হয়, কিন্তু স্থবর্ণাদি দ্বারা জড়িত হ'ইলে দোষাপ্রিত হ'ইয়া পড়ে, এরপ হীরক দ্বারা কদাচ অলঙ্কার নির্দ্মাণ করাণ কর্ত্তব্য নহে, যেহেতু গুণহীন বস্তু কথনই ভূষণের উপযুক্ত নহে। ১২৪।

যে হীরকের স্পর্শে ক্ষতে শোথ, জ্বরে দাহরুদ্ধি হয় এবং অঙ্গ চিম চিম করে, সে হীরক অতি ভুষ্ট, স্নতরাং তাহা গৃহে রাখা কর্ত্তব্য নহে। এবং যে হীরক পরিমাণে গুরু, কিন্তু অতিশয় কর্কশ, সে হীরক নৃপতিদিগের অগ্রাহ্য। ১২৫।

ত্রিকোণ হীরক কলহের, চতুক্ষোণ হীরক নানা ভয়ের, পঞ্চকোণ হীরক মৃত্যুর এবং ষট্কোণ হীরক মঙ্গলের নিদান। ১২৬। £ 126

मगिमाचा।

मुलम्। दिदले कलघो नित्य विदले खखनाग्रनं। चतुईले खखावाप्तिः ग्रोकख पचमे दले॥ १२७॥ षड्दले राजतो भौतिर्मृत्युः सप्तदले तथा। चष्टदलं भवेच्छुद्वं वजुमित्याच पावकः॥ १२८ ॥ विच्छायं विषदद्धरोति मलिनं धत्ते ग्रुचं कर्कग्रं दुःखं स्ते च्चविलिप्तमत्तकरणं ग्र्यावच्छवि क्रोग्रज्ञत्। रेखाकाकपदाद्धविन्दु सचितं स्यान्मृत्यवे देच्चिनां वजुं वजुविचच्चणस्तु विश्वयात्तस्पादिचार्य्य स्वयं॥ १२८॥

तर्जमा।

त्रानपुराणके मतसे दोदलका घीरा अगड़ेका कारण, तिनदलका घीरा खखका नाम करनेवाला, चौदलका घीरा खख देनेवाले, पांचदलका घीरा मौक पयदा करने-वाला । १२७ ।

क्रदलका हीरा राजभय करनेवाला, सातदलका हीरा मौतका कारण और अष्टदलका हीरा बज्जत् आच्छा है। १२८८।

चमकघीन घीरा चापदका सवब, मलिन घीरा गम देनेवाला, नाघाय्वर अर्थात उचा नीचा घीरा दुःख देनेवाला, कम पाणि घीरा खफकान घोनेका कारण, खामवर्ण घीरा बज्जत दुःख देनेवाला, और चिर, काकपद चौर किटादार घीरा मौतका कारण है; दूर्स्लिये पहिले खुव चाच्छि तरहे परख करके वाद उसुको धारण करना मनासिफ है। १२२८।

TRANSLATION.

127 %

127. A two-layered diamond, (says the Agni Purána,) brings about quarrel, a three-layered one is destructive of happiness, a four-layered diamond is productive of it, and a five-layered diamond occasions grief.

128. A six-layered diamond causes fear to kings, a seven-layered diamond is mortal,* while an eight-layered one is surpassingly pure.

129. Since a shadeless diamond is fraught with danger, a dirty diamond with grief, a rough diamond with unhappiness, an unfeeling diamond with intoxication, a black diamond with various troubles and a *rekha*-marked, a *vindu*-marked, or a *káka-pada*-spotted diamond, with death, it behoves a man to wear diamonds after minute examination.

অহ্বাদ।

অগ্নিপুরাণের মতে দ্বিদল হীরক কলহের কারণ, ত্রিদল হীরক স্থখনাশক, চতুর্দল হীরক স্থখদায়ক, পঞ্চদল হীরক শোকজনক। ১২৭।

ষড়দল হীরক রাজভয়ের নিদান, সপ্তদল হীরক মৃত্যুর হেতু এবং অফটদল হীরক অতি বিশুদ্ধ। ১২৮।

ছায়াহীন হীরক বিপদের হেতু, মলিন হীরক শোক-জনক, কর্কশ হীরক ছুঃখদায়ক, স্নেহহীন হীরক মন্ততার কারণ, শ্যামবর্ণ হীরক নানাক্লেশকর এবং রেখা কাকপদ ও বিন্দুযুক্ত হীরক মৃত্যুর নিদান; অতএব অগ্রে বিশিফ্টরপে বজ্রের পরীক্ষা করিয়া পশ্চাৎ তাহা ধারণাদি করা কর্ত্র্ব্য। ১২৯।

* Used literally ; L. mortis, death ; Sanskrita, mri, to die.

128

मूलम्। च णुनापि च दोषेण लच्यालच्येण दूषितं। तन्मूल्याई समंभागं वज्रं लभते वा न वा ॥ १३०॥ प्रकटानेकदोषस्य खल्पस्य महतोऽपि वा। स्वमूल्याच्छतशो भागो वजुस्य न विधीयते॥ १३१॥ स्पृष्टदोषमलङ्कारे वर्जुं यद्यपि इस्वते। रत्नानां पविकर्माधं मूल्यन्तस्य भवेंक्षघु ॥ १३२॥ युर्व्विणीभिन धर्त्तव्यो युवतीभिरयं मणि:। जठरे वजुमम्पर्काद् गर्भस्तासां विनम्धति ॥ १३३॥

तर्जमा।

जो हीरा योड़े अर्येवसे अयेवी है, और वह अयेव देखनेमे आये जा ना आये, लेकिन उम् हीरेका दाम वे अयेव हीरेके आधे दाममे बरावर भी नहि हो सका।१३०।

जो घीरा बज्जत् अयेवसे अयेवी है, और बह सव अयेव बज्जत् योड़ा घोए, या ज्यादा घोए, उस घीरेका दाम वेअयेव घीरेके मोकाबेलमे शतमागके बरावर नहिं है। १३१।

जिस् गईंनेमें अयेवी हीरा जड़ा होए, वह सब गहेना अगर देखनेमें बज्जत भाला होए, मगर उसका दाम बज्जत कम होगा। १३२।

खाराव चीरा गर्मिणी स्त्रीके लिये बऊत् टुःखदायी चै, द्रस कारण चयेवी चीरेके पाश रखनेसे गर्म गिर जानेका खौफ चैं। १३३।

129 %

TRANSLATION.

130. It is doubtful whether those diamonds that are slightly defective, are even half as valuable as flawless ones, although their defects should escape the eye.

131. The worth of those diamonds that possess many bad qualities, although all of them of a triffing nature, is not even a hundredth part of the value of a sterling diamond.

132. The value of such ornaments as are set with impure diamonds is small, although the ornaments themselves may otherwise be very fine.

133. Defective diamonds are very dangerous to youthful women under conception : the contact of such gems may lead to abortion.

অহ্বাদ।

যে হীরক অতি সামান্য দোষদূষিত, এবং সেই দোষ লক্ষ্যই হউক বা অলক্ষ্যই থাকুক, তাহার মূল্য নির্দ্দোষ হীরকের অর্দ্ধপরিমিত হয় কি না হয় সন্দেহ। ১৩০।

যে হীরক অনেক দোষাঞ্রিত, এবং সেই সকল দোষ অতি সামান্যই হউক বা অধিক হউক, তাহার মূল্য নির্দ্দোষ হীরকের শতভাগের এক ভাগ মাত্রও হইতে পারে না। ১৩১।

যে অলস্কারে দোষাঞ্রিত হীরক সংযুক্ত থাকে, সেই অলস্কার অতি উৎকুষ্ট হইলেও তাহার মূল্য অতি সামান্য হইয়া থাকে। ১৩২।

ছুষ্ট হীরক গর্ভিণী স্ত্রীলোকদিগের পক্ষে অত্যন্ত দোষা-বহ, যেহেতু তাদৃশ হীরকসংসর্গে তাহাদিগের গর্ভপাতের অধিক সম্ভাবনা। ১৩৩।

Q

130

मणिमाचा।

मूलम् । त्रयमा पद्मरागेण तथा गोमेदकेन च । वैदूर्थ्यस्फटिकाभ्याच कार्च्रेश्वापि ष्टथग्विधैः ॥ १३१ ॥ प्रतिरूपाणि कुर्व्वान्त वज्रस्य कुण्रला नराः । परीचा तेषु कर्त्तव्या विदङ्किः स्ठपरीचकैः ॥ १३५ ॥ चारोन्नेखनणाणिस्तु कार्थ्यं तेषां परीचणं । चयते ण्राणसंघर्षात् चूर्णतां याति चूर्णितं ॥ १३६॥ चारास्तं लेपयित्वा तु रौद्रे चैव परिचिपेत् । छाचिमं याति वैवर्णेय सइजच्चातिदी खते ॥ १३७॥

तर्जमा।

लोहा, माणिक, गोमेट, लगुनिया, स्फटिक और इर तरहका काच, इस सव चीजोंके जरियेसे आच्छे कारिगर लोक फरेवी हीरा बानाते हैं, इसलिये हीरा खरिट्नेके समे आच्छे जहरीकोंके दारा हीरेका परीचा कर्ना मना-सिफ हैं। १३४। १३५।

चूणा आदि चारसे, घिसनेसे और शाणसे इन् तिन चीजोंने घीरेकी परीचा घोति है, फरेवी घीरा घोनेसे चूणा आदि चारके संयोगसे चूर घो जायेगा, और घिसनेसे और शाणसे जलद घिस् जायेगा, लेकिन आसल घीरा घोनेसे कभी घटे, वाढ़ेगा नहि, अर्थात् समान रहेगा ! १३६ ।

चार और घमि दोनको मिलाकर घीरेपर लेप करके धूपमे गुखाकर पाणिसे धोडाले तो कुठा घीरा मयला घो जावेगा, लेकिन चापल घीरा दूस् मसालेके देनेंसे और भी चमकदार घो जायेगा। १३७।

131 20

TRANSLATION.

134—135. Skilful lapidaries make use of iron, the ruby, the gomeda (agate ?), the lapis lazuli, crystal, and glass of various colors, in fabricating false diamonds; therefore, before buying diamonds, they should be first tested by a skilful judge of precious stones.

136. There are three ways of testing a diamond; 1st, by mixing it with ashes; 2ndly, by rubbing; and, 3rdly, by whetting a weapon over it. A false diamond is reduced to powder by the first test, and wears away by the second and the third,—changes which can never be produced in real diamonds.

137. Again, smear a diamond with a mixture of ashes and acid, and dry it in the sun; and if it is a false diamond, it will show loss of lustre on being washed, but a real one will receive additional brilliancy.

অন্থবাদ।

লোহ, পদ্মরাগ, গোমেদ, বৈদূর্য্য, স্ফটিক এবং বিভিন্ন বর্ণের কাচ, এই সকল বস্তুদ্বারা স্থনিপুণ শিল্পী ব্যক্তিরা হীরকের প্রতিরূপ অর্থাৎ কৃত্রিম হীরক প্রস্তুত করিয়া থাকে, অতএব হীরক ক্রয় করিতে হইলে বজ্রকুশল স্থপরীক্ষকদ্বারা অগ্রে পরীক্ষা করিয়া পশ্চাৎ ক্রয় করা কর্ত্ত্ব্য। ১৩৪।১৩৫।

ক্ষারসংযোগ, ঘর্ষণ ও শাণ এই ত্রিবিধ উপায়ে হীরকের পরীক্ষা হইয়া থাকে, হীরক ক্রত্রিম হইলে চূর্ণাদি ক্ষার-সংযোগে চূর্ণ হইয়া যায়, এবং ঘর্ষণ ও শাণ দ্বারা ক্ষয়প্রাপ্ত হয়, কিন্তু প্রকৃত হীরক কদাচ উক্ত পরীক্ষায় বিকৃতভাব ধারণ করে না। ১৩৬।

ক্ষারযুক্ত অম হীরকে লেপন করিয়া রোদ্রে শুদ্ধ করত ধোত করিলে ক্নত্রিম হীরক বিবর্ণতা প্রাপ্ত হয়, কিন্তু অরু-ত্রিম হীরক পূর্ব্বাপেক্ষা অধিকতর দীপ্তিশালী হইয়া উঠে। ১৩৭।



मणिमाचा।

मूचम्।

प्टथियां यानि रत्नानि ये चान्ये लौचधातवः । सर्व्वाणि विलिखेदज्रं वज्रं तैने विलिखते ॥ ९३८ ॥ युरुता सर्वेरतानां गौरवाधानकारणं । वज्रे तु तद्वैपरीत्य ऋरिभिः परिचच्चते ॥ ९३८ ॥ जातिरजातिं विलिखति जातिं विलिखन्ति वज्र कुरुविन्दाः । वज्रं वेज्रं विलिखति नान्येन विलिखते वज्रं ॥ ९४० ॥

तर्जमा।

जमीनपर जित्ने किसिमके रत्न और लोडा बडगैरड सकत चीज है, उन तामाम चीज हीरेसे कटति है, लेकिन हीरा किसी चीजसे कट नहि सका । १३८ ।

रत्नपर्ची पण्डितोंके मतके चनुसार भारीपन, सव रत्नोका जमदाका कारण है, लेकिन हीरा दसके खेलाप तारिफका सवब है, चर्यात् हीरा कट्मे बडा चौर चौजनमे कम होना तारिफका सवब है। १३६।

अछाचिम अर्थात् सांचे छीरेके जरियेसे छाचिम अर्थात् भुठा छीरा कट जाता है, और आपल छीरा कुरुविन्द अथवा आपल छीरेके जरियेसे कट जाता है, लेकिन और किसी घीजसें नहि कटेगा। १४०।

133 %

TRANSLATION.

138. The diamond can make scratches on every other hard substance, but itself is not susceptible of such impression by ever so hard a thing.

139. Ancient authorities in the science lay down heaviness as the most valuable quality of all gems, but this does not apply to diamonds; *i.e.*, the less the weight of a diamond in proportion to its bulk, the greater is its value.

140. An unreal diamond can be scratched by a real one, as also the latter by a *kuruvinda*,* or by a real diamond, but not by anything else.

अञ्चर्गन ।

পৃথিবীতে যতপ্রকার রত্ন বা লোহাদি কঠিন পদার্থ আছে, সকল বস্তুই হীরকদ্বারা অঙ্কিত হইতে পারে, কিন্তু অন্ত কোন পদার্থ দ্বারাই হীরককে অঞ্চিত করিতে পারা যায় না। ১৩৮।

রত্নতত্ত্ববিৎ পণ্ডিতদিগের মতে গুরুতাই সকল রত্নের গৌরবের কারণ, কিন্তু হীরকে তদ্বৈপরীত্যই অধিক প্রশং-সনীয় অর্থাৎ হীরক আকারে ব্বহৎ হইয়া পরিমাণে যত লখু হইবে, ততই তাহার গৌরব ব্লদ্ধি হ'ইবে। ১৩৯।

অকৃত্রিম হীরকদ্বারা কৃত্রিম হীরক অঞ্চিত হয়, এবং প্রকৃত হীরক কুরুবিন্দ বা অকৃত্রিম হীরকদ্বারাই অঞ্চিত হইয়া থাকে, তদ্তিম অন্থ কোন বস্তুদ্বারাই অঞ্চিত হইতে পারে না। ১৪০।

* A kind of ruby.

-10	
63	
33	10/
	134

मणिमाला।

मूलम्।

वजुाणि सुकामणयोे ये च केचन जातयः । न तेषां प्रतिवद्धानां भा भवत्यूर्द्धिगामिनी ॥ ९८९ ॥ यन्मूल्यं वाह्मणे प्रोक्तं पादेनानेन वाऊ जे । चन्नेनैव क्रमेणेव मणिमूल्यं विधीयते ॥ ९८२ ॥ चतुर्विधमिदं वजुं यदुक्तं जातिभेदतः । चतुर्विधन्रुं पतिभिर्धार्थ्यमाणमनुक्रमात् । चतुर्विधन्रुं पतिभिर्धार्थ्यमाणमनुक्रमात् । चतोऽन्यया धृतिः कुर्य्याद्रोगशोकभयं तया ॥ ९८३ ॥

तर्जमा।

घीरा, मोति, माणिक वच्नेरेह घगर वन्ट जड़ाओ घोर, तो उस्की किरण उपरको ना जावेंगो। ९८१। वाह्मण घीरेको जो दाम घोगा, चचिवर्ष घीरेका घारयाना दाम घट जावेगा, वैश्ववर्ण घीरेका आधा दाम और खद्रवर्ण घीरेका चौथाइ दाम घोगा। ९४२। बाह्मणवर्ण घीरा वाह्मणको, चचिवर्ण घीरा चचिको, वैश्ववर्ण घीरा वैश्वको चौर खद्रवर्ण घीरा खदिको पहेरना चाहिए, उस्के खेलाप विमारी, रच्च, गम, खौफ्का सवक घे। ९४३।

135 80

K.

TRANSLATION.

141. When a diamond, a pearl, &c., set on gold , or any other precious metal, look downward, their rays do not radiate upwards.

142. The price of a Kshetriya diamond is onefourth, that of a Vaisya diamond one-half, and that of a Sudra diamond three-fourth less than the price of a diamond of the Brahmin class.

143. If a king wearing a diamond belongs to the same caste that it belongs to, the circumstance is productive of good; the reverse brings about disease and grief.

অন্বাদ।

হীরক, মুক্তা এবং অপরাপর যে কোন মণি স্থবর্ণাদি-দ্বারা প্রতিবদ্ধ হইলে অর্থাৎ তাহাদের নিম্নবদ্ধ করিলে তাহাদিগের কিরণ কখনই উর্দ্ধগামী হয় না। ১৪১।

ব্রহ্মবর্ণ হীরকের যে মূল্য হইতে পারে, ক্ষত্রিয়বর্ণ হীরকের তাহার একপাদ ন্যন, বৈশ্যবর্ণ হীরকের দ্বিপাদ ন্যন এবং শুদ্রবর্ণ হীরকে ত্রিপাদ ন্যন মূল্য হইয়া থাকে। ১৪২।

ব্রাহ্মণাদি চারি জাতীয় হীরক ব্রাহ্মণাদি চারি জাতীয় নৃপতিকর্তৃক ধৃত হইলে শুভ ফল প্রসব করে, তদ্বৈপরীত্যে রোগ, শোকাদি ভয়ের নিদান হয়। ১৪৩। 136

मणिमाचा।

त्रय वज्जमार खविधि:।

मू चम्।

त्र शुद्धं कुरुते वज्रं कुष्टं पार्ख्व व्यथां तथा। पार्ग्डुतां पङ्गुरलच्च तसात् संशोध्य मारयेत्॥ ९८८॥ गृचीत्वाच्चि शुभे वज्रं व्याघ्रीकन्दोदरे चिपेत्। माच्चिगिविष्ठया लिप्तां कारिषाग्नौ विपाचयेत् ॥ ९८५ ॥ चियामायां चतुर्यामं यामिन्यन्ते ऽश्वमूचके। सेचयेत् पाचयेदेवं सप्तराचेण ग्रुष्यते ॥ १८६ ॥

हीरेका मारनेका उपाय।

तर्जमा।

अग्रुद्व हीरा औषधमे व्यवहार करनेसे कुछ, पार्श्वका वेदना, पार्ग्डुरोग और खद्धता होए, दूसलिये पहिले हीरेको संग्रोधन करके पीक्वे औषधमे व्यवहार करना चाहिए । १४४ ।

ग्रुम दिनमे चीरेको कण्टीकारीरसमे भिजाकर भंद्रसका विष्ठा लेप देकर घुंटेका चागसे दग्ध करना मनासिक चै। ९४५।

तामाम रात वही प्रकारसे दग्धकर फजोरमे घोड़े का मूतमे भिजाकर चागमे दग्ध करा उचित है, यही प्रकारसे सात दिन दग्ध करनेसे हीरा संग्रोधित हो जागा। १४६।

137

THE PROCESS OF REFINING A DIAMOND. TRANSLATION.

144. Impure diamonds when used in medicine lead to leprosy, pleurisy, jaundice and lameness. It is therefore highly advisable to refine a diamond before using it medicinally.

145. The process is on some auspicious day to dip a diamond in the juice of $kantakári^*$ and then to burn it in a fire made by dried pieces of the dung of cow and buffalo.

146. The burning should be carried on for a whole night; in the morning the diamond should be put under horse's urine, and again burnt. By this process of burning being continued for seven days together, the diamond will be refined.

হারকমারণবিধি ৷

অহুবাদ।

অশুদ্ধ হীরক ঔষধে ব্যবহার করিলে তদ্ধারা কুষ্ঠ,পার্শ-বেদনা, পাণ্ডুরোগ ও পঙ্গুতা জন্মে, অতএব অগ্রে হীরক সংশোধন করিয়া পশ্চাৎ ঔষধে ব্যবহার করা কর্ত্রব্য। ১৪৪। শুভ দিনে হীরককে কণ্টীকারীরসে ডুবাইয়া মহিষের

বিষ্ঠালিপ্ত করিয়া ঘঁটের আগুণে পুড়াইবে। ১৪৫।

সমস্ত রাত্রি উক্তপ্রকারে দগ্ধ করিয়া প্রাতঃকালে অশ্ব-মূত্রে ভিজাইয়া পুনরায় অগ্নিতে দগ্ধ করিবে, এই ভাবে সাত দিন দগ্ধ করিলে হীরক শুদ্ধ হ'ইবে। ১৪৬।

* Solanum jaquiri.

R

SO.	
100	.138
20 20	.138
1	

मणिमात्ता।

मूलम्।

चिङ्गुसैन्धवसंयुक्ते चिपेत् काथे कुलत्यजे। तप्तं तप्तं पुनर्वज्र आवेझसा चिसप्तधा ॥ १४७ ॥ चायुः पुष्णिं वर्त्तं वीर्थें वर्णे सौख्यं करोति च । येवितं सर्व्वरोगन्नं मृतं वर्ज्रं न संग्रयः ॥ १४८ ॥ व्याघृीकन्दद्रवे चिप्त्वा सप्तधा पुटिते पचेत्। मर्ख्टूकं कांस्यजे पाचे निग्रह्य स्थापयेत् सुधी ॥१४८ ॥

तर्जमा।

चिङ्ग और सैन्धव नेमकसंयुक्त माघकलादूका कायमे भिजाकर एकिग्र वार तप्त करनेसे चीरा भस्त चो-जागा। १४७।

संशोधित घोरा चदमीका चायु, वदनका पुष्टि, वल, वीर्थ्य, रङ्ग चौर सुख दक्ति ससुदायका टहि चौर सळे-प्रकार विमारीका शान्ति करेगा। १४८०।

पहिला हीरेको कर्ग्टीकारी गाकके रसमे डुवाकर सात वार पुठ पाकमे (एक मट्टिके कटोरिमे जो चीज भस्स करना हो, वह रखकर दुसेरे मट्टिके कटोरेसे वन्ट करके माट्टि चौर गोबर मिलाकर खुभ लेप करके चागमे ज्वलानेको पुटपाक कहते हैं) पाक करना चाहिए, बाद उस्के एक कांसेके बर्त्तनमे एक मेढक रखना चाहिए। ९४८।

TRANSLATION.

139 %

147. Then immerse it in a gruel made of *kaldya*,* into which assafeetida and *saindhava* salt[†] also enter as ingredients, and lastly heat it repeatedly twenty and one times. By this means, the diamond will be reduced to ashes.

148. The imbibition of a purified diamond conduces to longivity, general development of the body, strength, energy, beauty of complexion and happiness, and effects cure from every distemper.

149-150. The process of burning a diamond is as follows:—Put the diamond in the juice of kantakári, place it in an earthen-pot, and placing another over it, smear the two with hard clay and cow-dung, then burn the whole; this should be repeated seven times. Then steep the

অহ্বাদ।

হিঙ্গ ও সৈন্ধবলবণসংযুক্ত কলায়ের কাথে ভিজাইয়া একবিংশতিবার পুনঃ পুনঃ তপ্ত করিলে হীরক ভস্মবৎ হইয়া যাইবে। ১৪৭।

সংশোধিত হীরকসেবনে আয়ু, শরীরের পুষ্ঠি, বল, বীরত্ব, বর্ণ ও স্থথ এই সমুদায়ের রুদ্ধি এবং সর্ব্বপ্রকার রোগের শান্তি হয়। ১৪৮।

প্রথমতঃ হীরককে কণ্টীকারীরসে ডুবাইয়া সাতবার পুট-পাকে (এক খানি খুরী বা তদাকার কোন মৃৎপাত্রে কোন বস্তু রাথিয়া অপর একথানি তাহাতে কুজ্ঞাকারে আচ্ছাদন করিয়া আঠালমাটী ও গোময় ইত্যাদির লেপ দিয়া সেই পাত্র অগ্নিতে দগ্ধ করার নাম পুটপাক) পাক করিতে হয়, পরে একথানি কাংস্থপাত্রে একটী মণ্ডুক ধরিয়া রাখিবে । ১৪৯।

* Various leguminous seeds, chiefly of the order Phaseolus. Williams.
 + A kind of rock salt found in the country of the Sindhu (Indus). Ibid.

06	4
E.	140
r	

मणिमाला।

मूलम्। स भीतो मूचयेत्तच तन्मूचे वज्रमावपेत् ! तप्तं तप्तच वज्जधा वज्रस्यैवं मृतिभवेत् ॥ १५० ॥ रसे यच भवेद्वज्रं रसः सोऽमृत उच्यते । भस्सीभावगतं युक्ताा वजुवत् कुरुते तनुं ॥ १५१ ॥

तर्जमा ।

वह मेढक खौफ करके उस् वर्त्तनमे मूत देगा, बाद उस्के उसी मूतमे वहु ज्वला ज्ज्या हीरा भिगोना होगा, चौर फेर चागमे ज्वलान होगा, इस तरहसे वह हीरा खाक चर्यात् मस्न हो जायेगा । १५० ।

चीरेके संयोगसे जो दाखोया तैयार कि जाती चै, वच्च चमृतके समान चै, इस्लिये वच्ची दाखोया खानेसे वदन चीरेके समान मज्बुत् चोएगा । १५१ ।

इति चीरेका वयान।

A States Barrow

141 \$

TRANSLATION.

diamond in frog's urine held in a pot composed of zinc and copper, and heat it over and over in fire. The diamond will then have been entirely burnt, and can be reduced to powder.

151. Those medicines into the composition of which the diamond dust enters, are like ambrosia; and the imbibition of these imparts adamantine strength to the limbs.

অহ্বাদ।

মণ্ডুক ভীত হইয়া সেই পাত্রে মৃত্র পরিত্যাগ করিবে, সেই মৃত্রে পূর্ব্বপুটপাকদগ্ধ হীরক উল্লিখিত মণ্ডুকমৃত্রে ভিজা-ইয়া পুনঃ পুনঃ অগ্নির উত্তাপ দিলেই হীরক দগ্ধ প্রস্তর-বৎ চুর্ণাকারে পরিণত হইবে। ১৫০।

হীরকভম্মসংযোগে যে সকল ঔষধ প্রস্তুত হয়, তৎসমু-দায় অমৃতসদৃশ, সেই ঔষধ সেবনে দেহ বজ্রের ন্যায় দৃঢ় হয়। ১৫১।

ইতি হীরক।

A 142

6%

THE DIAMOND.

THE DIAMOND.

Its properties.

HE Diamond might appropriately be called the king of gems. Whether, in respect to beauty, lustre, transparency, hardness or density, there is no other stone yet discovered that can surpass it. In fact it is the hardest of all substances—it resists the action of the file and can only be cut by its own dust. It is known in Sanscrit as the baira and in the West, was called, in times of old, the Adamant; both the terms signifying hardness. The origin of this precious stone is lost in the mist of antiquity. The imagination of poets has supplied the data which history has failed to afford. It is said that "Diamond was the name of a beautiful youth of the Island of Creta, one of the attendants of the infant Jupiter, in his cradle. The God who placed, among the celestial bodies, the nymphs and goat that had reared him, could not leave this youth subject to the ills 'that flesh is heir to.' Diamond was transformed into the hardest and most brilliant substance in nature."

All the opinions that have been collected as to the origin and formation of the Diamond can be placed under two heads, (a) that it is formed immediately from carbon or carbonic acid by the action of heat: (b) that it is formed from the gradual decomposition of vegetable matter. Its spe-

143 20

S.

cific gravity is about 3.5; its cleavage, very perfect; its refraction, simple; it is transparent and translucent; infusible, and unassailable by acid. Doubts were entertained as to its combustibility, but experiments made by scientific men, on various occasions, have led to the discovery of the fact that it was only by entirely shutting out the air and therefore the oxygen with which the carbon combines, that the Diamond could be preserved from burning; whereas, by simply letting in the air of which oxygen is a constituent part, it would burn just as well as common coal. The temperature must be very high to burn a whole Diamond. Small Diamonds and Diamond-dusts can be burnt up in a much lower degree of temperature. The crystalline form of the Diamond is either octrahedron (as found in India) or rhombic dodecahedron (as found in Brazil). Its magnifying power being greater than that of glass, it is sometimes used for microscopic purposes. It possesses, in addition to its strong refracting properties, the power of reflecting the coloured rays of light. It becomes phosphorescent, on its being exposed to sunshine and remains so until it is removed or even when covered with cloth or leather or paper. It is known to be a non-conductor of electricity, but by friction, however, both in the rough and polished state, it becomes positively electric, though only for a short time.



THE DIAMOND.

Where found.

THE ancient authorities seemed to agree in considering India to be the place from which Diamond was first supplied to them, but none of them could point out the particular locality where it was first discovered. Pliny says very vaguely that "the gem-producing rivers are the Acesines (Jenaub) and the Ganges." Dronysius Periegetes enumerates the Diamond amongst the numerous gems picked up in the river-beds by the natives of India, as anciently understood, lying to the east of Mount Paropanisus and Ariana. All that Mahomed Ben Mansur knew of the Indian Diamond mines was the fable, that "in the eastern part of India, there is a deep valley inhabited by serpents, where the Diamond is produced, but some believe it to be gotten in the mines of the Jacut (Ruby)."

Amongst the many fables describing the mode in which Diamond could be obtained, is one which says that when Alexander visited the mountain Zulmeah (called by others, Sarandip) where the inaccessible valley of Diamonds is situated, he directed pieces of flesh to be thrown in ; vultures picked these up with the precious stones attached to them and dropped them on various parts of the earth, in the course of their flight. Marco Polo, who travelled in India, in the beginning of 13th century, gives accounts of the manner in which Diamonds were then obtained—which agree materially with the tale given above. The first authen-

145 %

tic and detailed account of the Indian mines is known to have been written by Jean Baptiste Tavernier, a merchant-jeweller, who had travelled in India in the 17th century. He is known to have visited three Diamond mines; the first being that of Raolconda, a place about five days' journey from Golconda and eight or nine from Visapore; the others being those of Coloor and Sumbulpore. People give Tavernier the credit of being the first European that had visited the Golconda mines. But it is really due to one Methold who had visited them before him, in 1622. Several other mines have since turned up. Karl Ritter has divided the Diamond-producing countries of India into five groups:

1st. The Cuddapah group, on the Pennar River. Diamonds are found in Cuddapah, Condapetta and Ovumpully, Landur, Pinchetgapuda and still further beyond the Pennar valley as far as Gandicotta and according to some, even Gutidrug. The Diamond-beds in the Ovumpully mines are of varying width and the stones are generally rounded. Those found still further west are said to be the best.

2nd. The Randial group, between the Pennar and the Kistna, near Bangapally. The Diamondbeds here are only about a foot thick. Most of the Diamonds of this district lie loose and their forms are of the double pyramid and dodecahedra.

3rd. The Ellore group, on the lower Kistna or the Golconda group. It is worth while disabusing

S

THE DIAMOND.

the minds of many of the impression that Golconda produces Diamonds. Golconda proper has no mines, nor any, in its immediate vicinity. The stones were found at the base of the Neela-mulla mountains in the neighbourhood of the Kistna and Pomar Rivers; they were then brought to Golconda in a rough state, and there cut and polished. This place becoming the principal mart, it was commonly supposed that the gems were found close by. The Fort at Golconda was the storehouse of the great Diamonds in the Nawab's dominions. The discovery of the mine, which has made Golconda so famous, is attributed to a poor shepherd who came across what he thought a pretty pebble, in the course of tending his flocks. This he bartered to another for a little rice. After passing through several hands, it fell, at last, into those of a merchant who at once knew what it was and discovered the mine, after considerable trouble in searching. It has been mentioned before that Tavernier visited the mines of Raolconda. This place comes within the province of this group. Its position is towards the middle tributary of the Kistna. There are other mines to the eastward, on the lower Kistna. The most celebrated amongst these, is the one called "Coloor" by the Persians. and "Gani" by the natives, situated about 15 miles north-west of Masulipatam. This was also visited by Tavernier and was described by him as being the birth-place of the "Great Mogul," which was

147 80

said to have weighed $787\frac{1}{2}$ carats in its rough state and 297 after it was cut.

4*th.*—The Sumbulpore group, north of the Godavery, on the central tributary of the Mahanuddy. This Diamond district extends to the immediate vicinity of Sumbulpore only and between the Rivers Mahanuddy and Brahmine. In the year 1818, the year in which Sumbulpore was annexed to the British territories, a Diamond was found here which weighed 84 grains, and although of only the third quality it was said to have been sold for Rs. 5,000.

5th.—The Panna group in Bundelcund, between the Rivers Sonar and Sone. The Diamond beds in this group lie near Bengal, Behar and Allahabad on the south bank of the Ganges. The most productive Diamond mines in this group were, in 1860, at the village of Sukariah, situated about 20 miles from Panna. Four kinds of Diamonds were found here; 1st Motichul, clear and brilliant; 2nd Manik, verging in color to green; 3rd Panna, with a faint orange tint; 4th Bansput, dark-colored.

There are also Diamond mines in Siberia, Brazil, South Africa, Australia, Borneo, Sumatra, Java, and the Celebes Islands. It had been the theory of Pliny and other ancient naturalists that Diamonds were generally to be found in the gold beds, and this has most remarkably been borne out by facts. Upwards of 50 Diamonds were said to have been found in the gold mine of Adolph, (Siberia), near the Ural Mountains (1830 to 1833).

THE DIAMOND.

The discovery of the Diamond mines of Brazil which occured in 1730, was, like that of the Indian mines, the result of chance. Some miners searching for gold in the districts of Serro do Frio, came across certain pebbles of peculiar hue and lustre, which, when carried home, were given to children and used as counters in card play. They fell soon after into the hands of an officer who had spent some years at Goa in the East Indies. Struck with their symmetry and weight, he caused some of these stones to be sent to Lisbon; the Dutch Consul at which place, having examined them carefully, pronounced them to be genuine Diamonds. The Diamond district of Serro do Frio is about 60 miles in length and 27 in breadth. Diamonds have also been found in the remote provinces of Goyazes and Matto Grosso. At one time the prejudice against the Brazilian stones was so strong that the merchants were obliged to export them to India and thence to Europe in order that they might pass for Indian Diamonds. The places which yielded the greatest quantity of Diamonds were Diamantina (in the province of Minas Geräes), Bahia, (the old capital of Brazil,) and the beddings in the Paraguay and its many tributaries.

In 1840, M. Hericart de Thury announced to the Academie des Sciences that Diamonds had been discovered in the River Gumel, in the Algerian province of Constantine, Africa,—mingled with golddust, brought down by the stream. One specimen

149 20

R

weighing 3 carats was bought for the Ecole des Mines, Paris; another of 5 grains for the Musée de L'Histoir Naturelle, (Museum of Natural History) and the 3rd, by the Marquis de Drée. The discovery of the Cape Diamonds is connected with a story very much the same as that of Diamonds of other places. Amongst the number of pebbles used as playthings by a child of one Mr. Jacob (a Dutch farmer who had settled near Hope Town), was one pretty stone whose brightness attracted the attention of the farmer's wife. This was afterwards shewn by Mrs. Jacob to a neighbour, named Schalk Van Nickerk, who requested Mr. J. O'Reilly, (a hunter and trader, then passing through the interior of the country,) to ascertain its nature. This pebble being sent through Mr. Boyes to his friend Dr. G. W. Atherstone, of Graham's Town, that excellent mineralogist boldly declared it to be a real Diamond. This was in March 1867, when the Universal Exhibition in Paris was about to open. The first opportunity was taken to present it at the Exhibition, where it remained for the whole period it was open and was, at its close, purchased by Sir Philip Wodehouse, then Governor of the Colony, (and afterwards the Governor of Bombay,) for the sum of Rs. 5,000. The weight of this Diamond was known to be 21_{16}^{3} carats. Several other fields have since been discovered, of which some lie in the Colony of Grigualand, west, which has come under British rule since 1871.

A 150

THE DIAMOND.

Australia was generally known to be the land of gold, but now it bids fair to be the land of Diamonds too. New South Wales was the only place in Australia which had yielded a sufficient quantity of Diamond, such as to invite exploration. In a certain report written in 1851, Mr. E. H. Hargraves, and the Revd. W. B. Clarke, referred to some specimens of gold and to a number of gems including what they called rather vaguely, "a small one of the Diamond kind," which was found in Reedy Creek, near Bathurst. But it was chiefly the Revd. gentleman named above who first drew public attention to the Diamonds of New South Wales. Four specimens were brought to him from the Macquaire River, near Sutton's Bar, in September 1859, and a fifth from Burrendong, in October. In the mean time he had collected Diamonds from Pyramul and Calabash Creeks. It was in July 1869, that a company, called that of the Australian Diamond Miner's, began in right earnest the work of hunting after Diamonds. A few years ago a Diamond field has been opened up near Binjera, in the New South Wales. This town is situated on the Horton (popularly known as the Big River) and is about 400 miles north of Sydney. In 1852 some Diamonds were discovered near Echuca, about 20 miles south-east of Adelaide. In 1862 the discovery of a Diamond in the Ovens district (in Victoria,) was announced by Mr. George Foord. It was a transparent vellow

151 80

crystal, with perfect edges, weighing about 2 grains.

The first Australian Diamond ever brought to England was presented by Sir Thomas Mitchell to the Museum of Practical Geology in Jermyn Street. This small stone weighs $\frac{3}{4}$ of a carat and was found near Ophir, west of Bathurst, New South Wales.

The Diamond mines of Borneo are all on the west side of the mountains known as the Ratoos Range.

About the year 1840, some Diamond beds were discovered in the district of Dolodoulá in the Island of Sumatra.

COLORED DIAMONDS.

THE Hindus divide Diamonds into four classes, according to their castes. Those that are of clear and pure water belong to the *Brahmana* class; those that are clear and are of the color of honey, to the *Kshetriya*; the cream-colored, to the *Vaisya* and the greyish-white, to the *Sudra*. Diamonds of several colors have been found, principal among which are the Blue, Red, Green, Olive, Black, Firecolored and the Yellow.

The Blue Diamond is a thing of great rarity and, consequently, of very great value. The first Blue Diamond on record was the one bought by Tavernier A 152

THE DIAMOND.

in India, in 1642, and sold to Louis XIV. It weighed in the rough, $112\frac{1}{4}$ carats and $67\frac{1}{8}$, when cut and kept in the French Regalia. In 1792, it was abstracted from the Garde-Meuble, where it was kept with the rest of the French Regalia, after they had been seized. All trace of this stone was lost since that period till 1830 when a Blue Brilliant was found in the possession of one Mr. Daniel Eliason, which was perfectly identical with the lost stone in quality and color. It was afterwards traced to Mr. Henry Thomas Hope and was then known as the Hope Diamond, weighing $44\frac{1}{4}$ carats. This difference in weight with the original stone is thought, by some conjecturers, to have been due to reduction by cleavage. The smaller part weighing 6 or 7 carats (most assuredly the cleavage of the larger one) turned up in the market in April, 1874. It was purchased in Geneva at the sale of the late Duke of Brunswick's jewels and now passes by the name of the "Blue Drop Diamond."

The only specimen of a red Diamond known to English jewellers is the one bought by Mr. Joseph Halphen of Paris, from a London firm.

A beautiful green stone of 80 grains is said to have fetched Rs. 360, at the sale of Marquis de Drée. The King of Saxony is in possession of a green Diamond which forms the button to his state hat. The finest specimen of a Diamond of this color was obtained for Rs. 2,000, about 20 years ago.

153 %

×

It was afterwards sold for Rs. 3,000. It subsequently fell into the hands of a jeweller in Bond Street, who sold it to an American gentleman for Rs. 6,000. Mr. Charles Drayson is its present owner and is known to be quite unwilling to part with it.

Black Diamonds of very great beauty sometimes come from Borneo. They are so remarkably hard that the ordinary Diamond-dust cannot make the slightest impression on them. They can be cut or polished by using their own dust. A coal-black Diamond was exhibited at the World's Fair of 1851, by Mr. Joseph Meyer. It weighed 350 carats. A black Diamond was seen about nine years ago, at Charles Nephews & Co., Jewellers, of Calcutta.

The yellow Diamonds are the most common of all.

Mode of Cutting-Indian and European.

THE Diamond, as mentioned before, can only be cut by itself in the form of a fine powder, which is generally prepared from defective stones and from the refuse in cleaving and cutting. This being put into a mortar of hardened steel is beaten until it is fine enough for use. Reference to the fact that Diamond is made to cut itself, is made in the touching verses composed by Charles I, on the night after his condemnation.

> "With mine own power, my majesty they wound, In the king's name the king himself's uncrowned; So doth the dust destroy the Diamond."

> > T

THE DIAMOND.

The art of Diamond-cutting seems to have had its origin in India and that, at a very early period. Indirect evidences might be adduced to support this fact. Garcias ab Horto, (writing in 1565,) remarks that the Indians preferred the Diamonds of the "old rock," particularly those in their natural state, (which they called "Naifes,") to those that were polished by human art. Tavernier in visiting the Roalconda mines in 1665, found a large number of Diamond-cutters at work there. Each of them was furnished with a wheel of steel about the size of a dinner-plate. They worked on only one stone at a time but did so with great rapidity. The principal consideration which guided the Indians in cutting Diamond was that it should lose as little of its size as possible and they would rather leave it in an irregular shape than diminish it to any great extent-a practice, in direct opposition to the system now adopted in Europe.

The discovery of the art of cutting and polishing Diamond by means of its own dust, is attributed to Louis de Berquem, of Bruges, who is known to have constructed, in 1476, a polishing wheel in which Diamond-dust was used instead of Corundum, which the Chinese and Hindus had hitherto employed. But there are several instances to prove that Diamond-cutting was known in Europe, previous to this time. The clasp of the royal cloak of King Charlemagne was set with Diamonds. In the year 1290, a corporate body of gem-polishers

155 50

6g

and cutters was formed in Paris; and in 1373, there were Diamond-polishers in Nürnberg. In 1434, Guttenberg learned gem-cutting and polishing of Andreas Drytzehen of Strasbourg. Amongst the jewels of Louis, Duke of Anjou, exhibited in the years 1360-1368, were several Diamonds; one of which was cut into the shape of a shield; another, in the form of a round mirror; a third, in that of a lozenge, &c. &c. &c. Of the pupils of Louis de Berguem, some went to Antwerp, some to Amsterdam, and others to Paris. The Diamondcutting made considerable progress in this last place, under the patronage of Cardinal Mazarin. He had ordered twelve Diamonds of the French Crown to be newly cut and these were henceforward known as the "twelve Mazarins."* At the present time, Diamond-cutting is a flourishing trade in Holland and is chiefly in the hands of the Jewish inhabitants. Diamonds are now cut in a variety of forms, the principal among which are the Brilliant, Rose, Table, and the Lasque.

The Brilliant form is said to be the crowning invention in the art of Diamond-cutting. It is the form most esteemed, as it exhibits the peculiar lustre of the stone to the best advantage. But in this there is a larger waste of the material than in

* After they had disappeared after the Revolution of 1830, no one knew what became of them. At the recent betrothal of King Alphonso with Princess Mercedes, an Amsterdam merchant came to Madrid with twelve Diamonds which, he said, he was commissioned to sell by an owner who wished his name to be kept secret. Competent authorities have, upon careful examination, pronounced them to be the long lost Mazarins.

THE DIAMOND.

any other mode. This style of cutting was introduced by Vincenzio Peruzzi (or Vincente Perggi,) of Venice, in the latter end of the 17th century. "The Brilliant is formed of two truncated pyramids by a common base; the upper pyramid being much more deeply truncated than the lower; the upper side of the stone presenting a table of 32 facets inclined under different angles, and the underside, 25 facet. The correspondence between the upper and lower facets is arranged so as to multiply the reflection and refraction." Some explanation is necessary to render the technical names of the several parts of a cut Diamond intelligible to the lay reader. "The plane surface at the top is called the table; the bottom plane is called the *culet* or culette; the junction of the upper truncated pyramid with the lower is the girdle; and the lower pointed portion is called the *pavilion*. The facets are small triangular spaces or planes." The Brilliant is said to be single, double or old English cut (otherwise called the star single-cut), according to the number of facets. The English cutters make the girdle rather sharp but the Dutch make it broader. Brillonéts are those stones which are cut as Brilliants on the surface but have neither culette nor girdle. These are very rare.

The "Rose" cut has been in use since 1520 and resembles an opening rose-bud. It is formed by covering the rounded surface of the stone with equilateral triangles, placed base to base, making

157 %

R.

the figure of a rhomb. The number of facets together with their position determines the different names of the Rose. Thus 24 facets make a Dutch Rose; the same number, but less raised, a Brilliant Rose; 36 facets, a Rose Recoupée &c. The circular stones are best suited for "Rose" cutting.

The Table-cut is made of those stones which, with considerable breadth, are of very trifling depth. It is produced by a series of diminishing four-sided planes below the girdle.

Lasques are formed from flat or veiny Diamonds and are said to be manufactured in India. The Indian cut has according to some, an upper part, lower part, and girdle. Its usual form is that of a single-cut Brilliant. But as the effects produced are not of much consequence, the stones are generally re-cut.

The point-cut was well known to Kentman who wrote in 1562. Some precious stones may either be cut as four-sided pyramids, or are so formed by polishing the faces of the octahedron and making them exactly true and regular. This style is only found in old ornaments.

Engraving.

ACCORDING to Blum, the discovery of the art of engraving the Diamond is assigned to Ambrosius Caradosso, a Milanese, and engraver to the Mint of Pope Julius II. He is said, in the year 1500, to have

THE DIAMOND.

executed upon a Diamond the figure of a Father of the church. But Paolo Morigia gives the credit of the discovery to Trezzo, the famous cameo-artist of Milan and asserts that his first attempt was the Coat of Arms of the Emperor Charles V. Clement Birago, a pupil of his, is known to have engraved upon a Diamond a portrait of Don Carlos, intended as a betrothal present to Anna, the daughter of the Emperor Maximilian II. He is also said to have engraved on Diamond the Spanish Arms as a signet for the same prince. One Jacobus Thronus (believed to be a Hollander) engraved on a Diamond, the Arms of Mary, Queen of Scots. Among the Hope precious stones, there were several engraved Diamonds. One of these had the bust of the Emperor Leopold I on a large Table-Diamond. Costanzi, who flourished at Rome in the beginning of the 18th century, is known to have executed several engravings on Diamonds, prominently amongst them, a Leda and the heads of Antonius and Nero.

In the collection of Her Most Gracious Majesty, our Empress, is preserved the signet-ring of Charles II, when he was the Prince of Wales; the device of which is the ostrich plumes between the letters C and P, very neatly cut upon a large yellow Diamond, a table $\frac{1}{2} \times \frac{7}{8}$ inch in dimensions, quaintly fashioned into a heater-shaped seven-sided shield. Louis Siries, gold-smith to Louis XV, is also said to have done some engravings, one of which is reported to be a very minute head of Julia, (daughter

159 %

of Titus,) executed upon the upper table of a regularly cut Brilliant.

The price of Diamond. Its flaws and defects; mode of testing.

THE price of Diamond, as of any other commodity, depends entirely upon the law of supply and demand. It is therefore well nigh impossible to fix a price which would be a safe guide to the intending purchaser, for all times. Approximate prices can, however, be given, when the market is supposed to be normal. In no other object of commerce, there are so many faults and imitations, of which the inexperienced should beware, as in Diamonds and other precious stones. The value depends materially upon the degree of perfection in which the articles are found when offered for sale. Amongst the most frequent faults are (1) feathers, i.e, little rents or fissures in the inside of the stone. (2) clouds, i.e., gray, brown, and white specks, which look very much like clouds. These give great deal of trouble when working the stone. (3) sands, or little seed-like bodies within the stone. of white, brown and red color. These are also called dusts, when very fine and found in large number in a stone.

A Diamond, wanted to be sold to the best advantage, must be perfectly free from the faintest tinge of color of any sort; must have no flaws, or

THE DIAMOND.

specks or fissures in any part; must be bright and lively and free from what is technically called "milk" or "salt," which are semi-opaque imperfections in the body of the stone. To ascertain if any of the above flaws exists, the stone should be breathed on until its lustre is temporarily destroyed and then the imperfections will be apparent. The stone must also be well-proportioned and properly Even to the least experienced, the lustre of cut. a Diamond when cut is sufficient to establish its identity. Some colorless Topazes, Emeralds, Sapphires and the white Zircon have sometimes been passed off as Diamonds. If the surface of the stone be the least scratched by the action of a fine file, it is not a Diamond. The rays of the sun easily pass through other gems, but in the Diamond they are refracted by the surface, which causes the superior brilliancy. According to Mr. Milburn, if the coating of a rough Diamond be smooth and bright with a little tinge of green in it, it is not bad; but if there is a tincture of yellow with the green, it is a soft, greasy stone, and will turn out bad. Though the specific weight of the Diamond is nearly the same as that of the Topaz, the one can be distinguished from the other by its electrical properties. The Topaz retains its electric powers several hours after it has been developed by friction, whereas the Diamond loses it in the course of half an hour. The Diamond can, by its weight, be distinguished from colorless Corundums,

161 80

S

whose weight exceeds that of the former in the proportion of 8 to 7.

The jewellers of old used the "tincture" test to distinguish the real Diamond from the spurious, of which so many were then current, as the white Sapphire, the Citrine Beryl, and the Crystal cut into a pyramid. This tincture was a varnish made of ivory-black and mastich applied to the back of the stone, which, if it was a real Diamond, became all the more brilliant on account of this back ground; if any other gem, it became dull and lustreless showing the black through its substance. Some used the oil exuding from a roasted grain of wheat darkened with ivory-black, others backed the stone with a bit of black silk. The "Novas Minas" white Topaz of Brazil, known there as the "Slave's Diamond," is now the only stone which has any chance of being passed off for a Diamond. Though it is very hard and brilliant, it very much lacks "the Adamantine lustre and iridescence."

The terms, first water, second water, mean only first and second quality. Perfect Diamonds should be as clear as drops of the purest water; and they are of the second and third water, according to the degree of clearness in them, until decidedly yellow or brown, when they come under the category of colored stones. These colored Diamonds, on score of their rarity, are sold at fancy price.

Diamonds are generally valued per carats and it is necessary to explain the term. The word is

U

A 162

 THE DIAMOND.

probably derived from the name of a bean, the fruit of a kind of *Erythina*, which grows in Africa. The tree which gives this fruit is termed by the natives "Kuara" or the sun. These fruits, when dried, were afterwards imported into India and here used for weighing the Diamond. They have now been universally adopted.

4 gra	ins make		 1 carat.
6 car	ats or 24	grains	 1 penny-weight.
$151\frac{1}{2}$ car	ats		 1 ounce troy.

But a carat is not of the same weight in all countries; for instance, in England it is equal to 205,4090 milligrams; in France, 205,5000; in Borneo, 105,000; in Madras, 207,3533, &c. &c.&c.

The following is an approximate price-list as given by standard authorities.

Diamonds below 2 grains.

Inferior, from		£4 to£6	per	carat.
Medium		£ 6 to £ 8		22
Good		£ 8 to £10		35
Fine		£10 to £12	,,	33
If over 2 grains,	Fine	£12 to £15	22	
Over 3 grains		£15 to £20	32	29
Of one carat		£20 to £23	99	22

But the valuing of rough Diamonds is not to be made according to the above standard. The form and proportion of the crystal must first be taken into consideration, for, on these only, the loss of weight in cutting chiefly depends. Then, care must also be taken to distinguish the degrees of color and

163 20

the purity of the specimen. The best forms to select would be the octrahedral and the rhombododecahedral. In valuing large rough Diamonds and specially those that came from the Cape, the fact should always be remembered that tints of color may be brought out in the cutting of a stone, which do not at all appear in its rough state; perfect polish and the power of reflection natural to the stone intensify any tint of yellow existing in it.

The Supernatural and Medicinal Properties attributed to the Diamond.

THE mythology of all nations in the world attributes supernatural influence to almost every thing in nature. Trees and fields, temples and stones, mountains and rivers,-all were supposed to be the abode of good or evil spirits. Anselm Bœce De Boot, physician to the Emperor Rodolph and Maximilian II, wrote in 1664, as follows : "From their purity, beauty, and brilliancy, it is most probable. gems were selected as receptacles for good spirits, even as filthy, stinking and frightful places are usually the abodes chosen for evil and unclean spirits." Diamond being of all stones, the purest, hardest and most brilliant, it was naturally considered to be the most powerful in spiritual influence. It was consecrated to all that was holy and heavenly, and was known to have been a powerful charm. and, when under the influence of the planet Mars,

€ 16¥

THE DIAMOND.

productive of great success. For many centuries past it was thought to be a most potent talisman against poison, pestilence, witchery, insanity, evil spirits and night-mare. It was esteemed a safeguard to virtue. Though it had the power of preventing evils, as above stated, on external application, (i.e. if worn,) it had a quite disastrous effect, if taken internally. Diamond-dust had such a fatal poisonous property that nothing could save the unfortunate who swallowed it. The Diamond was also supposed to bestow victory, fortitude and strength of mind. It softened wrath and strengthened wedded love: hence it was called the stone of reconciliation. It was also an infallible test of conjugal fidelity. A Diamond placed under the pillow of a married lady, without her knowledge, would make her reveal, during sleep, any secrets of her life, which she might have to conceal from her husband. Though it was believed to be incombustible, its lustre and other properties were supposed to be affected by heat. Hence, perhaps, the ancient practice of taking Diamond rings off the finger at bedtime, and putting them in a cup of cold water or on a marble, or some other cool surface. To the Ancients, Diamond represented inexorable justice and immutable fate. Hence the judges of the Hades were described as having hearts and bosoms of Adamant. The clouds which covered Destiny were also described as being of Adamant. To the moderns, it is a symbol of inno-

165 80

cence, constancy, faith, strength, &c., &c. A gem, (supposed to have been a Diamond), worn in the girdle, by Aaron, the High Priest, had, according to a Jewish legend, marvellous properties. It would become dark and dim, if brought into contact with a man, actually guilty : if the accused was really innocent, it would shine on with increased brilliancy. If the sins of the Hebrews were to be punished with death, the stone would put on a bloody color. But the most absurd and unique virtue, attributed to Diamond-and to no other gem-was the power of multiplying its Bœtius De Boot makes serious menspecies. tion of a lady who possessed two hereditary Diamonds, which produced several others and thus left a generation.

CELEBRATED DIAMONDS.

The Koh-i-noor.

PERHAPS there is no other jewel in the world which is so much renowned for its antiquity and for the interesting romance with which it is connected as the *Koh-i-noor*. It is so old that some attribute its ownership to Karna, the king of Anga, who first discovered it near Masulipatam, in the bed of the Godavery, 5000 years ago. Other traditions speak of Rajah Vikramaditya of Oujien (56 B. C.), as having been the happy possessor of it. All subsequent trace of this stone was lost till it was taken S 166

THE DIAMOND.

from the king of Malwa by Ala-ooddeen, in 1304. After the defeat of the Pathans by the Moguls in 1526, it remained in possession of the latter till the invasion of Nadir Shah. When Nadir Shah came to take possession of Delhi, Mahamood Shah, the then Emperor, had to give up every valuable thing in his treasury, except this jewel, which he used to keep concealed in his turban. A woman in the harem betrayed this fact to Nadir, who, strongly bent upon having it, planned a grand festival in which both the conqueror and the conquered were to meet and swear friendship. Nadir Shah proposed an exchange of turbans and thus managed to get possession of the stone. It was he who gave it the name Koh-i-noor, or the "mountain of light." From him it descended to his son, from whom Ahmed Shah, the founder of the Cabul dynasty, succeeded in getting it, by professing friendship in his time of distress. Shah Shujah, the son and successor of Ahmed Shah, being driven out of his kingdom by his brother, Mahmood, took away the Koh-i-noor with him and made it the companion of his exile. Runjeet Sing, the celebrated "Lord of the five rivers," contrived to get him at Lahore, where he was at once put to prison and given to understand that his release could be effected if he would part with the jewel. Suffering with his wife and family, all sorts of privation and misery at the hands of Runjeet, Shah Shujah at last consented to make over the thing to him. This was done on

167 80

H

the 1st June, 1813. Struck with the brilliancy of the stone, Runjeet asked him, "at what rate do you value it;" to which he replied, " good fortune : and that is always the property of those who had vanguished their enemies." The Diamond was now set in a bracelet and was always worn by Runjeet. People attached bad luck to the possessor of this stone, for it would appear that all who had it in their hands subsequently came to grief, and an attempt was therefore made to make it over to the idol Juggernath of Puri. This was never done and it was occasionally worn by his successors. After the murder of Shu Sing, it was deposited in the Lahore treasury, until Dullip Sing, (the son of Runjeet), was stationed at Lahore with an English Regent. When Punjab was annexed to the British Crown, all the state-jewels of Lahore were confiscated by the East India Company. It was stipulated that the Koh-i-noor should be presented to the Queen. It reached Her Majesty on the 3rd June 1850 and then weighed 186 carats. Its original weight, when it was with Arungzebe, was 793 carats. This reduction was due to the unskilfulness of Hortensio Borgio, a Venetian lapidary, who had been entrusted with the cutting of it. The Emperor had been so much displeased with his work that instead of paying for all his labors, he dispossessed him of his property and was with great difficulty persuaded to leave him his head. This stone created quite a sensation in the great

THE DIAMOND.

Exibition of 1851, where it was valued at 14,00,000 of Rupees. The re-cutting of this stone being thought necessary, Herr Voorsanger of Amsterdam was selected to do it. The operation (conducted by steam) which commenced on the 6th July, was completed at the end of 38 days of 12 hours each, and is said to have cost 80,000 Rs. The *Koh-i-noor* has now assumed the form of a regular cut Brilliant, weighing $106\frac{1}{8}$ carats and is one of the principal jewels in the British Crown.

The Great Mogul.

THIS stone is often confounded with the Koh-inoor. It is reported to have been found in or about 1650, in the Coloor mines, a place about 7 days' journey from Golconda. Meer Joomla, by birth a Persian, was the Grand Vizier and General to the King of Golconda. He had amassed enormous wealth, (principally by farming, under other names, the Diamond mines of the place,) and thus made himself the eye-sore of his master, who had on one occasion openly threatened his life. The Vizier sought and obtained the aid of Prince Aurungzebe, then Governor of the neighbouring provinces, and with his co-operation, surprized the King of Golconda and was about to make him surrender when the Prince was re-called by his father the Emperor Shah Jehan. Meer Joomla ingratiated himself into the favor of the great Emperor by making him magnificent presents, amongst

which was the "Great Mogul." Tavernier relates that he saw this Diamond at the Court of Aurungzebe, and that it weighed at that time 787 carats. It was at this stage of its history that the stone has come to be confounded with the The same story about the cutting Koh-i-noor. by Borgio, about Nadir Shah's trick in obtaining it, &c., is repeated in connection with this Diamond. Some conjecture that Tavernier has described one large stone as having been seen by him in the Court of Aurunzebe. If there had been another of the same weight and size, it must have surely been noticed by him. Hence it is thought that the Koh-i-noor and the Great Mogul are merely convertible names. Others suppose that the Great Mogul was a personal present to the Emperor Shah Jehan and most naturally it remained in his possession when he was in prison,-at the time of Tavernier's visit, and that consequently that traveller had no opportunity of examining it. They further believe in its existence amongst the regalia of the Persian Crown and in its having been designated there as the " Derya-noor," or "the ocean of light." But the drawings of the Shah's Diamonds which have lately been sent up to England, do not confirm this assertion. There has another theory been started which makes Borgio cut up the big stone into three; the one of which is now known as the Koh-i-noor; the other, as the Great Mogul, and the third was captured amongst the jewels of some petty Indian

169 20

V

THE DIAMOND.

Chief. But the description which Tavernier gives of the character of the stone he saw, differs materially from the actual character of the Koh-i-noor. "It was circular, rose-cut, very deep, of fine water, with but one little crack externally and one flaw internally and the work upon it that of an European lapidary; whereas the Koh-i-noor was in outline an irregular ellipse, facetted to no definite pattern, very flat, exhibited no more water than a bit of rock crystal, had several flaws, besides a large deficiency or fracture at one end and rude grooves cut in the sides, whilst all the work upon it was of that peculiar character, which the least experienced eve would detect at once as that of a Hindu Diamond-cutter."

There is one Diamond of the name of *Derya-noor* which is said to be in the possession of Nawab Abdool Gunny of Dacca, East Bengal, but whether it is identical with its great name-sake, we are not in a position to state.

The Pitt or Regent Diamond.

If not the largest, the Pitt or Regent Diamond is generally looked upon as the most perfect and beautiful Diamond in existence, remarkable alike for its shape, proportion and fine water. It weighed 410 carats in its original state. According to the story with which its history is connected, it was found by a slave at Puteal (about 135 miles

171

from Golconda) and kept concealed in the calf of one of his legs which he had purposely wounded and bandaged, for its reception. An English sailor promised to find a purchaser for it, provided he was paid half the value. But bent upon having the whole of the proceeds to himself, he lured the poor slave on board his ship and pitched him over the water. This Diamond was sold by him to a celebrated Parsee merchant named Jamchand, for the sum of 10,000 Rupees. Jamchand sold it, in 1701, to Mr. Thomas Pitt (grand-father of the Earl of Chatham,) the then Governor of Fort St. George, Madras, for 1,25,000 Rupees. The operation of cutting it into a perfect Brilliant, which was finished in two years, reduced its weight to 1367 carats and cost him Rs. 50,000; 35,000 of which. however, was recovered by selling the fragments. The Duke of Orleans, Regent of France, bought it of Pitt for 13,50,000 Rupees. This Diamond was stolen from the Garde-meuble in 1792, but was restored to its possessor most mysteriously. The Republic then pledged it to a Berlin merchant from whom it was again redeemed. The Emperor Napolean I. used to wear it in the pommel of his sword and always considered it to be the key-stone to all his future greatness. It was shown in the French Exhibition of 1855.

The Orloff or Amsterdam Diamond.

THIS stone formed, according to one account, one of the eyes of a Hindu God, and was stolen away

THE DIAMOND.

by a French Grenadier of Pondicherry, who had, with that object in view, taken refuge with the Brahmins and professed their faith for some time. It was afterwards sold for Rs. 20,000 to an English sea-captain who resold it to a Jew for 1,20,000 Rs. He, again, sold it to the Armenian merchant Shafras from whom it was purchased at Amsterdam. in or about 1772, by Prince Orloff, for presentation to Catherine II, at 9,00,000 of Rupees and a life-annuity of 40,000 Rupees and the grant of a Russsian nobility to the seller. Another account says that it was one of the stones taken away by Nadir Shah from the Moguls ; that it had a prominent place in his throne ; and that it had, after his assassination, passed into the hands of one of his Affghan Generals and thence to the Armenian merchant Shafras. This stone resembles in its outline the "Great Mogul," as described by Tavernier, so closely, that, but for the difference in the weight, it may be taken for that long lost Diamond. A third account supposes it to have been brought to Russia by Lazarus Lazareff, the head of the Armenian family of that name, and grand-son of Manouk Lazareff, treasurer to Shah Abas II. Hence it is called by some the "Lazareff" Diamond. It is now placed in the Russian Imperial sceptre and weighs 194¹/₄ carats, and, like the Koh-i-noor, has the underside flat and is rose-cut. Its size is about that of a pigeon's egg. The water is of a rather yellowish tinge.

The Nassuck Diamond.

173 20

THIS stone was originally found among the spoils captured from the Mahrattas at the conquest of Deccan, under the command of the Marquis of Hastings. It was then as large as a good-sized walnut and weighed $89\frac{3}{4}$ carats. But when re-cut, in London, as a Brilliant, by order of its proprietor, the Marquis of Westminster, it weighed $78\frac{3}{4}$ carats. It is very bright and pure but is very badly shaped. The East India Company had sold it to Messrs. Rundell and Bridge, who, on their retirement, sold it by auction to a jeweller for 72,000 Rs., though it was valued at three lacs.

The Nizam.

THIS stone is said to have been found at Golconda and is now almost in its primitive condition. It weighs 340 carats. It was by some ominous accident broken asunder in the year of the Indian Mutiny.

The Shah of Persia.

COSROES, the younger son of Abass Mirza Shah, of Persia, presented this stone to Emperor Nicholas of Russia. It weighs 86 carats and is perfectly pure and brilliant. It is only partially cut; many of its natural octahedra being preserved. The interest of this stone is enhanced by the Persian

THE DIAMOND.

inscription it bears of its former owners, engraved as follows :---

Ек-век Shak,

Its shape is that of a long prism.

The Pacha of Egypt.

ALL that is known of this stone is that it was found in the possession of Ibrahim Pacha. It weighs 40 carats; is of an octagonal form, Brilliantcut and of very good quality.

The Mattam Diamond.

THIS stone belongs to the Rajah of Mattam, Borneo, and is at present the largest Diamond known; its weight being 367 carats. It was found at Landak, Borneo, in the year 1787. It is eggshaped; is of pure water and has a small indentation at the short end. Notwithstanding the many battles fought for it, this precious stone is still in the possession of the Rajah. The Dutch Governor of Batavia offered for it five lacs of Rupees, and two men-of-war, with stores and ammunitions complete; but the owner refused to part with it on any account, considering it to be a talisman, on the possession of which depended the fortune and hapiness of his family. The Malayese believe that all kinds of disease can be cured by means of the water in which this Diamond has been steeped.

175 20

The Sancy Diamond.

THE early history of the Sancy Diamond is not minutely traceable. According to some, it came from India and, in 1479, fell into the hands of the King of Portugal, Don Antonio, who, on the occasion of his visit to England, made with the purpose of securing assistance in prosecuting his claims to the throne, which was then in the possession of the Spaniards, pledged it with Queen Elizabeth for £ 5,000 sterling. To avoid further importunities from the Portugese Pretender for more money, the Queen returned the Diamond to him, giving up all claims to the sum she had advanced. This stone was subsequently sold by him to Nicholas de Harlay, Baron de Sancy, a Huguenot gentleman. From this owner the stone has assumed the name "Sancy." It was borrowed of the Baron by Henry IV of France. The messenger sent in charge of this valuable stone was waylaid and murdered by robbers, but, acting up to previous arrangements, he managed to elude them, by swallowing it. It was afterwards taken out of his stomach by the Baron, in whose family it remained for more than a century. It was next traced to James II of England, who, in his exile (1688) carried it to France. There it was sold to Louis XIV for 2,50,000 Rupees. Louis XV wore it in the clasp of his hat, at his coronation. In the French revolution of 1792, along with various

THE DIAMOND.

other Crown jewels of France, the Sancy was lost, until 1830, when it was found in the possession of a French merchant. In 1838, the Prince Paul Demidoff bought it at 7,50,000 Rupees. In 1865 Messrs. Garrads of London purchased it of the Demidoff family, for the late Sir Jamsetjee Jeejeebhoy of Bombay, at two lacs of Rupees.

This stone is almond-shaped, of very fine water and weighs $53\frac{1}{2}$ carats. The cut is evidently Indian.

Charles the Bold's Diamond.

According to some, the Sancy is quite a distinct thing from what is called Charles the Bold's Diamond. Those who confuse the one with the other, say that the Sancy, after it was brought from India, fell first into the hands of Charles the Bold, Duke of Burgundy, and then into those of the king of Portugal. Those who want to establish a separate indentity for "Charles the Bold's Diamond," affirm that this was one of the three Diamonds which Charles the Bold had given to Louis de Berguem to be experimented upon in rose-cutting. After the defeat at Granson, the Duke's Diamond was found by a common soldier, enclosed in a valuable box. Prefering to have the latter, the soldier threw away the stone, but subsequently changing his mind, picked it out from under a waggon and sold it for a florin to a priest who, in his turn, sold it to a citizen of Berne for

177 80

20

W

Jacques Fugger, a famous merchant, three francs. of the Nuremburg family, bought it of the Bernese Government. From this family it came into the hands of Henry VIII, whose daughter Queen Mary, brought it, in her dower, to Phillip II. We have already noticed that a large Diamond was pledged by Don Antonio with Queen Elizabeth, and from this portion of the history, the Sancy, (which was evidently the stone pledged by Antonio) is con-It was a founded with the Burgundian Jewel. matter of utter impossibility for the latter to have passed into the hands of Antonio-one, who was known to have been the mortal enemy of Phillip's. By a strange chance, it came back to the greatgrand-son of its original owner, Charles the Duke of Burgundy. Its present whereabouts are unknown.

The Florentine Brilliant.

THIS stone was, according to a tradition, bought for a trifle at a curiosity stall in Florence, being then considered as nothing more than a yellow crystal. The history of this stone is sometimes confounded with that of Charles the Bold's. The same story regarding its being found by a soldier and sold by him to a priest is also repeated in connection with the history of this stone. The fact is, Charles the Bold had three Diamonds of very great beauty and value, and it appears that the history of the two is confused with one another. The third is the Sancy. We have already noticed the

E.

THE DIAMOND.

story in connection with what we have called Charles the Bold's Diamond. The story about the other stone, which we will designate as the Florentine Brilliant differs from that of the other, from the point, where the gem was sold by the priest. Instead of its being purchased by Fugger (as in the case of the other stone), the story makes it come into the hands of a rich Bernese merchant, Bartholomew May. In 1482, it was sold to a Genoese, who, in his turn, sold it to Ludovico Sforza the Moor, Duke of Milan, for 14,000 ducats. After the fall of the house of Sforza, this stone came into the possession of Pope Julius II, who presented it to the Emperor of Austria. It is also called the Grand Duke of Tuscany or the "Austrian Yellow," owing to its decidedly yellow color, notwithstanding which, it is valued at 10,50,000 Rs. It is cut as a double-rose and weighs 139¹/₂ carats.

The Braganza.

THIS stone was discovered in Brazil, in 1741, and weighed, in its rough state, 1680 carats. It is of the size of a hen's egg, of deep yellow color and is reported to be valued at 58,35,00,000 Rupees. But doubts are entertained as to its being a Diamond, it being generally believed to be a white Topaz, and as the Portuguese Government, of whose Crown Jewels it forms a part, would not suffer it to be cut or even examined, there is very little chance of the doubts being cleared up.

179 %

63

The Pigott Diamond.

THIS stone was taken away from India by Lord Pigott. Over fifty years ago it was sold in a lottery for three lacs of Rupees and was subsequently bought by Messrs. Rundell & Co. for 60,000 Rupees. When sold to the Pacha of Egypt, it fetched 3 lacs of Rupees again. It is Brilliantcut, of a beautiful shape and weighs $82\frac{1}{4}$ carats. The name of the present owner is not known.

The Hope Diamond.

A DETAILED account of this stone has already been given under the heading of "Coloured Diamonds." This beautiful and most important blue Diamond was supposed to have been taken from India by Tavernier and sold to the French Government, wherefrom it was stolen, during the Revolution. It was subsequently traced to Mr. Eliason and from him to Mr. H. T. Hope. Its original weight was 112_{1e}^{3} carats; when stolen from the French Regalia, it was 67; and being subsequently re-cut as a Brilliant and thereby reduced by cleavage, (which has given us its counter-part, the blue Drop Diamond,) it weighed $44\frac{1}{2}$ carats. It figured a great deal in the Great Exhibition of 1851.

The Eugènie Brilliant.

THIS perfect Brilliant was purchased by the late Emperor Napolean III, and given to the Empress \$ 180

Cara and a second and a second and a second a se

THE DIAMOND.

Eugènie. We are not certain whether it is still in her possession, as the greatest portion of her valuable jewelry has been sold to His Highness the late Maharajah of Puttiala, through Messrs. Hamilton & Co., Jewellers, of Calcutta. It is of an oval shape and blunt at one end and weighs 51 carats.

The Cumberland Diamond.

THIS stone was bought by the City of London for a lac of Rupees and presented to the Duke of Cumberland, after the battle of Culloden. It was one of the stones claimed by the Hanover Crown, to whom it has been restored by our Most Gracious Majesty. Its weight is 32 carats.

The Star of the South.

THIS is the largest Diamond ever found in Brazil. It was found in July 1853, by a poor Negro who was at work in the mines of Bogagen, in the province of Minas-Geräes. When rough, it weighed $254\frac{1}{2}$ carats, but the cutting of it into a Brilliant has reduced it to 125 carats. It is a Diamond of the purest water and under light exhibits a lovely rose-tint. It was purchased by M. Halpen, or according to some writers, by Mr. Coster of Amsterdam, who is also reported to have cut it. It was shown in the London and Paris Exhibitions.

The Polar Star.

THIS Brilliant was at one period owned in England, but is now to be found among the Russian

181 80

Crown Jewels. It is remarkable for its purity and lustre, and is said to weigh 40 carats.

Other large Diamonds.

THE Portuguese Crown possesses many large and brilliant Diamonds, foremost among which is a Brazilian stone found in 1775 by a Negro, in the bed of the River Abaité, near Rio Plata. The following is the romance connected with the discovery. Three Brazilians, convicted of some high misdemeanour were banished to the interior of Brazil, for life. These unfortunates used to beguile their time by searching for valuable matter. One day they came to the River Abaité, the bed of which had lain dry for sometime, owing to scarcity of rain. There they chanced to see a Diamond, nearly an ounce in weight, which, with the help of a priest, was taken to the Governor of Villa Rica. All the officers of this place having been satisfied as to the nature of the stone, the Governor restored the exiles to freedom and had the gem sent to Rio de Janiero and thence to Lisbon. Its weight was then 138¹/₃ carats. Some conjecturers connect this story with the discovery of the "Star of the South," with which they identify this stone.

Some very large Diamonds have come from the Cape. One was the "Star of South Africa," weighing in the rough $83\frac{1}{2}$ carats and after cutting, $46\frac{1}{2}$. The largest stone yet discovered here is what is now famous as the "Stewart Diamond," which

02.

02.

A PARTICULAR PARTICULA

THE DIAMOND.

weighed in the rough state $288\frac{3}{8}$ carats. It was consigned to Messrs. Pittar Leverson & Co., who have also in their possession the so-called "Fly Diamond" which was also discovered in this place by one Antonie. The "Dudley Diamond" weighing about 46 carats is another important stone, come from the Cape. It is triangular in shape, very brilliant, perfectly free from color and very difficult of distinction from an old Indian stone. It was sold by Messrs. Hunt and Roskell to the present Earl of Dudley.

The Brazilian Government is in possession of some very large and curious stones.

The Spanish Government is also very rich in Diamonds and other jewels.

In the Russian Treasury is a brilliant Ruby-colored Diamond of 10 carats, bought by Paul I, for 1,00,000 roubles.

Mr. Dresden, a London merchant, possesses a drop-shaped Diamond; one of the finest stones at present in the market. It was lately found at Brazil; is perfectly free from flaws and has extraordinary brilliancy. It weighs $76\frac{1}{2}$ carats.

In the "Green Vaults" at Dresden, there is a green Diamond which once belonged to Augustus the Strong. It is remarkably beautiful and weighs $48\frac{1}{2}$ carats. Here are also some very beautiful parures, and four very valuable yellow Brilliants, the largest of which weighs $117\frac{1}{4}$ and the smallest $52\frac{1}{2}$ grains respectively.

183 80

803

There are two large Diamonds with the Turkish Government, one of which is of 84 and the other of 147 carats in weight.

There are several Diamonds of more or less brilliance and weight, in Burmah and China; also in the possession of some of the native princes and noblemen, in India (especially at Hydrabad, Baroda and Puttiala.) There are some very beautiful and costly Diamonds in Bengal, particularly, some with the Maharajah of Burdwan, Nawab Abdool Gunny C.S.I. of Dacca* and Maharani Surnomove of Cossimbazar.⁺ Some of the rich families in Calcutta have Diamonds, conspicuous alike for their size and brilliance; amongst which may be mentioned the stones set in finger-rings, belonging to the estates of Babu Kally Kissen Tagore, 1 Coomars Raj Coomar Roy and Kally Kissen Roy, and the late Babu Khelut Chunder Ghose. There are some very good Diamonds in the Mullick Family. There are also some valuable Kanthás or necklaces, to be found with the natives of this country, amongst which may be cited those in the possession of Rai Dhunput Singh Bahadoor of Azimgunj, Rai Budridas Mokeem (Jeweller to His Excellency the Viceroy and Governor-General of India) and of the estate of the late Babu Khelut Chunder Ghose.

- + Also with Joshee jee of Benares, and in the estate of the late Juggut Sett of Moorshedabad.
 - ‡ This Diamond shows a rosy color.

^{*} Used by the Nawab's son as an armlet.

Carlo and a second s

THE DIAMOND.

Several remarkable Diamonds are to be seen in the estate of the Hon'ble Maharajah Joteendro Mohun Tagore Bahadoor, of Calcutta. Amongst those that are set in rings may be mentioned the "Tagore Brilliant," a Diamond of about 55 Ratis* in weight, of the purest water and very great brilliance, free from any flaws whatever; the "Sukh-tara" (or the Morning Star), very white and of a round shape; the Arundhati (the Sanskrit name for a certain star), flawless and of exquisite beauty and purity; and the Banga-tárá, (or the star of Bengal,) rose-cut, of great lustre, and of a lovely rose-tint; without the slightest spot or flaw in it. There is a brilliant Cape Diamond, (also set in a ring,) circular in shape and weighing about 34 Ratis. The large Diamond of about 50 Ratis, which is set in the Seerpaich or head-ornament of the Maharajah is a specimen of rare beauty. A splendid greenish Diamond, belonging, according to the jewellers, to the Bunsput species, (which are believed to bring good luck to the owner,) bought of the late Sooklal Johury, adorns the crown of the Maharajah's family idol. There is also in the Maharajah's estate a magnificent kanthá, consisting of 19 brilliant Diamonds, the largest of which weighs about 37 Ratis and the smallest, about 6. It has been valued by the jewellers at 80,000 Rupees.

* A Rati is one-eighth less than a carat.

185 20

There is also in the possession of the Hon'ble Maharajah a red Diamond, called the "Cingalese Red," set in a ring, and weighing about 10 ratis. The stone is so red that no layman would know it for anything else but a Ruby. But, in fact, it is a rare specimen of a Diamond, conspicuous alike for its brilliancy and flawlessness, and without having the faintest tinge of what are called the "milky" imperfections, so common in the Ruby. It is said to have been discovered in a mine at Ceylon, and to have remained for sometime in the possession of a respectable family of that place. Johurlal Mokeem, son of the late Boodh Sing Mokeem of Delhi, had this gem brought to him by a Chulia (petty dealer), and has subsequently sold it to the Hon'ble Maharajah.



मगिमाचा।

त्रय माणिकंत्र।

मूलम्। सिन्धौ रावणगङ्गायां सिंचले जन्म कीर्त्तितं। चेचाणि चीणि तस्य स्युर्माणिकास्य जग्रर्वुधाः ॥ १५२ ॥ सिंचले तु भवेद्रक्तं पद्मरागमनुत्तमं। पीतं कालपुरोझूतं कुरुविन्दमिति स्मृतं ॥ १५३ ॥ चापोकपञ्चवच्छायममुं सौगन्धिकं विदुः । तुम्बुरे छायया नीलं नौलगन्धि प्रकीर्त्तितं ॥ १५४ ॥

माणिकका वयान ।

तर्जमा ।

रलपार्ची पण्डित लोक कइते हैं, सिन्धु, रावणगङ्गा और सिंहल देश इन्ही तिन जगहोने साणिक पयदा होता है। १५२।

कोई कोई पण्डित कहते हैं, के सिंहल, कालपुर चौर तुम्बर देश यही तिन जगहोमें माणिककी खान पाइ जाति हैं, उसीमेसे सिंहल देशमें जो माणिक पयदा होता हैं, वह वड़त् उत्तम, चौर सुख रङ्ग, कालपुरमें जो माणिक पयदा होता है, उस्का पीला रङ्ग, चौर उस्को कुरुविन्द कहते हैं; चगर चशोकफुलके पन्नबके समान रङ्गदार होए, तो उस्को सौगन्धिक वोल्ते हैं; चौर तुम्बुर देशमें जो माणिक पयदा होता है, उस्का रङ्ग नीला होता है, चौर उस्को नीलगन्ध कहते हैं। १५ ३।९५ ८।

187 \$

E.

RUBY. TRANSLATION.

152. According to some authorities, the ruby is found in Ceylon and the lands bordering upon the Indus and the Rávana Gangá.

153—154. According to others, ruby quarries are found in Ceylon, Kálpur and Tumbura. The rubies of Ceylon are beautifully red; those of Kálpur are yellow, and are called *kuruvinda* (rubicelle); and those of Tumbura are furnished with a blue shade and are hence called *nilagandhi* (violet ruby). That ruby which shoots a gleam green as the leaf of the *asoka* goes by the name of *saugandhika* (spinel).

মাণিক ৷

অন্নবাদ।

কোন কোন রত্নতত্ত্বজ্ঞ পণ্ডিত কহেন, সিন্ধুনদ, রাবণ গঙ্গা ও সিংহল দেশ এই তিন ক্ষেত্রে মাণিক্য বা পদ্মরাগ উৎপন্ন হয়। ১৫২।

কেহ কেহ বলেন, সিংহল, কালপুর ও তুন্থুর দেশ এই তিন স্থানেই মাণিকের আকর দেখা যায়; তন্মধ্যে সিংহল-দেশোৎপন্ন মাণিক দেখিতে অতি উত্তম এবং রক্তবর্ণ; কালপুরে পীতবর্ণ পদ্মরাগ জন্মিয়া থাকে; এবং তাহাকে কুরুবিন্দ কহে; যে পদ্মরাগ অশোকপল্লবের ন্যায় ছায়া-বিশিষ্ট, তাহাকে সোগন্ধিক কহে; তুন্থুর দেশজাত মাণিক নীলচ্ছায়াবিশিষ্ট এবং নীলগন্ধি বলিয়া উল্লেখিত হয়। ১৫৩। ১৫৪।

मणिमाला।

मूचम्।

उत्तमं सिंचलोझूतं निक्तष्टं तुम्बुरोझवं। मध्यमं मध्यमं च्रेयं माणिक्यं चेचभेदतः ॥ १५५५ ॥ वन्धू क गुद्धासकलेन्द्रगोप-जवाननाच्टक् समवर्णे शोभाः । आजिव्यावो दाडि मवीजवर्णा-खायापरे किंग्रु क पुष्पभासः ॥ १५६ ॥

तर्जमा।

सिंहल देशमे जो माणिक पयदा होता है, वही सवसे उमदा है, और तुम्वर देशमे जो माणिक पयदा होता है, वह वज्जत खाराप और कालपुर देशका मध्यम और जगहों के वदलनेसे माणिक तिन करिमका होता है। १५४४।

माणिकमेसे वज्जत्से माणिक केत्ने वन्धूकके फुल, केत्ने घुधंची, केत्ने वीरवज्जटी, केत्ने कनेलफुल, केत्ने लौके समान रङ्गदार घोते है, चौर केत्ने वड़े चमकदार च्यानारके दानेके समान, केत्ने पलाण्फुलके समान

189 2

TRANSLATION.

155. The rubies of Ceylon are good *par excellence*, while those of Tumbura are at the bottom of the scale, the rubies found in Kálpur occupying the middle position. Rubies vary in value in accordance with the place where they are respectively found.

156—159. Of rubies, some are like the bandhúka* flower, some are like the gunjá berry, some like the cochineal, some like the China rose, some like blood, some like the seeds of the pomegranate, some like the flower of the butea frondosa,

অন্থবাদ।

সিংহল দেশে যে মাণিক জন্মে, তাহাঁই সর্ব্বোৎকুষ্ট; ভুম্বুরদেশোৎপন্ন পদ্মরাগ সর্ব্বনিকৃষ্ট; এবং কালপুরোদ্ভূত মাণিক মধ্যম বলিয়া প্রসিদ্ধ আছে। ক্ষেত্রভেদে মাণিক উত্তম, মধ্যম ও অধম এই তিনপ্রকার হইয়া থাকে। ১৫৫।

পদ্মরাগের মধ্যে কৃতকগুলি বন্ধুক (বাঁধুলী) পুষ্প-সদৃশ, কতকগুলি গুঞ্জার (কুঁচের) ন্যায়, কতকগুলি ইন্দ্রগোপকীটের সমান, কতকগুলি জবাকুস্থমের ত্যায়, কতকগুলি রক্তের ত্যায়, কতকগুলি দাড়ি-ম্বের বীজের ত্যায়, কতকগুলি পলাশপুষ্পসদৃশ,

* A species of plant.



मशिमाता।

म्लम्।

सिन्दूररकोपलकुङ्गमानां लाचारमस्यापि समानवर्णाः । सान्द्रेऽपि रागे प्रभया खयैव भवन्ति लाचास्फुटमध्यशोभाः ॥ १५७ ॥ कुसुम्मनीलद्युतिरागमित्र-प्रत्ययलाचारसतुख्यभासः । तथापरे गोच्रुरकख्टकारी-पुष्पार्चिघो हिङ्गुलवत्त्विघोऽन्ये ॥ १५८ ॥ चकोरपुंस्कोकिलसारमानां नेचावभासद्युतयद्य केचित् । द्यत्विघः कोकनदोदराणां ॥ १५८ ॥

तर्जमा।

केत्ने सिन्टूरके समान, केत्ने लालकमलके, समान, केत्ने रोलीके समान, केत्ने महावरके समान, केत्ने गहेरे सुख, चौर गहेरे महावरके समान, केत्ने कुसुमफुलके समान, केत्ने नीलापनलियेड्ये महावरके समान, चौर केत्ने गोचुर चौर कण्टीकारीफुलके समान, केत्ने इंग्रुरके समान, चौर केत्ने चकोर, कोकिल, सारसपचीके चांखके समान, चौर केत्ने कमखिलेड्ये लाल पद्मफुलके पेटको समान, होते हैं । १५६ । १५७ । १५८ । १९८ ।

191 2

E.

TRANSLATION.

some like red lead, some like the red lotus, some like saffron, some like *alakta*,* some like deep blood, some like deep *alakta*, some like the *kusuma* flower, some like *alakta* with a shade of blue, some like the flower of *asteracantha logifolia* and *kantakári*,† some like vermilion, some like the eyes of the Greek partridge, *cuculus Indicus*, or the Indian crane, and some like the interior of the half-blown red water lily.

অন্থবাদ।

কতকগুলি সিন্দুরের সমান, কতকগুলি রক্ত পদ্মের ত্থায়, কতকগুলি কুস্কুমের তুল্য, কতকগুলি অলক্তের সদৃশ, কতকগুলি গাঢ় রক্তের ত্থায়, কতকগুলি গাঢ় অলক্তের ত্থায়, কতকগুলি কুস্থমকুস্থমের সমান, কতক-গুলি ঈষৎ নীলের হ্যুতিমিগ্রিত অলক্তের ত্থায়, কতক-গুলি গোক্ষুর ও কণ্টীকারীপুষ্পসদৃশ, কতকগুলি হিস্কুলের ত্থায়, কতকগুলি চকোর, কোকিল ও সারস পক্ষীর চক্ষুর সমান, এবং কতকগুলি নাতিপ্রফ্রুটিত কোকনদ (রক্তকুমুদ) পুষ্পের উদরের ত্থায় বর্ণবিশিষ্ট হইয়া থাকে। ১৫৬া১৫৭া১৫৮া১৫৯।

* The red resin of certain trees.+ Vide anté.

CO3

मणिमाला।

म्लम्।

प्रभावकाठिन्यगुरुत्वयोगैः प्रायः समानाः स्फटिकोट्भवानां । द्यानीलरकोत्पलचारुभासः सौगन्धिकाख्या मण्यो भवन्ति॥ १६० ॥ यो मन्टराग: कुरुविन्टजेषु स एव जातः स्फटिकोट्भवेषु । निरर्च्चिषोऽन्तर्वज्ज्लीभवन्ति प्रभाववन्तोऽपि न तत्समानाः॥ १६९ ॥

ये तु रावणगङ्गायां जायन्ते कुरुविन्दवः । पद्मरागसमं रागं विभ्वाणा न स्कृटाच्चिषः ॥ १६२ ॥

तर्जमा।

सौगन्धिक मणि चमकमे सकिमे, और भारीपन्मे आक्सर स्फटिकसेजो माणिक पयदा हौता है, उसके सनान है, और उस्का रङ्ग थोड़े नीलापनलियेड्य लाल कमल फुलको समान हैं। १६०।

जो कुरुविन्ट थोड़े रङ्गदार घोए, वह स्फटिकसेभी पयदा घोता है, खगर वह रङ्गमे कमभी घोए, लेकिन उस्के भितरका तेज ऐसा ज्यादा है, के वज्जत, रङ्गदार चौर छुटदेनेवाला खर्थात् घतिप्रभाविशिष्ट माणिक उस्के समान नहिं होता है। १९९।

रावणगङ्गामेसे जो कुरुविन्द पयदा घोता है, वह माणिकके समान स्नुख रङ्गदार घोता है, लेकिन माणिकके समान दीप्तिमान नहिं। १६२।

193 20

TRANSLATION.

160. The saugandhika resembles the crystal in brightness, weight and hardness; and its color is like that of the red-lotus dashed with blue.

161. Of *kuruvinda* rubies, that which is reddish, owes its origin to crystal; still its inner lustre is such as even to surpass the brightest *padmarága*.*

162. The *kuruvindas* which are produced in the *Rávanagangá*, are red like the *padmarága*, but are not so bright.

असूर्वान ।

সৌগন্ধিক মণি প্রভাব, কাঠিন্য ও গুরুত্বে প্রায়ই স্ফটিকোদ্ভব পদ্মরাগের সমান এবং তাহার বর্ণ ঈষৎ নীলের আভাযুক্ত রক্তোৎপলের সদৃশ হয়। ১৬০।

কুরুবিন্দের মধ্যে যেটা অল্পপরিমাণে লোহিতবর্ণ হয়, সেটীও স্ফটিক হইতেই জন্মে, তথাপি তাহার অন্ত-গতি তেজ এত অধিক হয় যে, অতি প্রভাবিশিষ্ট পদ্মরাগও তাহার সমান হইতে পারে না। ১৬১।

রাবণগঙ্গাতে যে সকল কুরুবিন্দ উৎপন্ন হয়, তাহারা পদ্মরাগের সমান লোহিত্য ধারণ করে, কিন্তু তদ্রপ দীপ্তি-শালী হয় না। ১৬২।

* A kind of ruby.

Y

मूलम। वन्धूजीवि शिखण्डीकं इन्द्रगोष्योड्रप्रष्यकं। रकार्खः कुट्टिमच्चैव पर्णं सीमन्तकं तया॥ १६३॥ गौरिकार्खः सूर्य्यसंज्ञ द्रुमामयमयोत्तरां। मचाराजनगन्ध्यार्ख्यं गोच्चुरं कण्टकारिकं॥ १६४॥

तर्जमा।

माणिकका रङ्गका चनुसार जो जो नाम है, वही सव नीचुमे लिखा जाता है। ज्यासाः-जिसका रङ्ग बन्धूजीव-फुलके समान, उसको वन्धूजीवि, जिसका रङ्ग घुंघचीके समान, उसको शिखरखीक ; जिसका रङ्ग इन्ट्रगोप कीटके समान, उसको शिखरखीक ; जिसका रङ्ग इन्ट्रगोप कीटके समान, उसको शिखरखीक ; जिसका रङ्ग क्रनेलफुलके समान, उसको चोड़ पुष्पक ; जिसका रङ्ग स्नुखके समान, उसको रक्ताखा ; जिसका रङ्ग चानारके दानाके समान, उसको कुट्टिम ; जिसका रङ्ग पलाशफुलके समान, उसको पण ; चौर जिसका रङ्ग सिन्ट्रके समान, उसको सीमन्तक कहते है। १ ई ३।

जिसका रङ्ग गेरीमाहिके समान, उसको गैरिक; जिसका रङ्ग जाफरानके समान, उसको सूर्य्यसंज्ञ; जिसका रङ्ग लाह्याके समान, उसको द्रुमामय; जिसका रङ्ग कुस्डम-फुलके समान, उसको महाराजनगन्धि; जिसका रङ्ग गोह्युरके फुलके समान, उसको गोह्युर; स्वौर जिसका रङ्ग कपटीकारीफुलके समान, उसको कपटकारिक कहते है। १९४।

195 %

TRANSLATION.

163. Rubies have different appelations according to their colors. That which is like the bándhuli flower, is called bandhujíbi, that resembling the gunjá berry, is called sikhandika, that which is like the cochineal, is called indragopi, that which resembles the China rose, is called odrapushpaka, that which is like blood, is called raktákhya, that which is like the seed of the pomegranate, is called kuttima, that which is like the kinsuka flower, is called parna, and that which is like vermilion, is called símantaka.

164. That ruby the color of which is like mountain slime, is called gairikákhya, that which is like saffron, is called súrjasanga, that which is like lac, is called drumámaya, that which is like the kusuma flower, is called mahárájanagandhi, that which is like asteracantha longifolia, is called gokshura and that which is like the solanum jaquini, is called kantakárika (Almandine Ruby.)

অহুবাদ।

মাণিক্যের বর্ণগত নাম প্রদর্শিত হইতেছে। যথা:---যাহার বর্ণ বাঁধুলী পুষ্পের সদৃশ, তাহাকে বন্ধুজীবি; যাহার বর্ণ গুঞ্জাসদৃশ, তাহাকে শিখণ্ডীক; যাহার বর্ণ ইন্দ্র-গোপকীটের সদৃশ, তাহাকে ইন্দ্রগোপি; যাহার বর্ণ জবা-ফুলের ন্যায়,*তাহাকে ওড়পুষ্পক; যাহার বর্ণ রক্তের সদৃশ, তাহাকে রক্তাখ্য; যাহার বর্ণ দাড়িমবীজের তুল্য, তাহাকে কুট্টিম; যাহার বর্ণ কিংশ্ডকপুষ্পের সদৃশ,তাহাকে পর্ণ এবং যাহার বর্ণ সিন্দ্রের ন্যায়, তাহাকে সীমন্তক বলে। ১৬৩।

যাহার বর্ণ গৈরিকসদৃশ, তাহাকে গৈরিকাখ্য; যাহার বর্ণ কুস্কুমের ন্যায় তাহাকে সূর্য্যসংজ্ঞ; যাহার বর্ণ লাক্ষাসদৃশ, তাহাকে দ্রুমাময়; যাহার বর্ণ কুস্তুমফুলসদৃশ,তাহাকে মহা-রাজনগন্ধি; যাহার বর্ণ গোক্ষুরপুপ্পসদৃশ, তাহাকে গোক্ষুর; যাহার বর্ণ কন্টীকারীপুষ্পসদৃশ,তাহাকে কন্টকারিক বলে।১৬৪

मणिमाला।

मूलम्। मणिराग' चकोराचं कोकिलाचं तयैव च। सारसाचं कोकनदं माणिका' परमं विदुः । एवं वज्जविधं विप्र माणिक्यं भुवि जायते ॥ १६५॥ वर्णानुयायिनस्तेषामन्द्रदेशे तयापरे । प्रजायन्ते तु ये केचित् मूल्यन्ते समवाप्नु युः ॥ १६६॥ तयैव स्फटिकोत्यानां देशे तुम्बुरसंच्चके । समरागाः प्रजायन्ते खल्समूल्या चि ते स्मृताः ॥ १६७॥

तर्जमा।

जिसका रङ्ग हिङ्गुलके समान, उसको मणिराग; जिस्का रङ्ग चकोर पद्यीके आंखके समान, उसको चकोराद्य; जिसका रङ्ग कोयेलके आंखके समान, उसको कोकिलाद्य; जिसका रङ्ग सारसपद्यीके आंखके समान, उसको सारमाद्य और जिसका रङ्ग सालुकफुलके समान, उसको कोकनद कहते हैं। जमीनपर यही प्रकारमे बज्जत् तरहेका माणिक पयदा होता हैं। १९६५।

अन्भू देशमे जो माणिक पयदा होता है, उस्मेसे जिसका जिस्तरहका रङ्क होए, उस्का रैसा दाम होता है। १६६ ।

तुम्बुर देशमे स्फटिकसे मणिकी तरइ जो माणिक पयदा घोता है, उस्का दाम वज्जत् कम घोए । १६७ । ः

TRANSLATION.

165. The ruby the color of which is vermilion, is called manirága, that which resembles the eye of the Greek partridge, is called *chakaráksha*, that which is like the eye of the *cuculus Indicus*, is called *kokiláksha*, that which is like the egg of the Indian crane, is called *sárasákhya*, and finally that which is like the red-lotus, is called *kokanada*. The earth produces a splendid variety of the kinds enumerated above.

166. The Andhra country^{*} produces rubies resembling the kuruvinda of Rávanagangá. These have the same value as kuruvindas.

167. The *padmarágas* of Tumbura, which resemble in color crystaline *padmarágas*, are of small worth.

অহুবাদ।

যে মাণিকের বর্ণ হিস্থুলের ন্যায়, তাহাকে মণিরাগ; যাহার বর্ণ চকোরপক্ষীর চক্ষুর সদৃশ, তাহাকে চকোরাক্ষ; যাহার বর্ণ কোকিলের চক্ষুসদৃশ, তাহাকে কোকিলাক্ষ; যাহার বর্ণ সারসপক্ষীর চক্ষুর সদৃশ, তাহাকে সোরসাক্ষ এবং যাহার বর্ণ সোরসপক্ষীর চক্ষুর সদৃশ, তাহাকে সারসাক্ষ এবং যাহার বর্ণ কোকনদ পুষ্পের উদরের ন্যায়, তাহাকে কোক-নদ বলে। পৃথিবীতে এইপ্রকার বহুবিধ মাণিক জন্মিয়া থাকে। ১৬৫।

রাবণগঙ্গাসমুদ্রুত কুরুবিন্দের ন্যায় বর্ণবিশিষ্ট যে অপর কতকগুলি মণি অন্ধ্র দেশে জন্মে, তাহারাও কুরুবিন্দের সমানমূল্যে বিক্রীত হয়। ১৬৬।

তুম্বুর দেশে স্ফটিকোদ্ভব পদ্মরাগের সমান বর্ণবিশিষ্ট যে পদ্মরাগ জন্মে, তাহার মূল্য অতি অল্প হইয়া থাকে। ১৬৭।

* The modern Telingana. Its people are called Andaræ by Pliny.

197 20

मणिमाला।

मूलम्। वर्णाधित्व्यं ग्रुक्तवच्च सिग्धता समता ग्रुमा। चर्चिम्वत्ता महत्ता च मणोनां ग्रुणसंग्रहः ॥ १६८ ॥ माणिक्वरस्य प्रवच्चामि यथाजातिचतुष्टयं। वन्ह्यचत्त्रियवैश्वाख ग्रूट्रखाच यथाक्रामं ॥ १६८ ॥ पद्मरागो भेवद्विप्र: कुरुविन्दस्तु वाज्जजः । सौगन्धिको भवेद्वैश्वो मांसखर्ख्डस्वथान्तरजः ॥ १७०॥ भोणपद्मसमाकारः खदिराङ्गारसप्रभः । पद्मरागो दिजः प्रोक्तश्र्वायाभेदेन सर्व्वदा ॥ १७१ ॥

तर्जमा ।

ज्यादा रङ्ग, भारी, चमकेला, समान, ग्रुभलचण, कुट चौर कदमे वड्रा, यची सवरतका वड्रा खास ग्रुण चै। १६८ ।

जिस् प्रकार मनुष्यको बाह्मण, चचिय, वैभ्य और प्रद्र, यही चार जात होति हैं, उसी प्रकार माणिकभी चार प्रकारकी जात हैं, चालक चालक उनका लचण कहते हैं। १६८।

माणिक ब्राह्मणवर्ण, कुरुविन्द चचिवर्ण, सौगन्धिक वैद्यवर्ण और मांसखराड (अर्थात् कुटेड्ये मांसके समान) भूद्रवर्ण कचा जाता है। १७०।

किसि किसि पण्डितके मतके चनुसार ब्राह्मणवर्ण माणिक लालकमल, खयेरकाठके चज्जारके समान वर्ण-विभिष्ठ होता है। १७१।

199 20

R

TRANSLATION.

168. Heaviness, coolness, evenness, lustre, thickness, deepness of color and auspiciousness are the principal good qualities of gems.

169. The four-fold division into castes obtains also among rubies. The characteristics of each class I shall now describe.

170. The padmarága (Oriental Ruby) is reckoned a Vipra (Brahmin), the kuruvinda (Rubicelle) a Khetriyá, the Saugandhika (Spinel) a Vaisya, and the Mansa-khanda (Balas Ruby) a Súdra.

171. Some say that the Vipra rubies emit a shade red like the color of the red-lotus or the red-hot charcoal of the *Acacia Catechu*.

অহ্বাদ।

বর্ণাধিক্য, গুরুত্ব, স্নিগ্ধতা, অবন্ধুরতা শুভলক্ষণ, দীপ্তি এবং স্থূলতা এই গুলি সামান্যাকারে রত্নের প্রধানগুণমধ্যে পরিগণিত। ১৬৮।

ব্রাহ্মণ, ক্ষত্রিয়, বৈশ্য ও শুদ্র এই জাতিচতু ইয়ভেদে মাণিক্যও চতুর্বিধ হয়, ক্রমে তাহাদের লক্ষণ বলা যাই-তেছে। ১৬৯।

পদ্মরাগ বিপ্রজাতি, কুরুবিন্দ ক্ষত্রিয়জাতি, সৌগন্ধিক (নরম) বৈশ্যজাতি এবং মাংসখণ্ড (লান্ড্লী) শূদ্রজাতি বলিয়া কথিত হয়।১৭০।

কেহ কেহ বলেন, বিপ্রজাতি পদ্মরাগ হইতে রক্তপদ্ম বা খদিরকাষ্ঠের অঙ্গারের ন্যায় ছায়া নির্গত হয়। ১৭১।

मणिमाचा।

मूचम्। गुच्चासिन्दूरवत्वूकनागरज़समप्रभः । दार्डिमौकुस्उमामासः कुरुविन्दस्तु वाऊ्जः॥ १७२॥ चिङ्गुचाशोकपुष्पाभमीषत्पीतन्तु लोचितं । जवालाचारसप्रायं वैश्वं सौगन्धिकं विदुः ॥ १७३॥ त्रारक्तकान्तिचीनञ्च चिक्रणज्य विशेषत: । मांसखर्ग्डसमाभो यो सोऽन्तर्रजः पापनाश्रनः ॥ १७४॥

तर्जमा।

चचिवर्ण कुरुविन्द घुर्घंची अर्थात् युद्धा, सिन्दूर, वन्धूक-युष्प, नारङ्गी और आनारके फुलके समान रङ्ग्दार होता है। १७२।

बैग्धवर्ष सौगन्धिक इंग्रुर, अशोकका फुल, और योड़ा पीलापनलिये ऊने सुख, कनेलफुल और महावरके समान रङ्गदार होता है। १७३।

त्रद्रवर्णका मांसखर्ग्ड कान्तिचीन, चिक्रण, घोड़ा स्र.खीमायेल रङ्ग देता है। १७४।†

* कस्यचिन्मते रक्तश्वेतो भवेट्विप्रख्वतिरक्तखु चत्तियः । रक्तपोतो भवेदेश्वे रक्तनीलक्तयान्यजः ॥

† को रेको मतमे खुखी सफे दीमाये ज त्राह्म गवर्ग, बज्जत् खुखी च्च चियवर्ग, खुखो पी जा पन जिये ज्ञ ये वै स्टवर्ग, और खुखी नी जा पन जिये ज्ञ ये म्रू दबर्ग ॥

201 %

TRANSLATION.

172. The Kshetriya ruby casts forward a shade resembling in hue a $gunj\dot{a}$, vermilion, or the flower of the bandhuka, the orange, or the pomegranate.

173. From the Vaisya saugandhika comes out a shade like vermilion, the flower of the asoka, the China rose, or alakta; or a red lustre tinctured with yellow.

174. A Sudra mánsakhanda emits a reddish, unbeautiful, and glossy shade resembling a piece of flesh.*

অন্থবাদ।

ক্ষত্রিয়জাতি কুরুবিন্দ হইতে গুঞ্জা (কুঁচ), সিন্দুর, বাঁধূলী, নাগরঙ্গ ও দাড়িমের পুষ্পসদৃশ ছায়া বহির্গত হয়। ১৭২।

বৈশ্যন্ধাতি সোঁগন্ধিক হইতে হিন্থুল, অশোককুস্থম, ঈষৎ পীতের আভাযুক্ত লোহিত, জবাপুষ্প, ও অলক্তকের ন্যায় ছায়া বাহির হয়। ১৭৩।

শূদ্রজাতি মাংসখণ্ড হইতে ঈষৎ রক্ত, কান্তিহীন, চিরুণ, এবং মাংসখণ্ডের সদৃশ ছায়া নির্গত হয়। ১৭৪।†

* The Ruby which is red-white, is a *Brahmin*, that which is deep red, is a Kshetriya, that which is red-yellow, is a Vaisya, and finally that which is red-blue, is a Súdra.

† কাহার মতে পদ্মরাগের মধ্যে যেটী রক্তশ্বেত-মিপ্রিত-বর্ণবিশিষ্ট, সেটী ব্রাহ্মণজাতিমধ্যে; যেটী অত্যস্ত-লোহিতবর্ণ, সেটী ক্ষত্রিয়জাতি-মধ্যে; যেটী রক্তপীত-মিপ্রিত-বর্ণযুক্ত, সেটী বৈগুজাতিমধ্যে এবং যেটী নীললোহিত-মিগ্রবর্ণশালী, সেটী শুদ্রজাতিমধ্যে পরিগণিত।

Z

मणिमाला।

साणिक्वस्य छायादयः। मूलम्।

माणिकास्य ममाखाताण्कायाः घोड्रग्र कीर्त्तताः । गुणाखलार चाखाता चष्टौ दोषा मुनीखरैः ॥ १७५ ॥ छाया स्थात् पद्मरागस्य रक्तकोकनदप्रभा । खद्योताग्निकपोताचिकोक्तिलानेचसन्निभा ॥ १७६ ॥ सारसाचिचकोरस्य मन्निमैवन्तु सप्तधा । एताः गुभफलाण्कायाः सिंच्लोत्यमच्चामणेः ॥ १७७ ॥ सिन्दू रलोध्रपुष्पाभा गुच्चाकिंगुकसन्निभाः । छायास्ताः कुरुविन्दोस्तु चतस्रः परिकीर्त्तिताः ॥ १७८ ॥ चधना चीरसंकाया कुङ्गुमोदकसन्निभा । ईषद्रका भवेच्छाया सौगन्धिकमणेरियं ॥ १७८ ॥

माणिकका छाया वगैरह। तर्जमा।

रत्नपारची परिखत माणिकके मध्ये घोेलप्रकारकी छाया, चारप्रकारका ग्रुण और चाटप्रकारका चयेब कहे गये हैं। १७५।

सिंइलदेशके माणिकमे लालकमल, भगजुगनी अर्थात् खद्योत, आग, कवृतर, कोयेल, सारस और चकोरके आंखके समान क्राया निगत होता है, और यही सातप्रकारकी क्राया शुभदायक है। १७६ । १७० ।

कुरुविन्द मणिमे सिन्दूर, लोधपुष्प, गुच्चा श्रीर पलाश-फुलके समान काया निगत होती है। १७८ ।

सौगन्धिक मणिमे दुध, रोलीमिले झ्वे जलके समान, चौर योडा खुखीमायेल काया निकेलती है, उस्के मध्ये दुधके समान काया दौतलको नाग्न करती है। ९७८।

203 80

Shades and other Qualities of Rubies. TRANSLATION.

175. The authorities mention sixteen kinds of shade, four good and eight bad properties of rubies.

176—177. The rubies of Ceylon emit a gleam like the red-lotus, the glow-worm, fire, or the eye of the pigeon, the *cuculus Indicus*, the Indian crane or the Greek partridge. All these shades are auspicious.

178. The Kuruvinda shoots a shade resembling red lead, the gunjá berry, or the flower of symplocos racemosa or of the butea frondosa.

179. The saugandhika gem scatters a gleam either pale-red or like milk or the water colored by the crocus Sativus;—of these, the milky lustre blights wealth.

মাণিকের ছায়াদি।

অন্থবাদ।

রত্নতত্ত্বজ্ঞ পণ্ডিতেরামাণিক্যসম্বন্ধে যোড়শপ্রকার ছায়া, চারিপ্রকার গুণ ও আটপ্রকার দোষ নির্দেশ করিয়া-ছেন। ১৭৫।

সিংহল-দেশীয় পদ্মরাগ হইতে রক্তপদ্ম, খদ্যোত, অগ্নি, কপোত, কোকিল, সারস ও চকোরের চক্ষুর ন্যায় ছায়া বহির্গত হয়; এই সপ্তবিধ ছায়াই শুভজনক। ১৭৬।১৭৭।

কুরুবিন্দ হইতে সিন্দুর, লোধ্রপুষ্প, গুঞ্জা ও কিংশুক-পুষ্প সদৃশ ছায়া নির্গত হয়। ১৭৮।

সোঁগন্ধিক মণি হইতে তুগ্ধ, কুঙ্কুমের জল ও ঈষৎ রক্তের ন্থায় ছায়া বিকীর্ণ হয়, তন্মধ্যে তুগ্ধচ্ছায়া ধনহানিকর। ১৭৯।

रखकर गुवहको सूर्य्यके सामने रखनेंसे वही घोल प्रकारकी काया उस्मेसे प्रकाश होगी । १८९ । गुवहने सूर्य्यने निरणने सार्थमे जिस् माणिकमेसे लालरङ किरणकर तामाम मकानको लालरङ करदे, वही माणिक महागुणविशिष्ट अर्थात् वेलकुल वेत्रयेव और खुव ही। १८२।

नीलगन्धिमणिमे नील कमल और लोचेके समान काया निकेलती है । १८० ।

पद्मराग बगैरह मणिको एक खुब साफ आदूनापर

तरजमा।

नौलगन्धिमणेः प्रोक्ते द्वे च्छाये रत्नकोविर्दैः ॥ ९८० ॥ वालाकभिमुखं कत्वा दर्पणे धारयेन्मणिं । तत्र कान्तिविभागेन छायामागं विनिर्द्धित् ॥ ९८९ ॥ वालार्ककरसंखर्थाट्यः शिखां लोडितां वमेत् । रज्जयेदाश्रमं वापि स महाग्रण उच्यते ॥ ९८२ ॥

नीलोत्पलदलच्छाया लोइकान्तिसमप्रभा।

204

मणिमाला।

म्लम् ।

205

K

TRANSLATION.

180. The *nilagandi* shines in a halo like the blue lotus or iron.

181. When the ruby is placed over a mirror and is then exposed to the morning sun, the glass will flash with a lustre composed of all the above-mentioned shades.

182. That ruby which, when exposed to the sun 'new risen,' radiates red rays or paints the whole house with crimson, is surpassingly fair.

অহ্বাদ।

নীলগন্ধি মণি হইতে নীলোৎপল ও লোহের সদৃশ ছায়া বহির্গত হয়। ১৮০।

পদ্মরাগমণিকে একথানি দর্পণে স্থাপন করিয়া বালার্কা-ভিমুথে ধারণ করিলে তাহা হইতে উল্লিখিত যোড়শবিধ ছায়া সেই দর্পণে প্রতিবিন্ধিত হইবে। ১৮১।

প্রাতঃসূর্য্যের কিরণসংস্পর্শে যে পদ্মরাগহইতে লোহিত-বর্ণ শিখা উদ্গীর্ণ হয়, অথবা যাহা সমস্ত আত্রমকে রঞ্জিত করে, সেই পদ্মরাগই মহাগুণসম্পন্ন। ১৮২।

मणिमाचा।

मूलम्।

दुग्धे शतग्रणे चिप्तो रच्चयेद्यः समन्ततः । वमेच्छिखां लोहितास्वा पद्मरागः स उत्तमः ॥ १८३ ॥ अन्धकारे महाघोरे यो न्यस्तः सन्महामणिः । प्रकाश्यति सूर्य्याभां स अेष्टः पद्मरागकः ॥ १८८ ॥ पद्मकोषेतु यो न्यस्तो विकाश्यति तत् चणात् । पद्मरागवरो ह्येष देवानामपि दुर्लभः ॥ १८५ ॥ यो मणिर्ह स्थते दूरात् ज्वलदग्निसमच्छविः । वंशकान्तिः स विज्ञे यः सर्व्यसम्पत्तिकारकः ॥ १८६ ॥

तर्जमा।

जो माणिक अपनेसे शौगुण ज्यादा दुधमे डालदेनेसे सब दुधको लालरङ्ग करदे; अथवा दुधके अन्ट्रसे लाल-शिखा बाहेर करें, वही माणिक नेहायेत् उमदा होता है। १८२३।

जो माणिक आंधेरेमे सूर्य्यके समान तेज प्रकाग करे, वह बज्जत उत्तम, और औव्वल दरजेका है। १८४ i

जो माणिक कमलके फुलके कलिपर रखर्तेची कमलको खेाला देगा, वची माणिक सबसे उमदा चै, और देवता चेंाको दुर्लेभ चै। १८५४ ।

जो माणिक दूरसे चागके समान देखलादू देवे, उस्की वंग्रकान्ति कइते हैं चौर उस माणिकके दारा सब-प्रकारकी सम्पत् हासिल होती है। १८०६।

207 80

TRANSLATION.

183. That *padmarága* which, on being cast into a quantity of milk a hundred times its bulk, makes the white mass one entire sheet of red, or sends out a red flame, is nonpareil.

184. That *padmarága* which, like the sun, can destroy even Egyptian darkness, is supremely excellent.

185. That *padmarága* which, when placed on the lotus-bud, anon makes it blossom, is Perfection's self—and is hardly attained even by the Gods.

186. The *padmarága* which is perceptible from a distance like a flame, is entitled *vansakánti*,—it leads to wealth.

অহুবাদ।

যে পদ্মরাগ স্বীয় পরিমাণের শতগুণ ছুগ্ধে নিক্ষিপ্ত হইয়া সমুদায় ছগ্ধকে লোহিতবর্ণে রঞ্জিত, অথবা লোহিত বর্ণ শিখা উদ্গীরণ করে, সেই পদ্মরাগ অতি উত্তম বলিয়া প্রসিদ্ধ। ১৮৩।

যে পদ্মরাগ অতি প্রগাঢ় অন্ধকারেও সূর্য্যের ত্যায় আভা প্রকাশ করে, তাহা অতি শ্রেষ্ঠ। ১৮৪।

যে পদ্মরাগ পদ্মের কলিকার উপর স্থাপন করিবামাত্র তাহা তৎক্ষণাৎ প্রক্ষুটিত হয়, সেই পদ্মরাগই সর্ব্ব-শ্রেষ্ঠ, এবং দেবতাদিগেরও তুর্লভ। ১৮৫।

যে পদ্মরাগ দূর হইতে জলন্ত অগ্নির শিখার ন্যায় দৃশ্য-মান হয়, তাহাকে বংশকান্তি কহে, এবং তদ্ধারা সর্ব-প্রকার সম্পত্তি লাভ করা যায়। ১৮৬।

मूलम्।

नी लीर सं दुग्धरसं जलस्वा वे रञ्झयन्ति दिग्रतप्रमाणं। ते ते वथा पूर्व्वमतिप्रग्रसाः

सौभाग्यसम्पत्तिविधानदायका: ॥ १८७ ॥ माणिकास्य समाखाता अष्टौ दोषा मुनी खरै: । लचर्णं क्रमश्रस्तेषां वच्चामि यत्नतो दिज ॥ १८८८ ॥ दिच्छायत्वं वीरूपत्वं ससोदः कर्करन्तया । अशोभनं कोकिलच्च जड, धूस्राभिधच्च वे ॥ १८८ ॥

तर्जमा।

जो माणिक अपने प्रमाणसे दोशो गुण नीलरङ्ग जल, और दुध अथवा फकत जलमे डालदेनेसे दुच्ची तिन चिजोंको लालरङ्ग कर दें, तो दर्जे वदर्जे वेइतर है, अर्थात नीलरङ्ग जलको सुख करनेवाला औव्वल दर्जेका माणिक है, और दुधको सुख करनेवाला दोयेम दरजेका माणिक है, और फकत जलको सुख करनेवाला सेयम दर्जेका माणिक है। और यह तिनो माणिक दीलतके कारण है। १८०७।

रत्नपारची परिएडतोनें माणिकका जो चाट किसिमका चयेव कहा है, उस्की तपसीलवयान किजाती है। १८८८।

दिच्छायत्व, विरूपत्व, ससोद, कर्कर, अशोभन, कोकिल, जल और धूम यही आटकिकिसिमका अथेव हमेसा माणिकमे देखा जाय। १८०८।

209 %

TRANSLATION.

187. All those *padmarágas* that, on being thrown into a quantity of milk or of water pure or blue two hundred times their bulk, crimson the liquid, conduce to prosperity though they differ among themselves as regards worth.

188. I shall now describe the eight bad properties of rubies, which have been enumerated by the authorities.

189. Dwi-chchháyatwa, virúpatya, samveda, karkara, asovana, kokila, jara, and dhumra, are the defects commonly found in rubies.

অহুবাদ।

যে সকল পদ্মরাগ স্বীয় পরিমাণের দ্বিশত গুণ নীলীরস, তুগ্ধ অথবা জলের মধ্যে নিক্ষিপ্ত হইলে উল্লিখিত বস্তুত্রয়কে লোহিতবর্ণে রঞ্জিত করিয়া তুলে, তন্মধ্যে পূর্ব্ব পূর্ব্বগুলি পর পরগুলি অপেক্ষা অধিক প্রশস্ত এবং সমুদায়গুলিই সম্পত্তিকারক। ১৮৭।

রত্ন-পরীক্ষকেরা মাণিক্যের যে আট প্রকার দোষ নির্দ্দেশ করিয়া গিয়াছেন, সেই অফটবিধ দোষের নাম ও লক্ষণ ক্রমশঃ বিরত করা যাইতেছে। ১৮৮।

দ্বিচ্ছায়ত্ব, বীরূপত্ব, সম্ভেদ, কর্কার, অশোভন, কোকিল, জড় ও ধৃত্র এই অফটবিধ দোষ সচরাচর মাণিক্যে দৃষ্ট হয়। ১৮৯।

AA

मणिमाला।

मूलम्। छायादितयसम्बन्धात् दिच्छायं वन्धुनाश्रनं । वीरूपं विपदस्तेन साणिक्येन पराभव: ॥ १८० ॥ सस्मेदो भिन्नमित्युक्तं श्रस्त्रधातविधायकं। कर्क्षरं कर्क्षरायुक्तं पशुवन्धुविनाश्रकत् ॥ १८१ ॥ दुग्धे नैव समालिप्त लम्वलीपुटसुच्यते । च्रश्रोभनं समुद्दिष्टं माणिक्यं वज्जदुःखक्वत् ॥ १८२ ॥

तर्जमा ।

जिस् माणिकमे दोकिसिमकी छाया निक्ले, उसको दिच्छाय कहते हैं, दिच्छायका माणिक वन्धुको नाग करता है; जिस् माणिकमे पचीके पांचोका निगान होए, उस्को वीरूप चयेव कहते हैं, वीरूप माणिक मालीकको सव जागे हार देता है। १९८०।

जो माणिक इकिकतमे टुटा नहिं है, मगर भङ्गभाव मालुम होता है, उस्को सस्पेद खयेव कहते हैं, सस्पेद माणिक मालीकको शस्त्राघातके भयसे कुटा नहिं सका। माणिकमे जो कङ्करसा देखा जावे, उसे कर्कर कहते हैं, कर्कर माणिक, पशु खौर बन्धुको नाश करता है। १८९।

जिस् माणिकमे दुधके समान मालुम घोता घो, उसको अशोभन अयेव कचते चैं, अशोभन माणिक बड़ा टुःख-दायी है। १९८२।

211 %

TRANSLATION.

190. The padmarága which emits a two-fold shade is called a dwi-chchháya. A dwi-chchháya ruby is the death of friends. That ruby which bears a mark like a bird's foot, is called a virúpa. A virúpa gem always brings humiliation to its master.

191. A samveda ruby is one which shows a mark like a rift. This gem renders its owner liable to blows from a weapon. A karkara ruby bears in its bosom a gritty fragment. It causes the death of friends and is also fatal to domestic beasts.

192. That *padmarága* which naturally appears as if it were immersed in milk, goes by the name of *asovana*; this gem is the source of a multiplicity of evils.

অমুবাদ।

যে পদ্মরাগ হইতে দ্বিধি ছায়া নির্গত হয়, তাহাকে দ্বিচ্ছায় বলে, দ্বিচ্ছায় পদ্মরাগ বন্ধুনাশক, যে মাণিকে পক্ষীর পদচিহ্ন দৃষ্ট হয়, তাহাকে বীরূপ বলে, বীরূপ মাণিক্য স্বামীকে সর্বত্র পরাস্থৃত করে। ১৯০।

ভঙ্গভাবকে সম্ভেদ বলে, সম্ভেদদোষাঞ্রিতমাণিক্য-স্বামী শন্ত্রাঘাতের ভয় হইতে মুক্ত হইতে পারেন না, পদ্ম-রাগের মধ্যে যে কর্কর (কাঁকর) দৃষ্ট হয়, তাহাকে কর্কর বলে, কর্করযুক্ত পদ্মরাগ পশু ও বন্ধু-বিনাশক। ১৯১।

পদ্মরাগকে ছুগ্ধে অভিষিক্ত করিলে যেরূপ আকার ধারণ করে, স্বভাবতঃ যে পদ্মরাগ তদ্রুপ, তাহাকে অশোভন বলে, অশোভনদোষশালী পদ্মরাগ বহু ছুঃথের আকর। ১৯২।

मिर्यामाचा।

मूचम्।

मधुविन्दुसमच्छायं कोकिलं परिकीर्त्तितं। द्यायुर्लेष्प्रीयशो इन्ति सदोषं तन्न धारयेत्॥ १८३ ॥

रागचीनं जर्ड प्रोक्तं धनधान्यविनाश्वकत्। धूम्रं धूम्रयमाकारं वैद्युतं भयमावच्चेत् ॥ १८४ ॥ ईहग्दोषयुतो निन्दगा मणयो मूल्यवर्जिताः । चपि प्राप्ता न ते धार्था ग्रहे शोभनमिच्छता ॥ १८५ ॥

तर्जमा।

जिस माणिकमे सइदके क्रिटेके समान हो, उस्को कोकिल अयेव कहते हैं, कोकिल माणिक उमर, दौलत और नाम्बरीको नाग्र करता है। इस कारण ऐसा माणिक कभी पहेरना मनासिफ नहिं। १९६३।

जो माणिक रङ्गदार नहिं, उसको जड़ कहते हैं, जड़ अयेवयुक्तका माणिक धन और धान्य नाग्र करता हैं; धूंये ऐसे रङ्गके माणिकको धूम्र कहते हैं, धूम्र अयेवका माणिक विज्ली गिराता हैं। १८४।

जो सव अयेव उपर वयान कियेगये, यही सव अयेव-दार माणिक नेहायेत अयेवी और निन्दाके योग है, और वज्जत्कम किमत, एँसे माणिक सुफ्त मिल्नेसेभी अप्ने भालाद्र चांहेनेंवाले कभी अप्ने पाग्र या मकानमे ना रखेगा। १९४५।

H

TRANSLATION.

213 20

193. The mark in a ruby which looks like a drop of honey, is called a *kokila*. A *kokila* ruby is inimical to life, wealth and fame, and must be shunned.

194. The quality of being discolored is called *jara*. A *jara padmarága* causes loss of wealth. The color of a *padmáraga* which looks like smoke, is called *dhumra*.* A *dhumra*-colored *padmarága* renders one liable to lightning-stroke.

195. The above-mentioned rubies are worthless and pernicious, and should never be treasured up, even were they to be had for the gathering.

অন্নবাদ।

পদ্মরাগের উপরিভাগে যে মধুবিন্দুর ন্যায় দাগ লক্ষিত হয়, তাহাকে কোকিল বলে, কোকিলদোষবিশিষ্ট মাণিক্য আয়ু, লক্ষ্মী ও যশ বিনাশ করে, অতএব তাদৃশ পদ্মরাগ কদাচ ধারণ করা কর্ত্তব্য নহে। ১৯৩।

পদ্মরাগের রাগহীনতাকে জড় কহে, জড়যুক্ত মাণিক্য ধনধান্যাদি বিনাশ করে, ধূম্রের ন্যায় বর্ণকে ধূম্র বলে, ধূম্র-বর্ণ পদ্মরাগ বজ্রপাতের ভয় উৎপাদন করে। ১৯৪।

উল্লিখিত দোষাঞ্রিত মণি অতিশয় নিন্দনীয় এবং মূল্য-হীন, এবস্বিধ রত্ন অনায়াসলভ্য হইলেও আত্মহিতেচ্ছুগণ কদাচ তাহা গৃহে রাখিবেন না। ১৯৫।

* Literally, smoke.

मगिमाचा।

मूलम्। श्रोभादितयवन्तो ये मणयः चतिकारकाः । उभयत्त पदं येषां तेरेव स्थात् पराभवः ॥ १८६ ॥ ये कर्क राश्किद्रमलोपदिग्धाः प्रभाविसुक्ताः परुषा विवर्णाः ।

न ते प्रश्रस्ता मणयो भवन्ति समासतो जातिगुर्णैः समस्तैः ॥ १८७ ॥

दोषोपऌष्टं मणिमप्रवोधाद्

विभक्तिं यः कच्चन कच्चिदेकं।

तं वन्धुदुःखाय सवन्धुवित्त-नाशादयो दोषगणा भजन्ते ॥ १८८०॥

तर्जमा।

जिस् माणिकको शोभा दोकिसिमकी है, अर्थात् कभी कोइ रङ़, और कभी किसि तरहेका देख्लाइ देता है, वह वज्जतही लोक्शान करनेवाला है और जिस्के दो जगहमे पत्त्वीके पांखोका निशान हो, उस्का हार्नेका कारण है। १८६।

जो माणिक कर्क रा अर्थात् कर्क रदार, छेंदा अर्थात् केदवाला, मलिन, अर्थात् मवला, प्रभाचौन, अर्थात् दीप्ति-चौन, कर्क श अर्थात् खुर्धरा, और विवर्ण अर्थात् वेरद्र. र सा माणिक अगर उत्तम जात, अथवा और ग्रणोसे भूषित चो, लेकिन कभी आच्छा नचि । १९७।

अगर कोइ आट्मी अज्ञान और लाइल्मीसे अयेवी माणिक पहेरे, तो जहर उस् आट्मीको भाइ, और दौलत वगैरहके नाशका दुःखभोग कर्ना होगा। १९८८।

215 %

36

TRANSLATION.

196. Those rubies which send out a two-fold shade, bring about loss; and those which are marked with a bird's foot in two several places, are the cause of defeat.

197. Those which bear gritty fragments and are indented, dirty, lack-lustre, rough and discolored, are certainly unlucky, although they may be otherwise good and may belong to a superior caste.

198. If through ignorance, a person happens to wear a defective ruby, loss of friends, destruction of wealth *et cetera*, are the inevitable consequences.

अञ्चांग।

যে সকল মণির শোভা দ্বিবিধ, তাহারা অতিশয় ক্ষতি-কারক, এবং যাহাদের ছুই স্থানে পক্ষীর পদ-চিহ্ন থাকে, তাহারা পরাভবের কারণ। ১৯৬।

যাহারা কর্করযুক্ত, সচ্ছিদ্র, মলিন, প্রভাহীন, কর্কশ ও বিবর্ণ, তাহারা উত্তমজাতি বা অন্থান্য গুণসমূহে ভূষিত হইলেও কদাচই প্রশস্ত নহে। ১৯৭।

যদিকোন ব্যক্তি অজ্ঞানতঃ দোষদূষিত মণি ধারণ করে, তাহা হইলে সে ব্যক্তিকে অবশ্যই বন্ধুবিত্তনাশাদি ছৃঃখ ভোগ করিতে হইবে। ১৯৮।



मणिमाला।

मूलम। सापत्नप्रमध्येऽपि कताधिवासं प्रमादऌत्तावपि वर्त्तमानं।

न पद्मरागस्य मचाग्रणस्य भत्तरिमापत् ससुपैति काचित्॥ १८९॥ दोषोपसर्गप्रभवाख ये ते नोपद्रवास्तं समभिद्रवन्ति । ग्रणैः ससुख्यैः सकलैरुपेतं

यः पद्मरागं प्रयतो विभक्ति॥ २००॥

चर्ग्डाल एकोऽपि यथा दिजातीन् समेत्य भूरीनपि इन्ति यतात् । तथा मणीन् भूरिग्रणोपपन्नान् भक्रोति विद्रावयितुं विजातिः ॥ २०९ ॥

तर्जमा।

जिस्के मकानमे वे अयेवी माणिक रहे, वह आट्मी अगर सर्वदा चौतरफा दुस्मनके रहनेवाले मकानसे रहे, अथवा वज्जत् तरहको तक् निपमे पई, तोभी उस्को कोद्र आफत् पकड़ नहि सक्ति। १९८९।

जो चाट्मी सर्व्युणसम्पन्न चर्थात् तामाम वस्फों भराज्जया एक माणिक पहेरे, चौर उस्के साथ शौ माणिक चिवदार पहेरे, तो उस्का कुच लोक्शान नहि हो सका। २००।

किसि पण्डितें के मनसे एैसाभी कहा है, के एक चाण्डाल जिस तरहसे भी हाजार बाह्मणको दूषित करदेता है, उसी प्रकारसे एक विजाति रत्न भी भी सर्व्ययणसम्पन्न रत्नको दूषित कर्ता है। २०१।

217 80

TRANSLATION.

199. The man who keeps in his house a sterling *padmarága*, can with perfect safety, constantly live in the midst of enemies, and is impervious to the attacks of adverse fortune.

200. He who wears a *padmarága* of matchless virtues, need not apprehend any mischief from the foul touch of bad *padmarágas* without number.

201. According to some, as the contact of a single *chandála*^{*} suffices to contaminate ever so many Brahmins, even so one impure gem serves to pollute pure gems *ad infinitum*.

অন্থবাদ।

যাহার গৃহে সঞ্ডণ পদ্মরাগ থাকে, সে ব্যক্তি যদি সর্ববদা শত্রু-পরিবেষ্টিত স্থানে বাস করে, অথবা নানা প্রমাদে পতিত হয়, তথাপি কোন আপদ তাহাকে কথনই আক্রমণ করিতে সমর্থ হয় না। ১৯৯।

যে ব্যক্তি সর্ব্বগুণসম্পন্ন একখানি পদ্মরাগ ধারণ করে, সমস্ত দোষদূষিত শত শত পদ্মরাগেও তাহার অনিষ্ঠ সাধন করিতে পারে না।২০০।

কাহারও মতে এক জন চণ্ডালের সহবাদে যেমন শত সহস্র ব্রাহ্মণ দৃ্যিত হইয়া থাকেন, সেইপ্রকার একখানি বিজাতি রত্নও শত শত সর্ববঞ্জণসম্পন্ন রত্নকে বিদ্রাবিত করিতে সক্ষম হয়।২০১।

* The generic name for a man of the lowest and most despised of the mixed tribes, born from a Sudra father and a Brahmin mother.



मणिमाला।

मू चम्। जात्यस्य सर्व्वेऽपि मणेने जातु विजातयः सन्ति समानवर्णाः । तथापि नानाकरणार्थमेवं मेदप्रकारः परसः प्रदिष्टः ॥ २०२ ॥ गुणोपपन्नेन सचाववद्वो सणिने धार्थ्यो विग्रणो विजात्यः । न कौर्सुमेनापि सचाववद्वं विदान् विजातिं विश्वयात् कदाचित् ॥ २०३ ॥ गुष्ट्याफलप्रमाणस्तु दश्व सप्त चिग्रुष्ट्यकान् ।

पद्मरागस्तुलयति यथापूर्व्सं महाग्रुणः ॥ २०४ ॥

तर्जमा।

सव तरइसे विजाति मणि कभी सुजात मणिके समान वर्ण हो नहि सका, वज्जत् तरहके खानोके सेट्से रज्जके हिसावसे योडा फरक होता है। २०२।

विजाति मणि सव तरइके ग्रुणसम्पन्नमणिसहित एक जगइ जड़ेवाने सेभी पहेर्ना मनासिफ नहि है, पण्डित लोग कहेते हैं, विजातिमणि कौ खुममणिके सातमेभी पहेर्ना मनासिफ नहि। २०३।

गुद्धाफलके समान माणिक त्रोजनमे तिन, त्रथवा सात, या दश गुद्धाके बरावर हो सका है, उस्मेसे जो जिस् कदर जप्रादा खोजनी होगा, वह गुणमे जप्रादा है। २०४।

219 %

TRANSLATION.

202. The colors of defective rubies are never like those of good rubies, yet to a certain extent they differ one from the other in color in accordance with their respective mines.

203. Bad rubies should never be worn, although set along with the best rubies—nay, should they happen to be in company with *Kaustuva** itself.

204. Padmarágas which resemble in shape a gunjá berry, may weigh three, seven or ten gunjás, and the heaviest is the most precious.

অহ্বাদ।

সর্ব্বপ্রকার বিজাতি মণি কখনই স্থজাত মণির সমান বর্ণ প্রাপ্ত হয় না, কিন্তু নানা আকরভেদে তাহাদের বর্ণগত কিঞ্চিৎ কিঞ্চিৎ ভেদও লক্ষিত হয়।২০২।

বিজাতি মণি সর্ব্বপ্রকার গুণসম্পন্ন মণির সহিত একত্র সম্বদ্ধ হইলেও ধারণ করা কর্ত্তব্য নহে, এমন কি পণ্ডিতেরা বলেন, বিজাতি মণি কৌস্তুভমণির সহিত আবদ্ধ হ'ইলেও তাহা পরিত্যাগ করিবে। ২০৩।

গুঞ্জাফলের সমান আকারবিশিষ্ট পদ্মরাগ ওজনে তিন, সাত ও দশ গুঞ্জাপরিমিত হইতে পারে, তন্মধ্যে যাহা ওজনে যত অধিক ভারী হইবে, তাহা তত গুণশালী বলিয়া প্রসিদ্ধ। ২০৪।

* The name of a celebrated jewel obtained with thirteen other precious things at the churning of the ocean. It was suspended on the breast of Krishna. £ 220

मणिमाचा।

मूचम् ।
 कोष्टुकोलफलाकारो दादशाष्टौ दिगुच्चकान् ।
 पद्मरागखुलयति यथापूर्व्वं महाग्रुणः ॥ २०५ ॥
 वदरीफलतुख्यो यः सूरदिङ्नवमाषकः ।
 धाचीफलपमस्त्रिंशतिदाष्टमाषकः ॥ २०६ ॥
 तथाच्रफलतुख्यो यो वच्चिपत्तीकमाषकः ।
 ताम्बूलीफलमानो यच्चतुस्तिद्वेत्रकतोलकः ॥ २०९ ॥

तर्जमा ।

कष्टुफल अर्थांत् श्याकुलको समान वडा़ माणिक चेजनसे वार, अथवा आट, अथवा दा ग्रुज्जाके प्रमाण चीता है। २०५।

जिस्का कद वयेरके समान है, उसका रोज चोजनमे बार, दश चौर नौ माघा है, जो देख्नेमे चामलेके फलके समान है, वह चोजनसे चिश्र, विश्व चयवा घोल साघातक हो सका है । २०६ ।

रौद्राचके फलके समान माणिक तिन, अथवा देा अथवा एक माषा होए, ताम्बू लीफलके समान जा माणिक होए, वह ओजनमे चार, तिन, दा और एक ताला हो सका है। २०७।

221 80

63

TRANSLATION.

205. Padmarágas resembling the fruit of Kroshtu (Terminalia Catappa), may weigh two, eight or twelve gunjás.

206. That *padmarága* which is plum-shaped, weighs nine, ten or twelve *máshás*,* that resembling the fruit of the Emblic Myrobalam in shape, weighs sixteen, twenty or thirty *máshás*.

207. A rudrákshya-shaped† padmarága weighs one, two or three máshás; a támbuli-shaped‡ padmarága weighs from one to four tolás.

অন্থবাদ।

শেয়াকুলের ন্থায় আকারবিশিষ্ট পদ্মরাগ ওজনে বার, আট ও হুই গুঞ্জাপরিমিত হয়।২০৫।

যাহার আকার সামান্ত কুলের ত্যায়, তাহার ভার বার, দশ ও নয় মাযা; যেগুলি দেখিতে আমলকীফলের ত্যায়, সেগুলি ওজনে ত্রিশ, কুড়িও যোল মাযা হইয়া থাকে।২০৬।

রুদ্রাক্ষফলসদৃশ পদ্মরাগের ভার তিন, হুই ও এক মাষা; তাম্থুলীফলসমানাকার পদ্মরাগ ওজনে চারি, তিন, হুই ও এক তোলাপরিমিত হয়। ২০৭।

* A particular weight of gold, = five krishnalas = $\frac{1}{16}$ th suvarna (the weight in common use is said to be about seventeen grains Troy). *Williams.*

† The berry of a kind of tree, Elmocarpus Ganitrus. ‡ The berry of a plant of the same name.



मणिमाचा।

मूचम्। विस्वीफलसमाकारो वखघड्र्रणतोलकः। चतः परं प्रमाणेन मानेन च न लभ्यते। यदि लभ्येत पुर्खेन तदा सिड्विमवाप्नुयात् २०००॥ केचिच्चाक्तराः सन्ति जात्यानां प्रतिरूपकाः। विजातयः प्रयत्नेन विद्वांस्तानुपलङ्घयेत्॥ २००० ॥ स्रे इप्रदिग्धो न च यो विद्यांसानुपलङ्घयेत्॥ २००० ॥ स्रे इप्रदिग्धो न च यो विभाति यो वा प्रमृज्यः प्रजहाति दीप्तिं। चाक्रान्तमूद्वां च तथाङ्ग्लिभ्यां यः कालिकां पार्श्वगतां विभक्ति। तं छचिमं जातिविद्योनरत्नं दूरात्त्रजेत् सूमिपतिः छलभ्यं॥ २९० ॥

तर्जमा।

जिस्का कद विस्वफलके समान होए, उस्का छोजन दश, आट, क्रय ताला हो सका है; इस्से ज्यादा वड़ा और खोजनमे भारी माणिक पायां नहि जाता, लेकिन किसि भाग्यवन्तके नसीवसे इस्मे ज्यादा खोजनका माणिक मिले, ता वह तामाम वस्तुमे सिद्धिका हासिलकर सका है। २०८।

केत्ने विजाति रत्न छजाति रत्नके समान दिलवर ज्यर्थात् मने।ज्ञ होते हैं, लेकिन पण्डित लोग इम् किसिमके रत्नको त्यागकरनेको कहते हैं। २०१।

जो माणिक चमकदार होकर प्रकाश ना पावे, और जिष्का कापड़े से साफ कर्ने से पहेकि ए सी चमक कम हो जाय, और दो चङ्गली से पकड़कर उठाने से कालापन देखलाइ देवे, ए से किसिमका माणिक छचिम चर्थाात् फरेवी और विजाति कहलाता है, उस्को सुफ़ पाने से भी एहेरना मनासिफ नहि। २१०।

223 \$

TRANSLATION.

208. That padmarága which is like a vimba,* weighs six, eight or ten tolás—this is the maximum of weight. If any man by good luck happens to obtain a heavier padmarága, he will succeed in whatever he undertakes.

209. Some vicious rubies are as beautiful as good ones; but the authorities advise us to shun them carefully.

210. That *pdmarága* which is lack-lustre, or which loses its former brightness on being rubbed by cloth, and which betrays a dark shade on its sides on being held between two fingers, is a false and vicious gem, and should never be worn even when it is selling for a song.

অন্থবাদ।

যাহার আকার বিশ্ব (তেলাকুচ) ফলের তুল্য, তাহার ভার দশ, আট ও ছয় তোলা হইয়া থাকে। ইহার অধিক রহদাকার বা গুরুভার পদ্মরাগ পাওয়া যায় না, যদি কোন পুণ্যবানের ভাগ্যে ঘটে, তবে তিনি সর্ববিষয়ে সিদ্ধি লাভ করিতে পারেন। ২০৮।

কতকগুলি বিজাতি রত্ন স্থজাতির ত্যায় মনোজ্ঞ হইয়া থাকে, কিন্তু পণ্ডিতেরা তাদৃশ রত্নকে অতিযত্নপূর্ব্বক পরি-ত্যাগ করিতে বিধি দেন। ২০৯।

যে পদ্মরাগ চাক্চিক্যশালী হইয়া প্রকাশ পায় না, যাহাকে বস্ত্রাদিদ্বারা উত্তমরূপে মার্জন করিলে পূর্ব্ব প্রভা পরিত্যাগ করে, তুইটী অঙ্গুলিদ্বারা ধারণ করিলে যাহার পাশ্বে কালিমা দৃষ্ট হয়, সেই পদ্মরাগ কৃত্রিম, বিজাতি, তাহা অতি স্থলভ হইলেও কখনই ধারণ করিবে না।২১০।

* The bright-red gourd of a plant (Momardica Monadelpha).

मगिमाचा।

मूचम्। चप्रणम्थति सन्देष्ठे ग्राणायां परिघर्षयेत् । सुजातकषमुत्वे न लिखेद्वापि परस्परं ॥ २१९ ॥ ष्टष्टोऽप्यत्यन्तगोभावान् गरिमाणं न सुच्चति । स ज्ञे द्य: ग्रुद्वजातिस्तु ज्ञे याचान्ये विजातयः ॥ २१२ ॥ कुरुविन्दं तथा वज्रं विमुच्चान्येन केनचित् । न ग्रुक्यं लेखनं कर्त्तुं पद्मरागेन्द्रनीलयोः ॥ २१३ ॥ यन्मूल्यं पद्मरागस्य सगुणस्य प्रकीर्त्ति । तावन् मूल्यं तथा ग्रुद्वे कुरुविन्दे विधीयते ॥ २१४ ॥

तर्जमा।

कोद्रप्रकारके परीचा कर्नेसेभी अगर सन्देइ दूर ना होता, शानके यन्त्रपर घिस्नेसेही फरेवी और आगल माणिकका हाल मालुम हो जायेगा, अथवा आगल माणि-कसे घिस्नेसे फरेवी माणिकका हाल मालुम हो जायेगा, अर्थात् कट जायेगा। २११।

जो माणिक थिस्नेसे औरभी उमदा हो और ओजनमे कम ना होए, बही माणिक आसल है, उस्के सेवाय सव माणिक विजातिमे खमार किये गहे हैं। २१२।

कुरुविन्द चौर चोरेके सेवाय किसि जातका रत माणि-कको कट नहि सका । २१३।

सर्व्य ग्रणसम्पन्न अर्थात् सव तारिफौसे भरा ऊथा माणि-काका जो मूल छोता है, वही किमत वे अयेव कुरुविन्ट्-कीभी होति है। २९४।

Ľ

678

TRANSLATION.

211. Should other tests fail in dispelling doubt, the reality or otherwise of a *padmarága* will be indubitably ascertained by rubbing it upon a whetstone or with a *padmarága* of tested genuineness. A false *padmarága* will receive scratches from the process.

212. That *padmarága* which shines out the more, the more it is rubbed, and which is moreover not light, is a pure gem; the others are impure.

213. Excepting *kuruvinda* and diamond, no gem can make scratches upon either the *padmarága* or the *indraníla*.

214. A genuine kuruvinda is worth as much as a padmarága furnished with every quality.

অন্থবাদ।

অন্যান্য পরীক্ষাদ্বারা সন্দেহ দূর না হইলে শাণ-যন্ত্রে ঘর্ষণ করিলেই পদ্মরাগের ক্রত্রিমাক্রত্রিমত্ব প্রকাশ পাইবে, অথবা স্থপরীক্ষিত অপর একখানি পদ্মরাগের সহিত পর-স্পর ঘর্ষণ করিবে, তাহা হইলে কৃত্রিমখানি অঞ্চিত হইবে। ২১১।

যে পদ্মরাগ অত্যন্ত ঘ্রফ্ট হ'ইলে অধিকতর শোভা পায়, এবং পরিমাণে লঘু না হয়, সেই পদ্মরাগই শুদ্ধজাতি, তদ্বৈপরীত্যে বিজাতিমধ্যে পরিগণিত হয়। ২১২।

কুরুবিন্দ এবং হীরক ভিন্ন অপর কোন জাতীয় রত্ন পদ্মরাগ ও ইন্দ্রনীলকে অস্কিত করিতে সমর্থ হয় না। ২১৩।

সর্বরগুণসম্পন্ন পদ্মরাগের যৎপরিমাণে মূল্য নির্দ্দিষ্ট হয়, বিশুদ্ধ কুরুবিন্দেরও সেই পরিমাণে মূল্য হইয়া থাকে।২১৪।

CC

225 %

मणिमाला।

मूलम्।

सगुणे कुरुविन्दे च यावन्मूल्यं प्रकीर्त्तितं । तावन् मूल्यचतुर्थां श्रचीनं स्थाद्वे खगन्धिके ॥ २१५ ॥ यावन्मूल्यं समाखातं वैद्यवर्णे च ऋरिभिः । तावन्मूल्यचतुर्थां श्रं चीयत ऋद्रजन्मनि ॥ २१६ ॥ वर्णदीप्तु प्रपन्नं चि मणिरत्नं प्रश्रस्थते । ताभ्यामीषदपि स्वष्टो मणिर्मूल्यात् प्रचीयते ॥ २१७ ॥ सन्देचो यदि जायेत कचिमे सचजेऽपि वा । जन्योन्यं घर्षये द्रत्नं कचिमं तदिभिद्यते ॥ २१८ ॥

तर्जमा।

वेत्रयेव कुरुविन्दको जेत्ना दाम छोगा, सौगन्धिकका दाम उस्से चार आना कम छोगा, अर्थात् कुरुविन्दका दाम अगर एक रोपया छोए, तो सौगन्धिकका दाम वारे आना छोगा। २१५।

वैद्यवर्षं माणिकका जो दाम घोगा, ग्रद्रवर्णं माणिकका उस्ते चार चाना कम घोगा। २१६।

सव किसिस्का जवाइेरात् कुट चौर रज़से उम्दा होता है, चौर द्रसिकि जरासि कमिसे उस्का दासभी कम हो जाता है। २१७।

च्रगर किसि रतनो समफकर सक् पयदा डोेए, तो एक साच्चा रतने घिस्ना चाडिए, तो फुठारत चुर डो जाये गा। २१८।

2.97 %

TRANSLATION.

215. A saugandhika is worth three-fourth the price of a kuruvinda.

216. A súdra *padmarága* is, according to the authorities, worth three-fourth the price of a Vaisya *padmarága*.

217. All gems derive their value from their lustre and their color; accordingly, gems which are found wanting in these two essentials are of small worth.

218. When doubts arise as to the reality of a gem, the infallible test is to rub it with another gem of tested worth. A false gem will be reduced to fragments under the process.

অহ্বাদ।

বিশুদ্ধ কুরুবিন্দের যত মূল্য হইবে, স্থগন্ধিকের মূল্য তাহার তিনের চতুর্থাংশ হইয়া থাকে। ২১৫।

পণ্ডিতেরা বৈশ্যবর্ণ পদ্মরাগের চতুর্থাংশহীন মূল্য শূদ্র-জাতি পদ্মরাগের মূল্য নির্দ্বেশ করিয়া গিয়াছেন। ২১৬।

সর্ব্বপ্রকার রত্ন দীপ্তি ও বর্ণান্মুসারে প্রাশস্ত্য লাভ করে, সেই বর্ণ ও দীপ্তি হইতে ঈষৎপরিমাণে ভ্রফ্ট হইলে তাহার মূল্যও অল্প হইবে। ২১৭।

যদি কোন রিহ্নকে কৃত্রিম বলিয়া সন্দেহ জন্মে, তবে একথানি অকৃত্রিম রত্নের সহিত ঘর্ষণ করিবে, তাহাতে কৃত্রিমথানি চূর্ণ হইয়া যাইবে।২১৮।

<u> </u>	
(S)	
5	228

Se.

मणिमाला।

मूलम्। सर्वेलचणसम्पूर्णे पद्मरागे गृहे स्थिते। त्राखमेधफलं तस्य वित्तमायुर्जेयं लभेत्॥ २९९॥

तर्जमा।

सर्वलचणाकान्त एक पद्मराग चर्थात् माणिक मकानमे रहनेसे चम्बमेधयज्ञका फल लाभ चनायास प्राप्त होता ही, चौर उस्से धन, उमरकी टाइ चौर जय लाभ होता है। २१८।

इति पद्मरागका वयान।

229 \$

TRANSLATION.

219. The treasuring up of a *padmarága* furnished with every perfection is as meritorious as the celebration of the *Aswamedha** *jajna*, and leads to wealth, success and long life.

অন্থবাদ।

সর্ববলক্ষণাক্রান্ত একখানি পদ্মরাগ গৃহে থাকিলে অশ্বমেধযজ্ঞের ফল অনায়াসে প্রাপ্ত হওয়া যায় এবং তাহাতে ধন, আয়ুর্রুদ্ধি ও জয় লাভ হয়।২১৯।

ইতি পদ্মরাগ।

* The Horse Sacrifice a celebrated ceremony, the antiquity of which reaches back to the Vedic period. *Vide* hymns 162 and 163 in the first Mandala of the Rig Veda. In later times its efficacy was to entitle the sacrificer to displace Indra from the dominion of Swarga. In it, the horse was generally, if not always, immolated.

THE RUBY.

THE RUBY.

Its Properties.

HE Ruby is perhaps the hardest substance known, next, of course, to the Diamond. It is a variety of the Corundum, which name (derived from the Sanskrit korund,) is used to denote the class of aluminous stones generally; and particularly a species or subdivision of that class. Besides the crystalline form (which is generally rough and deformed), the Corundum appears in compact masses and in aggregates of grains of different sizes. All the different varieties of the Corundum derive their names from their colour. Thus, the crimson red Corundum is called the Oriental Ruby; the colourless, white Sapphire; the azure-blue, Oriental Sapphire; the indigo blue, indigo Sapphire; the violet, Oriental Amethyst; the yellow, Oriental Topaz &c. &c. &c. Count Bournon was the first European who had classified the Corundums into different heads (in 1802.) But the Eastern nations have however adopted the different designations for several centuries past. The first and most important variety of the Corundum is the Rubythe coarsest being the Emery, which is used for polishing metals, gems, marble, &c. It is some-

231

times more valuable than the Diamond, when it is of a large size, good colour and free from defects. Its specific gravity is from 3.9 to 4.1. The electricity which it obtains by friction continues for a considerable time. This stone is composed of alumina and coloured by traces of metallic oxides, chrome, &c. Like the other varieties of the Corundum, it is infusible by itself, but together with a flux, melts with difficulty into clear glass. It is possessed of double refraction, though not to a very high degree. The system of crystallization to which it belongs is rhombohedral. Its cleavage is basal, that is, it breaks across the prisms with nearly a flat surface. Its lustre is vitreous. It loses nothing of its beauty when viewed by artificial light. Its colour varies from the lightest rose-tint to the deepest carmine. The two extreme colours are not liked at all. The most esteemed colour is, what is called by the jewellers, the "pigeon's blood," which is a pure deep rich red, without the faintest tinge of blue or yellow. The other colours are light-red, white, crimson, peach-blossom, violet, &c. The Ruby is divided into four classes.

1st.—The Oriental Ruby, called by Pliny the Indian Carbuncle, is the best favorite and most valuable of all. Its chemical properties have been described under the general heading. Theophrastus speaks of it as being incombustible and having the appearance of a burning coal when held up to the sun. Hence the name "Anthrax" (or "live coal.")

THE RUBY.

given to it by the Greeks. The ancient writers, both of the East and West, have described it as having the power of shining in the absence of all light. The fact is, that the Ruby can be rendered phosphorescent by exposing it to sunshine for sometime or by putting it in a close crucible, heated to a certain degree.

2nd.—The Spinel Ruby is of a fine lively red hue, with a cinnam on tint about it, but is very inferior to the true Ruby in brilliance. It is found in granular lime-stones; is transparent and translucent and receives its red tint from chromic acid. It belongs to the cubic system of crystallization and is almost found in octrahedral crystals. It does not acquire electricity either by friction or heat; is possessed of simple refraction and is infusible before the blow-pipe. It is distinguished from the Ruby by its peculiar formation and inferior hardness. Its specific gravity is from 3.5 to 3.8. It is called by the natives of India the Lal Rumani or the Pomegranate Ruby.

3rd.—The Balas Ruby is of a pale rose-colour and is of the same composition as the Spinel. According to the Persian tradition, the mines of these stones were not discovered until after an earthquake which rent the mountain in two. Their inferior hardness prevented people from taking them as the real Rubies. The ancient Greeks connect the origin of the name "Balas" Ruby with the word "Palatius," as they supposed it to be the matrix or

233 80

palace in which the true Ruby was found. Probably, the name is derived from the mountain "Ballaheia" in India, which, according to Marco Polo, used to supply this stone. The old French name "Rubin de Balais" adds weight to this assertion. The name Balas may have originated from the word "Ballen" or king—the Phrygian name for a certain fiery stone. Chardin attributes the origin of the name to "Balachani," the stone of "Balachan" (Pegu) —the Persian name for the Ruby. Some say that the original of the term "Balas" Ruby is the ancient name of Beloochistan, Badakschan or Balaschan.

4th.—The Rubicelle is an inferior variety of the Spinel and is of a yellowish red color.

The Rubies are often found in company with Sapphire, Zircon, oxide of tin, magnetic iron, Topaz, &c. Where Rubies and Sapphires are met with, gold is almost certain to be present.

Where found.

THE finest Oriental Rubies come from Burmah, Siam, India and Ceylon. Rubies are also found in Hohenstein on the Elbe, in the rivers Rhine and Danube; Espailly in Auvergne and Iser; in Bohemia; France, Brazil, Australia, Borneo, Sumatra, &c.

The most beautiful of these stones are those that come from Burmah. The mines are very strictly guarded and rendered difficult of access to the Europeans. They are a royal monopoly, extreme care being taken to prevent the stones getting

THE RUBY.

out of the country. The excessive fondness of the King for these stones has earned him the title, "Lord of the Rubies." Whenever any particularly large stone is found, a procession is sent with great eclat to meet it. When Pegu. the "father-land of Rubies," was annexed to the British Crown in 1852, it was thought that the English Government would be richer by its acquisition. But whether on account of the dangers in the shape of wild beasts that surround the Rubyvielding countries, or some other cause, the Government has been sadly disappointed. The inhabitants of Burmah believe that Rubies ripen in the earth, that they are at first crude and colorless, and that, as they ripen, they become yellow, green, blue and last of all, red-which is the sure sign of perfect ripening. The Burmese law prohibits the sale of Rubies in the market and makes it compulsory on the discoverer of stones of a certain weight (100 ticals) to make them over to the Government, under pain of death. To avoid this dangerous law, the finder often breaks up the large stones into small pieces; thus causing more loss to the Government than he gains. The Rubies that come out of Burmah must be either stolen ones or passed out through the agency of private individuals.

The Rubies that come from Ceylon are generally found in the beds of rivers.

Some pretty-looking Rubies have been found for many years in Badakshan, a part of Tartary.

60

Some were also found on the slopes of the Oxus, near to Shushan and Charan. The natives of these places are under the impression that Rubies always occur in pairs. If they chance to find out one, they are sure to conceal it until the other is found, failing which, they will break it in two.

Many Rubies have been found in the gold washings in Australia, but most of them are taken no notice of, being considered as Garnets. Some, however, of very good quality have found their way into the London market.

The Spinel Rubies are found in rolled pebbles in alluvial deposits and the beds of rivers in Ceylon, Ava, Mysore, Beluchistan, and other Eastern countries; in Meronity in Bohemia and in Libenburgen; in the region between Amity and Andover in North America; also in the Ovens River in Victoria and in the Pearl Rivers of New South Wales and other parts of Australia. Blue Spinels are found at Aker in Sweden; also in Forland and Straskan in Moravia; in Antwerp and Ceylon. These are translucent and generally contain three to four per cent. of iron. The Chloro-Spinels or green Spinels are found in the Ural Mountains. Black Spinels or Ceylonites, (also called Pleonaste by Haüy,) have been found in Ceylon, Bohemia, in the River Iser, in the Tyrol, at Andernach on the Rhine, in Russia and in several places in the United States, where also the brown Spinels are found in abundance. The specific gravity of the Pleonaste

235

67

THE RUBY.

is from 3.5 to 3.8. The principal thing in its composition is aluminum and about 10 per cent. of protoxide of iron. It is infusible before the blowpipe and with borax forms into an iron-colored glass. The automalite or zinc Spinel is found in Sweden. The white Spinel is found at La Riccia near Rome. Some also come from Brazil mixed with Diamonds.

The Balas Ruby has been described by Marco Polo as being chiefly found in the Balascea or Ballahia (on the upper Oxus,) where they were found below the surface soil, and from which place, he had, in the latter half of the 13th century, made a collection.

Mode of Cutting.

THE Ruby is cut by means of Diamond powder on an iron wheel or skaif, and polished on a copper one with tripolis and water. In the East, Corundum is used for cutting, but the work is not flat and sharp. The usual form of cutting is the mixed or half-brilliant, although silky and imperfect stones are often cut *en cabochon*—a cut by which the stone receives one or two convex faces, with or without facets at the base. The Asteriated Rubies, that is, those that have a six-pointed star across the crystal, formed by a silky imperfection in the gem, are also cut *en cabochon* and particular care is taken to get the centre of the star as nearly

237 80

as possible in the middle of the gem. Such stones, if possessed of good colour, fetch very high price in the market.

The Spinel is cut on an iron wheel, with Emery or Diamond powder and polished on a copper one. The form is generally the mixed-cut. The colour of this stone becomes deeper by being heated.

The Ruby, as known to the Ancients.

THE Ruby is spoken of in the book of Job and in the Proverbs, in the Bible. The breast-plate of the High Priest, which was composed of twelve stones, included the Ruby, then known as the Carbuncle. The fact of its having been well known to the ancient Greeks and Romans admits of no question whatever. The Anthrax of Theophrastus and the Indian Carbuncle of Pliny are, beyond doubt, Rubies According to Pliny, the Ethiopians used to increase the lustre of Rubies by steeping them in vinegar for 14 days. Though this process added to their splendour for the same number of months, they were afterwards rendered softer and more brittle. Ælian, an ancient natural-historian, relates how a certain widow named Heraclea, had tended a young stork and cured one of its fractured legs and how the bird, in token of its gratitude for her kindness, presented her with a Lychnis (Ruby). But the question as to why of all others the Lychnis was selected for the present, is best answered by the

0B

THE RUBY.

assertion of Philostratus, according to whom, storks were in the habit of placing these stones in their nests as amulets against serpents, and therefore as a fitting reward for the valuable services rendered by Heraclea, such a useful thing was presented to her. In an account of the statue of the Syrian Goddess (Astarte), Lucian speaks of her, as wearing on her head a gem called Lychnis (lamp-stone,) which used to light up the temple throughout the night. Epiphanius, speaking of Carbuncle, says, "when worn, it is impossible to conceal it, for notwithstanding whatsoever clothes it may be covered over with, its lustre shows itself outside its envelope, whence it is called Carbuncle." The Oriental nations speak of Rubies and other precious stones as illuminating the place in which they were kept.* In China, Rubies have been used from the earlist times for ornamenting the slippers of women, and in India, for being set into cups, vases, sword-handles or pipe-mounts and other ornamental things.

Engravings.

ANCIENT intaglios and cameos,[†] engraved on this stone, are still in existence, some of which are said

+ Intaglios have the design sunk below the surface, in cameos, the subjects are in relief, or raised above the surface. Both these kinds of engraving can be executed on almost all sorts of stones.

^{*} There is a belief existing in India that Rubies grow in the head of serpents and that they can be obtained by throwing a lump of cowdung over them, when the serpents occasionally take them out of their heads to illumine the place where they search for food, and in order that flies and insects might gather round them, attracted by the light. It is popularly believed that these stones are so valuable, owing to their rarity, as, to be called "the wealth of seven kings."

239 20

to have been done, 500 years B. C.,-a period when the Greeks had attained the acme of artistic excellence. A large oval slightly convex stone, of the real pigeon's-blood colour, in the Devonshire parure, has a "Venus Victrix" engraved upon it. There also exists a full-length figure of Osiris in half-relief. Then there are a gorgon's head and a head of Pertinax, engraved on Spinels; and the head of a Bacchanite, upon a Balas. The earliest example of an engraving executed in the Middle Ages, has been discovered in the Spinel of the Marlborough cabinet. It is a beautiful stone, 3 of an inch square, upon which is engraved a head in front face, wearing a crown, resembling very much that of Henry VI, as found upon his great seal. The Italians have left many engravings on the Ruby, amongst which may be mentioned an intaglio, of a head of Thetis, capped with a crab's shell, at present in the possession of the Rothschilds; and a cameo of a head of Serapis in front face, found in the Hope cabinet of precious stones. Amongst the collection of cameos of our Most Gracious Majesty, is one having the head of Louis XII, engraved upon a fine stone of considerable size,-a specimen of the art after the Revival. Dominico dei Camei engraved upon a Balas of the size of a shilling, the intaglio portrait of Ludovico il Moro. The Orleans cabinet had a Ruby engraved with an intaglio head of Henry IV, with the date 1598. Chardin who, in 1666, examined a Ruby, amongst the

S 240

THE RUBY.

Crown jewels of Persia, describe it as being as big as a hen's egg cut in half. The upper part of this stone bore the name "Chaic Sophy," cut upon it by its former master who had considerably marred its beauty by so doing. Pistrucci executed a beautiful front face of Diana on a Ruby, about $\frac{1}{2}$ inch long.

The Price of the Ruby; its Flaws and Defects; Mode of Testing.

THE jealous care with which the best Oriental Rubies are kept by the King of Burmah, renders them difficult of access to the public and makes them sometimes more valuable than the Diamonds. The ancients put a very high price upon the Rubies. In the present day, fine Rubies under $\frac{1}{2}$ a carat, if English cut, cost from £ 4 to £ 10; if Indian cut, from £ 1 to £ 4.

A Ruby of o	ne carat is	worth from	£	14	to	£	20	
Ditto 1	$\frac{1}{2}$ ditto	ditto	,,	25	to	37	35	
Ditto 2	ditto	ditto	,,,	70 1	to	,,	80	
Ditto 3	ditto	ditto		200 1	to	37	250	
Ditto 4	ditto	ditto	,,	400 1	to	,,	450	

Stones of greater weight than 4 carats, being rarities, fetch fancy price.

Rubies with flaws and specks, or having any silky or milky appearance, either on the table or beneath it or which are too deep or too pale in colour, are now much depreciated in value. A pale Ruby of 4 carats might be worth less than \pounds 12. It is true

241 80

that there are many Rubies in the market but these are of inferior quality and cannot command the same value as the true Oriental Rubies that come from Burmah and Siam.

The value of the Spinel and Balas Rubies varies chiefly according to the demand, character and cut of the stones, and sometimes, to caprice and fashion. At the present time the value of small Spinels ranges from 5 to $\pounds 10$ per carat.

Medium size of fair color, 20 to £ 40 per carat Large ,, ,, 60 ,, £100 ,,

As an instance of the uncertainty of the value of the Spinels, a stone weighing 40 carats, clear and of good quality, was sold in 1856 for £400; in 1862, it fetched £80 by public auction, and was lately sold for £240.

So is the case with Balas Rubies; for example, a dark rose-red Balas of 10 millimetres, square-cut and polished as a brilliant will fetch 300 francs; while a pale rose of like character and size will sell for 20 francs only. A specimen of 5 carats will occasionally realize £50. At the sale of the Marquis of Drée, a Ruby of 10 grains sold for £56.

In order that the pivots of watches may turn with greater precision, they are set in small Rubies perforated for the purpose; but these small jewels, about the size of millet grains, though very useful, are not of much value, owing to their abundance.

To test a perfect Ruby, it has to be placed on the same sheet of paper on which the fresh blood of a

EE

Color

THE RUBY.

pigeon has been dropped. The perfection of the stone can then be ascertained if it exactly agrees with the blood in color. The Spinels or Balas Rubies have often been passed off as true Rubies : but with any one acquainted with the physical and chemical properties of these stones, the deception would not succeed. The hardness and specific gravity of the true Ruby is much greater than those of the others. An unset stone can easily be tested by taking its specific gravity; a set one would, if a true Ruby, be scratched by Diamond only but would scratch all other stones ; if a Balas or Spinel, it would be scratched by a Sapphire. Then the refraction would point out the nature of the stone. In the case of the true Ruby, it would be double (though in a small degree,) but in that of the Spinel or Balas, it would be absolutely simple. The Brazilian pink Topaz is often made to imitate the Ruby by placing it in a crucible with sand and heated till it gets the requisite color. But it differs essentially from the real Ruby in its character. Its specific gravity is from 3.4 to 3.6, whereas that of the Ruby is from 3.9 to 4.1. It is 8 in the scale of hardness, while the Ruby is 9, i. e., next to Diamond, which has the full standard number 10.

The Garnet is sometimes made to pass for the true Ruby. The Garnet, however, pure and brilliant, will appear black and opaque, if held so as to reflect the light directly; while the Ruby would

243 80

C.

0)0

retain its transparency and true color. Sometimes Garnets backed up by Ruby foils have been mistaken for Rubies. The Parisian traders have recently hit upon a plan by which they can, without the use of foils, give to pale valueless Rubies the best color they should have. They fill up the inside of the setting with Ruby-enamel, which gives a deep tinge to the entire stone enclosed within. The Rubies are also imitated in paste. which can only be detected by touching them with the emery-stone (cote). The artificial gems will appear softer and brittle, inferior in weight and, in some cases, showing silvery air bubbles in the interior. The Rubies are sometimes infected with white spots but these are removed by burning.*

The Spinel is also mistaken occasionally for the Garnet and more frequently for the Jacinth owing to similarity of color. But both these stones are of inferior hardness : while the Spinel would scratch quartz readily, these would, but *slightly*. Then, the Jacinth has double refractive power in a very high degree, whereas the Spinel has simple refraction.

The Marvellous and Medicinal Powers attributed to the Ruby.

EACH precious stone was supposed to have been gifted with special powers. The pharmacopæa of

* The Indian jewellers, however, in spite of great care and labor, have not yet succeeded in entirely removing these spots from the stones.

THE RUBY.

the ancients had, among its most potent remedies. a very costly compound called the "Five Precious Fragments" which consisted of powdered Rubies, Topazes, Emeralds, Sapphires, and Hyacinths. But as the patients were not likely, nor were they competent, to analyze the chemical properties of the mixture, it generally happened that the physicians used to pocket the real gems, by substituting false ones in their place. The Oriental Ruby, or the Carbuncle of the ancients, whether used externally or internally, was an antidote to poison and plague; it drove away sadness, evil thoughts, wicked spirits, night-mares and diverted the mind from sensuality. It was also used as an amulet against all illness. It would warn the wearer of the approach of any misfortune, by a change of color to blackness and would not resume its original brightness until the peril had passed away. To confirm the above, we can not resist the temptation of reproducing here the following apparently authentic story related by Wolfgang Gabelchover, a German philosopher, as quoted by Tollius: "It is worthy of notice that the true Oriental Ruby presages to the wearer by the frequent change and darkening of its color that some inevitable loss or misfortune is not far off: and in proportion to the greatness of the coming evil, so doth it assume a greater or less degree of darkness and opacity-a thing which I have heard repeatedly from people of the highest eminence and have, alas! experienced in my own person.

245 8

For. on December 5th, 1600, as I was travelling from Stutgard to Cal-wam in company with my beloved wife Catherine Adelmann, of pious memory, I observed most distinctly during the journey that a very fine Ruby, her gift, which I wore set in a ring upon my finger, had lost, once or twice. almost all its splendid color and had put on dullness in place of brilliancy and darkness in place of light: the which blackness and opacity lasted not for one or two days only, but several : so that being beyond measure disgusted thereat, I took the ring off my finger and locked it up in my trunk. Whereupon I repeatedly warned my wife that some grievous mishap was impending over either her or myself, as I foreboded from the change of color in my Ruby. Nor was I wrong in my anticipation, inasmuch as within a few days she was taken with a fatal sickness that never left her till her death. And truly after her decease, its former brilliant color again returned spontaneously to my Ruby."

Celebrated Rubies.

TAVENIER speaks of a Ruby seen in the possession of the King of Visapore, India, weighing 50 carats and of very fine quality. The best Oriental Rubies, as we have said before, are rare in the market, being monopolized by the King of Burmah, who is reported to be the owner of a Ruby, of an extraordinary quality and of the size of a pigeon's egg.

(P)

THE RUBY.

But no Europeans have hitherto been allowed to have a look at it. The king of Ada has a perfect Ruby of the size of a small hen's egg, which he uses as an ear-drop. One of the largest Rubies in the Crown jewels of France, adorns the Order of the Golden Fleece and is cut into the form of a dragon with extended wings. There was a remarkable Oriental Ruby of the size of a pigeon's egg, in the Crown of the Empress Catherine of Russia. known to have been presented to her by Gustavus III of Sweden, when on a visit to St. Petersburg, in 1777. There was one in Paris, seen by Fartiére, which weighed 4061 carats. There are several Rubies of good size and quality among the Crown jewels of Austria. It is related by Gesner that Catherine of Arragon used to wear a ring set with a stone which became luminous at night and which was therefore conjectured to be a Ruby. Two remarkable genuine Rubies were sent to England from Burmah in 1875. The sale of these two stones caused great excitement at Burmah and the fact of two stones of such extraordinary quality appearing simultaneously created not a little sensation in England. One was a dark-colored stone, cushion-shaped and weighing 37 carats, and the other, a blunt drop shape of 47¹/₁₆ carats. Both were put in the hands of Mr. James N. Forster of London for recutting. The former was reduced to 32_{16}^{5} and the latter to 39_{16}^{9} carats. Both of these have found purchasers in the Continent, the smaller

247 \$

fetching over a lac of Rupees. The largest Ruby seen in India by Garcias did not exceed 24 carats; it was bought by a prince in the Deccan for 156tb. weight of gold.

Rudolf II possessed a Ruby as big as a small hen's egg, bequeathed to him by his sister, the Queen Dowager of France; it was about 100 carats in weight and was reported to have been originally valued at 66,000 ducats. But modern mineralogists have pronounced this to be a Spinel.

In the front of the Crown of our Most Gracious Majesty is the famous Ruby (now pronounced to be a Spinel) said to have been given to Edward the Black Prince by Don Pedro (King of Castile,) after the battle of Najera (near Vittoria,) in 1367. It was afterwards worn upon his helmet by Henry V, at the battle of Agincourt, 1415. It is an irregular oval, pierced through the middle, according to the usual oriental fashion; the upper part of the perforation being concealed by a small Ruby. Two large Spinels taken from India in 1861 were shown in the Exhibition of 1862. The one that was exhibited by Messrs. Hunt and Roskell, was a cabochon-cut, octagon-shaped stone, of perfect color and free from flaws. It originally weighed 197 carats and after being cut by Mr. Forster, 81 carats. The other Spinel was also of the same shape and color, originally weighing $102\frac{1}{4}$ carats, and after being recut, 72¹/₂ carats. One Spinel collected by Dr. Heron, is said to be 49th; being in 3 pieces

THE RUBY.

and containing cavities filled up by crystals of Corundum. In the list of the French Crown jewels taken in 1791, we find, amongst others, one Spinel Ruby of $56\frac{3}{4}$ carats, worth 50,000 francs. A specimen of a blue Spinel, a thick oblong stone, was in the possession of Messrs. Pittar Leverson & Co. It was an Indian-cut stone, weighing 377 carats and after being recut (by Mr. Forster,) 25 carats. It was originally sent from India as a Sapphire and having been afterwards found out to be a Spinel, the purchaser returned it to the merchant, who at once wrote to the consigner in India. The statement not being believed, the merchant had it cut and upon its identity as a Spinel being established, sold it for a much higher sum than it had fetched as a Sapphire. Tavernier tells us that he counted on the Great Mogul's throne, 180 large Rubies varying in weight from 100 to 200 carats and one single gem that weighed 21 ounces. These were, however, Balas Rubies. In the catalogue of the French Crown Jewels, of 1791, mention is made of two Balas Rubies, one of which, weighing 203 carats, was valued at 10,000 francs and the other, weighing $12\frac{3}{8}$, at 3,000 francs.

Charles the Duke of Burgundy, had lost several valuable stones at Granson. Among these were 3 Rubies called the "three brothers" and two called "La Hotte et la Balle de Flandres." James I, in sending some jewels to his son, mentions the "three brethren." The similarity of the name

249 8

leads many to identify these as the Rubies once belonging to the Duke.

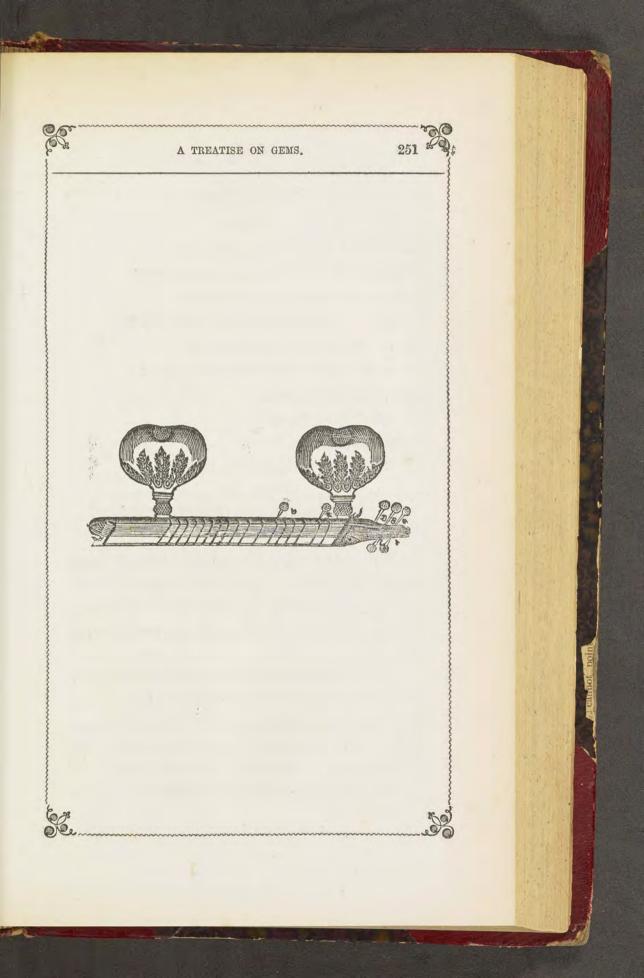
Sir James Melville, in his Historic Memoirs, says that Queen Elizabeth showed him "a fair ruby, great, like a racket ball." Runjeet Sing is said to have owned a large Ruby weighing 14 tollahs, with the names of Aurungzebe, Ahmed Shah and several other kings engraved upon it. Robert de Berquem mentions that when Josephus Barbaro had (in 1472) an audience with Yussum Cassam, the king of Persia, (at whose Court he was an ambassador for the Venetian Republic,) he was shown a hand-kerchief, filled with the most valuable of precious stones. Amongst these was a table cut Balas Ruby, of, at least, a finger's breadth, of the most beautiful colour and weighing 21 ounces. De Berquem also speaks of 3 great Rubies, belonging to a Parisian of great rank. The one had once been set in a gold crown covered with gems. with which Pope Stephen V, (who came to France in 817) crowned the King of France, Louis le Debonnaire, as Emperor. This Ruby was in the shape of a Lozenge and weighed 1291 carats. The other was egg-shaped and weighed 2443 carats. It was given to Charles, Duke of Anjou, by the Neapolitans, in 1264. The third, weighing 209 carats, had belonged to Anne, Duchess of Brittany who married Charles VIII in 1491. How these monster stones came into the hands of the Parisian nobleman and what became of them subse-

FF

THE RUBY.

quently are not known to us. It is said that when Peter the Great left England, he presented the King with a "rough Ruby, which the greatest Jewellers of Amsterdam (as well Jews as Christians) valued at $\pounds 2,000$ sterling."

Some very good Rubies are to be found in India. A fine Oriental Ruby was recently bought of a Burmese merchant (at 22,000 Rupees), by Sir Salar Jung, on one occasion of his visit to Calcutta. The estate of the Paikpara Raj family (in the suburbs of Calcutta) has in its possession a large Ruby, set in a ring, and free from flaws. Another Ruby of a good size, also set in a ring is to be seen with Rai Luchmeeput Sing Bahadoor of Azimgunj. Babu Hurruck Chand of Moorshedabad has with him a Ruby of the true "pigeon's blood" color. A large Ruby is to be seen in the estate of the Hon'ble Maharajah Joteendro Mohun Tagore Bahadoor, set in a ring and having some Chinese letters, forming the name of God engraved on its back. There is also one large Ruby of the size of a pigeon's egg lengthwise cut in half, set in one of his watch-chains. It weighed about 500 Ratis in its rough state, and has, upon being cut, been reduced to about 300 Ratis. There is also one beautiful Ruby of about 93 Ratis, set in another watch chain of the Maharajah's.



252 अविदूरे गिरे: कस्य तयेवोसाज़देशत: । अधित्यकाप्रदेशे च वैदूर्य्यस्वाकरो भवेत् ॥ २२० ॥ पद्मरागसुपादाय मणिवर्णा हि ये चितौ। सर्व्वांस्तान् वर्णशोभाभिवें दूर्य्यमनुगच्छति ॥ २२१ ॥ सितच धूमसङ्गाशमीपत्क णालिपसावेत्। वेंद्रयं नाम तद्रल' रलविझिकदाच्चत' । २२२ ॥ तेषां प्रधानं ग्रितिकण्डनीलं यदा भवे देणुदलप्रकार्श । चासाग्रपचप्रतिमश्रियो ये न ते प्रश्रसा मणिशास्त्रविङ्गिः । २२३ ॥ वैद्रय्यं ऋर्यात् लग्जुनियेका वयान । किसि किसि पाइाडके करीवकी जमीनमे, वीचके हिस्सेमे और चोटौपर लग्ग्निया पाया जाता है। २२०। पद्मराग वगैरह जहेरातमे जिस् तरहका रङ्ग देख्लाइ देता है, वही सव रङ्ग वेंदूयंत्र अर्थात् लग्गुनियामेभी होता 185613 उसके सेवाय सफेद रङ्ग, वेंग्रणी रङ्ग और थोडा सेयाद, यही तिन रङ्ग लग्ग्नियामे देख जाते है। २२२। रतपारची पण्डितलोक कहते हैं, के जित्ने किसिमका लगुनिया है, उस्मेसे जो रज़ मोरेके गले और वांग्रके पत्तके समान है, वही प्रधान है। और जिस्का रङ्ग नीलकण्टपचीके परके समान डे, वह आच्छा नहिं। २२३।

मगिमाचा।

म्रय वैद्रर्यम् ।

मूचम्।

तरजमा।

253 \$

THE CAT'S-EYE. TRANSLATION.

220. CAT'S-EYE quarries are found at the top, or the mid region of certain mountains, as well as in their vicinity.

221—222. All those colors that shine in the *padmarága* and other gems of a like nature, are also seen in the Cat's-eye. Besides these, we find white, smoke-colored and gray cat's-eyes.

223. Of Cat's-eyes, those which in color resemble the peacock's neck or the bamboo leaf are first-class, while those resembling the wing of the *nilakantha** bird are of small worth.

रेवमूर्या ।

অহুবাদ।

কোন কোন পর্ব্বতের সন্নিহিত প্রদেশ, মধ্যভাগ ও অধিত্যকা প্রদেশে বৈদূর্য্যের আকর লক্ষিত হয়।২২০।

পদ্মরাগপ্রভৃতি রত্নসমূহে যে সকল বর্ণ দৃষ্ট হয়, সেই সকল বর্ণ ই বৈদূর্য্যমণির অনুগামী; তদ্তিন শুরু, ধূমল ও ঈষৎ রুষ্ণবর্ণবিশিষ্ট বৈদূর্য্য দেখা যায়। ২২১। ২২২।

মণিশাস্ত্রবিৎ পণ্ডিতেরা কহেন, যতপ্রকার বৈদূর্য্য আছে, তন্মধ্যে যে গুলির বর্ণ ময়ুরের কণ্ঠ অথবা বংশ-পত্রের সদৃশ, সেইগুলি প্রধান, এবং যাহাদের বর্ণ, নীল-কণ্ঠ পক্ষীর পক্ষের তুল্য, তাহারা প্রশস্ত নহে। ২২৩।

* A species of gallinule or water-hen. (?)



मणिमाचा।

मूचम्।

वद्धचत्त्रियविट् ग्रूट्रजातिमेदाचतुर्व्विधं। सुलचणं भवेद्रतं वैद्रयं नाम भूमित: ॥ २२४ ॥ सितानीलो भवेदिप्रः सितारत्तखु बाज्जजः। पोतानीलखु वैद्धः खाद्गील एव हि ग्रूट्रकः ॥ २२५ ॥ एकं वेणुपलाभकोमलक्चा मायूरकण्डत्विषा मार्ज्जारेचणपिङ्गलच्छविजुषा च्चेयं चिधा च्छायया। यद्गाच ग्रुक्तां दधाति नितरां सिग्धन्तु दोषोषितं वैद्रर्थ्यं विग्रदं वदन्ति सुधियः खच्छ्च तच्छोभनं ॥ २२६ ॥

तर्जमा।

जिस्तरइसे मनुष्यके वाह्मण, चन्नि, वैश्व और उद्र चार जात होते हैं, उसी तरहसे लगुनियामें भी चार जात है। और यही चार जात सुलचणाकान्त लगुनिया जमी-नसे पयदा होता है। २२४।

योडा नीचापनचियेड्ये सफेद रङ्ग च शुनिया बाह्मण जात है, योडा सुखीमायेच सफेद रङ्ग च शुनिया च त्ति जात है, योडा नीचापनजरदिमायेच च शुनिया वैश्व जात है श्रोर नीचरड्ग च शुनिया श्रद्र जात है। २२५ ।

वांशका नया पत्ता, मोरका गला, विञ्चीकी आंख, इच्ची तिन चीजेंकि समान लशुनियाकी काया देखि जाति है, और जो लशुनिया आजनमे भारी, और वक्तत् सिग्ध, वेअयेव, निर्म्यल और खच्छ हो, पण्डित लोक उस्को अति शुभलचण कहते हैं। २२६।

255 %

TRANSLATION.

224. The earth produces all the four castes of Cat's-eye redolent of lucky signs.

225. A white Cat's-eye furnished with a blue gleam (say the authorities), is a Brahmin, a white Cat's-eye with a gleam of red, is a Khetriya, a yellow Cat's eye with a blue lustre, is a Vaisya, and a purely blue Cat's-eye is a Sudra.

226. Cát's-eyes possess a shade like the color of a fresh bamboo leaf, peacock's neck, or a cat's eye. Those Cat's-eyes that are heavy, deliciously cool, flawless, smooth and otherwise faultless, the authorities consider to be very lucky.

অহুবাদ।

ব্রাহ্মণ, ক্ষল্রিয়, বৈশ্য ও শুদ্র এই জাতিচতুষ্টয়ভেদে চতুর্বিধ স্থলক্ষণাক্রান্ত বৈদূর্য্য-মণি ভূমি হইতে জন্মিয়া থাকে। ২২৪।

ঈষৎ নীলের আভাযুক্ত শুরুবর্ণ বৈদূর্য্য ব্রাহ্মণজাতি, ঈষৎ লোহিতের আভাযুক্ত শুরুবর্ণ বৈদূর্য্য ক্ষত্রিয়জাতি, ঈষৎ নীলের আভাযুক্ত পীতবর্ণ বৈদূর্য্য বৈশ্যজাতি ও বিশুদ্ধ নীলবর্ণ বৈদূর্য্য শুদ্রজাতি বলিয়া কথিত হয়। ২২৫।

বংশের নৃতন পত্র, ময়ূরকণ্ঠ ও মার্জারের চক্ষু এই তিন বস্তুর ত্যায় ছায়া বৈদূর্য্যে দৃষ্ট হয়, এবং যে সকল বৈদূর্য্য ওজনে ভারী, অত্যন্ত স্নিগ্ধ, দোষবর্জ্জিত, নির্শ্মল ও স্বচ্ছ, পণ্ডিতেরা তাহাদিগকে অতি শুভ-লক্ষণ-যুক্ত কহেন। ২২৬।

मूलम् । ष्टष्टं यदात्मना खच्च्हं खच्च्छायां निकषाभानि । स्फुटं प्रदर्भयेदेतहैंदूर्य्यं जात्यमुच्चते ॥ २२७ ॥

त्रय वैदूर्य्य गुणा: ।

मार्ज्जारनयनप्रख़ां रसोनप्रतिमं हि वा । कलिलं निर्मालं व्यङ्गं वैदूर्यां देवभूषणं ॥ २२८ ॥ स्तारं घनमत्यच्छं कलिलं व्यङ्गमेव च । वैदूर्याणां समाखाता एते पञ्च महायुणाः ॥ २२८ ॥ उद्गिरन्निव दीप्तिं यत् सुतारमिति गद्यते । प्रमाणताखं गुरु यत् घनमित्यभिधीयते ॥ २३० ॥

तर्जमा।

कसौटीपर घिस्नेसे जिस् जगुनियेकी खच्छता चौर साफाइ जग्रादातर चोति जाय, वच्ची लगुनिया चायल चै। २२७।

लगुनियेका गुगा।

विक्वीकी चांख चौर लहपुनके समान, कलिल, निर्माल चौर व्यङ्ग लगुनिया देवताचेंाके लायेक हैं। २२८ ।

मुतारः घन, अत्यच्छ, कलिल और व्यङ्ग, यची पांच किसिमका लगुनिया बज्जत् ग्रुणसम्पन्न चै।२२८।

जिस् लग्रुनियामें आमा निक्ले, उसे सुतार कहते हैं, जो कट्मे क्रोटा, लेकिन खोजनमे मारी, उस्को घन कहते हैं। २३०।

TRANSLATION.

257 %

227. That Cat's-eye which on being rubbed over the touch-stone attains additional lustre and smoothness, is sterling and excellent.

Qualities of the Cat's-eye.

228. That *kalila* or *byanga* Cat's-eye which is like a veritable cat's-eye, or a garlic, and which is perfectly smooth, is a gem worthy of the acceptance of the gods themselves.

229. Sutára, ghana, atyachchha, kalila and byanga are the five best kinds of the Cat's-eye.

230. The Cat's-eye which sparkles beautifully, is called *sutára*; that which combines small bulk with heaviness, is called *ghana*.

অন্থবাদ।

কষপাষাণে ঘ্লফ্ট হইলেও যে বৈদূর্য্যের স্বচ্ছতা ও ছায়া অধিকতর উজ্জ্বলভাবে প্রকাশ পায়, সেই বৈদূর্য্যই উৎকৃষ্ট বলিয়া প্রসিদ্ধ ও অক্নত্রিম। ২২৭।

दिषपूर्यग्रत छन।

মার্জার-নয়ন বা রসোনের প্রতিরূপ, কলিল, স্বচ্ছ ও ব্যঙ্গ বৈদূর্য্য দেবভোগ্য। ২২৮।

স্থতার, ঘন, অত্যচ্ছ, কলিল ওব্যঙ্গ এই পঞ্চবিধ বৈদূর্য্য মহাগুণসম্পন্ন। ২২৯।

যে বৈদূর্য্য হইতে দীপ্তি উদ্গীর্ণ হয়, তাহাকে স্থতার কহে, যাহা প্রমাণে অল্প, কিন্তু ওজনে গুরু, তাহা ঘন নামে বিখ্যাত। ২০০।

GG

मणिमाचा।

20

मूलम्।

कलङ्कादिविचीनं तदत्यच्छमिति कीर्त्ति । ब्रह्मसूचकलाकारखञ्चलो यच दृश्यते ॥ २३१ ॥ कलिलं नाम तद्रलं सब्बेसन्यत्तिकारकं । विस्तिष्ठाङ्गन्तु वैद्वर्थ्यं व्यङ्गमित्यभिधीयते ॥ २३२ ॥

ग्रय वैदूर्य्यदोषा।

शकेरं कक्करं चासः कलको देच्च द्रत्यपि । एते पच्च महादोषाः वैद्रयाणामुदीरिताः ॥ २३३ ॥ शक्करायकमिव यत्पृतिसाति च शक्करं । स्पर्शे खरं यत् तज्ज्ञे यं कर्क्करं वन्धुनाशनं ॥ २३४ ॥

तर्जमा।

कलङ्क चाद चयेवेांसे खाली लग्नुनियेको चत्यच्छ कडते हैं, जिस् लग्नुनियासे चन्द्रकलाके ऐसा चच्चल सूत देखलाइ दे, उस्को कलिल कहते हैं, कलिल लग्नु-निया सब सम्पत्का कारण हैं। २३९।

जिस् लग्नुनियेका चाधा चज़ः काटा मालुम चो, उस्को व्यज़ कइते हैं। २३२।

लसुनेका उग्रयेव।

कर्कर, शर्कर, चास, कलङ्क और देह लशुनियामे यही पांच किसिमका अयेव है। २२३।

जो छनेमे खुरधारा, उसे कर्कर कहते हैं, कर्कर लगुनिया भाद्रचोंको नाग करता है, चौर दुधिया लगुनियाको ग्रर्कर कहते हैं। २३४।

259 80

TRANSLATION.

231. That Cat's-eye which is free from such defects as kalanka etc., is called *atyachchha*; that which shows a lustre resembling the Brahminical thread and aye twinkling like the moonbeam, goes by the name of *kalila*. This is the veritable cornucopia.

232. That which manifests a variety of parts and sides, is entitled by anga.

Defects of the Cat's-eye.

233. Karkara, sarkara, trása, kalanka and deha are the five defects belonging to this class of gems.

234. A Cat's-eye which is hard to the touch, is called *karkara*; and that which contains grits, is called *sarkara*. A *karkara* Cat's-eye brings about loss of friends.

অহুবাদ।

কলঙ্কাদিদোষবিহীন বৈদুর্য্যকে অত্যচ্ছ বলে। এবং যাহাতে চন্দ্রকলার ত্যায় চঞ্চল ভ্রহ্মদূত্র লক্ষিত হয়, তাহাকে কলিল বলা যায়, কলিল বৈদূর্য্য সর্ববসম্পত্তির নিদান। ২৩১।

যাহার অঙ্গ বিশ্লিষ্ট, অর্থাৎ অঙ্গ প্রত্যঙ্গ পৃথক্ বলিয়া বোধ হয়, তাহার নাম ব্যঙ্গ। ২৩২।

देवमूर्यग्रंत मांय।

কর্কর, শর্কর, ত্রাস, কলঙ্ক ও দেহ, বৈদূর্য্য মণিতে এই পঞ্চপ্রকার দোষের বিদ্যমানতা দেখা যায়। ২৩৩।

যাহার স্পর্শ অতি কঠিন, তাহার নাম কর্কর, এবং শর্করাযুক্ত বৈদূর্য্যকে শর্কর কহে, কর্কর বৈদূর্য্যে বন্ধুবিনাশ করে। ২৩৪।

मगिमाला।

मूचम्। भिन्नम्त्रान्तिकरस्त्रासः स कुर्यात् कुलर्सच्च्यं। विरुद्धवर्षों यस्याक्वे कलर्क्षः चयकारकः । मलदिग्ध दवाभाति देच्चे देच्चविनाप्रनः ॥ २३५ ॥ गिरिकाचः प्रिप्रुपालः काचः स्फ्रटिकञ्च अूमिनिभिन्नाः । वैटूर्य्यमणेरेते विजातयः सन्निभाः सन्ति ॥ २३६ ॥ लिख्याभावात्लाचं लघुभावाच्छि प्रुपालकं विद्यात् । गिरिकाचमदीप्तत्वात् स्फ्रटिकं वर्णोज्जुलनेन ॥ २३७ ॥

तर्जमा।

जिस् निणानके जरिये से लणुनिया टुटा मालुम हो, उस्को चाम कहते हैं, चास खयेवका लण्गुनिया कुलका नाण करनेवाला है, खौर जिस् लणुनियेके मध्ये दुस्रा रज़ खेलाप मालुम हो, उस्को कलज्ज कहते हैं, कलज्ज खयेवका लणुनिया चाट्मीका नाण करनेवाला है, चौर जिस्को मध्ये मयला मालुम हो, उस्को देह कहते हैं, देह खयेवका लण्गुनिया चाट्मीका णरीर नष्ट करता है। २३५।

गिरिकाच, शिशुपाल, कांच और स्फटिक इच्चो चोजेंके दारा कुठा लशुनिया वानाता है। २३६।

हीरेकेसेवाय और चीजके जरियेसे जो ना कटे, वह काच, हाल्का होनेसे शिशुपाल ही, दीप्ति ना रहनेसे गिरिकाच और ज्यादा उज्ज्वल होनेंसे स्फ्राटिक समम्भूना चाहिये । २३७ ।

K

TRANSLATION.

235. That mark in a Cat's-eye which looks like a break, is a $tr \dot{a}sa$. It destroys family dignity. That which shows conflicting colors, is called *kalanka*. Such a gem is destructive. A *deha* Cat's-eye bears dirt within it. This gem wastes the body.

236. Girikácha, Sisupála, glass and crystal are made use of in fabricating false Cat's-eyes.

237. A false Cat's-eye, if it is made of glass, is detected by being scratched by the diamond alone; if it is made of *sisupála* by its lightness; if of *girikácha*, by its want of lustre, and finally if of crystal, by its excessive gloss.

অহুবাদ।

যে চিহ্নদারা বৈদূর্য্যকে ভগ্ন বলিয়া বোধ হয়, তাহাকে ত্রাস কহে, ত্রাসযুক্ত বৈদূর্য্য কুলক্ষয়-কারক। যাহার মধ্যে বিরুদ্ধ বর্ণ লক্ষিত হয়, তাহাকে কলঙ্ক বলে, কলঙ্কদোষ মন্থ্যের ক্ষয়কারক, এবং যাহার মধ্যে মলা থাকে, তাহাকে দেহ কহে, দেহে দেহক্ষয় করে। ২৩৫।

গিরিকাচ, শিশুপাল, কাচ ও স্ফটিক এই সকল পদার্থ দ্বারা কৃত্রিম বৈদূর্য্য মণি প্রস্তুত হইয়া থাকে। ২৩৬।

হীরক ভিন্ন অন্থ কোন বস্তুদ্বারা অস্কিত না হওয়াতে কাচ, লঘুতা দ্বারা শিশুপাল, অদীপ্তিহেতু গিরিকাচ ও অধিকতর উজ্জ্বল বর্ণ দ্বারা স্ফটিক প্রকাশিত হইয়া পড়ে। ২৩৭।

261

मणिमाचा।

मूलम्। जात्यस्य मर्वस्य मणेखु यादक् विजातयः सन्ति समानवर्णाः । तथापि नानाकरणानुमेय-भेदप्रकारः परमः प्रदिष्टः ॥ २३८ ॥ सुखोपलच्यच सदा विचार्थ्यो द्वायं प्रभेदो विदुघा नरेण । स्तेच्प्रभेदो विदुघा नरेण । स्तेच्प्रभेदो लघुता च्तुत्वं विजातिलिङ्गं खलु सार्व्वजन्यं ॥ २३८ ॥ कुश्रलाः कुश्रलैः प्रयुज्यमानाः प्रतिवद्धाः प्रतिसत्क्रियाप्रयोगैः । युणदोषममुद्भवं लभन्ते मण्योऽर्थान्तरमूल्यमेव भिन्नाः ॥ २८० ॥

तर्जमा।

भुठा जवाहेर अगर वेरङ्ग और कदमं साच्चेके समान हो, लेकिन तरह तरहके परीचाके दारा उस्का हाल आ सल माल्म हो सका है। २३००।

रत्नपारची पण्डित स्रोइप्रभेद, लघुता, कोमलता इच्ची सव विजातिनिशानवे जरियेसे खनायास खजात मणिका विचार कर सक्ते हैं। २३८।

सोणेमे जड़नेसे दस्तकारीके अयेवसे वडिया रतमी खाराप है, और ओस्ताद कारिगरके हातका जड़ाऊया

वज्जत् कम कदर रत्नभी उम्दगीको पाता है । २४० ।

263 20

TRANSLATION.

238. Even when a false gem resembles in color a real one to a degree, still there are characteristic differences between the two, which legibly mark out the one from the other.

239. Persons well versed in the science can easily distinguish a mendacious jewel from a genuine one, by its lightness, softness, gloss etc.

240. Much depends upon the art with which a gem is set on gold or any other precious metal, indeed so much that a gem of really superior order may be shorn of half its lustre by the vicious skill of the goldsmith, while another of far less worth may gain in brilliancy from the skill with which it is set.

অন্থবাদ।

সর্ব্বপ্রকার বিজাতি মণি স্থজাত মণির সমান বর্ণ-বিশিষ্ট হইলেও নানাপ্রকারে তাহাদের পরস্পর ভেদ প্রমাণী-কৃত হইতে পারে। ২৩৮।

রত্নতত্ত্বজ্ঞ পণ্ডিতেরা স্নেহপ্রভেদ, লঘুতা, কোমলতা প্রভৃতি বিজাতি চিহ্ন্দারা অনায়াসে স্কজাত মণির বিচার করিতে পারেন। ২৩৯।

মণিসমূদায় স্থবর্ণাদি ধাতু সম্বন্ধ হইলে শিল্পীর শিল্প-দোষে উত্তম রত্নও অতিজঘন্য এবং শিল্পনৈপুণ্যদ্বারা অতি সামান্য রত্নও অতি উত্তমরূপে প্রতিভাত হয়। ২৪০।

मणिमाला।

मू चम्।

यदिन्द्रनीलस्य महाग्रणस्य सुवर्णसंख्याकलितस्य मूल्यां। तदेव वैदृर्व्यमणेः प्रदिष्टं पलदयोन्मापितगौरवस्य॥ २४१॥ जयति यदि सुवर्णं त्यागहीनो यदा वा बद्धविधमणिहारी भूपतिर्वा यतिर्वा। दधदपि धृतदोषं जातु वैदृर्य्य रत्नं प्रतिश्रतफलरूपः पातमेध्यत्यवश्चम् ॥ २४२॥

तर्जमा ।

महाग्रणमम्पन्न एक तोला इन्ट्रनीलका जो मूल होता है, ग्रुण थाली दोपल ल शुनियेका वही दाम है। २८९। त्याग थील अधवा वज्जप्रकार मणिधारी अर्धात् वज्जत् तरहका जवाहेर परहने ज्ज्ये राजा अथवा जितेन्द्रिय मन्न्रामी को दक्ते आं न हो, अथेवदार ल शुनिया पहेरने से जक्र पतित होना होगा। २८४२।

इति लम्बनियाका वयान।

265 %

C.S.

241. A Cat's-eye weighing two palas* is worth as much as a very good padmarága weighing one tolá.

242. A vicious Cat's-eye paves the way for the sure ruin of the wearer, be he a self-denying individual, a king accustomed to wear gems of all sorts, or an ascetic who has learned to restrain his senses.

অন্থবাদ।

মহাগুণসম্পন এক তোলা ইন্দ্রনীলের যাদৃশ মূল্য হইয়া থাকে, গুণশালী চুই পল বৈদূর্য্যের তদ্রুপ মূল্য হইতে পারে। ২৪১।

ত্যাগশীল বা বহুপ্রকার মহামণিসম্পন্ন ভূপতি অথবা জিতেন্দ্রিয় সন্ন্যাসী, যিনি হউন না কেন, সদোষ বৈদূর্য্য ধারণ করিলে অবশ্যই তাঁহাকে অধঃপাতিত হইতে হইবে। ২৪২।

ইতি বৈদুর্য্য।

* (Equal to four karshas = $\frac{1}{100}$ tolas.)

+ Vide antè.

THE CAT'S-EYE.

THE CAT'S-EYE.

Its Properties.

2HE Cat's-eye is a rare variety of the Chrysoberyl, of extreme hardness and is characterized by the remarkable play of light in a certain direction, probably caused by a peculiarity in its crystallization. This ray of light, or in the jeweller's language, this "line," shines in well-polished stones with a phosphorescent brilliance. This stone is found of various colours, ranging through all the shades of yellow, brown, green, and very rarely, black. No matter what the ground colour of the stone may be, the "line" is always white and more or less iridescent. The gas-light or full sun-light, which renders the line more vivid, displays the lustre to the best advantage. The most popular colours are the clear apple green and the dark olivethese forming splendid black grounds over which the line appears in beautiful contrast. When held towards the light, the stone resembles the contracted pupil of the eye of a cat. Its peculiar beauty lies in the mysterious gleaming streak which moves from side to side as the stone is turned. The specimens most liked by the Indians are those of a dark olive colour, having the ray so bright on each edge as to appear double. The hardness of the

00

267 20

Cat's-eye is 8.5 in the scale; it being scratched by the Sapphire, Ruby, &c. Its specific gravity is 3.8. It is infusible before the blow-pipe alone, but is not affected by acids. It contains about 80 per cent. of alumina and 20 of glucina and colouring matter (protoxide of iron). It belongs to the trimetric or rhombic system of crystallization. Its lustre varies from being almost perfectly transparent to almost opaque. It possesses a double refraction and acquires electricity by friction and retains it for several hours.

Where found.

THIS gem is found in rolled pebbles in parts of North America, Brazil, Moravia, the Ural Mountain, India, but chiefly in Ceylon together with Sapphire.

Mode of Cutting.

THE Cat's-eye is generally cut in Ceylon, en cabochon. The Chrysoberyl of which it is but one variety, is cut on a copper wheel with Emery and polished with Tripoli.

Its Price; Flaws and Defects; Mode of Testing.

THE Cat's-eye is much used in jewelry for rings and pins and is never engraved upon. Its value chiefly depends on its size and beauty. The varie-

60/9

THE CAT'S-EYE.

ties of colour do not affect the value very much; some people like one colour, some, another. To fetch a good value, the line should not only be perfect and brilliant but it should be well-defined, not very broad and should run evenly from end to end across the middle of the stone. It has always been very highly prized by the Indians and the Cingalese. The value has of late considerably increased, owing to the fancy which the Europeans have begun to take to it. A ring-stone may be worth from £10 to £100 or upwards. There are some large stones in the market said to be valued at more than £1,000.

The jewellers have frequently confounded the true Cat's-eye with another stone of the same name which is a variety of the Quartz, and have often sold the one for the other. Even by the least experienced, the Quartz Cat's eye can be distinguished from the true one, by its inferior hardness and want of brilliance. The colour of the Quartz Cat's-eye is of various shades of yellow and brown only. Its hardness is from 6 to 6.5. It can only scratch glass. Its specific gravity is 2.65. It melts with soda into a clear glass and is soluble in fluoric acid. The chemical composition is of 48 parts of Silicium and 51 of Oxygen with a small amount of oxide of iron and lime. It is usually set with a black or gold foil to add to its play and brilliancy.

Marvellous Powers.

269 20

THE fact of the gleaming streak shifting from side to side as the stone is turned, has led the superstitious to believe it to be the abode of some evil spirits. It was dedicated by the ancient Assyrians to their god Belus and was called, on this account, the *oculus Beli* and by others, the "wolf's eye." It is regarded by some nations as a sacred stone and used as a charm against witch-craft.

Celebrated Cat's-eyes.

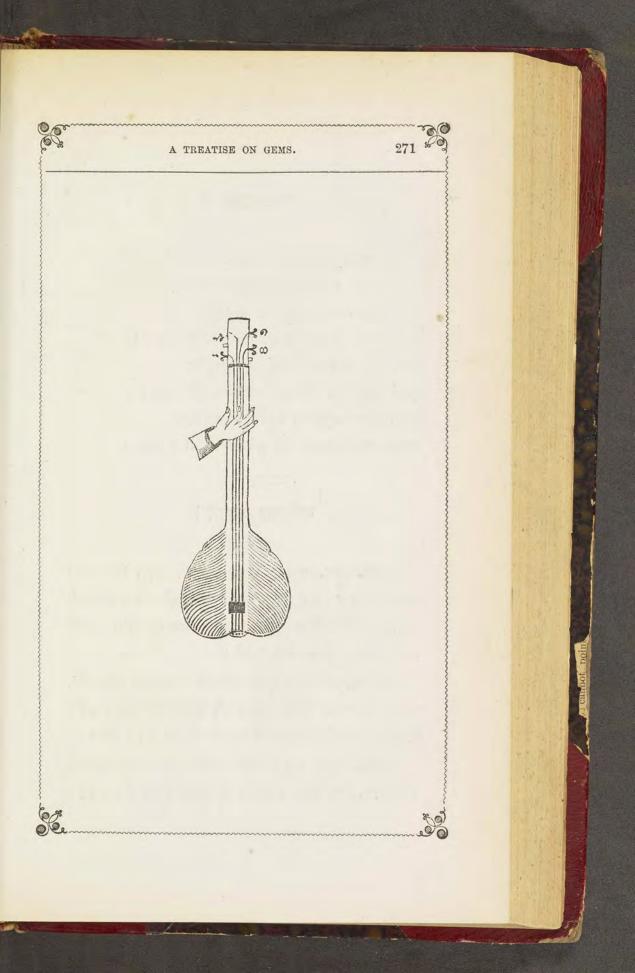
THE largest Cat's-eye (also the "Hope") is hemispherical and $\frac{1}{2}$ inch in diameter. In 1815 it was captured from the King of Kandy (Ceylon), with whom it had been an object of great pride. It has attained a celebrity for many centuries past and appears to be the identical stone mentioned by Ribiero, in his History of Ceylon, as belonging in the 16th century to the Prince of Ura. It is mounted in massy pure gold and set* with Rubies (cut *en cabochon*), in the Eastern fashion. A very large-sized Cat's

* The late King Victor Emmanuel had many peculiarities one of which may be related in a few words. It appears that His Majesty each year allowed one of his toe-nails to remain uncut through the year, and on New Year's Day he cut off his projecting nail which was always about an inch in length. A jeweller cut and polished this piece of nail, which acquired the appearance of the stone known as a "cat's eye," and framed it in a rim of gold set round with diamonds. The King each year presented this jewel to his mistress, the Countess Mirafiori, who already possessed fourteen of these novel ornaments. The fifteenth had been cut by the late King on the 1st January 1878, and as His Majesty died on the 9th of that month, the jeweller had not had time to polish and mount it. It has since been conveyed to the Countess by King Humbert.—*The Indian Mirror*, 15th June 1878.

THE CAT'S-EYE.

eye was once seen with one Pundit Lutchminarain, who had at one time refused an offer of Rs. 10,000 for it. It has afterwards been bought by a zemindar of Mymensing, East Bengal, for Rs. 6000. Babu Than Sing Boyed of Moorshedabad has a good Cat's-eye of a black color. Rai Budridass Mokeem has, in the shape of a *kanthá*, a collection of Cat's-eyes of various shades and tints. There is a very large Cat's-eye, about the size of a pigeon's egg, set upon a *pán-dán*, in the possession of the Hon'ble Maharajah Joteendro Mohun Tagore Bahadoor. It is of a brownish color and shows the "line" to great advantage.





मगिमाला।

ग्रथ सुत्ता ।

मूचम्।

नागेन्द्रजीमूतवराच्च श्रङ्घ-मत्स्याचि श्रुक्तुग्र झववेणुजानि। सुक्ताफलानि प्रथितानि लोके तेषान्तु शुक्तुग्र झवमेव भूरि॥ २४३॥ धाराधरेषु जायेत मौक्तिकं जलविन्टुभिः । दुर्लमं तन्मचारतं देवे स्तन्नीयते ऽम्वरात्॥ २४४॥ द्रभाचिकोलमत्स्यानां शोर्षे मुक्ताफलोझवः । त्वक्सारशुक्तिश्रङ्घानां गर्भे सुक्ताफलोझवः ॥ २४५ ॥

मतिका वयान।

तर्जमा।

हाथी, मेघ, ग्रूकर, ग्रङ्ख, मक्त्लि, सांप, सिप चौर वांग्र दून् सव वस्तुमें मोति पयदा होता है। यह दुनियामे मस्ड़र है, लेकिन दून सवमेसे चाकसर मौति सिपमे ज्यादा पयदा होता है। २४३।

मेघ घोकर जलके बुंदके जरियसे जो मौति घोता है, उस्को मघारत्नमे गिन्ति घोति है, आदमीको वज्जत् दुर्लम है, देवता लोक आकाग्रहीमे उस्को ले लेते है। २४४।

चायी, सांप, प्रूकर और मक्टलि दून् सबके मस्तकमे और वांग, सिप और शङ्घके पेटमे मोति चोता चै। २४५। ⊘

273 20

PEARL.

TRANSLATION.

243. It is generally believed that the Pearl originates in elephants, clouds, boars, conch-shells, fish, serpents, oysters and bamboos—of which oysters have the largest share in their production.

244. The Pearl which originates in a waterdrop from the clouds, is a gem of the first rank and a rarity;—the gods appropriate it from the sky.

245. Pearls originate in the heads of elephants, boars, serpents and fish, in the hollows of bamboos, and in the wombs of oysters and conch-shells.

মুক্তা।

অহুবাদ।

হস্তী, মেঘ, বরাহ, শশ্ব, মৎস্থ, সর্প, শুক্তি এবং বংশ এই সকল পদার্থেই যে, মুক্তা জন্মে, ইহা লোকপ্রসিদ্ধ, তন্মধ্যে শুক্তি হইতেই অধিক পরিমাণে মুক্তা জন্মিয়া থাকে। ২৪৩।

মেঘ হইতে জল-বিন্দুদ্বারা যে মুক্তা জন্মে, তাহা মহা-রত্নমধ্যে পরিগণিত, উহা মন্যুয্যের পক্ষে অতিচুর্লভ, দেবতারাই আকাশ হইতেই গ্রহণ করেন। ২৪৪।

হস্তী, সর্প, বরাহ ও মৎস্থ ইহাদিগের শীর্ষদেশে এবং বংশ, শুক্তি ও শশ্ব ইহাদিগের গর্তমধ্যে মুক্তা জন্মিয়া থাকে। ২৪৫।

TI

QC3

मगिमाला।

मूलम्। गजाइिजं खडुष्प्राप्य' मौकिकं तपमा विना। मौकिकं लभ्यते ऋषमाकरेषु कलौ चिषु ॥ २४६ ॥ वेध्यन्तु शुक्तुत्रद्वत्रभेव तेषां श्रेषाण्यभेद्यानि वदन्ति तज्ज्ञाः। मतङ्गजा ये तु विशुद्धवंग्धा-क्ते मौक्तिकानां प्रभवाः प्रदिष्ठाः ॥ २४७ ॥ त्वक्सारनागेन्द्रतिमिप्रसूतं यच्छङ्घर्जं यच्च वराइजातं। प्रायो विमुक्तानि भवन्ति भाषा श्राक्तानि माङ्गल्यतया तथापि ॥ २४० ॥

तर्जमा ।

चाथी और सांपके मखलकमे जो मोति पयदा होता है, विना तपस्याके वह मोति वज्जत्दुर्लम है, आव वांश, सिप और शङ्खमे उम्दा उम्दा मोति पयदा होता है। २४६।

पहिले जो किसिम मोतिकी वयान कि गइ, उस्मे से सिपका मोति बेधा अर्थात् उसी जातका मोति वेधा जाता है, उम्केसेवाय औरजातका मोति चबेध, अर्थात् वेध हो नहि सका, पाणि वर्षणसे जो मोति पयदा होता है, वही संव मोति प्रधान हैं। २४७।

वांश, चाथी, तिमि मक्रलि, शङ्ख और शूकर इन सवमे जो मोति पयदा घोता है, यची सव मोति चावदार नघि घोता है, लेकिन मङ्गलकायेंग्रमे वज्जत् उत्तम है। २४८०।

275 20

×

TRANSLATION.

246. Those Pearls that are found in the heads of elephants and snakes, are rarely to be had except by devout austerities ;—at present good Pearls are obtained from bamboos, oysters and conch-shells.

247. Of the kinds of the Pearl enumerated above, those derived from the oyster alone are penetrable, the rest being impervious. Those Pearls that originate in clouds, are the best of their sort.

248. The Pearls that are produced in bamboos, elephants, whales, conch-shells and boars, are generally lack-lustre, although they are of great use in auspicious rites.

অন্থবাদ।

গজ ও সর্পের মস্তকে যে মুক্তা জন্মে, বিনা তপস্থায় তাহা অতিছপ্র্যাপ্য, অধুনা বংশ, শুক্তি ও শঙ্খ এই তিন বস্তু হইতেই উত্তম উত্তম মুক্তা প্রাপ্ত হওয়া যায়। ২৪৬।

পূর্ব্বে যে কয়প্রকার মুক্তার বিষয় উল্লেখ করা গেল, তন্মধ্যে শুক্তিজাত মুক্তাই বেধ্য, অর্থাৎ এই জাতীয় মুক্তাতেই ছিদ্র করা যাইতে পারে, তদ্তিম অপরাপর জাতীয় মুক্তা অবেধ্য, অর্থাৎ তৎসমুদায়ে ছিদ্র করা যাইতে পারে না। মেঘ হইতে যে সকল মুক্তা উৎপম হয়, তাহারাই সর্ব্বপ্রকার মুক্তার প্রধান। ২৪৭।

বংশ, হস্তী, তিমিমৎস্থ, শঙ্খ ও বরাহ এই সকল পদার্থ হইতে যে সকল মুক্তা জন্মে, সেই সকল মুক্তা প্রায়ই তেজোবিহীন হইয়া থাকে, কিন্তু তথাপি মাঙ্গল্যকার্য্যে অতিশয় প্রশস্ত। ২৪৮।

मणिमाला।

सू लम्।

वच्चे गजपरी द्वायां गजजाति चतु बिंधा । कोकिकं तेषु जातं चि चतु विंधसुदी र्थते ॥ २४८ ॥ वाह्मणं पीत मुक्तन्तु चन्त्रियं पीतरक्तकं । पोतस्थामन्तु वैद्यं स्थाच्छ्रद्रं स्थात् पीतनी जकं ॥ २५० ॥ कुक्तु टाण्ड्समं टर्न सीकिकं निविडं गुरू । घनजं भानुसङ्कार्थ देवयो ग्यम मानुषं ॥ २५९ ॥

तर्जमा।

गजविद्याके पण्डितोने चार्याकी चार किसिमकी तक -सिम् की ईे, अर्थात् उस्मे बाह्मण, चन्नि, वैश्व और ग्रूट्र चार जात कायेम की है, इस् कारण गजमोति चार किसिमका चोता है। २८ ८।

जो सोति पीलापन्लियेड्य से, सफेद रङ्ग होए, वह बाह्य एवर्थ है, जो सोति पीलापनलियेड्य सुख रङ्ग होए, वह्न चत्त्रियवर्ण, जो सोति पीलापनलियेड्य श्वामवर्ण है, वह वैश्यवर्ण और जो सोति पीलापनलिये-ड्य नीलवर्ण होए, वह श्रद्रवर्ण है । २५०।

मेघसे पयदाइत्र्ये मोतिमे जो सुरगके अग्रहेके बरावर जनदा, गोल, ठोम, खोजनमे भारी, और सूर्व्यके समान तेजकी खान, एँसा मोति देवताचेंक भोगमे रहता है, मनुष्यदुर्लभ है। २५९।

277 %

63

TRANSLATION.

249. Persons who have studied the elephant with particular attention, have divided it into four classes, called after the names of the four cardinal divisions of the Hindus. Accordingly, Pearls derived from elephants are classed under four heads.

250. Pearls which are white and which emit a yellow lustre, are Brahmins; those which are red and possessed of the same lustre, are Kshetriyas; those which are black (lustre same), are Vaisyas; and those which are blue (lustre do.), are Sudras.

251. Of cloud-begotten Pearls, those which resemble in shape the hen's egg, which are beautifully circular, substantial, weighty and bright as the sun, are enjoyable by the gods and cannot be obtained by men.

অহুবাদ।

গজ-পরীক্ষক পণ্ডিতেরা হস্তীকে ব্রাহ্মণাদি চারি জাতিতে বিভক্ত করিয়াছেন, স্নতরাং তদন্মসারে গজোৎ-পন্ন মুক্তাও ব্রাহ্মণাদি চতুর্বিধ হইয়া থাকে। ২৪৯।

যে সকল মুক্তা পীতের আভাযুক্ত শুরুবর্ণ, তাহারা ব্রহ্মবর্ণ; যাহারা পীতের আভাযুক্ত রক্তবর্ণ, তাহারা ক্ষত্রিয়-বর্ণ; যাহারা পীতের আভাযুক্ত শ্যামবর্ণ, তাহারা বৈশ্যবর্ণ; এবং যাহারা পীতের আভাযুক্ত নীলবর্ণ, তাহারা শূদ্রবর্ণ বলিয়া পরিচিত। ২৫০।

মেঘোৎপন্ন মুক্তার মধ্যে যে গুলি আকারে কুরুটের অগুসদৃশ, উত্তম গোলাকার, নিরেট, ওজনে ভারী এবং সূর্য্যের ত্যায় তেজঃপুঞ্জ, তৎসমুদায় দেবভোগ্য, মন্তুয্যের অপ্রাপ্য। ২৫১।



मगिमाचा।

मू चम्।

काम्बोजकुस्मित्तस्पूतं धाचीफलनिमं ग्रुक् । चतिषिच्चरसच्छायं मौकिकं मन्ददौधिति ॥ २५्र ॥ फणिजं वर्त्तुलं रक्यं नौलच्छायं महादुर्रात । पुण्यहीना न पश्चन्ति वासुके: कुलसस्मवं ॥ २५्र ॥ नाभ्येति मेधप्रभवं धरिचीं वियद्गतं तद्विवुधा हरन्ति । चार्द्वि:प्रतानाटतदिग्विभाग-सादित्यवद्द:खविभाव्यविम्बं ॥ २५्र ॥

तर्जमा ।

श्वामदेशको बीचमे कस्वोजदेशमे जो हाथी पयदा होता है, उस्के माथेमे जो मोति पयदा होता है, वह सब मोति चामलेके फलके समान, चोजनमे भारी, ज्यादा पीला, लेकिन कम चाव। २५२।

सांपसे जो मोति पयदा घोता है, वह खाच्छा गोल, देखनेमे आच्छा, योडा नीलापनलियेज्जये और बज्जत् आवदार, पुर्खाहीन आदमीको एँसा मोति आंखसेमी देखना नसीव नहिं घोता। २५३।

मेघसे जो मोति पयदा होता है, वह कभी जमीन नहिं कुता, आकाशहीसे देवता लोग ले जाते हैं। उस मोतिका रेसा तेज है, के दोपहरको मूर्य्यके समान, उस्पर आंख नहिंठहर सक्ति। २५४।

279 \$

TRANSLATION.

252. Those Pearls that originate in the head of the elephants of Khamboja in the country of Shyáma, are large as the fruit of the *Emblic Myrobalan*, heavy and more yellow but not more lustrous than the other kinds.

253. Pearls which originate in the crest of serpents, are beautifully round, and are embosomed in a blue halo of surpassing glory. These, persons void of merit are denied the privilege of even looking at.

254. Cloud-begotten Pearls never touch the earth, and are appropriated by the gods from the sky. They are clad in the mighty effulgence of the mid-day sun.

অন্থবাদ।

শ্যামদেশের অন্তর্গত কম্বোজদেশ-জাত হস্তীর মস্তকে যে মুক্তা জন্মে, তাহা আকারে আমলকী ফলের ন্যায় রুহৎ, ওজনে ভারী, অধিক পীতবর্ণ, কিন্তু অধিক তেজস্বী নহে। ২৫২।

সর্পজাত মুক্তা উত্তম গোলাকার, অতিরমণীয়, ঈষৎ নীলের আভাযুক্ত এবং অতিতেজস্বী; পুণ্যহীন ব্যক্তিরা এতাদৃশ মুক্তা কখন চক্ষেও দেখিতে পায় না। ২৫৩।

মেঘোৎপন্ন মুক্তা কদাচ পৃথিবী স্পর্শ করে না, শূন্য হইতেই দেবগণ তাহা গ্রহণ করেন, সেই সকল মুক্তার তেজ এত অধিক যে, মধ্যাহ্নকালীন সূর্য্যের ন্থায় অতি দ্রুঃসহ। ২৫৪।



मणिमाला।

मलम्।

तेजस्तिरस्कृत्य ऊताधनेन्टु-नचचताराग्रहमआवञ्च। दिवा यथा दौप्तिकरस्तयैव तमोऽवगादाखपि तन्निधामु ॥ २५५ ॥ विचित्ररत्नद्यतिचारुतोया चतुःसमुद्राभरणाभिरामा। मूल्यं न वा स्थादिति निञ्चयो मे छत्सा मही तस्य सुवर्णपूर्णा ॥ २५ ६ ॥ हीनोऽपि यस्तस्नभते कथन्ति-दिपाकभागान्महतः धुभस्य। मापत्नप्रहीनः ष्टथिवीं समग्रां भुनक्ति तन्तिष्ठति यावदेव ॥ २५ ७ ॥

तर्जमा।

मेधसे जो मोति पयदा होता है, वह प्रकाशम आग, चन्द्र, नचच, तारा और ग्रहगणको मन्द करदेता है, और वही मोति जिस् तरह दिनको प्रकाश पाता है, दूसी तरह गादी आंधेरेमे रोसन रहता है। २५५।

उत्तम किरणविभिष्ट जवाहेरसे भरि चारों ससुद्र-भूषित रत्नसे भरि तामाम प्रथ्वीभी एक मेघे पयदा ऊये मोतिके वरावरसे नहिं हो सक्ति। २५६।

बज्जत छोटा चादमी नसीवके जोरसे किसी तरहसे एक मेघसे पयदा ज्जया मोति पावे चौर जित्ने दिन वह मोति उस्के पास रहेंगा, उत्ने दिन वह चादमी इस् तामाम प्रश्वीपर राज करेगा। २५७।

281 20

TRANSLATION.

255. They surpass in lustre, fire, the moon and stars, and are equally flaming in the light of day and the blackest night.

256. This world, ornamented by the four oceans,* —the home of the most splendid gems of infinite variety, can scarcely equal in value one cloud-generated Pearl.

257. If by rare good fortune even a person belonging to the very lowest order comes in possession of such a Pearl, he shall reign paramount in this world so long as the gem is with him.

অহ্বাদ।

মেঘপ্রভব মুক্তা তেজে অগ্নি, চন্দ্র, নক্ষত্র, তারা ও অন্তান্ত গ্রহগণকে পরাভব করে, এবং সেই সকল মুক্তা দিবাভাগে যেমন দীপ্তি পায়, অত্যন্ত গাঢ়ান্ধকার রাত্রিতেও তদ্রুপ দীপ্তি পাইয়া থাকে। ২৫৫।

বিচিত্র-ছ্যুতি-রহ্নপূর্ণ-চতুংসমুদ্র-ভূষিতা রহ্নপূর্ণা সমগ্র পৃথিবীও একটী মেঘজাত মুক্তার প্রকৃত মূল্য হয় কি না সন্দেহ। ২৫৬।

অতিনীচলোকও ভাগ্যবলে কোনপ্রকারে একটী মেঘপ্রভব মুক্তা লাভ করিতে পারিলে যতদিন সেই মুক্তা তাহার হস্তগত থাকিবে, ততদিন সে ব্যক্তি এই পৃথি-বীতে একাধিপত্য করিতে পারিবে। ২৫৭।

* Our English readers are requested to remember that we go by our *Shastras*, and not by the far more advanced lights of European Science. As it is our most cherished object to give a peculiarly Indian air to the book, (which is all the more necessary, having regard to the authorities we follow) we have not scrupled to cast it in the mould of Sanskrita writers.

JJ

मणिमाता।

मूचम्। न केवलं तच्छुभक्त द्रृपस्य भागेँगः प्रजानामपि जन्म तस्य । यद्योजनानां परितः ग्रतस्य सर्व्वाननर्थान् विमुखीकरोति ॥ २५४ ०० ॥

जलच्योतिर्भरुज्जानां मेघानां चिविधस्मवेत् । जलाधिकेऽधिकं खच्च्रं कोमलं ग्रुरु कान्तिमत् ॥ २५ू८ ॥ ज्योतिषं कान्तिमहुत्तं दुनिरीच्चं रविप्रभं । कान्तिमत्कोमलं टत्तं मारुतब्विमलं लघु ॥ २६० ॥

तर्जमा।

मेघसे पयदाड़िया मोति एँसा नहिं है, के फकत उस्के मालिक हीका भाला करे, बलके जिस् राजाके राजसे ऐसा मोति रहे, तो उसको श-योजनतक दूरभ रहनेवाली प्रजाका दुःखनाश करें। २५८० ।

पाणि, तेज. और हावा इन तिन तत्त्वके मिलनेसे मेघ पयदा होता है, इसीतरह सेघसे पयदाड़या मोति तिनकिसिमका होता है, अर्थात किसीमे पाणि, किसीमे तेज और किसीमे हावाका हिस्सा ज्यादा अथवा कम रहता है, अर्थात जिस् मोतिमे पाणिका हिस्सा ज्यादा रहता है, वह बड़त साफ, उम्दा ओजनमे जाादा और नेहायेत ्रोयन है। २५१।

जिस्मे तेजका हिस्सा ज्यादा होता है, वह ज्यादा चमकदार नेहायेत् गोल और सूर्य्यके तरहसे उस्पर आंख नहिं ठहरति; और जिसमे हावाका हिस्सा ज्यादा होता है, वह ज्यादा रोसन, गोल, बद्धत ्साफ और ओजनसे हाल्का । २६०।

283 20

TRANSLATION.

258. A cloud-begotten Pearl is a blessing not only to its owner; —but it shoots its blessed influence a hundred *yojanas** beyond the precincts of the domains of the king possessing it.

259. Clouds are produced by the union of three things;—water, energy and the air; accordingly, cloud-begotten Pearls are divided into three classes, agreeably to the preponderance of one or other of these substances. Those in which water forms the base, are very transparent, soft, weighty and highly agreeable.

260. Those in which energy preponderates, are beautifully round and perceptible from a distance like the sun; while such as are predominated over by the air, are agreeably tender, spherical, highly transparent and light to a degree.

অন্নবাদ।

মেঘোদ্ভব মুক্তা যে কেবল তৎস্বামীরই শুভজনক এমন নহে,যে রাজার রাজ্যে ঐ প্রকার মুক্তা থাকে, সেই রাজার শতযোজনদূরবর্ত্তী প্রজাবর্গেরও সকলঅনর্থ বিনষ্ট হয়।২৫৮।

জল, জ্যোতি ও বায়ু এই ত্রিবিধ পদার্থের সংযোগেই মেঘের উৎপত্তি, স্থতরাং উক্ত ত্রিবিধ পদার্থের আধিক্য অনুসারে মেঘোৎপন্ন মুক্তাও ত্রিবিধ হইয়া থাকে, যে মুক্তায় জলের ভাগ অধিক থাকে, তাহা অত্যন্ত স্বচ্ছ, কোমল, ওজনে ভারী ও অতিশয় কান্তিবিশিষ্ট হয়। ২৫৯।

যে মুক্তাতে তেজের ভাগ অধিক থাকে, তাহা কান্তি-বিশিষ্ট, স্থেরত ও সূর্য্যের ত্থায় ছর্নিরীক্ষ্য এবং যাহাতে বায়ুর ভাগ অধিক থাকে, তাহা কান্তিবিশিষ্ট, কোমল, গোলা-কার, অতিনির্দ্মল ও ওজনে অতিলঘু হয়। ২৬০।

* A *Vojana* is sometimes regarded as about equal to a European league (*i. e.*, 4 or 5 English miles, but more correctly4 *krosas* or about 9 miles according to other calculations $2\frac{1}{2}$ English miles, and according to some 8 *krosas*.)—*M.* Williams.

मणिमाला।

मूलम्। वराइग्रीवेंप्रभवं वरिष्ठं तस्यैव दंष्ट्राङ्गुरतुल्यवर्णं। क्षचित् कथच्चित् सभुवप्रदेशे प्रजायते ऋकरवद्वरिष्ठं॥ २६१॥ वच्चादिजातिभेदेन वराहोऽपि चतुर्व्विधः। तेषु जाता भवेन्मुका समासेन चतुर्व्विधा ॥ २६२ ॥ वाद्धणः शुक्तवर्णस्तु कोमलस्पर्धे एव च । चन्त्रियः शुक्तरक्तस्तु स्पर्धे कर्कश्र एव च॥ २६३ ॥ वैद्धः स्याच्छुक्तपीतस्तु कोमलः कोलसन्निमः। ग्रद्रः स्याच्छुक्तनीलस्तु कर्कशः श्वाम एव च॥ २६४ ॥

तर्जमा ।

श्रूकरके मस्तकमे जो मोति पयदा घोता है, वह मोति श्रूकरके दांतके समान सफेदवणें घोता है, लेकिन किसी किसी जगइमे श्रूकरके वदनके समान रङ्ग घोता है। २६९।

जिस्तरहे मनुष्यके बाह्मण, चन्नि, वैश्व और ग्रूट्र चार जात है, उसीतरह ग्रूकरभी चार जातका होता है, और उसमे पयदाऊ या मोतिभी चार जातका होता है। २६२। बाह्मणजातका मोति सफेदवर्ण और चेक्ना; चन्नि-जातका मोति सफेदा खुखीमायेल और छनेमे कर्कशा २६३। वैश्वजातका मोति सफेद पीलापनलियेड्य और छनेमे चेक्ना; और ग्रूट्रजातका मोति सफेद नीलापनलियेड्य और छनेमे कर्कशा २६४।

E

67

TRANSLATION.

285 20)

261. Pearls which originate in the head of the boar, are generally white as the tusks of that animal ;—rarely resembling in hue, the color of the boar.

262. As boars are divided into four orders denominated after the names of the four cardinal castes, even so are the pearls which are produced by them.

263-64. The Brahmin Pearl is white and soft to the touch; the Kshetriya one is red-white and hard; the Pearl of the Vaisya class is whiteyellow and tender; while the Sudra Pearl is blue-white and hard to the touch.

অহ্বাদ।

বরাহমস্তকে যে সকল মুক্তা জন্মে, তৎসমুদায় প্রায়ই বরাহ-দন্তের ন্যায় শুক্লবর্ণ হয়, তবে কোন কোন স্থলে কখন বা সেই বরাহের গাত্রের বর্ণের ন্যায় বর্ণবিশিষ্টও হইয়া থাকে। ২৬১।

ব্রাহ্মণাদি জাতিভেদে বরাহও যেমন চারিপ্রকার হয়, তত্তুৎপন্ন মুক্তাও তদ্রপ চতুর্ব্বিধ হইয়া থাকে। ২৬২।

ব্রহ্মবর্ণ মুক্তা শুক্লবর্ণ ও কোমলস্পার্শ, ক্ষত্রিয়বর্ণ মুক্তা শুক্ল-রক্তবর্ণ ও কর্ক শস্পার্শ। ২৬৩।

বৈশ্যবর্ণ মুক্তা শুক্ল-পীতবর্ণ ও কোমলস্পার্শ, শূদ্রবর্ণ মুক্তা শুক্ল-নীলবর্ণ ও কর্ক শস্পার্শ।২৬৪।

मणिमाला।

मूलम्। कोलजं कोलसहग्रं तइं छ्रापहग्रच्छवि । त्रालभ्यं मनुजै रस्यं मौकितं पुण्यवर्ज्जितै: ॥ २६५ ॥ ये कस्ववः ग्राङ्गिमुखावमर्ष-पौतस्य ग्रङ्घप्रवरस्य गोत्रे । स्यान्गौक्तितानामिच्च तेषु जन्म तस्तचर्षं सम्पति कीर्त्तयाम: ॥ २६६ ॥ स्वयोनिमध्यच्छवितुल्यवर्षे ग्रङ्घादृच्टत्कोलफलप्रमाणं । कस्वृज्ञवं तेषु ग्रुभं प्रदिष्ट-सुत्पद्यते यच्च गजेन्द्रकुम्भात् ॥ २६७ ॥

तरजमा।

जी मौति वेरके फलके समान और भूकरके दांतके समान सफेद, ऐसा श्रुकरके जातका मौति देखनेमे बऊत आच्छा और प्रण्यचीन आदमीको नहिं मील सक्ता ।२६५। जिस शङ्घका बदन पीलारक छोए और स काला-रक्ज, ऐसेडी शङ्घमे मौति पयदा छोता छै, दूस्लिये आव उस्के जातके मौतिका छाल लिखा जाता छै । २६६ । शङ्घसे जो मौति पयदा छोता छै, उस्का कद बड़े बड़े वेरके समान है, और उसका रक्ज शङ्घके पेटके समान है, शङ्घवाला मोति और छायौके मस्तकका मौति सबमे अष्ठ और मज्जल करनेवाला है । २६७ ।

287 8

K

TRANSLATION.

265. A boar-begotten Pearl resembling a plum in shape and the tusks of that animal in hue, is a most beautiful object in nature and is not to be obtained by a meritless individual.

266. Of conch-shells, those only that are yellowbodied and black-mouthed produce Pearls. I shall now describe Pearls of this origin.

267. A Pearl that is derived from a conch-shell, is of the dimensions of a large plum, and is white as the inner surface of the coat of that shell-fish. Such Pearls as well as those produced by elephants, are the best of their kind and are productive of good fortune.

अञ्चान ।

আকারে কুলের সদৃশ অথচ বরাহ-দন্তবৎ শুরুবর্ণ বরাহ-জাত মুক্তা দেখিতে অতিরমণীয় এবং পুণ্যহীন ব্যক্তিবর্গের অপ্রাপ্য। ২৬৫।

শন্ডের মধ্যে যেগুলির অবয়ব পীতবর্ণ এবং মুখ কৃষ্ণবর্ণ, সেই সকল শন্ডেই মুক্তা জন্মিয়া থাকে, সম্প্রতি তজ্জাত মুক্তার বিবরণ বিব্নত করা যাইতেছে। ২৬৬।

শশ্ব হইতে যে সকল মুক্তা জন্মে, তাহাদিগের আকার রহৎ কুলের ত্যায়, বর্ণ শন্থের উদরের ত্যায়, শগ্বজাত ও গজ-কুন্তজাত মুক্তাই সর্ব্বপ্রধান এবং মঙ্গলজনক। ২৬৭।

मणिमाला।

मूलम् ।

वर्षोपलसमं दीप्तत्रा पाञ्चजन्यकुलोझवं । कपोतारण्डप्रमाणं तदतिकान्तिमनोघरं ॥ २६० ॥ चाखन्यादिकनचचे ये जाताः कस्ववः ग्रुभाः । मौक्तिकं तेषु जातं चि सप्तविंग्रतिभेदमाक् ॥ २६९ ॥ ग्रुक्ताग्रुक्तपीलरक्ता नौललोघितपिज्झराः । च्याकर्वूराः पाटलाच्च नव वर्णा प्रकीर्त्तिताः ॥ २७० ॥

तर्जमा।

शङ्क्षके मध्ये पाञ्चजन्य शंख सबमे प्रधान ही, उस्के वंशमे जो शङ्ख होता ही, उस्का मोति कवुतरके द्यराहेके समान ही चौर चोले पायरके समान सफेद, निर्माल, रोसन चौर देखनेंमे मनका हरनेवाला। २६८ ।

अश्विनी आद नचचसे सात्ताइश नचचतक् सात्ताइश किसिमका शङ्ख पयदा होता है, दूसी तरहसे शङ्खसे पयदाज्जया मोतिमी सात्ताइश किसिमका हेाता है।२६८।

ग्रङ्खसे पयदाड्य मोतिमे सफेद, काला, कमपौला, ज्यादा लाल, नौला, कम लाल, ज्यादा पीला, घालका खाको और इटके सेसारङ्ग, इसी तरहसे नौकिसिमका रङ्ग होता है। २७०।

TRANSLATION.

268. The conch-shell called *panchajanya*^{*} is the best of its kind. The Pearls produced by it are like the pigeon's egg in size, and transparent as hail as well as white. These are exceedingly beautiful.

269. There are twenty-seven kinds of conchshells, produced by as many stars of the *Aswini* class; accordingly Pearls generated in them being marked out by distinctive qualities, are divided into twenty-seven orders.

270. A conch-shell Pearl is white, black, yellowish, crimson blue, reddish, deep-yellow, ashcolored or pale-red.

অন্থবাদ।

শন্ডোর মধ্যে পাঞ্চজন্যই সর্ব্বপ্রধান, তদ্বংশজশন্ডোন্ডব মুক্তা আকারে কপোত-ডিম্ব-সদৃশ, করকার ন্যায় স্বচ্ছ, গুরুবর্ণ, অতিশয়কান্তিবিশিষ্ট, দেখিতে অতিমনোহর।২৬৮।

অশ্বিন্থাদি সপ্তবিংশতি নক্ষত্রে সপ্তবিংশতিপ্রকার শঙ্খ উৎপন্ন হয়, স্নতরাং শঙ্খোদ্ভব মুক্তাও তদমুসারে সপ্ত-বিংশতিবিধ হইয়া থাকে। ২৬৯।

শঙ্খোৎপন্ন মুক্তার শুক্ল, ক্নফ, ঈষৎপীত, গাঢ়-লোহিত, নীল, ঈষৎ-লোহিত, গাঢ়পীত, ঈষৎপাঁশুটে এবং পাটল এই নববিধ বর্ণ হইয়া থাকে। ২৭০।

* So called because it is related to the five classes of beings, viz., gods, men, Gandharvas and Asuras, serpents and Pitris.- Williams.

KK

0

289 \$

मणिमाला।

मूचम्। मचन्मध्यसघून्मानैः सप्तविंगतिधा भवेत् । क्रमतस्तेषु विद्वोयं नच्च ेषु मनौषिभिः ॥ २७१ ॥ पाठीनप्टछस्य समानवर्णं मीनात् खटत्तां लघु नातिसूर्द्या । उत्पद्यते वारिचराननेष्

मीनाख ये मध्यचराः पयोधेः ॥ २७२ ॥

ग्रुद्धाफलसमं यत्तु मौक्तिकं तिमिर्ज लघु। पाटलीपुष्यमङ्काग्रमल्पकान्ति सुवर्त्तुलं॥ २७३ ॥

तर्जमा।

अखिनी आद सात्ताइग्र नचचके मध्ये अखिनीसे लेकर अखेषातक यही नौ नचचमे पयदाइत्या मोति चोजनमे बड्ठत् भारी, मधा नचचसे ज्येष्ठा नचचतक यही नौ नचचजातका मोति फकत् चोजनी और मूल-नचचसे रेवती नचचतक् यही नौ नचचजातका मोति चोजनमे हाल्का होता है । २७१।

जो मक्तलि ससुद्रमे पयदा चौति चैं, उस्के सुमे मोति पयदा चोता चै, मक्तलिजातका मोति बज्जत् गोल, देखनेमे कोटा, चोजनमे चाल्का चौर उस्का वर्ण वोयाल मक्तलिके पिठके समान । २७२।

तिमि मकलिसे जो मोति पयदा होता है, उस्का डौल घुंघटी अर्थात् राुद्धाके लमान, चोजनमे बज्जत् हाल्का, पाटलीफुलके समान रज़मे उस्दा, देखनेमे उत्तम चौर कदमे गोल, लेकिन ज्यादा आवदार नहिं। २७३।

291 20

TRANSLATION.

271. The nine species of Pearls obtained from the first nine stars of the Aswini order from Aswin to Aslesá. are very heavy—those produced by the next nine from Maghá to Ieshthwá are less so; while those produced by the rest from Málá to Revati are very light.

272. Pearls are also obtained from the mouth of sea-fish. Such pearls are singularly round, small and light, and in color are like the back of the sheat fish, (Silurus Boalis).

273. Those Pearls that originate in whales, are gunjá-shaped^{*} and pátali-colored.[†] They are very light and agreeably round, but are not highly lustrous.

অহুবাদ।

অশ্বিষ্ণাদি সপ্তবিংশতি নক্ষত্রের মধ্যে অশ্বিনী হইতে অশ্লেষা পর্য্যন্ত এই নবনক্ষত্রজাত মুক্তা ওজনে অতিগুরু, মঘা হইতে জ্যেষ্ঠা পর্য্যন্ত এই নবনক্ষত্রজাত মুক্তা ওজনে গুরু এবং মূলা হইতে রেবতী পর্য্যন্ত এই নবনক্ষত্রজাত মুক্তা ওজনে লঘু হইয়া থাকে। ২৭১।

যে সকল মৎস্থ সমুদ্রে জন্মে, তাহাদিগের মুথে মুক্তা উৎপন্ন হয়, মৎস্যজাত মুক্তা অতিগোলাকার, আকারে ক্ষুদ্র, ওজনে লঘু হয়, এবং তাহার বর্ণ বোয়াল-মৎস্যের পৃষ্ঠভাগের বর্ণ সদৃশ। ২৭২।

তিমিমৎস্য হইতে যে মুক্তা জন্মে, তাহা আকারে গুঞ্জার (কুঁচের) ন্যায়, ওজনে অতিলঘু, পাটলীপুষ্প-সদৃশ বর্ণবিশিষ্ট, উত্তম গোলাকার, কিন্তু অধিক তেজ-বিশিষ্ট হয় না। ২৭৩।

* Patali is the trumpet flower, *Bignonia Suaveolens.*— Williams. + A red and black berry of Abru's Precatorius forming the smallest (?) of the jeweller's weights averaging about 15 grains Troy.— Williams.

मणिमाचा।

मूचम्। वातपित्तकफद्दन्द्वचन्द्विपातप्रभेदतः । चप्तप्रकतयो मीनाः चप्तघा तेन मौक्तिकं॥ २०४॥ चघिष्ठमरूणं वातात् च्यापीतं मृदु पित्तत: । घुद्धां ग्रुक् कफोट्रेकात् वातपित्तान्मृदुचघ्ः॥ २७५ ॥

तर्जमा।

वायु, पित्त, कफ; वायुपित्त; कफपित्त; वायुकफ चौर वायुपित्तकफ यही सात किसिमकी मछलिभी साब प्रकारकी होति है, इसवास्ते मछलिसे पयदाज्जया मोतिभी सात तरहेका होता है। २७४।

जिस् सक्षतिमे चावा ज्यादा चोगि, उस्से पयदा-ज्ञया मोति चोजनमे बज्जत् चालका, चरुणवर्ण ; जिस् मक्षतिमे पित्त जप्रादा चोगा, उस्से पयदाज्जया मोति चाल्का पीलारज्ज, चौर जेरा ठोकरसे भट टुट् जावेगा ; जिस् मक्षतिमे कफ ज्यादा चोगा, उस्का पयदाज्जया मोति चोजनमे भारी, चौर सफेद रज्ज ; चौर जिस् मक्षतिमे बायुपित्त ज्यादा चोगा, उस्का पयदाज्जया मोति चोजनमे बज्जत् चालका, चौर जेरा ठोकरसे टुट् जावेगा '२७५।

293 %

TRANSLATION.

274. Fishes are divided into seven kinds, according to the preponderance of one, two, or all of the three vital properties—the air, bile and cold; and so are the Pearls produced by the finny kind.

275. Pearls which come from fish into whose composition the air principally enters, are exceedingly light and reddish brown; those produced by bilious fish are yellowish and brittle; those produced by fishes in which cold preponderates, are heavy and white; and those which originate in fish predominated over by the air and bile, are brittle and excessively light.

অহ্বাদ।

বাত, পিত্ত, কফ; বাতপিত্ত; বাতকফ এবং বাতপিত্ত-কফ; এই সপ্তবিধ ধাতুপ্রাধান্থনিবন্ধন মৎস্থ সপ্তবিধ হইয়া থাকে, স্নতরাং তজ্জাত মুক্তাও সাতপ্রকার হয়। ২৭৪।

বাতপ্রধান মৎস্তজাত মুক্তা ওজনে অতিশয় লঘু ও অরুণবর্ণ; পিত্তাধিক মৎস্যোদ্ভব মুক্তা ঈষৎ পীতবর্ণ ও ভঙ্গ-প্রবণ; কফস্বভাব মৎস্যোৎপন্ন মুক্তা ওজনে ভারী ও শুরু-বর্ণ এবং বাতপিত্তাধিক মৎস্তসম্ভব মুক্তা ভঙ্গপ্রবণ ও ওজনে অতি লঘু । ২৭৫।



मणिमाचा।

मूलम्। वात खे ग्नभवं खूलं पित्त खे ग्नजमच्छकं। सर्व्वलिङ्गप्रयोगेण साद्मिपातिकसुच्यते। एकजा: गुभदाः प्रोक्तासया वे साद्मिपातिकाः॥ २७६॥ भौजङ्गमं नीलविग्रुद्वष्टत्तं सर्व्वं भवेत् प्रोज्जूलवर्ण्योभं। नितान्तधौतप्रतिक ख्यामान-निस्त्विं ग्रधारासमवश्रोभं॥ २७७॥ मुजङ्गमास्रो विषवेगहप्ताः स्त्रीवास्ठकेवं शभवाः ष्टथिव्यां। काचित् कदाचित् खलु पुष्यदेशे तिष्ठन्ति ते पर्य्यति तान् मनुष्यः॥ २७८॥

तर्जमा।

जिस् मक्टलिमे बायुकफ ज्यादा होगा, उस्का पयदा-ऊया मोति कट्मे कुच बड़ा; जिस् मक्टलिमे पित्त-कफ ज्यादा होगा, उस्का पयदाऊ्ठया मोति बऊत् साफ खौर निम्नल ; जिस् मक्टलिमे बायु पित्त कफ तिनो समान होगा, उस्का पयदाऊ्ठया मोति पूर्व्यलिखित तिन गुणयुक होगा; खौर दूसी सातकिसिम्की मक्टलिके मोतिके मध्ये जो मोति एकधातुप्रधान खयबा सर्व्यधातुप्रधान मह्तिसे पयदा होए, वही शुभदायक है। २७६।

सांपके मस्तकमे जो मोति पयदा घोता छै, वच्च उस्दा, गोल, बऊत् साफ और जेनाति ऊद तलवारके बाट्के समान नीलारङ । २०७।

जिस् सर्पके मस्तकमे मोति पयदा घोता है, वह बासुकि-बंशका सांप घोता है, और ऐसा सांप जमीनपर घरजगहे नहि पयदा घोता, कदाचित् किसी पबिच देशमे ऐसा सांप पाया याता है। २७८८।

295 \$

TRANSLATION.

276. Pearls produced by fish predominated over by the air and cold, are rather large; those produced by fish in which bile and cold preponderate are very transparent; and those produced by fish into which the three substances enter in equal proportions, combine all the first-mentioned qualities. Of these, those only into the composition of which either one substance or all the three enter, are productive of good.

277. Pearls which adorn the serpent's crest, are finely round and highly shining ; and reflect a beautiful blue halo like the flash of a polished sword.

278. Those serpents that bear Pearls on their head are the descendants of $V \acute{asuki}^*$; these are not born everywhere, and are rarely seen by men in some sacred ground.

অন্থবাদ।

যে মৎস্তে বাতশ্লেম্মার ভাগ অধিক, তত্ত্বৎপন্ন মুক্তার আকার কিঞ্চিৎ ব্লহৎ হয়; পিত্তশ্লেম্মাপ্রধান মৎস্তজাত মুক্তা অতিস্বচ্ছ এবং বাত-পিত্তকফাধিক মৎস্তোৎপন্ন মুক্তা প্রথমোক্ত ত্রিবিধ লক্ষণাক্রান্ত হইয়া থাকে। উক্ত সপ্রবিধ মুক্তার মধ্যে যে গুলি একধাতুপ্রধান বা সর্ব্বধাতু-প্রধান মৎস্তহইতে জন্মে, তাহারাই শুভজনক। ২৭৬।

ভুজঙ্গমস্তকজাত মুক্তা উত্তমগোলাকার, অতিশয় উজ্জ্বল, এবং শাণিত করবালের ধারের ন্থায় বিশুদ্ধ নীল-আভাযুক্ত হয়। ২৭৭।

যে সকল ভুজঙ্গের মস্তকে মুক্তা জন্মে, তাহারা বাস্ত-কির বংশসমুদ্ভূত এবং সে সকল সর্প পৃথিবীর সকল স্থানে জন্মে না, কদাচিৎ কোন পবিত্র প্রদেশে তাহাদিগকে দেখিতে পাওয়া যায়। ২৭৮।

* Sovereign of the snakes.

मूलम्। फणिजं वर्त्तुलं रग्यं नीलच्छायं महाद्युति । युण्युह्वीना न पर्यन्ति वासुत्रे: कुलसम्भवं ॥ २७१ ॥ भूगालकोलामलकोलग्रुच्चा-फलप्रमाणास्तु चतुर्विधासाः । स्युत्रेद्ध्यवाझद्भववैश्वश्रूट्रा: सर्पेषु जाताः प्रवरास्तु सर्व्वाः ॥ २८० ॥ प्राण्यापि रत्नानि धनं त्रियग्वा राजञ्चियग्वा मह्ततीं दुरापां । तेजोऽन्विता: युण्प्रद्धतो भवन्ति सुक्ताफलस्यास्य विधारणेन ॥ २८९ ॥

तर्जमा।

सांपके मस्तकका पयदा ऊया मोति गोच, देख्नेमे खुब-सुरत, नीलरङ्गकी आभासचित, वऊत् रोसन, ऐसा मोति पुष्यचीन आदमीको आंख्से देख्नामी नसीब नचि चोता। २७८।

सांपके सखकमे जो मौति पयदा होता है, यहभी वाह्मण, चन्नि, बैख और अद्रके समान चारवर्णका है, उस्मेसे जो वाह्मणवर्ण होए, उस्का कद खांकुलके फलके समान; जो चन्त्रिवर्ण, उस्का कद आमलाफलके समान; जो बैखवर्ण, उस्का कद क्रोटे वैरके समान और जो अद्र-वर्ण, उस्का कद ग्रुज्जाके समान हैं। २८०।

पुण्युवान् आदमी वज्जत् रत, धन, लच्मी, या बज्जत् सुस्किलसे डासिल होनेवाली राचलच्मीको डासिल करके जिस्तरहसे चमकति, पेशानी और तुराणी चेहारा होते है, उसी तरहसे सांपके मक्तकका एक मोति धारण करनेसे तेजवान हो सके है। २८१।

297

TRANSLATION.

279. Persons void of merit cannot see the class of Pearls under description;—the exceeding brilliance and beauty of which are hidden from their view.

280. Such Pearls as are found on the head of serpents, are divided into four classes called after the names of the four principal castes. Of these, those which are Brahmins, resemble in form $Shyá-kula^*$; the Kshetriya class are like the fruit of the *Emblic Myrobalan*; the Vaisya Pearls are like common plums; while the Sudra ones are gunjá-shaped.

281. The power which is attained by virtuous people through the possession of innumerable gems and great wealth, through ordinary prosperity or through regal good fortune, is attained by wearing one serpent-begotten Pearl.

অহ্বাদ।

ফণীর মন্তকোদ্ভূত, গোলাকার, রমণীয়, নীলছায়া-বিশিষ্ট ও অতিতেজস্বী মুক্তা পুণ্যহীন ব্যক্তির নয়নগোচর হইবার নহে। ২৯৭।

সর্পমন্তকে যে সকল মুক্তা উৎপন্ন হয়, তাহারা ব্রাহ্মণ, ক্ষত্রিয়, বৈশ্ঠ ও শূদ্রভেদে চতুর্বিধ হ'ইয়া থাকে। তন্মধ্যে যেগুলি ব্রহ্মবর্ণ, সেগুলি শ্যাকুলের আয়; যেগুলি ক্ষত্রিয়বর্ণ, সেগুলি আমলকীর আয়; যেগুলি বৈশ্যবর্ণ, সেগুলি সামান্য কুলের আয় এবং যেগুলি শূদ্রবর্ণ, সে-গুলি কুঁচের আয় হয়। ২৮০।

পুণ্যবান্ লোকেরা প্রচুর রত্ন, ধন, সামান্য শ্রী অথবা অতিচুপ্র্রাপ্য মহৎ রাজশ্রী প্রাপ্ত হইয়া যেরূপ তেজস্বী হন, একটী সর্পজাত মুক্তাধারণে সেইরূপ তেজস্বী হইতে পারেন। ২৮১।

* A thorny shrub.

LL

मगिमाला।

मूचम्। जिज्ञासया रत्नविनिच्चयर्ज्ञः ग्रुभे सुह्रर्त्ते प्रयतैः प्रयतात् । रचाविधानं समहदिधाय चच्चार्यीपविष्टं क्रियते यदा तत् ॥ २८२ ॥ तदा महदुन्द्रभितूय्र्यघोषै-घनैधनैराव्रियतेऽन्तरीचं । न तं भुजङ्गा न तु जातुधाना न राचसा नापि च दुष्टलोका: ॥ हिंसन्ति यस्याहिश्रिरःसमुद्यं सुक्ताकलं तिष्ठति कोषमध्ये॥ २८२ ॥ भेकादिष्ट्वपि जायन्ते मण्यो ये क्वचित् क्वचित् । भौजङ्गममणेखुल्यास्ते विज्ञेया दुधोत्तमैः ॥ २८४ ॥

तर्जमा।

जिस्वक कोइ आदमी रत्नपारचीके मतके अनुसार नेकसायेतमे सांपके मस्तक से पयदा ऊये मोतिको मकानमे रखते के, उस्वक्तमे आकाश्रमराइलमे घन घन दुन्धुमि बाजे, की धुन होति के, इस् कारण जो आदमी खाजानेमे सांपका मोति रक्खे, वह आदमी कभी सांप, राचस, निशा-चर और डाकु वगैरहसे भय नहि रख्ता । २८२। २८३ ।

किसि किसि जगइमे मेढ़ककेभी मस्तकमे मोति होता है, परिइत लोक उस् मोतिकोभी सांपके मोतिके समान कहते हैं। २८४।

299 8

TRANSLATION.

282-283. When in an auspicious hour, a person carefully keeps such a gem in his house, in conformity with the instructions of the authorities, the skies resound with the sound of the *Dundhuvi*;* and such a person has nothing to fear from serpents, Rákshasas[†] and other demons, or from wicked people.

284. In certain places, Pearls are found on the head of frogs; learned men class these with serpent Pearls.

अञ्चर्गन ।

যখন কোন ব্যক্তি রত্নপরীক্ষকদিগের অভিমত শুভলগ্নে সর্পোদ্ভব মুক্তা অতিযত্নপূর্ব্বক গৃহে রক্ষা করেন, সেই সময়ে আকাশমগুলে ঘন ঘন ছন্দুভিধ্বনি হইতে থাকে। এবং যে ব্যক্তির কোষমধ্যে সর্পমুক্তা থাকে, সে ব্যক্তি কখনই সর্প, রাক্ষস, অপরাপর নিশাচর এবং ছুফ্টলোক হইতে ভীত হয় না। ২৮২। ২৮৩।

কোন কোন স্থানে ভেকাদির মস্তকেও মণি জন্মিয়া থাকে, পণ্ডিতেরা সেই মণিকে সর্পমণির তুল্য বিবেচনা করেন।২৮৪।

+ Vide ante.

* A sort of large kettle drum.

मणिमाला।

मूलम्।

सैं इलिकपारली किकसीराष्ट्रतामुपर्णी पारसीकाः । कौवेरपाण्ड प्रविराटमिति सुक्ताकराचा छौ ॥ २०५ ॥ स्वात्यां स्थिते रवौ मे घैर्मुक्ता ये जलविन्दवः । गौर्णाः ग्रुक्तिषु जायन्ते तेसु का निर्मलत्विषः ॥ २००६ ॥ स्यूला मध्यास्तव्या सूच्या विन्दुमानानुसारतः । भवन्ति सुकासासाच्च मूल्य' स्यान्मानरूपतः ॥ २००७ ॥

तरजमा।

सिंचल, पारलौकिक (आव इसवक्तमे नचि मालुम, के उस्का नाम केय है), सौराष्ट्र, (सुराट), ताम्रपर्धो (पश्चिम घाटपर्व्वतके पाश), पारसीक (पारस्य देश), कौबेर (कैलासपर्व्वतके निकट), पार्ख्य (ट्राबिड़के अन्तर्गत), बिराट (मत्स्य देश), इसी आट जगहमे मोति पयदा होता है । २८५ ।

सूर्य्य जिस् समये खातीनचत्रमे रहता है, उस् समयमे जो सब जलकी बुंद सिपमें पड़ति है, उसी जलकी बुंदको दारा बज्जत् साफ अर्थात् बज्जत् रोसन मोति पयदा होता है। २८०६।

जलकी बुंदे जिस् तरहकी बर्घेंगी, उसी तरहेका मोतिभी होगा, अर्थात् अगर जलकी बुंद रति होगि, तो बड़ा मोति होगा, और मध्यम जलकी बुंदसे मध्यम मोति होगा और पत्लि बुंदसे कोटा मोति होगा। २८०।

TRANSLATION.

301 20

285. Pearls are produced in the following eight places :—Sinhala,* Páralaukika,† Saurástra,‡ Tamraparní,¶ Párasíka,∥ Kauvera,§ Pándya** and Viráta.††

286. The Pearls that originate in water-drops falling upon oysters, when the sun rests on the $Swáti^{\ddagger}$ star, are flawless and bright.

287. The size of these varies in strict concomitance with the size of the water-drops—i. e. alarge drop producing a proportionately large Pearl, and a small drop, a proportionately small one.

অন্থবাদ।

সিংহল, পারলোকিক (অধুনা অজ্ঞাত নামে পরি-ণত) সোরাষ্ট্র (স্থরাট), তাত্রপর্ণী (পশ্চিম ঘাটের সন্নিহিত), পারসীক (পারস্তদেশ), কোবের (কৈলাস-পর্ব্বতের সন্নিহিত), পাণ্ড্য (দ্রাবিড়ের অন্তর্গত), বিরাট মৎস্তদেশ), এই অফ্টস্থানে মুক্তা উৎপন্ন হয়। ২৮৫।

সূর্য্য যে সময়ে স্বাতীনক্ষত্রে অবস্থিতি করেন, সেই সময়ে যে সকল জলবিন্দু শুক্তিগর্ভে নিপতিত হয়, সেই জলবিন্দু দ্বারা অতিনির্শ্মল এবং অতিতেজস্বী মুক্তা জন্মে। ২৮৬।

রৃষ্টিবিন্দু সকল যে পরিমাণে পতিত হইবে, মুক্তাও সেই পরিমাণে জন্মিবে, অর্থাৎ স্থুলবিন্দু দ্বারা স্থুল, মধ্য-বিন্দু দ্বারা মধ্যমাকার এবং অতিসূক্ষ্মবিন্দুতে অতিক্ষুদ্র মুক্তা উৎপন্ন হইবে। ২৮৭।

* Ceylon. ‡ Surat.—(Vide antê.) Persia. § ** Included in Drávira.	 Cannot be identified now. T Near the Western Gháts. Adjoining the Kailásha Mountain. +† Matsyadesha.
‡‡ The star Arcturus (as for	rming the fifteenth lunar asterism.)

मणिमाचा।

मूलम्। सुचिग्धं मधुरच्छायं मौकिकं सिंचलो इवं। पारले किकसम्भूतं मीकिकं निविदं गुरु॥ २८८ ॥ ताम्रपर्णी भवं ताम्वं पीतं पारससमवं । ईषच्छ्यामञ्च रूचच्च कावेरे द्विया ह्वमौकिकं। पाण्डयदेशे द्विवं पाण्डु सितं रूचं विराटजं ॥ २८८ ॥ रुक्तिण्याखा तु या शुक्ति स्नत्प्रसूति: स्उर्लभा। तच जातं सितं स्वच्छं जाती फलसमं वरं॥ २८० ॥

तर्जमा ।

सिंइलदेशी मोति बऊत् चमकदार और साफ मीमके समान रङ्ग, पारलौकिक देशका पयदाऊया मोति बऊत् ठोस और चोजनमे बऊत् भारी । २८०८ ।

ताम्रपर्णा देशका पयदाज्ञया मोति तांवेके रङ्ग, पारस्य देशका मोति पीला रङ्ग, कौवेर देशका मोति योड़ा म्याम रङ्ग और बडा कर्कश, पार्ण्ड्यदेशका मोति फिका सफेद, बिराट देशका मोति शुक्तरङ्ग और कर्कश । २००८।

क्किपणी नामकी एक जात सिप पयदा होति है, लेकिन उस् जातकी सिप बज्जत् कम है, उस्से जो मोति पयदा होता है, वह नेहायेत् खोगरज़, सफेद और बज्जत् साफ और जायफलके समान वड़ा, इस, तरहेका मोति काविल इज्जत्के हैं। २१०।

TRANSLATION.

303 \$

288. A Cingalese Pearl is very cool to the touch, pure and honey-colored; a *páralaukika* Pearl is very substantial, and consequently heavy.

289. A Pearl of the *Támraparní* country is copper-colored; a Persian Pearl is yellow; a *Kauvera* Pearl is gray and frightfully rough; and a Pearl produced in *Pándya* is white and rough.

290. There is a particular oyster called *Rukmini*, which is very rare. The pearls found in it are white, transparent and large as nutmegs. They are much coveted.

অন্থবাদ।

সিংহলদেশীয় মুক্তা অতিস্নিগ্ধ এবং বিশুদ্ধ মধুর ত্যায় বর্ণবিশিষ্ট; পারলোকিকোৎপন্ন মুক্তা অত্যন্ত নিরেট, স্থতরাং ওজনে ভারী হইয়া থাকে। ২৮৮।

তাত্রপর্ণীসমূড়ত মুক্তার বর্ণ তাত্রের ন্যায়; পারস্যদেশীয় মুক্তা পীতবর্ণ; কোবেরদেশোদ্ভব মুক্তা ঈষৎ শ্যামবর্ণ ও অতিকর্কশ; পাণ্ড্যদেশোৎপন্ন মুক্তা পাণ্ডুবর্ণ এবং বিরাট-দেশজাত মুক্তা শুক্লবর্ণ ও কর্কশ হইয়া থাকে।২৮৯।

রুক্মিণী নামে একজাতীয় শুক্তি জন্মে, তঙ্জাতীয় শুক্তি অতিচুর্লভ, তাহাতে যে মুক্তা উৎপন্ন হয়, তাহা শুক্লবর্ণ, স্বচ্ছ ও জায়ফলের ন্যায় ব্বহৎ হয়, এবং এ প্রকার মুক্তা অতিআদরণীয়। ২৯০।

मणिमाला।

म्लम् ।

कायावदर्भुलं रस्यं निर्होषं यदि लभ्यते । अम ूल्यं तदिनिद्द्िष्टं रतन्तचणकोविदैः । दुर्लमं नृपयोग्यं स्यादल्पभाग्ये ने लभ्यते ॥ २८९ ॥ बच्चादिजातिभेदेन गुक्तयोऽपि चतुर्विधाः । तास सर्व्वास जातं हि मौक्तिकं स्याच्चतुर्विधं ॥ २८२ ॥ बाच्चणस्तु सित: स्वच्छा गुरु: खिग्धः प्रभान्वितः । आद्यारक: चवियः स्यूलस्तयारुणविभान्वित: ॥ २८२ ॥

तर्जमा।

रत्नपारची पण्डितों के मतके चनुसार उक्तम कुटदेने-वाला चौर गोल, देखनेमे रमणीय चौर वेचयेव मोति बज्जत् दुर्लम हैं; चौर वेकिमत् है, चौर राजाके योग्य है, उस्जातका मोति कम नसीवके योग्य नहिं, बड़े एक वालमन्द प्रतापमानके योग्य हैं। २८१।

जिस् प्रकारसे बाह्मण, चत्नि, वैश्व और श्रद्र चारजात चोति हैं, उसी प्रकार सिपमेभी चारजात है, उस्से पयदा-ऊया मोतिभी चार जातका है। २८२।

जो मोति सफेद रङ्ग, साफ, चोजनमे भारी, चमक-दार चौर तेजस्वी घोए, उस्को वाह्मणवर्ण कहते हैं; जो मोति सुखीमायेल, चौर देखनेमे वड़ा, सुख-रङ्ग चौर छुटदेनेवाला, वह मोति चन्निवर्ण हैं। २८३।

305

TRANSLATION.

291. According to the authorities, perfectly circular and chaste Pearls casting a beautiful shade, are rarely found and are of priceless worth, they being fit enjoyment for princes. Such Pearls are beyond the reach of unlucky individuals.

292. The four-fold division of caste holds also with oysters; accordingly oyster-begotten Pearls are of four kinds.

293. Such of these as are white, transparent, weighty, cool and shining, are reckoned Brahmins; those which are ruddy, and large and which possess a reddish light, are Kshetriyas.

অন্হবাদ।

রত্নলক্ষণবিৎ পণ্ডিতদিগের মতে উত্তম ছায়াবিশিষ্ট, স্থন্দর গোলাকার, দেখিতে রমণীয়, অথচ নির্দ্দোষ মুক্তা অতিচুর্লভ, অমূল্য এবং রাজভোগ্য, তঙ্জাতীয় মুক্তা অল্প-ভাগ্য ব্যক্তিগণের অপ্রাপ্য। ২৯১।

ব্রহ্মাদি জাতিভেদে শুক্তি চতুর্কিধ হইয়াথাকে, স্থতরাং শুক্তিজাত মুক্তাও চতুর্ক্ষিধ হয়।২৯২।

যে সকল মুক্তা শুক্লবর্ণ, স্বচ্ছ, ওজনে ভারী, স্নিগ্ধ ও প্রভাবিশিষ্ট, তাহারা ব্রহ্মবর্ণমধ্যে গণ্য; যেগুলি ঈষৎ রক্তবর্ণ, আকারে রহৎ ও অরুণবর্ণ প্রভাবিশিষ্ট সেগুলি ক্ষত্রিয়বর্ণমধ্যে গণনীয়। ২৯৩।

MM

मणिमाला।

मूचम्।

वैश्वस्वापीतवर्णीऽपि सिग्धः खेतप्रभान्वितः । त्रद्रः ग्रुक्तवपुः सूच्यस्तया स्यूलोऽसितद्युतिः ॥ २८४ ॥ वंश्वजं शश्सिङ्गाशं ककोलफलमाचर्क । प्राप्यते बज्जभिः पुर्ख्येसह्तं देवसस्पतं ॥ २८५ ॥ पञ्चभूतससुद्रे कादंशः पञ्चविधो भवेत् । स्ताः पञ्चविधास्तामां ययालचणसुच्यते ॥ २८६ ॥

तर्जमा।

जो मोति कम पीलारङ, चमकदार, सफेद और कुटदेने-वाला घोए, उस्को वैश्ववर्ण कच्चते चै, और जो मोति सादारङ, लेकिन क्रोटा, और जो मोति कट्से वड़ा, लेकिन कालारङ्ग वच्च शूट्रवर्ण मोति चै॥ २८४॥

वांश्वसे जा मोति पयदा घोता है, वच्च देखनेमे चन्द्रके समान शुक्तवर्ण और उस्का कद ककोलफलके समान वड़ा, दूस् जातका मोति खास, कोदू कोद्द लोक बज्जत् पुष्युके जोरसे दो एक पावे। २८५ ।

प्रस्वी चाद पांच मचासूत चर्यात् माट्ठी, पाणि, चावा, चाग चौर चाकाग्र इसी पांच तत्त्वके कमी वेशीसे वांश्रभी पांचप्रकारका चोता चे, इस्कारण वांशजातका मोतिभी पांचप्रकारका चोता चे। २८६ ।

S

TRANSLATION.

307

294. Those Pearls that are yellowish and cool, and which are possessed of a white lustre, are Vaisyas; lastly of Súdra Pearls, some are white and small while the rest are black and large.

295. Pearls which originate in bamboos, are clear as the moon; and are like the $kakkol^*$ fruit in shape. They are generally enjoyable by the gods. Some through rare merit obtain possession of one or two.

296. There are five species of bamboos, on account of the preponderance in them of one or other of the five elements; consequently bamboo Pearls are classified under five distinct heads.

অন্থবাদ।

যে সকল মুক্তা ঈষৎ পীতবর্ণ, স্নিগ্ধ অথচ শ্বেতপ্রভা-বিশিষ্ট, তাহারা বৈশ্যবর্ণমধ্যে পরিগণিত এবং শুদ্রজাতীয় মুক্তার মধ্যে কতকগুলি শুক্লবর্ণ ও ক্ষুদ্রকায়, এবং কতক-গুলি ক্লম্ববর্ণ ও ব্নহৎকায় হইয়া থাকে। ২৯৪।

বংশজাত মুক্তা দেখিতে চন্দ্রের ন্যায় শুরুবর্ণ, আকারে কক্কোল (স্থগন্ধি দ্রব্য বিশেষ) ফলের সদৃশ, এই জাতীয় মুক্তা প্রায়ই দেবভোগ্য, কেহ কেহ বহু প্রণ্যবলে ছুই একটি প্রাপ্ত হইয়া থাকেন। ২৯৫।

পৃথিব্যাদি পঞ্চ্ততের প্রাধান্যনিবন্ধন বংশ পঞ্চবিধ হয়, ন্থতরাং বংশজাত মুক্তাও পাঁচপ্রকারের হইয়া থাকে। ২৯৬।

* A fragrant fruit.

मणिमाचा।

मूलम्। पार्थिवो ग्रुरुरच्छा च तैजसी तेजसा लघुः। वायवी च चढुः खूला गागनी कोमला लघुः॥ २८७॥ चाप्या खिग्धा च्ध्रं गुक्ता पच्चैताः प्रवरा मताः। चासां धारणमाचेण व्याधिः कोऽपि न जायते॥ २८८०॥ चतुर्धा मौक्तिके च्छाया पीता च मधुरा सिता। नौला चैव समाख्याता रत्नतत्त्वपरीच्चकैः॥ २८८॥

तर्जमा ।

जिस् मोतिमे एष्वीका हिस्सा ज्यादा है, वह चोज-नमे भारी, चौर वज्जत साफ; जिस् मोतिमे तेजका हिस्सा जप्रादा है. वह चोजनमे हाल्का; जिस् मोतिमे हावाका हिस्सा ज्यादा है, वह घोड़ा ठोकरसे टुट जाता हे चौर कट्से वड़ा, चौर जिस् मोतिमे चाकाशका हिस्सा जप्रादा है, वह छ्नेमे चाच्छा चौर चेाजनमे हाल्का। २८७।

जिस् मोतिमे जलका हिस्सा ज्यादा है, वह चमकदार, सादा और साफ; यही पांचजातके मोति पहेरनेसे किसी तरहकी व्याधि अर्थात् बदनके विमारिका खौफ नहिं। २९८८।

रत्नपार्ची पण्डित पीला, मधुके समान रङ्ग, ग्रुत्तवर्णे और नीलवर्ण, यघी चारप्रकारका आक्षा मोतिकी कडते है। २८९।

309 20

TRANSLATION.

297. Earthy Pearls are heavy and spotless; energy-begotten Pearls are very light; airy Pearls are exceedingly brittle and thick; skyey Pearls are very soft and light.

298. Watery Pearls are cool and eminently white. All these kinds are superior; and the wearing of them wards off disease.

299. Authorities in the matter of gems mention four kinds of shade as belonging to Pearls; viz., the yellow, the honey-colored, the white and the blue shade.

অন্থবাদ।

পার্থিবী মুক্তা ওজনে ভারী ও অতিনির্ম্মল, তৈজসী মুক্তা ওজনে অতিলঘু, বায়বী মুক্তা অতি-ভঙ্গুর ও স্থুল, গাগনী মুক্তা অতি-কোমল অথচ ওজনে লঘু। ২৯৭।

জলীয়া মুক্তা স্নিগ্ধ, অত্যন্ত শুরুবর্ণ হইয়া থাকে, এই পঞ্চবিধ মুক্তাই অতিশ্রেষ্ঠ এবং এই সকল জাতীয় মুক্তা ধারণ করিলে কোনপ্রকার ব্যাধিভয় থাকে না। ২৯৮।

রত্নবিৎ পণ্ডিতেরা পীত, মধুর, শুরু ও নীল এই চারি-প্রকার ছায়া মুক্তাতে নির্দেশ করিয়া গিয়াছেন। ২৯৯।

मणिमाचा।

मूलम्। पीता लच्चीप्रदाच्छाया मधुरा बुद्धिवद्धिनी। शुक्ता यश्वकरी च्छाया नीला सौभाग्यदायिनी॥ ३००॥ सितच्छाया भवेदिप्रः चन्त्रियञ्चाकरभ्मिमान्। पीतच्छाया भवेदिश्वः शूद्रः कृष्णरुचिर्म्यतः॥ ३०९॥

त्रय सुत्ता-गुगाः ।

स्तारञ्च सटन्तञ्च स्वच्छञ्च निर्मालन्तया। घनं सिग्धञ्च सच्छायं तयास्फुटितमेव च। त्रष्टौ गुणाः समाखाता मौक्तिकानामग्रेषतः ॥ ३०२।

तर्जमा ।

पौला चाभायुक्त मोति दौलतका ज्यादा करनेवाला है; मधुके समान चाभाविधिष्ट मोति वुद्धिको देनेवाला, गुक्लवर्ण चाभायुक्त मोति यथका ज्यादा करनेवाला है चौर नौल चाभायुक्त मोति सुभाग देनेवाला। ३००।

शुक्त आभायुक्त मोति वाह्मणवर्णं ; प्रातःकालके सूर्य्यके समान आभायुक्त मोति चत्त्रिवर्णं ; पीत आभायुक्त मोति वैग्यवर्ण और कृष्ण आभायुक्त मोति उद्रद्रवर्णमे सुमार किया गेया है । २३१ ।

मोतिका गुगा।

सुतारत्व, सुटत्तल, सच्छत्व, निर्मालत, घनत्व, सिग्धत्व, सुच्छायत्व चौर चरफुटितल यही चाटप्रकारके गुण मोतिमे हे।ता है। ३०२।

311 20

TRANSLATI

300. The first brings on wealth ; the second fosters the understanding ; the next brings about fame ; and the last is the harbinger of good luck.

301. A Pearl with a white shade belongs to the Brahmin, with a pale-red shade to the Kshetriya, with a yellow shade to the Vaisya, and with a black shade to the Sudra order.

Properties of Pearls.

302. A Pearl is named after the name of the quality which forms its distinctive feature; and eight sorts emerge as the consequence of this classification.

অন্থবাদ।

পীতচ্ছায়া লক্ষ্মীরদ্ধিকারিণী, মধুরচ্ছায়া বুদ্ধিদায়িনী, শুক্লচ্ছায়া যশোবর্দ্ধিনী এবং নীলচ্ছায়া সোভাগ্যদায়িনী হইয়া থাকে। ৩০০।

শুরুচ্ছায়াবিশিষ্ট মুক্তা বিপ্রবর্ণ, তরুণ-অরুণচ্ছায়া-বিশিষ্ট মুক্তা ক্ষত্রিয়বর্ণ, পীতচ্ছায়াবিশিষ্ট মুক্তা বৈশ্যবর্ণ এবং রুষ্ণচ্ছায়াবিশিষ্ট মুক্তা শূদ্রবর্ণমধ্যে পরিগণিত। ৩০১।

মুক্তার গুণ।

স্থতারত্ব, স্থেরতত্ব, স্বচ্ছত্ব, নির্ম্মলত্ব, ঘনত্ব, স্নিগ্ধত্ব, স্লচ্ছায়ত্ব ও অক্ষুটিতত্ব, এই আটপ্রকার গুণ মুক্তায় বিদ্য-মান থাকে। ৩০২।

मूलम्। तारकाद्युतिसङ्काशं सुतारमिति गद्यते । सर्व्वतो वर्त्तुलं यत्तु सडटनं तन्निगद्यते ॥ ३०३ ॥ स्रव्हः दोषविनिर्मुत्तं निर्मलं मलवर्जितं । युकत्वं तुलया यस्य तद्धनं मौतिकं वरं ॥ ३०४ । श्रीतांशुविस्वसङ्काशं मौतिकं सिग्धमुच्यते । छायासमन्वितं यच्च सुच्छायं तन्तिगद्यते । वर्णरेखाविचीनं यत् तत् स्यादस्फ् टितं शुभं ॥ ३०५ । श्रिकाचसमाकारं शुभांशुश्रतयोजितं । भषराजप्रतिच्छायं मौतिकं देवभूषर्षं ॥ ३०६ ॥

तर्जमा।

जिस मोतिमे तारेके समान आभा निक्ले, वह खतार; जो मोति गोलाकार, वह खटन । ३०३।

जो मोति वेत्रायेव घोए, उस्को स्वच्छ कइते हैं, जो मोति मयला ना घोए, उस्को निर्माल कइते हैं और जो मोति चोजनमे भारी होए, उसको घन कहते हैं। ३०४।

जो चन्द्रके समान किरणविशिष्ट है, उस्को सिग्ध कहते हैं, जा मोति उत्तम कायाविशिष्ट अर्थात् उत्तम आभाविशिष्ट, उस्को सुच्छाय कहते हैं, और जो मोति साफ सुय्रा होए, उस्को अस्फुटित कहते हैं। ३०५ !

सफेद रङ्ग काचके समान, उत्तम किरणविशिष्ट, रोड मक्टलिके समान चाभायुक, ऐसा मोति देवताचे के गडनेके योग्य है। ३०६।

313

TRANSLATION.

303. Those Pearls which throw out starry beams, are termed sútára; those which are entirely round, are called suvritta.

304. Those which are flawless, are called *sach-chha* (transparent); those in which dirt has no place, are called *nirmala* [dirtless]; those which are weighty, are termed *ghana* [dense].

305. Those Pearls which are ray-darting like the moon, are called *snigdha* [cool]; those which cast a fine shade, are denominated *suchchháya* (finely shadowing); and finally those which are free from spots or breaks, are termed *asfutita* (not indented).

306. Such Pearls as resemble in color the white glass as are furnished with an excellent brightness, and as are possessed of a shade like the $rohita^*$ fish, are fit ornaments for the gods.

অন্নবাদ।

যে সকল মুক্তা হইতে তারার ন্যায় আভা নির্গত হয়, তাহাদিগকে স্থতার, যাহারা সর্ব্বতোভাবে গোলাকার, তাহাদিগকে স্থরত্ত কহে। ৩০৩।

যে সকল মুক্তা দোষবর্জ্জিত, তাহারা স্বচ্ছ; যাহারা মলবর্জ্জিত, তাহারা নির্শ্মল ও যাহারা ওজনে ভারী, তাহারা ঘন বলিয়া প্রসিদ্ধ। ৩০৪।

যে সমুদায় মুক্তা চন্দ্রের ন্যায় কিরণবিশিষ্ট, তাহারা স্নিগ্ধ; যে গুলি উত্তমছায়াবিশিষ্ট, সেগুলি স্লচ্ছায় এবং যাহারা ব্রণরেথাদিবিহীন, তাহারা অস্ফুটিত বলিয়া বিখ্যাত।০০৫।

থেত কাচের তায় শুরু, উৎকৃষ্ট কিরণচ্ছটাবিশিষ্ট, রোহিতমৎস্থের তায় ছায়াযুক্ত মৌক্তিক দেবতাদিগের ভূষণযোগ্য। ৩০৬।

* Cyprinus Rohita.

मूलम्। ईडक्सर्व्य ग्रुणोपेतं मौक्तिकं येन धार्थ्यते । तस्यायुर्वेद्वते लच्मीः सर्व्वपापं प्रणग्र्थति ॥ ३०७ ॥

प्रमाणवत्गौरवरफ्सियुक्तं चितं खटनं समसूच्चरन्ध्रं। चकतेतुरप्यावचति प्रमोदं चन्मौक्तिकं तद्गुणवत् प्रदिष्टं ॥ ३००० ॥ एवं समस्तेन गुणोदयेन यन्मौक्तिकं योगसुपागतं स्थात् । न तस्य भर्त्तारमनन्यजात-मेकोऽपि दोष: समुपैति सद्यः ॥ ३०९ ॥

गुणवहुरु यह हे मौक्तिकमेव तिष्ठति । चच्चलापि स्थिरा मूत्वा कमला तच वर्त्तते ॥ ३१० ॥

तरजमा।

उपरमे जिन् सव ग्रुणोको वात कांचि गेई हैं, वच्ची सब गुण्युक्त मोति जा चादमी धारण करे, उस्की उमर चौर दौलत दोनो वाड़ति हेा, चौर सर्ब्स पापनाग्र हे।ए। ३०७।

जो मोति चोजनमे भारी, जमदा, दीप्तिविशिष्ट, सफेद, गोल, समान चौर वारिकवेध सेवाय खरिददाके देखनेवालेकोभी चानन्ददेनेवाला है, एसा मोति सवसे चाच्छा है। ३०८।

जो मोति सवतरहे वेखयेव हैं, वडी मोति खपने मालेकका सव दुःखनाग्र करनेवाला हैं, और उस्के मालिकको कोद्र दुःख हे। नहिं सक्ता । ३०९।

जिम् घरमे वेद्ययेव मोति रहता है, चञ्चल दौलत उस् घरमे सब्बीदा काल उपचल रहति है। ३१०।

315 %

TRANSLATION.

307. The wearing of such Pearls leads to longevity and wealth, and purges the wearer of every sin.

308. A Pearl which is heavy, lustrous, silvery, well-rounded, which is furnished with equal and minute openings and which is a delight not only to its owner but also to the observer, is the acme of perfection.

309. Those Pearls which are possessed of every valuable quality, shield their master from every evil, and suffer nothing harmful to come near him.

310. The house which contains a perfect Pearl, the ever-restless Laksmi^{*} chooses to make her dwelling for ever and a day.

অন্থাদ।

উল্লিখিত গুণসমূহে ভূষিত মোক্তিক যে ব্যক্তি ধারণ করে, তাহার আয়ু ও লক্ষ্মীরুদ্ধি পায় এবং সর্ব্বপাপক্ষয় হয়। ৩০৭।

যে মুক্তা ওজনে ভারী, উত্তমদীপ্তিবিশিষ্ট, শুভবর্ণ, উত্তমগোলাকার, সমান অথচ সূক্ষ্মরন্ধুযুক্ত, ক্রেতা ভিন্ন অপর ব্যক্তিরও প্রমোদবর্দ্ধন করে, সেই মুক্তাই সর্ব্বাপেক্ষা উত্তম। ৩০৮।

যে সকল মুক্তা সমুদায় গুণযুক্ত, তৎসমুদায় নিজস্বামীর সমুদায় অনর্থ বিনাশ করে, এবং তৎস্বামীকে কোন দোষই স্পর্শ করিতে পারেনা। ৩০৯।

যে গৃহে গুণযুক্ত মুক্তা থাকে, স্বভাবচঞ্চলা লক্ষ্মী সে গৃহে চিরকাল নিশ্চলা হইয়া থাকেন। ৩১০।

* The goddess of wealth.

मग्रिमाला।

मूलम्।

चिन्तान तस्याकरजा विश्वेषा रूपे प्रमाखेच यतेत विद्वान्।

न च व्यवस्थास्ति गुणागुणेषु सर्व्वं च सर्व्वाक्ततयो भवन्ति ॥ ३९१ ॥

ग्रय सुत्ता-दोषा: ।

चतार: खुर्मचादोषा: षण्मध्याच प्रकीर्त्तिताः । एवं दग्ग समाख्यातास्तेषां वच्चामि लच्चणं ॥ ३१२ ॥ यचैकदेग्रे संलग्नः ग्रुक्तिखण्डो विमाव्यते । ग्रुक्तिलग्नः समाख्यातः स दोषः कुष्ठकारकः ॥ ३१३ ॥

तर्जमा।

मोतिके पयदा इस्की जगहका देखना कुछ जरुर नहिं, उस्का अयेव, ज्जनर, रङ्ग और रूप देखना चाहिए, ऐसा ना समफना चाहिए के फलाने जगहका पयदाज्जया मोति आच्छा होता है, और फलाने जगहका पयदाज्जया मोति बुरा होता है, वल्के सव जगहेांमे बुरा भाला दोनो प्रकारका मोति पयदा होता है। ३१९।

मोतिका उपयेव।

रत्नपार्ची परिइतोंने मोतिके दश्रप्रकारके अयेव कहे हैं, उस्मेर्से चारप्रकारके वर्द्धे अयेव और क्षप्रकारके मध्यम अयेव हैं, आलग आलग उस्का लच्चण लिखते है। ३१२।

जिस् मोतिके किसी रङ्ख से सिपका टुकरा लागा रह जाता है, उस्को शुक्तिलग्न दोष कहते हैं, शुक्तिलग्न अयेवका मोति पहेरनेसे कोड़की विमारि होति है। ३१३।

317 20

TRANSLATION.

311. The consideration of origin is trivial in regard to Pearls; not so the consideration of form and other qualities: no source but it produces good and bad Pearls.

Defects of Pearl.

312. The authorities mention ten kinds of defects as belonging to Pearls; of which four are principal, the rest being of a less essential character. I will treat of these now.

313. If any part of an oyster remains fast attached to a Pearl, the defect is called *sukti-lagnadosha*;* and brings on leprosy.

अञ्चर्गाम ।

মুক্তার আকারগত কোন বিশেষ বিবেচনা কর্ত্তব্য নহে, তাহার রূপ ও প্রমাণই বিবেচনীয়, কোন আকরবিশেষে যে শুভজনক বা অমঙ্গলকারক মুক্তা জন্মে, এমন নহে, সকল আকরে সকল রকম মুক্তাই জন্মিয়া থাকে। ৩১১।

মুক্তার দোষ।

রত্নবিৎ পণ্ডিতেরা মুক্তাসম্বন্ধে দশবিধ দোষের উল্লেখ করিয়াছেন, তন্মধ্যে চারিপ্রকার দোষ মহাদোষ এবং ষড়্বিধ মধ্যদোষমধ্যে পরিগণিত, ক্রমশঃ তাহাদিগের লক্ষণ নির্দ্দেশ করা যাইতেছে। ৩১২।

মুক্তার কোন একস্থানে শুক্তিখণ্ড সংলগ্ন থাকিলে তাহাকে শুক্তিলগ্ন দোষ কহে, শুক্তিলগ্ন দোষযুক্ত মুক্তা ধারণ করিলে কুন্ঠব্যাধি হ'ইতে পারে। ৩১৩।

* Literally, the defect incident to the fact of an oyster fragment being attached.

मणिमाचा।

मूलम्। मौनलोचनअङ्काशो दृश्वते मौकि के तु यः । मौनाचः स तु दोषः खात् पुचनाश्वरो धुवं ॥ ३९८ ॥ दीप्तिचीनं गतच्छायं जठरं तदिदर्वुधाः । दारिद्रग्रजनकं यसात् तसात्तत्परिवर्ज्जयेत् ॥ ३९५ ॥ मौकिकं विद्रुमच्छायमतिरक्तं विदुर्वुधाः । तसान् सन्धारिते च्त्युर्जीयते नाच संश्ययः ॥ ३९९ ॥ उपर्युपरि तिष्ठन्ति वलयो यच मौकि के । चिटन्तं नाम तस्योक्तं सौभाग्यच्यकारकं ॥ ३९७ ॥

तर्जमा।

मोतिमे मक्तलिके चांखके समान एकतरच्वा निशान रहेनेको मीनाद्य अयेव कहते हैं; और वह अयेब लेडुकेका नाशकरनेवाला है। ३१४।

मोतिमे दीप्ति और आभा ना रहनेको जठर अयेव कहते हैं, जठर अयेवदार मोति पहरेनेसे दारिट्रा अर्थात् सुफ्लिसि होति हैं, इस कारण दूस्प्रकारका मोति कभी पहरेना मनासिफ नहिं। ३१५।

मोतिमे सुङ्गेके समान आभा निकेल्नेको अतिरक्त अयेव कइते हैं, अतिरक्त अयेवी मोतिको पहेरनेसे जरुर खत्यु होए। ३१९ ।

मोतिमे जो कड़े के समान तिन रेखा होए, उस्को चिटत्त खयेव कहते हैं, चिटत्त दोषयुक्त मोति खभाग नाग्र करता हैं। ३१७।

63

TRANSLATION.

319 \$

314. On certain Pearls, there are marks like the eye of a fish and these are hence called *mináksha*.* Pearls possessed of this defect bring about loss of sons.

315. When a Pearl is without lustre and shade, it is said to have the *jathara* defect. Such Pearls lead to poverty, and should not therefore be worn by any person.

316. When a Pearl has a shade like coral, the defect is called *atirikta*; this is inevitably fatal to the wearer.

317. The three bracelet-like streaks which are sometimes met with in Pearls side by side, are termed *trivrita*. They are destructive of good fortune.

অন্থবাদ।

মুক্তাতে যে মৎস্তের লোচনসদৃশ একপ্রকার চিহ্ন থাকে, তাহার নাম মীনাক্ষ, মীনাক্ষদোষ পুত্রনাশকর বলিয়া উল্লিখিত আছে। ৩১৪।

মুক্তাতে দীপ্তি ও ছায়া না থাকাকে জঠরদোষ বলে, জঠরদোষদূষিত মুক্তাধারণে দারিদ্র্যদশা উপস্থিত হয়, স্থতরাং তাদুশ মুক্তা কদাচ ধারণ করা কর্ত্তব্য নহে। ৩১৫।

মুক্তা হইতে বিদ্রুমের ন্থায় ছায়া নির্গত হওয়াকে অতি-রক্তদোষ বলা যায়, অতিরক্ত-দোষযুক্ত মুক্তা ধারণ করিলে অবশ্যই ধারকের মৃত্যু হইবে। ৩১৬।

মুক্তাতে যে উপরি উপরি তিনটী বলয়াকার রেখা থাকে, তাহা ত্রিত্তদোষনামে অভিহিত, ত্রিত্তদোষশালী মুক্তা সৌভাগ্য নাশ করে। ৩১৭।

* Literally, the eye of a fish.

मग्रिमाचा।

मू लम् ।

चहत्तं मौकिकं यच्च चिपिटं तन्निगद्यते । मौकिकं ध्रियते येन तस्याकौत्तिभवेत्सदा ॥ ३१८ ॥ चिकोणं त्युस्तमाखातं मौभाग्यचयकारकं । दीधें यत्तत्नृशं प्रोक्तं प्रज्ञाविध्वंसकारकं ॥ ३१८ ॥ निर्भेग्नमेकतो यच्च रूश्रपार्श्वं तदुच्यते । सदोधं मौकिकं निन्द्यं निरुद्योगकरं चि तत् ॥ ३२० ॥ चटत्तं पौडकोपेतं सर्व्वसम्पत्तिचारकं । चरस्यं गुणचीनच्च स्वत्यमूल्यच्च मौकिकं ॥ ३२० ॥

तर्जमा।

जो मोति गोल नहि, उस्को चिपिट कहते हैं, चिपिट मोति पहेरनेसे हमेसा खयग्र खर्थात् बदनामी हासिल होए। ३१८ ।

जो मोति चिकोण छोए, उस्का नाम त्यूस, त्यूस अयेवके मोति पहेरनेसे सौभाग्य नाग्र छोए और जो मोति लग्वा, उसे छाग्र कहते हैं, छाग्र अयेवके मोति पहेरनेसे बह्विजाय। ३१९।

जा मोति कोइ जगहमे टुट जाय, उसको छाए। खे कहते हैं, दूम्प्रकारका मोति वज्जत खाराप और दूस् जातका मोति पहेरनेसे आदमीको आसकत् आति है। ३२०।

जो मोति वेलकुल गोल नहिं, नानाप्रकारके बिमारी-चेंगके अयेवेांसे भराज्जया, देखनेभी खुन्टर नहिं और बज्जत् ग्रुणहीन, ऐसा मोति सव तरहमे दौलतका नाग करनेवाला, इम्कारण उस्का दामभी बज्जत् कम होता है। ३२१।

321 20

TRANSLATION.

318. That Pearl which is not perfectly circular, is called *cipita*. It brings its wearer to disgrace.

319. The Pearl which tends to be triangular, is called *trasra*. A *trasra* Pearl is inimical to good fortune. A large-sized Pearl is called *Krisha*. This Pearl is reputed to be fatal to knowledge.

320. A Pearl with a broken side is called Krisha-párswa, and brings on inactivity. It is a pest which should be carefully avoided.

321. A Pearl which is not faultlessly round, which is productive of a variety of diseases, which is not agreeable to look at, which is in short utterly void of any valuable quality, is destructive of every sort of wealth; its price is very small.

অন্থবাদ।

যে মুক্তা সম্পূর্ণ গোলাকার নহে, তাহাকে চিপিট কহে, চিপিট মুক্তা ধারণে পদে পদে অকীর্ত্তিভাজন হইতে হয়। ৩১৮।

যে মুক্তা ত্রিকোণাকার, তাহার নাম ত্র্যহ্র, ত্র্যন্র মুক্তা সৌভাগ্যনাশক, এবং যে মুক্তা দীর্ঘাকার, তাহাকে রুশ বলে, রুশ মুক্তা জ্ঞানের মহা অন্তরায় বলিয়া প্রসিদ্ধ আছে।৩১৯।

মুক্তার কোন স্থান ভগ্ন হইলে তাহাকে রুশপার্শ্ব বলা যায়, তাদৃশ মুক্তা অতিনিন্দনীয় এবং তদ্ধারণে মন্থ্য্য একবারে নিরুদ্যোগী পড়িয়া পড়ে। ৩২০।

যে মুক্তা সম্পূর্ণ গোলাকার নহে, নানা পীড়াকর দোষ-সঙ্কুল, দেখিতে রমণীয় নহে, এবং নিতান্ত গুণহীন, সেই মুক্তা সর্ব্বপ্রকার সম্পত্তিবিনাশক, এবং তাহার মূল্যও অতিঅল্প হইয়া থাকে। ৩২১।

00

मणिमाला।

मू चम्।

मौतिके यच सन्देष्ठः छचिमे सहजेऽपिवा। परीचा तच कर्त्तव्या रत्नशास्त्रविशारदैः ॥ ३२२ ॥ यच छचिमसन्देष्ठः छचिद् अवति मौतिके। उम्नो सखवणे खेष्ठे निशां तट्वासयेज्जले ॥ ३२३ ॥ परेद्युः प्रातकत्याय शुष्कवस्त्रोपवेष्टितं । इस्ते मौतिकमादाय वीहिभिच्चोपघर्षयेत् ॥ ३२८ ॥ यत्तु नायाति वैवर्ष्यं विज्ञोयं तदछचिमं। छचिमं अङ्गमाप्नोति सहजञ्चातिदीष्यते ॥ ३२५ ॥

तर्जमा ।

मोति बनाया चोए, अयवा आसल चोए, मनमे सक चोनेसे रत्नपारची परिइतके दारा उस्की परीचा कर्ना जक्र है। ३२२।

चगर किसी मोतिमे फरेवका सक चोए, तो उस् मोतिको एक रात गरम नेमकमिलाज्ज्वे पाणिझे भिगेा-कर रख्ना चाचिए । ३२३ ।

सवेरे सुखे कापड़में रखकर और छाँड्रा चांडल लेकर इातसे रगड़ना चाहिए। ३२४।

इसीतरहे करनेसे आपल सोति खाराप ना होकर औरभी साफ होगा, और वनायाड्या सोति उसीट्म टुट जावेगा। ३२५।

TRANSLATION.

323 \$

322. Whether a Pearl be real or false, whenever doubts arise concerning its genuineness, the authorities should be resorted to.

323. When doubts are entertained as to the genuineness of a Pearl, it should be placed in salt water for one night.

324-25. The next day, put it on a piece of dry cloth, and mixing it with a quantity of paddy, rub it with the hand, when if the Pearl is real, it will attain greater brightness, while if it is false, it will be broken to pieces.

অহ্বাদ।

মোক্তিক কৃত্রিমই হউক অথবা অকৃত্রিমই হউক, মনোমধ্যে সন্দেহ উপস্থিত হইলেই রত্নতত্ত্ববিশারদ পণ্ডিত দ্বারা তাহার পরীক্ষা করা কর্ত্রব্য। ৩২২।

যদি কোন মুক্তাকে কুত্রিম বলিয়া সন্দেহ উপস্থিত হয়, তাহা হ'ইলে সেই মুক্তাকে এক রাত্রি উষ্ণ লবণমিগ্রিত জলে ভিজাইয়া রাখিবে। ৩২৩।

পরদিবস প্রাতঃকালে সেই যুক্তা শুরু বস্ত্রমধ্যে রাখিয়া কতকগুলি ধান্যের সহিত একত্র করত হস্তে ঘর্ষণ করিবে। ৩২৪।

এইরূপ প্রক্রিয়া দ্বারা অক্নত্রিম মুক্তা বিবর্ণ না হইয়া অধিকতর উজ্জ্বল্য প্রাপ্ত হইবে, এবং ক্নত্রিম মুক্তা তৎ-ক্ষণাৎ ভগ্ন হইয়া যাইবে। ৩২৫।

मणिमाला।

मू लम्। चिपेत् गोमू चभाण्डे तु लवणचार पंयुते । खेदयेत् वच्चिना वापि इक्तो सौक्तिकमाददत् ॥ ३२६ ॥ वी हे खुवेण संयोज्य मद्द येच पुनः पुनः । क्वचिमं भङ्गमायाति पच्चजञ्चातिदीष्यते ॥ ३२७ ॥ सूत्तप्तमत् स्युप्रटमध्यगतन्तु कत्वा पञ्चात् पचेत् तनु ततत्व वितानगत्या । शुद्धे ततः पयसि तदिपचेत् सुरायां पक्तन्ततोऽपि पयसा श्चिनिद्यालेन ॥ ३२० ॥ शुद्धं ततो विमलवस्त्रनिघर्षणे न स्यान्मौक्तिकं विमलपद् युणकान्तियुक्तं । जस्वीरजातरसयोजनया विपकां बुर्य्यात् ययेच्छ मिच्न मौक्तिकमाश् विद्वं ॥ ३२० ॥

तर्जमा ।

नेमकमिलाइचा गौके मूचके भरेडिये वर्त्तनमे मोतिको रखकर आगपर थोडा थोडा गरम करना डोगा, वाद उस्के डातसे उठाकर धानके क्रिलकेके साथमे घिस्नेसे वनायाडिया मोति टुट जावेगा, और आयल मोति औरभी साफ रहेगा। ३२६। ३२७।

पहिले मछलिके पटी गरम करके उस्मे मोतिको रखकर आगपर घोडा गरम करना होगा, बाद उस्के दुध, सराप, या साफ पाणिमे आहेको आहेको पाकाना होगा, बाद उस्के सादे कापड़े में रखकर घिस्ना होगा, आसल मोति होनेसे बज्जत् साफ और आवद्दार होगा। मोतिको अगर लेमुके रसमेपाकामें, तो वेधनेमे बज्जत् आसानी होगि। ३२८ । इति मोतिका वयान।

R

325 20

TRANSLATION.

326-27. This is another way:—Cast a Pearl in cow's urine mixed with salt; then gently heat it in fire; lastly placing it in a small quantity of chaff, rub it with the hand. By this process, a false Pearl will be reduced to fragments, while a real one will shine with greater light.

328-29. Enclose a Pearl in one of the hot lungs of a fish; then gently heating it in fire, boil it successively in pure milk, wine and water; next rub it with a piece of cloth, when it will look fresh and fair. A Pearl can be perforated after it has been boiled in lime juice.

অন্থবাদ।

সলবণ গোমৃত্রপূর্ণ ভাণ্ডে মুক্তা নিক্ষেপ করিয়া অগ্নিতে অল্পরিমাণে উত্তপ্ত করিতে হইবে, পরে হস্তে তুলিয়া তুষ-সংযোগে পুনঃ পুনঃ মর্দন করিলে কৃত্রিম মুক্তা ভাঙ্গিয়া যাইবে, এবং অকৃত্রিম মুক্তা অতিশয় উজ্জ্বল হইয়া উঠিবে । ৩২৬ । ৩২৭ ।

প্রথমতঃ মুক্তাকে মৎস্থের অতি উষ্ণ পট্পটীর মধ্যে পূরিয়া অগ্নিতে অল্পপরিমাণে উত্তপ্ত করিয়া পশ্চাৎ বিশুদ্ধ হুগ্ধ, স্থরা ও নির্শ্মল জলে ক্রমান্বয়ে সিদ্ধ করিতে হইবে। ৩২৮।

তৎপশ্চাৎ অতিশুভ্র বন্ত্রে ঘর্ষণ করিলে মুক্তা বিশুদ্ধ, অতি-নির্ম্মল এবং কান্তিযুক্ত হইবে। মুক্তাকে লেবুর রসে সিদ্ধ করিয়া তাহাতে যথেচ্ছ ছিদ্র করা যাইতে পারে। ৩২৯।

ইতি মুক্তা।

THE PEARL.

THE PEARL.

Its Properties.

HOUGH the Pearl cannot properly come under the province of precious stones, on account of its being animal product, it is held in great esteem by the jewellers and all lovers of gems. This beautiful gem is formed in the shells of oysters and mussels and is composed entirely of carbonate of lime and organic matter. It possesses a lustre peculiar to itself and called by its own name, pearly. It calcines by being exposed to heat and is easily affected by acid and fetid gases. The specific gravity is from 2.5 to 2.7. It is found of various shapes and colors and receives certain names according to its size and form. Those of extraordinary size are called Paragon Pearls; when of the size of the cherry, cherry Pearls; small, piece Pearls; smaller, seed Pearls; smallest, dust Pearls. Those of a long and oval form, pear Pearls; while the deformed ones are known as "baroques" Pearls. The Romans called the large ball-shaped Pearls, "Uniones"; the pea-shaped, "Elenchi"; the half ball-shaped, "Tympania;" and those possessed of the most beautiful color, "Exaluminatæ Marga-The Saxon word Pearl signifies a gem or ritæ." white speck. The oriental Pearls are seldom found of any other color than white and yellow, and are generally of a round or button form, while the

327 8

S

American, better known as the Panama, Pearls, are generally blackish or brownish and mostly long and drop-shaped.

Original formation of Pearls.

THE ancient authorities had started several curious theories as to the presence of Pearls within the ovsters. According to Athenaeus, the Pearls were found in the flesh of oysters, just as the measles (tubercles), in the pork. Pliny and Diascorides supposed that the Pearls were the tears of fallen angels, or dew-drops from heaven, taken in by the ovsters, which opened at certain seasons to receive them; the size and quality varying according to the size and purity of the dew imbibed. Cloudy weather spoilt the colour, lightning stopped the growth and thunder made the shell-fish miscarry altogether. Valentine said that they were the eggs of female oysters, while Samuel Dale held, that they were a sort of calculus produced by hurt received. This last theory suggested to Linnæus the idea of creating the disease in the fresh water mussel of Sweden, and thus of manufacturing artificial Pearls. Artificial Pearl-oyster-beds were established in several rivers but the process by which the Pearls were formed was kept a secret. It was, however, ascertained that small holes were drilled in the shells of the living oysters into which some foreign matters were put. But the Pearls which were produced by this means were so small and the labor and cost incurred, comparatively so great,

60

THE PEARL.

that this ingenious invention was soon given up. In India a somewhat similar way of producing Pearls existed. Some of the shells of the large Pearl oysters have been found with brass wires inserted throughout their whole length, and the cavities in the interior proved that Pearls had been produced in consequence. The Chinese have succeeded in introducing within the living fish minute Pearl beads, strung on a string, or miniature idols of brass or stone, and in the course of a year these are found so completely covered with a pearly coating as to resemble true Pearls of fantastic figures. A few specimens of these are in the possesion of W. J. Ingram Esq., M. P. Pearls are looked upon, according to the most generally received opinion, as concretions arising from the superabundance of calcerous matter destined to form the shell, and in confirmation of this, it has been observed that the oyster is of the same brilliancy as the mother-o'-pearl that forms the inner coat of the shell. If a Pearl is cut, it will be found to be composed of a succession of laminæ like the onion and presents the same appearance in its substance as the shell. With the help of the microscope we find that the shells of all the oysters that produce Pearls have three layers. The outside layer, i.e., the outer skin, consists of thin scales or leaves, having no regular form : the second one, is composed of numerous small horny cells, (filled with a calcerous mass) in which the various pigments that give to

329 \$

E.

the shell such beautiful colors are deposited; the third and inner layer has a more foliated form and an uniform foundation, which looks like fine folds on the outside, and which produces, when the light shines upon it, the peculiar mother-o'-pearl lustre, that adds so much to the beauty of many shells. It is the soft and tender unevenness of its surface and not its material (which is nothing but lime) that gives the exquisite sheen to the mother-o'-pearl. Several naturalists account for the formation of Pearls, in the attempts made by the animal to get rid of some substance which has entered into its shell, by covering it with a deposit similar to the interior of the oyster-shell-commonly known as the mothero'-pearl. In some cases, a Pearl has been found, by bisecting, to consist of a series of layers or skins round a speck of some darker substance : in others, the middle of the Pearl has been found hollow and of a globular or spherical form; while in some others, it appears perfectly solid and of the same colour, texture and formation all through. The beautiful polish and consequent brilliance of a fine Pearl is the result of the friction of the soft body of the oyster for a long time. In most cases, the polish exists on the outer skin only, the inner layers being found dull as a fish's eye. In other cases, a Pearl of a hard exterior has been found to contain a fine and lovely kernel. The Pearls are situated either in the body of the oyster or loose between it and the shell, or lastly they are fixed to the latter by a kind

PP

THE PEARL.

of neck. Sometimes the Pearl is a sort of wart, hollow inside, and is then called cog-de-perle and fetches but little value. It is said that Pearls take four years for their formation. There are two kinds of Pearls. The one highly valued is called the Margarita*(the sea Pearl oyster) or by its full name, "Meleagrina Margaritifera lamarck," which is a large oyster of 7 or 8 inches in diameter, with very thick shells, rather flat, and of a greenish black exterior; whilst the inside is of a very white colour, reflecting various hues and is known as the mother-o'-pearl. The other kind is called the Unio Margarita (River Pearl oyster). A kind of Pearl called the phantasy Pearl has sometimes been found in the market. These are Pearl-substances which are taken out of the shells, consisting partly of mother-o'-pearl and partly of a pearly substance. A curious circumstance in connection with one of these pieces is mentioned by Barbot. "A French Pearl merchant, in Mexico, bought one of these pieces of a fisherman for a small sum of money, inorder to learn something of them. He was not a little surprised, on cutting it in half, to find a perfect, round Pearl inside, of purest water and brilliant lustre, weighing $14\frac{1}{2}$ carats and which he sold sometime after in Paris for 5000 francs-about half of its value." Now-a-days, Pearls are fre-

* The term Margarita is probably the Greek form of "Mukta," the Sanskrit name for Pearl, and not, as erroneously supposed by some writers, of "Marakata" which, in Sanskrit, means the Emerald.

321 80

60

quently peeled and have been found to contain a finer Pearl underneath.

Where found: Pearl fisheries.

PEARLS were a mercantile commodity with the Phœnicians and Babylonians. According to the author of the Periplus, Pearls were fished near Manaar, between Ceylon and India. Ceylon, the Taprobane of the ancients, also produced Pearls. According to Arrien, Hercules visited all the Indian ocean and found a Pearl with which he adorned his daughter Pandea. The story of this fishery is also mentioned by the companions of Alexander, when he came to India, and it is therefore clear that it existed prior to this time. There were some other Pearl fisheries also known to the ancients, in the Red Sea and the Coromandel Coast. Those in the Red Sea were at that time considered very important, and were distinguished by the title "Exaluminatæ," i. e. clear as globules of alum. Under the Ptolemies and latterly under the Egyptian Caliphs, several merchants settled on the coasts and by following the Pearl-trade became considerably rich. Pearls were also fished up in the Mediterranean. The chief Pearl fisheries in the modern times are on the west coast of Ceylon, in the Bay of Manaar, in the Persian Gulf, in the Red Sea, in the Bosphorus, in the Sooloo Islands (near Borneo,) in Japan, Java, and Sumatra; near the island of Papua or New Guinea; in America, (both on the

THE PEARL.

Pacific and Atlantic coasts); and latterly, in Australia and the Fiji Islands. Some Pearls are also obtained in France, Scotland and Ireland; from the Ilz in Bavaria, the Battava in Bohemia and the Elster in Saxony; in Sweden; in the North of Russia and in Finland.

The Pearl fishery in Ceylon, which is one of the most productive ones, now belongs to the Colonial Government and is conducted by it. The Portuguese were the first Europeans who obtained firm footing in Ceylon (1506.) It was stipulated with the then ruler of the Island that he should pay them an annual tribute in the shape of spices and Pearls. The Portuguese fattened on this tribute for a long time till the Dutch obtained supremacy and seized upon the fishery (1640.) Under them, the natives were allowed every three years twenty alternate days to fish for themselves and every other day was for the Government; after which the produce was sold to the highest bidders. From 1760 to 1796, the fishery at the bank at Manaar was stopped by the Rajah in consequence of a dispute with the Dutch. When the English obtained possession of Ceylon, they had the benefit of the accumulation, which, when sold in 1798, fetched 14,00,000 Rs. clear. This profit might be realized if the fishing was confined to 20 days, every seven years. The fishing season is generally in March and April when the sea is calm and unruffled. Before the commencement of work, the banks are carefully

333 20)

tested by experienced divers. A fleet of boats, sometimes consisting of 150, are sent out-each containing ten rowers and ten divers, besides a steerman and several "pillal karras," or shark-charmers, whose duty is to keep off sharks, by incantations. The latter people are indispensible in a fishing excursion, as without them no diver would agree to descend, and the Government is consequently obliged to keep them on regular pay. Other conjurors remain on the sea-shore, repeating their prayers until the return of the fleet. The divers go down into the sea, five at a time, the other five remaining on the boat till the first batch come up to refresh themselves for another plunge. These people (Roman Catholics and mostly Hindus) who principally come from the Colang, on the Malabar Coast, get, in some cases, fixed wages but generally, by mutual consent, they keep $\frac{1}{4}$ of the produce to themselves and give $\frac{3}{4}$ to their employers. As a preparation, they abstain from food and drink (except, occasionally, toddy) and rub their bodies over with oil, stuff cotton into their ears, compress their nostrils by means of an instrument made of horn, and bind over their mouths a sponge soaked in oil, which serves as a temporary proof against water. Then they sling a rope round their body and generally hang a heavy stone on their feet to hasten their descent. Some use a crescent-shaped stone which they fasten round their waist, in order to keep the action of the feet free; for some of these

carnot noir

THE PEARL.

people use the toes as nimbly in picking up the smallest things as any other could, with their fingers. These stones generally weigh 20 to 25 lbs each. With all these preliminaries, which are also attended with prayers and incantations, the divers go down, each seizing a rope with the right hand, and soon reach the bottom. By means of a sharp knife they loosen from the bank and collect as many oysters as they can and put them into bags, with which each of them is provided on his back. The time they can usually remain under water is from one to two minutes and the gain in that time is from 50 to 80 ovsters. Some have been known to remain from 4 to 6 minutes. If any accidents happen while under water, either in the shape of loss of strength or the approach of a shark, they give a sign with their rope and are pulled up at once. Some of the divers are provided with a charm or amulet which they keep on their persons, wrapped in oil-cloth, while they go down. The Roman Catholic divers would not commence business until they get an assurance of their safety, from their own clergymen, and also seem to have firm faith in the ability of the conjurors in keeping the sharks away.* Continuous submersion into water tell fearfully on

* In a paper published in the Transactions of the Royal Asiatic Society, Captain Stewart says that he insisted upon a shark-charmer to make a shark appear alongside of the vessel in which he (the Captain) was; but he declined to do so, saying that his business was to keep them away but affirmed positively his ability to do whatever he liked with them. "During the few days," to quote Captain Stewart, "that we were employed marking off the ground to be fished, a shark was seen and reported to me. I instantly sent for the shark-charmer to

63

335 80

the constitution of the divers, many of whom, on coming out, bleed at the mouth and nose. The strongest of them can work only for a few years. These people can make 40 to 50 descents in a day. The adoption of the diving bell in the present times has made diving less dangerous, but unfortunately it is too dear to be of general use. With this a single diver can collect one to four thousand oysters in one season. On the return of the boats, they are unloaded and the oysters left, in closed pits or in closed vessels, to get foul, whereby most of them open of themselves. After this the Pearls are washed from the decayed oysters, in troughs, with salt water. Those shells that do not open of themselves are thrown on one side and made over to the clippers whose duty is to disengage them from the Pearls by means of a forceps and hammer. The part which sticks to the oyster has to be polished by means of a powder made of the Pearls themselves. The roundest and best of these Pearls are rendered fit to be strung with other Pearls, and some of them are used for setting in rings and brooches. The refuse is mixed with the sand Pearl and sold to make chunam (lime) for the consumption of certain Chinese grandees. The oysters are, however, generally sold without being opened, in much the same form as a lottery, the

appear before me and desired him to account for permitting a shark to appear before me at a time when alarm might have a serious influence on the success of the fishery. He replied that I had frequently requested him to summon a shark to appear and he had therefore allowed this one the liberty, to please me."

THE PEARL.

profit of the purchaser depending on chance; for some oysters may contain Pearls worth 2000 or 3000 rupees each, while many may contain nothing at all. At certain times, the Pearl oysters are seen floating about on the sea, as minute in shape as the spawn of fish. These are carried by the currents, around the coasts of Ceylon, where, owing to their increased size and weight, they sink and form the The best Pearls are generally taken from the beds. most fleshy part of the oyster near the hinge of the shell, but they are also to be found in all other parts of the oyster, and especially sticking to the shell. Each oyster is supposed to contain one or more Pearls, or in some cases, none at all. Sometimes an oyster is found to contain over a hundred Pearls of different sizes, known as the seed Pearls. The Ceylon Government derive a considerably large income from the fishery and take particular care of it. The beds having become exhausted, the fishery has been discontinued for some years.

Megasthenes, an officer of Seleucus, King of Syria, gives to the Western nations, the first account of Pearls found in the Persian Gulf. The Portuguse held mastery over the fisheries of this place during the sixteenth century; after which the native princes have regained possession of them. June to September is the best time for fishing, which is allowed freely, barring a small duty paid to the Sheik of the harbour. The sword fishes are great obstacles in fishing here. The sum annually realized by sale

337

R

comes from 30 to 35 lacs. The Pearls found here are much inferior to those of Ceylon and are commercially known as the Bombay Pearls—Bombay being the place to which they are chiefly sent.

The Red Sea fisheries are not so flourishing as they used to be in former days. Good Pearls are still to be found in the Island of Dhalak, opposite Massowa, on the Abyssinian Coast. The fishery, which is carried on by the Negroes, generally takes place from December to April; the average gain being one Pearl from five oysters.

The produce of the fisheries of the Sooloo islands and of Japan, Java, &c., generally goes to China.

The first Spaniards who landed in America, after its discovery, saw the aboriginal nations decorated with necklaces and bracelets of Pearls. New Cadix. in the little island of Cubagna, was the first place that rose to affluence, owing to the Pearl trade. The next fishery in importance was that of the Island of Santa Margarita or the Isle of Pearls, about three miles from Cubagna. The Pearls produced in this place were in size and beauty far superior to those of the other deposits. Tavernier had one of these Pearls, which weighed 55 carats and which was of a beautiful pea-shape and fine "orient." The third fishery was at Camogote, near the main-land. The fourth was in the River La Hacha, along the same coast. The fifth and last was at Santa Marta, about 180 miles from the River La Hacha. The last three fisheries

QQ

\$ 338

THE PEARL.

produced large Pearls, but they were mostly badlyshaped and had a leaden hue. Now-a-days, the fisheries in the Gulf of Panama and in California supply the best American Pearls. Pearls in the coast of New Jersey were discovered by a farmer, who, when fishing for oysters, came across one which contained a very large Pearl.

The rivers in Scotland produce many Pearls but they are generally small and deformed and liable to become black by wear. A large number of rosetinted Pearls, much esteemed by the Parisian nobility, has been found here. These together with those found in Ireland are generally called Scotch or Brock Pearls; are possessed of a dull hue and are used for brooches and ornaments, strung with horse-hair or mother-o'-pearl, previously formed into the pattern designed.

The River Moldava in Bohemia annually produces from 300 to 400 Pearls, of the purest orient and of very good shape, besides several hundred deformed ones. The greatest portion of the banks are in the possession of the house of Schwartzenburg. Besides the Moldava, Pearls are also found in another small river called the Wattava. The oysters are not fished up from the river-beds but are picked up from the banks where they are thrown by the overflowing of this river.

The fishery of the Ilz yielded at one time a large income to the Bavarian Government, but owing to

339 20

63

bad management, it has now become almost entirely exhausted.

Mode of Boring and Polishing.

THE operation of boring, better conducted in India than elsewhere, must be performed slowly, particular care being taken that the Pearl does not break in halves. The Pearl should be held between two pieces of wood and drilled with a very fine drill, with a bow and string. Unbored Pearls are called "virgins," and in Persian, by the generic name, "Merwerid," and those that have suffered from wear, "widows," and in the Persian, "Lulu," In order to perforate the Pearls, which they intend to string, the Arabs take a piece of wood of a porous nature on the flat surface of which they make small spherical holes with a knife; into these holes they put the Pearls so that only a portion of each Pearl goes into the opening, and then the whole is placed in a little water. The Pearl being thus held tight by the wood which swells, a small iron drill, which is turned by means of a wheel, cuts the hole. The Pearl is then loosened and taken out by letting the wood dry. The cleaning, rounding, polishing and, sometimes, the drilling and stringing are performed by skilful Negro workmen. Pearls are polished and rounded (as found in the market) by means of their own dust; the portion taken from one Pearl in the process of cleaning it, serving to round and polish another. If worn next to skin, Pearls are

\$ 340

THE PEARL.

liable to lose their lustre. Redi who tried the experiment of restoring their original orient by making pigeons swallow them, found out that, after remaining in the stomach* for twenty hours, they have diminished in weight by one-third. Pearls also get discoloured by contact with acids, gases, foul weather and noxious vapours. The simplest and best remedy would be to wipe them, after being worn, with a clean linen and to keep them carefully covered with it, in a closed box. Pearls kept in dry, common magnesia, instead of the cotton wool generally used in jewel-cases, are according to some, never known to lose their brilliancy. Pearls, unlike precious stones, crumble into dust and lose their beauty in course of time. When the tomb in which the daughters of Stilicho were buried with all their ornaments, was opened, after a lapse of 1118 years, all the riches that had been put in were found in good condition except the Pearls, which had become so soft, that they crumbled into fragments when pressed between the thumb and the fingers.

Pearls as known to the Ancients.

THE beauty of the Pearl being entirely due to nature and being utterly incapable of improvement from art, it has, from the earliest ages, held the

^{*} A similar practice still obtains in India among the Mahomedan Pearl merchants who are in the habit of purchasing blackish Pearls at cheap price and making pigeons swallow them. These are afterwards taken out of the stomach by ripping it open, but the whitish lustre thus obtained lasts for a short time—just enough for them to be sold to advantage.

341 \$

E

highest place amongst precious gems. The mythology of the Hindus ascribe the discovery or creation of Pearl to Vishnu and makes frequent mention of the gods and goddesses and of heroes as being adorned with it. It was held in great esteem by the ancient Persians, Egyptians, Babylonians, Medes, and other oriental nations of antiquity. The Persian nobles used to wear in the right ear a golden ear-ring containing Pearls. The Ethiopian and Egyptian princes and nobles profusely used this gem. It is said that, according to an ancient law in India, any one who spoilt the Pearl and precious stones in boring, should not only make good the mischief but pay a fine of 250 panas, (a pana being, at the present time, equivalent to onesixteenth of a Rupee). It was also a great favorite with the ancient Chinese. 2300 years before the birth of Christ, Pearls were known to have been paid as tributes. When Pompey conquered Mithridates, he found in his treasury, besides several crowns of Pearls, one portrait of that king consisting of Pearls in mosaic. In his third conquest over the Asiatic princes (61 B. C.), Pompey took away a large number of jewels, 33 crowns of Pearls and the portrait of his own wrought in the same material. From this period, the taste for Pearls rose so extravagantly high in Rome as to bring down censure from the philosophers and authors of the time. Pliny says that it was the Romans only who gave to drop Pearls the name of "Unio," on account of the

Conto.

THE PEARL.

difficulty that then existed in obtaining matches for those white round and brilliant things. Caligula wore slippers made out of Pearls, while his wife Lollia Paulina used, in her parure, Pearls to the value of 70.00.000 francs. Nero presented them in large numbers to his courtiers and adorned with them the sceptres and masks for his theatre as well as his couches. Julius Cæsar presented to Servilla, the mother of Marcus Brutus, a magnificent Pearl (received from Egypt as booty,) the value of which was then estimated at 990,000 francs. The Romans used to decorate their temples and dwellinghouses with Pearls and the ladies used to hire them for personal use on festive occasions, if they had not a sufficient number of them in their possession. Clodius, the son of Æsop, the celebrated tragic actor. is reported to have swallowed, in a banquet, water in which Pearls were dissolved and, relishing the flavour very much, generously provided each of his guests with the same costly drink. Latterly on, Cleopatra laid a wager with Antony (who is well reputed for his extravagance) that she would spend 10 lacs of our money, upon a single dinner, and claimed victory when she had taken out of one of her ear-rings, one of the finest Pearls in the world, dissolved it in a cup of the strongest vinegar, and sipped the contents off. She was about to do the same with the other, when L. Plancus, the appointed umpire, snatched it off her hands, and declared Antony's defeat. After the death of Cleopatra and

343 50

the conquest of Egypt, this Pearl fell into the hands of the Emperor Augustus of Rome, who had it cut into two pieces and made into two ear-rings of the statue of Venus, in the Pantheon. A similar piece of folly was committed, in the modern times, by the princely English merchant Sir Thomas Gresham. The Spanish Ambassador at the court of Queen Elizabeth, had, before the Queen, been boasting of the revenue and riches of his master and of the noblemen of his country, when Sir Thomas, who was present, told him that his Sovereign had subjects who could spend on one meal, the whole of a day's revenue of the Spanish King together with that of all his grandees; and this he was prepared to show any day, on a wager. The Ambassador called on the merchant one day, without previous engagement, and dined with him, but finding only an ordinary meal. told him, "you have lost your wager." " Not at all," replied Sir Thomas, and, immediately pulled out from his pocket a box from which he took out one of the finest oriental Pearls, (for which he had often refused 15,000 £) and, after showing it to the Ambassador, ground it and drank the powder in a glass of wine, to the health of his Queen. It is said that one of the things which had excited the cupidity of Julius Cæsar in conquering Britain, was the somewhat exaggerated accounts he had heard of the Pearl fisheries that existed in or about the country. He is known to have been a great connoisseur in jewelry, and could tell the specific weight and value of a Pearl

THE PEARL.

by simply taking it in his hands. The Roman ladies wore Pearls fastened to their finger-rings, and sometimes in their ears in clusters of two or three, which went by the name of "Crotalia" (rattles), on account of the rattling sound made by their clashing against each other. Mahomed Ben Mansur placed the Pearl on the top of the list, while the Romans placed it second, after the Diamond, to which they gave superiority, on account of its talismanic virtues and not, evidently, for beauty.

Price of Pearls; Imitations.

THE price of Pearls depends upon their form, texture (technically called "skin"), transparency (water) and lustre. It also depends upon national tastes for colour. In Europe, the white specimens, (and sometimes those with the bluish tinge), are most valued. To the Europeans, a perfect Pearl should be perfectly round or drop-shaped, seeming as if fashioned or turned into shape; should have a perfectly white colour; should be transparent in a slight degree; should be free from flaws or blemishes, and should have the lustre peculiar to this gem. The Indians, Arabians and the Chinese prefer those with the yellow tinge, which have this advantage over the white ones that they do not lose their lustre and tint by wear. To fix a standard price for the Pearls would only tend to mislead the buyer, for, like the Diamond, their value greatly

34.5 %

K

depends upon their shape. For example, a onecarat Pearl may be worth from 24/ to 40/; two-carat ones, if fine, from £6 to £8; and the value of the large and fine Pearls ranges from £2 per grain, upwards. It is easy to examine a single round or drop-shaped Pearl by itself, but not so, if they are strung in a row as in a necklace; for it becomes difficult to find out from the group the particular color of an individual stone,-the Pearl-stringer arranges them so ingeniously, with reference to gradation of color, that the tints, imperceptively blending with each other, make all appear to be of one hue. The yellow tint in the Pearl is said to be due to the decomposition of oysters which are sometimes left to open of themselves. The heat at the Straits of Manaar being greater and consequently the ovsters naturally opening 5 or 6 days sooner than in the Isle of Bahrein (in the Persian gulf), the number of yellow Pearls found there is comparatively smaller than those that come from the latter place. Goa was the principal mart in which the Pearls were sold. The American Pearls, commercially called the "Panama Pearls," though appearing whitish (rather quick-silverish) at first sight, have almost invariably a sort of blackness under the skin. Like similar Pearls found in the Pacific and in Western Australia, these are sometimes worth from £1 to £10 per grain. Inferior coloured Pearls are often dyed black (with Hematite, and imported iron ore) or russet-brown, but the want of the true

RR

THE PEARL.

pearly tint and lustre can be detected by even the most inexperienced. The black or bad-coloured Pearls are sold for good price, if they are of good colour and shape. Some people like the lead or plumbago tint, others, the shining greenish black. These would sell for 35/ to £6 per grain. The pink coloured Pearls are generally found in America and the West India Islands and are valued, according to their shape, quality and size, at £5 to £6 per grain. These are seldom found of regular shape, and when bad or deformed look somewhat like decayed teeth. Although called "pink," these are found of different colors, ranging from red to pale yellow, and frequently of a dull white, like a polished fish's eye. The grey Pearls being unfit for use in jewelry are not of much value. The specimen known as La Perle Roséi ranks the same with the clear white rose but the irregularity of its shape prevents its being used for personal ornaments. The pale pink Coral is sometimes cut and shaped like a Perle Roséi and offered for sale as a real Pearl, but an experienced eye would not take the glistening of the cellular structure of the Coral for the peculiar sheen of the Pearl. Jewellers sometimes make very large Pearls by applying, one on the other, two of the hemispherical rounded tubercles taken from the interior of a Pearl shell. The paste-makers of ancient times, notwithstanding their wonderful skill, did not think, or had not the ability, of counterfeiting Pearls. In 1680, one

20

347 %

R

Jacquire, a rosary-maker of Paris, observing the pearly lustre of the scales of the small river-fish called the bleak, struck upon the idea of filling therewith hollow glass spherules prepared with a glutinous fluid. The manufacture has flourished since that period, the Parisian jewellers exporting four lacs of Rupees worth of these counterfeit Pearls. Although some of the false Pearls are made solid and of fish-scales, and do not break easily, yet they are generally brittle and much lighter in weight than the real ones. Then again, the holes in the real Pearls are drilled very small and have a sharp edge, whereas in the spurious ones, they are larger and have a blunt edge. The deformed Pearls, called the "Barrok Pearls" (perles baroques, in French,) are sold for £10 to £200 per ounce, the value depending upon the quality, colour and size of the specimens. Pearls are split in halves, when they are used for setting in jewelry. Those that are flat on one side and convex on the other are mostly used and are called Button Pearls (perles boutons). These are worth about 25 per cent less than the round Pearls of the same size and quality. The round Pearls, (perfect, according to the given standard), fetch the highest price. The approximate value of one round Pearl of 10 grains would be from £10 to £11; one of 20, £40 to £50; one of 30, £80 to £100. Pearls above 30 grains are of rare occurrence and consequently of exceptional value. Pearls of rare

THE PEARL.

colour or of any fanciful tint or shade are, as a matter of course, sold at fancy prices. The value of Pearls generally has risen up since the last few years, owing, perhaps, to the stoppage of the fisheries at Ceylon. The mother-o'-pearl fetched a high value in the Middle Ages.

In Europe large Pearls are sold by carats, like Diamonds and other precious stones, but in Persia, they are weighed by the *abas*, which is $\frac{1}{8}$ less than the carat, and in India, by *ratis*, which is equivalent in weight to the *abas*. In Europe the ounce weight is used for weighing small and Baroques Pearls, Coral, Peridots and rough Garnets; an English ounce being equivalent to $151\frac{1}{2}$ carats and a Cologne ounce, to 72 carats.

The Marvellous and Medicinal Virtues of the Pearl.

FROM the earliest times the Pearls have come to be considered as emblems of purity, beauty, and nobility. In Bengal, they were at one time worn by virgins on their arms, as preservatives of virtue. The oneirocriticks or interpreters of dreams drew interpretations from Pearls. These had great medicinal effect, when taken internally. It is said that one of the medicines given to restore Charles VI to reason, was a decoction of Pearls and distilled water. In China and other oriental countries, they are used as medicines—being thought to possess the power of

349 80

curing syncope, flux of blood, &c. Large quantities of seed Pearls are used, even at present, in the composition of *Majoons* or electuaries, in the formation of which powders of several precious stones are sometimes used. The Majoon, (in which there is a large quantity of Pearls,) is much in use for its supposed stimulating and restorative qualities. The oriental potentates were supposed to burn Pearls and use the powder as *Chunam* with the beetle-leaves they chewed. Powdered Pearls were also considered a sovereign remedy in stomach complaints, but there is nothing in the gems or in the shells which can render any more beneficial service than that done by chalks or other anti-acids.

Celebrated Pearls.

ONE of the largest Pearls known at present is called La Perigrina or the Incomparable. It was brought from India in 1620 by Gongilius of Calais, who sold it to Philip IV of Spain in 1625. This gem is now said to be in the possession of the Russian princess Youssopoff and is valued at 80,000 ducats. It is pear-shaped and is of 106 carats in weight. According to some writers of jewelry, the shell of this Pearl was found by a Negro boy, in the Panama fishery. The Pearl was presented to Philip II and was valued by the jewellers of the time at 14,400 ducats. It was pear-shaped, weighed 134 grains and was "as big as the biggest pigeon's egg." According to these writers, the one which has become so much \$ 350

THE PEARL.

celebrated by the name La Perigrina is a different gem altogether. De Boot mentions a Pearl belonging to Rodolph II, weighing 120 grains-" 30 carats that cost as many thousands of gold pieces." Napolean had one, weighing nearly 180 grains. Tavernier speaks of one perfect round Pearl weighing 36½ ratis, purchased by Aurungzebe. He also gives a drawing of a large pear-shaped Pearl bought by the Shah of Persia (in 1635) from an Arab coming from the Catifa fishery. It weighed 192 ratis and was valued at Rs. 5,60,000. It is above an inch in diameter and is still in the possession of the Royal family. The Imam of Muscat has one for which he is said to have refused 3,00,000 Rs. The Pearl, which the King of France gave to Madam de Mainton and which was offered for sale in 1819, weighed $27\frac{7}{5}$ carats. The famous necklace of the Empress Eugènie, consisting of a row of matchless black Pearls, fetched £4,000, after the removal of the Pearl forming the snap, which was subsequently sold, for 1,000 guineas, to form the centre of a bracelet. The Crown Prince of Prussia gave to his bride, the Princess Royal of England, a necklace of 32 Pearls, valued at 5,00,000 francs. The Marquis of Abercorn is said to possess a matchless drop Pearl of considerable size. The Municipality of Florence long gloried in the possession of a splendid single row of Pearls which was borrowed of them by the Grand Duchess, after the Restoration (in 1849). The Devonshire Cabinet possesses a large Pearl of the finest

351 80

E

orient, but of the Baroques nature, skilfully converted into the body of a very graceful mermaid. It is valued at Rs. 20,000. Another specimen of the deformed Pearl, made into a beautiful shape, now belonging to Col. Guthrie, is thus described : "Cinque-Cento pendant in the form of a syren ; the head, neck and arms, of white enamel ; the body, of a very fine and large Pearl Baroque, ending in scrolls and a fish's tail, beautifully enamelled and set with rubies. She is represented arranging her hair, with a comb in her right hand; her left originally held a mirror. This splendid gem was brought from India; it is of fine Italian work of the 16th century. On the back is inscribed Fallit aspectus cantusque syrenæ and 'D. L. V. D. R.'" The initials can be interpreted as "Donum Ludovice Regis," i.e. presented by the king Lodovico, (the XII, of Lombardy). It is supposed that this jewel was brought by Tavernier and other jewellers, to India and sold to the Mogul Emperor. The Londenborough unicorn is modelled out of two big Baroques, mounted by figures of France and Victory in sisterly embrace. In the list of the jewels of Henry III, of England, mention is made of a Baroque resembling a head in relief. The curious articles of jewelry by Dinglinger, in the green vaults of Dresden, mounted in gold and enamel, are made of "Coq de perle." A Pearl of this nature, formed into the shape of a strawberry, was shown in the Exhibition of 1862 and was afterwards sold to an English merchant for a fabu-

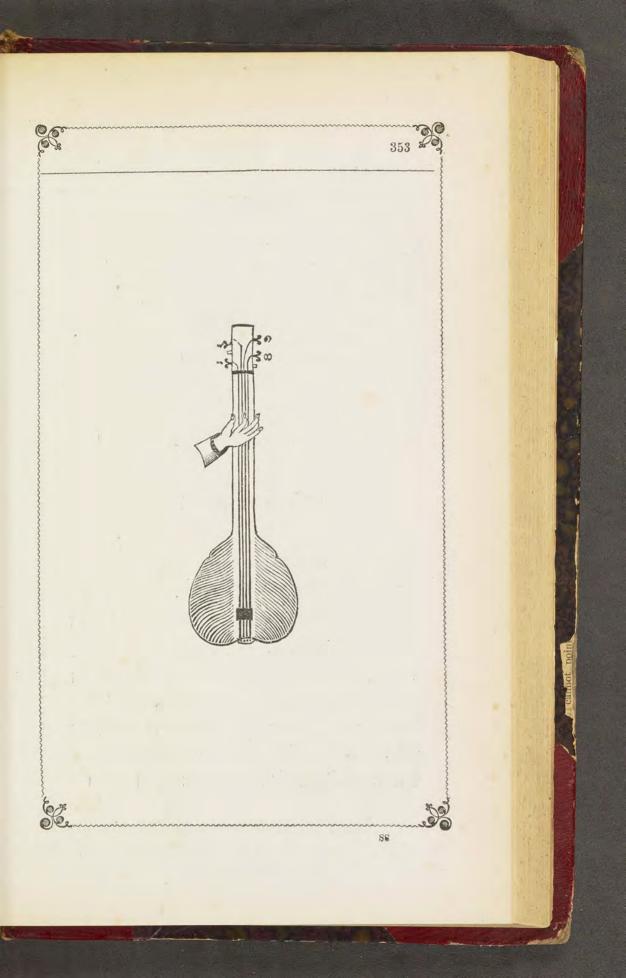
THE PEARL.

lous sum, its intrinsic value being next to nothing.

Pearls of great beauty and value are to be seen amongst the state-jewels of the Indian Princes, of which special mention can be made of those belonging to the Guikwar of Baroda and their Highnesses the Maharajahs of Gwalior, Holkar, Jeypore, &c. The estates of the late Juggut Settjee and of the late Babu Inder Chand, of Moorshedabad, have in their possession, Pearl necklaces of very great beauty and value. In Calcutta* there is a Pearl of extraordinary size in the possession of the Sett family. There are also some valuable ones with the Mullick family. Rajah Kally Kissen, the son of the late Raja Buddinauth, has a valuable necklace of Pearls and also some beautiful single Pearls. The late Rajah Prosonno Narain Deb of Sobha Bazar had a good collection. There is a Pearl of extraordinary size, nearly as big as a sparrow's egg, in the possession of the Hon'ble Maharaja Joteendro Mohun Tagore Bahadoor. There are also some very good Pearls and necklaces in his estate.

Several specimens of Baroque Pearls have been seen in Calcutta, amongst which was one in the shape of a dog.

^{*} There are some very large and beautiful Pearls in the possession of Mr. David, a Jewish gentleman of Calcutta. A very good necklace, consisting of very large Pearls (valued at Rs. 1,25,000), was once seen in Calcutta in the hands of Panna Lal, a Bombay jeweller.





मणिमाचा।

ग्रय गोमेदः।

मूलम्।

चिमालये वा सिन्धौ वा गोमेदमणिसम्भवः । खच्छकान्ति ग्रु रु: सिग्धो वर्णाठ्यो दीप्तिमानपि । वलच्चः पिच्चरो धन्यो गोमेद इति कोर्त्तितः । ३३० ॥ चतुर्धा जातिभेदखु गोमेदेऽपि प्रकाखते । वाद्मणः ग्रुतावर्णः खात् चत्त्रियो रक्त उच्यते ॥ ३३१ ॥ चापीतो वैग्धजातिच स्रद्रखानील उच्यते । छाया चतुर्विधा खेता रका पौतासिता तया ॥ ३३२ ॥

गोमेद्का वयान।

तर्जमा।

हिमालय पर्ब्वत और सिन्धुनदमे गोमेद मणि पयदा होति है। खच्छ, ग्रुरु, सिग्ध, गहेरा रङ्ग, दीप्तिमान्, सफेद अथवा जरद् रङ्ग गोमेद बज्जत्तारिफके लायेक है। ३३०।

जिस् तरह से बाह्मण, चन्नि, वैश्व और खुट्र चार जात होते हैं, उसी तरहे गोमेदभी चारकिसिमका होता है। सफेद रङ्ग बाह्मणजात, लालरङ्ग चन्त्रिजात, धोडा पीला वैश्वजात और थोडा नीला ग्रूट्रजात गोमेद होता है। सफेद, लाल, पीला और काला यही चारप्रकारकी काया दूसी चारजातके गोमेद से निकलति है। ३३१। ३३२।

355

GOMEDA.

TRANSLATION.

330. Gomeda is produced in the Himalaya and the shores of the Indus. A transparent, weighty, cool, deep-colored, shining, and white or green gomeda is worthy of the highest admiration.

331—332. The Brahminical classification of castes obtains also with gomeda. The white gomeda is the Vipra; the red one is the Kshetriya; the yellowish one is the Vaishya; and the bluish one is the Sudra. These respectively cast the white, the red, the yellow and the dark shade.

গোমেদ ৷

অহুবাদ।

হিমালয় পর্ব্বত ও সিন্ধুনদে গোমেদ মণি উৎপন্ন হয়। স্বচ্ছ, গুরু, স্নিগ্ধ, প্রগাঢ়বর্ণ, দীপ্তিমান্, শুক্ল বা হরিদ্রাবর্ণ গোমেদ অতিপ্রশংসনীয়। ৩০০।

গোমেদেও ব্রাহ্মণাদি চারিপ্রকার জাতিভেদ আছে। শুরুবর্ণ বিপ্রজাতি, রক্তবর্ণ ক্ষল্রিয়জাতি, ঈষৎপীতবর্ণ বৈশ্য-জাতি ও ঈষৎ নীলবর্ণ শূদ্রজাতিমধ্যে পরিগণিত। শ্বেত, রক্ত, পীত ও কৃষ্ণ এই চতুর্ব্বিধ ছায়া উক্ত চারিজাতির হইয়া থাকে। ৩৩১। ৩৩২।

मणिमाचा।

मूचम् । गुरु: प्रभाद्य: सितवर्षेरूपः सिग्धो च्दुर्वातिमहापुराणः । स्वच्छसु गोमेदमणिर्घृतोऽयं करोति लच्मी धनधान्यटद्विं ॥ ३३३ ॥ लघुर्विरूपोऽतिखरोऽन्यमानः स्नेहोपलिप्तो मलिनः खरोऽपि । करोति गोमेदमणिर्विनार्श सम्पत्तिभोगाखिलवीर्थ्यराग्रे: ॥३३४ । ये दोषा हीरके त्रेयास्ते गोमेदमणावपि । परीचा वच्चित: बार्थ्या श्राणे वा रत्नकोविद्दैः ॥ ३३५ ॥

तर्जमा।

भारी, प्रभाविशिष्ट, सफेद रङ्ग, सिग्ध, कोमल बज्जत् पुराणा चौर खच्छ गोमेदसे बज्जत् दीलतकी वाड्ति चोति है। ३३३।

चाल्का, वदसुरत, ज्यादा खुरधरा अथवा कम खुर-धरा, स्त्रान्तिजनक, अर्थात् सक् पयदा करनेवाला, चस्निग्ध, मलिन गोमेद दौलत, भोग और वलको नाग्न कर्ता चै। ३३४।

ছीरेका जेत्ना अयेव कहा गया है, गोमेदमेभी वही सव अयेव पावा जाता है, रत्नपार् चौ पण्डित आग और शाणसे गोमेदकौ पहचान करते हैं। ३३५।



TRANSLATION.

333. The wearing of a weighty, lustrous, white, cool, tender, very old, and transparent *gomeda* leads to prosperity.

334. A light, discolored, exceedingly rough, dilusion-creating, and cool yet dirty *gomeda* blights happiness and saps the foundations of energy.

335. Those defects that have been mentioned as belonging to the diamond, are also found in the gomeda. This gem is tested by fire or by whetting.

অন্নবাদ।

গুরু, প্রভাবিশিষ্ট, শুক্লবর্ণ, স্নিগ্ধ, কোমল, অত্যন্ত পুরাতন ও স্বচ্ছ গোমেদ ধারণ করিলে অত্যন্ত শ্রীরুদ্ধি হয়। ৩৩৩।

লঘু, বিরূপ, অত্যন্তখরস্পর্শ, ভ্রান্তিজনক, এবং স্নিগ্ধ অথচ মলিন ও খরস্পর্শ গোমেদ সম্পত্তি, সমুদায় ভোগ ও সমস্ত বীর্য্যের নাশকারী। ৩৩৪।

হীরকের যে সমস্ত দোষ উল্লিখিত হইয়াছে, গোমেদেও সেই সকল দোষ লক্ষিত হয়, রত্নবিৎ পণ্ডিতেরা অগ্নি বা শাণদ্বারা গোমেদের পরীক্ষা করিয়া থাকেন। ৩০৫।

मगिमाचा।

मूचम् । ग्रुद्वस्य गोमेदमणेखु मूल्यं स्ठवर्णतो द्वैग्रुणमाऊ्जरेके । त्रबन्ये तया विद्रुमतुल्यमूल्यं तथापरे चामरतुल्यमाऊः ॥ ३३६ ॥

स्कटिकेनेव कुर्व्वन्ति गोमेदप्रतिरूपिणं। चतुर्विधानामेषान्तु धारणं पविसम्प्रतम्॥ ३३७ ॥

तर्जमा।

वेत्रयेव गोमेदका मूल, सवके मतके समान नहिं होता, किसी के कौल के सुजिव खगर एक तोला गोमेद हो, दो तोला सोणा दाम उसका है। खौर किसी के कौल के सुजिब एक तोला सुङ्गेका जो दाम होगा, वही दाम एक तेला गोमेदका होगा। किसी के कौल के सुजिव चामरका समान दाम गोमेदका होगा। इहे दि।

फरेवी सवदागर स्फटिक्से गोर्मेद बनाते हैं। ब्राह्म-णादि चारप्रकारका छीरा पहेरनेसे जा फल छोता है, चारप्रकारका गोमेद पहेरनेसे वही फल घोता है। ३३७।

इति गोमेदका वयान।

359

TRANSLATION.

336. Opinions are divided as to the price of a sterling gomeda, some maintaining it to be double that of a proportionate mass of gold, some holding it to be equal to that of a *Vidruma*, some making it equal to that of *chámara*.*

337. Fraudulent jewellers fabricate false gomedas with crystal. The good that is reaped by wearing the four classes of the diamond, is also obtained by wearing the four classes of the gomeda.

অহুবাদ।

বিশুদ্ধ গোমেদের মূল্য সকলের মতে সমান হয় না, কাহার মতে স্তবর্ণের দ্বিগুণ, কাহার মতে বিদ্রুমের সমান এবং কাহারও মতে চামরের সদৃশ হইয়া থাকে। ৩৩৬।

অসৎ বণিকেরা স্ফটিক দ্বারা কৃত্রিম গোমেদ প্রস্তুত করিয়া থাকে। ব্রাহ্মণাদি চতুর্জাতি বজ্র ধারণের যে ফল, চতুর্বিধ গোমেদ ধারণেও সেই ফল। ৩৩৭।

ইতি গোমেদ।

* The bushy tail of the Bos Granniens, used as a fly-flap or fan and as one of the insignia of royalty. \$ 360

THE ZIRCON, HYACINTH OR JACINTH.

THE ZIRCON, HYACINTH OR JACINTH.

Its Properties.

THE Zircon, Hyacinth or Jacinth and Jargoon are identically the same stone, differing only

in colour. The Greek name is "Wakinthis," Latin, "Hyacinthus," German, "Hyacinth," and "Ein breuneder Jacinth," French, "Jacinthe La Belle." The word Zircon is supposed to be derived from the Arabic word Zerk, which means a gem ; the Hyacinth, from the Arabic Yakut which means the Ruby. The transparent and bright-coloured varieties are known as the Hyacinth or Jacinth; the grevish and smoke-coloured ones, (which are sometimes sold as inferior Diamonds,) as the Jargoon. The Jargoon again occurs of several colours and is seldom perfectly transparent. Bœtius de Boot describes the varieties thus; "(1) there are some that flame like fire or are similar in colour to crimson or to natural vermillion. These the French jewellers call Jacinthe La Belle, and these they esteem the best. (2) Those with a yellow red colour. (3) Others are like unto Amber, so that they can hardly be distinguished from it, but by their hardness. These are of no great value, by reason of the atoms they contain, and the multiplicity of small bodies which are in them, which do hinder their transparency and translucency." Accor-

361 20

H

ding to Cardanus, "there is a fourth kind which have no redness at all in them, which are like to white pellucid Amber, and these are of least value." This gem belongs to the dimetric system of crystallization. Its specific gravity is from 4.07 to 4.75. In the transparent varieties, the lustre is almost adamantine; in the opaque ones, it is vitrious. It varies in colour from red to vellow, brown, green, grey and white. Its number in the scale of hardness is 7.5; it having the power of slightly scratching quartz. Its cleavage is imperfect; its fracture conchoidal and brilliant. It is composed of zirconia, 66.8, silica, 33.2 and peroxide of iron, 1. Being heated it becomes phosphorescent, loses its colour and increases in specific gravity, but regains its normal properties when cool, and if reheated immediately after, the phosphorescence does not appear. It is infusible before the blow-pipe but melts with borax into clear glass. No acids but sulphuric can affect it, and that even, after long maceration. It possesses double refraction in a very high degree, specially the Jargoon of Ceylon. The Zircon is distinguished by its quadrilateral crystals, terminating at both ends in a pyramid, with the same number of facets.

Where found.

NICOLS, writing 226 years ago, speaks of the Zircons:—"They are found in Ethiopia, India and Arabia. The Arabs distinguish three kinds;

THE ZIRCON.

(1) Rubris Coloris ;(2) Citrine Coloris ;(3) Antimonii Coloris. Of these the worst is found in the river Isera, which is upon the confines of Silisia and Bohemia. The best and most excellent ones are brought from Cananor, Calicut and Cambia." Since this period, several places have been found which are known to contain Zircon. It is found in embedded and attached crystals in granite. Svenite and Gneiss and also in beds of rivers together with Garnets, in Cevlon, Pegu, India and parts of Europe and America. It has been found in small crystals in Syenite at Meissen and in the Plaüenschen-Grund. (both near Dresden), and in dense basalt, in Siben-Giberge, in Prussia; in the rivers the Espially (France) and Iser (Bohemia); in the island of Harris, in the Pfitsch Thal in Tyrol; in Gaston, Pennsylvania and in Hammond, New York. It is also found in some volcanic places (and with many Volcanic or Plutonic stones), such as at Neide-Mindy, in porous millstone lava; in Pachersea. (in little white and red crystals), in volcanic bomb-shells and in the lava of Vesuvius.

Mode of Cutting and Polishing.

THE Zircon is seldom used in jewelry, but when it is necessary to prepare it for ornaments, such as rings, pins, ear-rings &c., it is ground in a leaden plate with emery powder, and polished on a plate of copper with powdered rotten stone. The Jargoon is generally cut in the form of a Rose

363 20

Diamond; *i.e.*, flat at the bottom and pointed at the top; the Jacinth or Hyacinth, like a brilliant with a rounded table.

The Zircon, Jacinth or Hyacinth as known to the Ancients : Engravings.

ALTHOUGH this stone was well-known to the ancients, it is a matter of question whether the gem they called by this name was the same as the true Zircon. Some suppose it to be the Lyncurium of Theophrastus. Its Hebrew name is Techyleth or blue; hence, perhaps, Pliny called the stone known to us as the sapphire, by the name Hyacinthus. It was a great favorite of the ancient Romans, but is little worn at present. In the Paris Museum may be seen a splendid specimen of a very ancient engraving on a Zircon, representing Moses with the two tables of the law. It is 54 millimetres in length and 34 in width. Lord Duncannon is said to be in possession of a Zircon having the figure of an athlete engraved upon it. The modern Chinese use this gem profusely in decorating their gods.

Price of the Zircon; its Flaws and Defects: Mode of Testing.

No standard prices can be given for the Zircon as it is seldom used for jewelry purposes. Formerly it commanded a very high price. A solitary specimen of a Zircon, if free from flaws and possessed of a fine colour, may fetch a high price, in the pre-

A.

a second and a second s

THE ZIRCON.

sent time. A perfect Zircon should be of a beautiful orange colour, with a shade of scarlet, quite clear and without flaws. To remove dark spots from the stone and to equalize its colour, it is sometimes very carefully burnt with sand and iron filings. The Jargoon that comes from Matura (in Ceylon) approaches the diamond so closely in lustre, that in the 18th century it had been supposed to be an inferior diamond and sold as such. The people of Ceylon call it the "Maturian Diamond." It is seldom found of large size-the maximum weight has not yet exceeded more than 12 carats. It was formerly much used in mourning ornaments. The Zircon is sometimes confounded with the Essonite or Cinnamon stone, from which, however, it differs in its essential characteristics. While the specific gravity of the former is from 4.07 to 4.7, that of the latter is from 3.5 to 4.3. Then, in the scale of hardness, the former is 7.5, while the latter is from 6.5 to 7.5. Then there is a great deal of difference in the chemical composition of each. The latter has a large element of lime, magnesium and aluminum in it and is fusible before the blow-pipe, whereas the former is not. As to refraction, the Zircon possesses double, while the Cinnamon stone, single refraction. The Spinel is sometimes mistaken for the Jacinth, owing to similarity of colour in some of the specimens, but a reference to the distinguished characteristics of each will easily correct the mistake. To distinguish the Zircon from all

365 20

other stones of a similar nature, it should be looked at through a microscope in front of a strong light, and care must be taken to observe, whether it has a peculiar texture, called in French, *Ratinè* (nappy)—which has the appearance of water when spirit is poured into it. This cottony or "nappy" look is its special characteristic.

Marvellous Properties attributed to the Zircon.

In the Middle Ages, this gem was supposed to bring riches, honor and wisdom, and was considered a great charm for plague and wicked spirits. "One of these," says Cardanus, "he was wont to wear about him, for the purpose of procuring sleep, to which purpose it did somewhat to confer, but not much." It was also thought to be a safe-guard against lightning.

मणिमाला।

त्रय विदु, मम्।

मूलम्।

स्वे तमागरमध्ये तु जायते वच्चरी तु या। विद्रुमनामरताख्या दुर्लमा वच्चरूपिणी ॥ ३३८ ॥ विद्रुमं नाम यद्रतं धारयन्ति मनीषिण:। बच्चादिजातिभेदेन तच्चतुर्विधसुच्चत्ये ॥ ३३८ ॥ चरुणं ग्रग्ररताचं कोमलं सिग्धमेव च। प्रवालं विप्रजातिः स्थात् सुखवेध्यं मनोइरं ॥ ३८० ॥

विदुम अर्थात् मुंगेका वयान।

तर्जमा ।

मफेद ममुद्रकें मध्ये वज्ररूपिणी एक किसिमका लताकार रत्न पयदा घोता है, उस्को विद्रुम अर्थात् मुंगा कइते चै। ३३८०।

पण्डित लोक जिस् मुंगेके पहेरते हैं, वड मुंगा जिस् तरहे वाह्मण, चन्नि, वैश्व और अद्र चार जात होते हैं उसी तरह उस्कीभी चार जात होते है। ३३८।

खरगोसके आंखके समान खुख, कोमल और बज्जत् सिग्ध मुंगा वाह्मणजात है, वाह्मणजातका सुंगा देखनेमे बज्जत् आच्छा है और जल्दि वेध होता है। ३४०।

367

THE CORAL.

TRANSLATION.

338. A cross-shaped gem resembling a plant is found in the White Sea. It is called *Vidruma*.

339. The Brahminical classification of castes has also been introduced among *Vidrumas*.

340. That, *Vidruma* which is red like the eye of the hare, tender and very cool, is the Brahmin. It is exceedingly beautiful and is easily penetrable.

বিদ্রুম ৷

অন্নবাদ।

শ্বেতসমুদ্রের মধ্যে যে বজ্ররপিণী একপ্রকার লতাকার রত্ন জন্মে, তাহাকে বিদ্রুম মণি কহে। ৩৩৮।

পণ্ডিতেরা বিদ্রুমনামক যে রত্ন ধারণ করেন, তাহা ব্রাহ্মণাদি জাতিভেদে চারিপ্রকার হইয়া থাকে। ৩৩৯।

শশকের চক্ষুর ন্থায় অরুণবর্ণ, কোমল ও অতিস্নিগ্ধ প্রবাল বিপ্রজাতিমধ্যে গণনীয় এবং দেখিতে অতিমনোহর অথচ অনায়াসে বেধ্য। ৩৪০।



मणिमाला।

मूलम्। जवावन्धूकसिन्टूरं दाड़िमौकुखमोपमं। कठिनं दुर्वेश्वमसिग्धं चचजातिस्तदुच्चते ॥ ३८९ ॥ पलाण्कुस्रमाभासं तथा पाटलसन्निमं । बैखजातिर्भवेत् सिग्धं वर्णाढंर मन्दकान्तिमं ॥ ३८२ ॥ बैखजातिर्भवेत् सिग्धं वर्णाढंर मन्दकान्तिमं ॥ ३८२ ॥ रक्तोत्पलदलाकारं कठिनं अचिरद्युति । विद्रुमं ऋद्रजाति: स्यादायुवेश्वं तथैव च ॥३४३ ॥ रक्तता सिग्धता दाढंर चिरद्युति स्वर्णता । प्रवालानां गुणाः प्रोक्ता धनधान्यकराः परा: ॥ ३८४ ॥

तर्जमा ।

कनेलका फुल. वांधूलीका फुल, सिन्ट्र अथवा आनारके फुलके समान खुख, सक्त, सुस्किलसे वेधहोनेवाला और अस्तिग्ध मुंगा चत्त्रिजात है। ३८१।

पलाश्रफुल और पाटलीफुलके समान स्नुख्रङ्ग सिग्ध और थोड़ा कान्तिविशिष्ट मुंगा वैग्यजात है। ३४२।

जो सुंगा लाल कमलके समान रङ्गदार, सक्त, जिस्को चमक थोड़े दिन रहे और जो बज्जत् जल्दि वेधा जाय, वह्य प्रद्रजात हैं। ३४३।

लालरङ, सिग्धता, सक्त, काथेमरङ और खुप् खरत्, मुंगेका यही कद्र एक खास ग्रुण हैं। और यही सव गुण-युक्त मुंगा धनधान्यकी टड्विकर्नेवाला हैं। ३८८।

369

R.

TRANSLATION.

341. That which resembles the China-rose, the *bandhuli* flower, vermilion or the pomegranate flower, which is impenetrably hard and which is not cool, is a Khsetriya.

342. That Vidruma which is like the Butea frondosa, or the trumpet flower, which is cool and slightly lustrous, is reckoned a Vaisya.

343. That Vidruma, the lustre of which is not enduring, which is like the leaves of the red lotus, which is hard yet easily penetrable, is a Sudra.

344. Yellowness, coolness, hardness, permanancy of lustre and beauty are the principal qualities of the Coral; and those Corals that possess them, are auspicious.

अञ्चर्गा ।

জবা, বাঁধুলীপুষ্প, সিন্দুর অথবা দাড়িমের পুষ্পের ত্যায় রক্তবর্ণ, কঠিন, হুর্ভেদ্য ও অস্নিগ্ধ বিদ্রুমকে ক্ষত্রজাতিমধ্যে গণনা করা যায়। ৩৪১।

পলাশ ও পাটলপুষ্পসদৃশ বর্ণাঢ্য, স্নিগ্ধ, অথচ অঙ্ল-কান্তিবিশিষ্ট বিদ্রুম বৈশ্যজাতিমধ্যে পরিগণিত। ৩৪২।

যাহার দীপ্তি অচিরস্থায়ী, যাহা রক্তোৎপলদলের ন্যায় বর্ণবিশিষ্ট, কঠিন এবং অনায়াসে বেধ্য, সেই বিদ্রুমকে শুদ্রজাতি বলা যায়। ৩৪৩।

লোহিত বর্ণ, স্নিগ্ধতা, দৃঢ়তা, চিরস্থায়ী কিরণ ও সৌন্দর্য্য, প্রবালের এই কয়েকটী প্রধান গুণ এবং এই সকল গুণশালী প্রবাল ধনধান্যকর। ৩৪৪।

UU

मगिमाचा ।

मू लम्।

हिमाद्रौ यत्तु संजातं तद्रक्तमतिनिष्ठुरं। तस्य धारणमाचेण विषरोगः प्रशास्यति ॥ ३४५ ॥ विवर्णता तु खरता प्रवाले दूषणदयं। रेखा काकपदो विन्दुर्यथा वच्चे घु दोषछत् ॥ ३४६ ॥ रेखा हन्याद् यशो लच्चीमावर्त्तः कुलनाश्रनः । पट्टलो रोगछत् ख्यातो विन्दुर्धनविनाश्रछत्। चासः संजनयेत्त्रासं नीलिका खत्युकारिणी ॥ ३४० ॥

तर्जमा।

हिमालय पर्व्वतमे बज्जत् गहेरा लालरङ्गका जो मुंगा पयदा होता ही, उस्को पहेरनेसे जहेरका रोगनाश होता ही। ३४५।

वद्रज़ी, खुरधरापन यही दो मुंगेके प्रधान खयेव है, इस्केसेवाय चिर्, काकपद खौर किट वगैरह हीरेमे जो खयेव होते है, वही सव खयेव मुंगेमेभी खक्सर होते हैं। ३४६।

चिर अयेवसे नाम्वरी और दीलतनाश होति है, आवर्त्त अयेव कुलनाश कर्ता है, परिवर्त्त अयेव विमारी पयदा करता है, हिटाका अयेव दौलतका नाश कर्ता है, चास अयेव चास देता है और नीला अयेव मौतका कारण है। ३४७।

371

TRANSLATION.

345. A deep red Coral is found in the Himalaya. The wearing of it leads to instant cure from poisoning.

346. Roughness and the quality of being discolored are the two primary defects of the Coral; besides which, there are *Rekhá*,* *Kákapada*, *Vindu*, and other defects found in Diamonds.

347. Rekhá blights fame and beauty, A'varta brings about loss of family dignity, Pattala leads to disease, Vindu to loss of wealth, Trása to fear and Nilakáya to death itself.

অহুবাদ।

হিমালয় পর্ব্বতে অতিগাঢ় লোহিতবর্ণ যে প্রবাল জন্ম, তাহা ধারণ করিবামাত্র বিষরোগ প্রশমিত হয়। ৩৪৫।

বিবর্ণতা ও খরতা এই চুইটী প্রবালের প্রধান দোষ, তদ্ধিন রেখা, কাকপদ ও বিন্দু প্রভৃতি বজ্রাপ্রিত দোষ সমূহও প্রবালের দোষমধ্যে গণনীয়। ৩৪৬।

রেখাতে যশ ও জ্রী বিনষ্ট হয়, আবর্ত্তে কুলনাশ, পউলে রোগ, বিন্দুতে ধনক্ষয়, ত্রাসে ত্রাস ও নীলিকায় মৃত্যু হইয়া থাকে। ৩৪৭।

* Vide ante.



मगिमाचा।

मूलम् ।

मूल्यं ग्रुद्वप्रवालस्य रूप्यदिगुणसुच्यते । धारणेऽस्यापि नियमो जातिभेदेन पूर्व्ववत् ॥ ३४८ ॥ विरुपजातिं विषमं विवर्णे खरप्रवालं प्रवर्ष्टान्त ये वा । त च्टत्युमेवात्सनि वै घरन्ति सत्यं वदत्येष करो सुनीन्द्र: ॥ ३४८ ॥

गौरवं स्वच्छता कान्ति: काठिन्यं रत्नजा गुणा: । विच्चाय वज्रकाण्येषु गौरवं शोभनं भवेत् ॥ ३५० ॥

तर्जमा।

वेश्वयेव मुंगेका दाम उस्के श्वोजनसे दुना खालिस् घांदी होगि, मुंगा पहेरनेका फल, जिम् तरह जातभेदके हिसाबसे सावेक लिखेड्य रे रे देते हैं, उसी तरहसे मुंगाभी फल देता है। ३४८ ।

कर नामे एक सुनिका वचन है, के जो चादमी वट्-सुरत्, विजाति, नीचा उंचा, वट्रज़ चौर खुरधरा मुंगा पहेर्ता है, वह चापनि मौत चाप वोलाता है। ३४८।

युरुता, खच्छता, कान्ति चौर कठिनताभी कोइएक रतके प्रधान ग्रुण हैं, लेकिन घीरेकेरेवाय चौर रत्नोंकी भारी घोर्नेकी तारिफ हैं। ३५०।



TRANSLATION.

348. The price of a faultless Coral is twice that of an equal quantity of pure silver. As in regard to other gems, the effects of wearing Corals vary in accordance with each of the four classes.

349. According to Kar, the celebrated sage, the man who wears an ugly, discolored and rough Coral, courts his own death.

350. Heaviness, transparency, beauty and hardness are the principal qualities of jewels. But the first holds with respect to diamonds only.

অহুবাদ।

বিশুদ্ধ প্রবালের মূল্য বিশুদ্ধ রোপ্যের দ্বিগুণ পরিমাণে হইয়া থাকে। প্রবালধারণের ফল, জাতি-বিভাগ-অন্মৃসারে পূর্ব্ববর্ণিত অপরাপর রত্নধারণের অন্মূরূপ। ৩৪৮।

করনামক মুনিপ্রবর বলেন, যে ব্যক্তি বিরূপ, বিজাতি, বন্ধুর, বিবর্ণ ও খরস্পর্শ প্রবাল ধারণ করে, সে আপনার মৃত্যু আহ্বান করে। ৩৪৯।

গুরুতা, স্বচ্ছতা, কান্তি ও কঠিনতা রত্নের এই কয়টী প্রধান গুণ, কিন্তু বজ্র ব্যতিরেকে অপরাপর রত্নের গুরুতাই অধিক গৌরবজনক। ৩৫০। A 374

मणिमाला।

मूलम्। रतानां रूपमाग्यन्तु धूर्त्ताः कुर्व्वन्ति युक्तितः । तेषां परौचां वच्यामि रत्नशास्त्रविचारिणीं ॥ ३५१ ॥ वज्रेण वेधयेदज्ञ' कचिमच्चे दिधीयते । कचिमं मौकितं नम्धेत् चालितं लवणामामा ॥ ३५२ ॥ माणिक्यादीनि रतानि घर्षणान्तु परस्परं । शोधयेद्रत्नवित् प्रान्नः कचिमं शुद्धमेव च ॥ ३५३ ॥ त्यजति कयितं रागं कचिमं तददीरितं । माईवं द्ययते घृष्ट' ज्ञेयन्तत् कचिमं वुधैः ॥ ३५४ ॥

तर्जमा।

धूर्त्तेलोक बुद्धिवल कर्के सांचे रतके समान अंठा रत तैयार कर सके हैं, इस् कारण शास्त्रके प्रमाणके मोयाफिक रतनी परीचा लिखि जाति हैं। ३५९।

हीरेके दारा मूंठा हीरा वेतक क्षुप वेध हो जाता है, और भुंठा मोति जलमे लोण मिलाकर धोनेसे नष्ट हो जाता है। ३५२।

रत्नपारची पण्डित कइते हैं, के परस्पर घिस्नेसे माणिक आद रत्नकी भुठाइ और साचाइ मालूम हो सक्ति है। ३५३।

ए से गाइको झाल वगैरहमे जिस्को पाणिमे देकर पाकानेंमे पाणिका रङ्ग बदरङ्ग हो जाय, और उस् पाणिमे कस चा जाय, ए से जलमे जिस् रत्नको फेंक देने से उस्का रङ्ग बदरङ्ग हो जाय, और घिस्नेसे नरम हो जाय. उस्को भुठा कहते हैं। ३५४।



TRANSLATION.

351. Whereas fraudulent traders fabricate false gems, I will now describe the way of testing precious stones as laid down by the authorities.

352. A false diamond is easily penetrable by a real one; a false pearl is destroyed when washed in salt water.

353. The Ruby and other gems, say the authorities, are very well tested by rubbing one by the other.

354. When a false gem is put in any gruel, it loses its brilliance; and when rubbed becomes soft.

অহুবাদ।

ধূর্ত্তলোকেরা নানা কোশল অবলম্বনপূর্ব্বক রত্নের প্রতিকৃতি প্রস্তুত করিতে পারে, অতএব শাস্ত্রান্থমত পরীক্ষা বলা যাইতেছে । ৩৫১।

কৃত্রিম বজ্র বজ্রদ্বারা অনায়াসে বিদ্ধ হয়, কৃত্রিম মুক্তা লবণান্দ্বতে ধৌত করিলে নষ্ট হইয়া যায়। ৩৫২।

রত্নতত্ত্বজ্ঞ পণ্ডিতেরা পরস্পর ঘর্ষণ দ্বারা মাণিক্যাদি রত্ন সমুদায়ের ক্নত্রিমতাক্তৃত্রিমত্বাদি বিচার করিতে পারেন।৩৫৩।

কোন বস্তুর কাথে নিক্ষিপ্ত হইলে কৃত্রিম রত্ন পূর্ব্ব শোভা পরিত্যাগ করে এবং ঘ্রন্ট হইলে কোমল হইয়া পড়ে। ৩৫৪।

मूलम्। एवं विचार्य्य रत्नानि कौंघे सचितवान् नृपः । षायुर्लेच्चीं जयं कीर्त्तिं प्राप्नोति नाच संंग्रयः ॥ ३५५ ॥ प्रसन्नं कौंमलं सिग्धं सरागं विद्रुमं डितं । धनधान्यकरं लोके विषार्त्तिभयनाग्रनं ॥ ३५६ ॥

तर्जमा।

राजा लोगोंको मनासिफ है, इस्काय्देके मौताविक रतनो परीचा कर्के बाद उस्के रतनो खाजानेमे रख्नेकी चाज्ञा दें, इस् सबबसे उमर, दौखत चौर नाम्वरी बार्डुगि चौर फते हासिल होगि। ३५५।

परिष्कृत, कोमल, सिग्ध और उत्तम वर्णविशिष्ट मुंगा चाट्मीचेंाका चितकारी है धनधान्यकर्नेवाला और जहेरका रोग नाशकर्नेवाला है । ३५६ ।

इति मुंगेका वयान।

377

VV

R

TRANSLATION.

355. Princes should examine precious stones by these tests before depositing them in their treasury, so that they may enjoy long life and prosperity, and acquire success and fame.

356. A clear, soft, cool, and finely red Coral is auspicious, conduces to prosperity and is an antidote to poisoning.

অহুবাদ।

নৃপতিগণের কর্ত্রব্য যে, এই প্রণালীতে অগ্রে পরীক্ষা করিয়া পশ্চাৎ রত্ন সমুদায় কোষে স্থাপন করেন, তাহাতে তাঁহাদের আয়ু, লক্ষ্মী ও কীর্ত্তি বর্দ্ধিত এবং জয়লাভ হইতে পারে। ৩৫৫।

পরিষ্কৃত, কোমল, স্নিগ্ধ ও উত্তম রক্তবর্ণ বিদ্রুম লোকের হিতজনক, ধনধান্যকর ও বিষরোগবিনাশক বলিয়া বিখ্যাত আছে। ৩৫৬।

ইতি বিদ্রুম।

\$ 378

THE CORAL.

THE CORAL.

Its Properties.

HE Pearl is one of the two animal products included amongst the precious gems. The Coral, the other, is the production of gelatinous creatures, belonging to the family of "Polypi," of which there are many varieties. The variety known as "Isis Nobilis," (or the precious Coral,) is like a tree with leafless branches, the stem of which is sometimes seen to be as thick as a man's body, but generally about a foot high and an inch thick. "The calcarious axis of the 'Isis Nobilis' is distinguished by its size, hardness and capability of polish as well as by its beautiful red colour. It has a sort of leathery covering in the cells to which the Polypi adhere. In the soft rind which surrounds the axis, there are small lime-needles and outside these the nets of the common canals which the little creatures weave." The sub-marine forests which are formed by the Coral grow to such an extent as to make islands and to seriously obstruct navigation. It was the belief of the ancients-a belief still shared in by many, in the present timethat the Coral is of vegetable origin; but modern science, with the help of the miscroscope, has discovered the form of the insects which produce this wonderful phenomenon of nature. The Polypi consist of a soft gelatinous substance, and when

379 \$

they sit in their cells undisturbed, each of them is found to resemble an eight-cornered star, notched on each point and situated in a circle round the mouth, by means of which they catch their food and convey it to this opening. They are so peculiarly organized, that if one of them be touched, even in the slightest degree, all the separate molusks on the branch will form into one corporate body. Though the insects show, in this respect, a marvellous degree of sensitiveness, they have not yet been discovered to possess nerves or any of the five senses. In the case of the precious Coral, the food goes into a hole in the stomach and is there wellmixed with water and circulated in all directions in little vessels, and thus conveyed to the whole mass, which are all in communication with each other. Particles of plants, found in the water and little worms or insects, form their chief nourishment. They are very much averse to light and to a disturbance of the water, either of which is sufficient to make them recede to their cells. The Corals are affected by heat and acids.

Where Found: Coral Fisheries.

THE Corals are found in many parts of the water-world, but those that are used for ornaments principally come from the Mediterranean and especially from the African Coast. The beds, (formed by the creatures themselves), in the clefts of rocks,

THE CORAL.

are evidently the result of very great labour, for, in some cases, they have been found 700 or 800 feet beneath the surface of the sea. The Coral fishery is conducted in many places, principally amongst which may be mentioned the coasts of Tunis, Algiers, Sicily, Corsica, the Red Sea and the Persian Gulf. Although it is chiefly carried on by the Italians and Maltese, it was first initiated by the French. In 1450, a French Company was established at Calle or Kalak, (a seaport of the African coast), the fishing at which place became their monopoly, on condition of their employing Provencal sailors only. In 1791, the fishery was thrown open to all who traded with the Levant and states of Africa. In 1794, however, the French ships were protected by a duty laid on those of all other nations. During the time England held possession of Calle (1802-1816), the fishery was pursued with great energy. In 1830, the Italians had, according to fresh arrangements, to pay a duty for it, while the French were exempted. But still the Italians predominated. The fishery, which begins in March and ends in the beginning of October, is conducted in the following way. "Two iron rods about 7 feet long and having 4 prongs, are bound crosswise together, and wrapped up in hemp about $\frac{1}{2}$ inch thick, and bound to this is a net-work bag. In the middle of the rods a weight of lead is fastened. This machine is let down by means of a cable and when drawn up

381 20

again, it catches the projecting Coral in the hemp which is gently brought to the surface." Each fishing boat consists of 13 sailors. Experienced divers can sometimes bring up a strong branch of the Coral. It is then cut into various lengths as required and sorted, according to their thickness, size and beauty.

Cutting and Boring of Coral.

THE Coral is principally cut into beads and boutons or pieces cut en-cabochon, into drops for ear-rings; also into leaves, flowers and various other forms; for making the carved ornaments, as seen in Naples and Genoa, into charms which are worn in bunches ; sometimes into Cameos and into stick and whip-mounts and handles. It is bored by steel needles; in Italy it is done by hand. But Karl Hoffmann of Leipzig has rendered the operation much cheaper by inventing a machine for boring. The working on Coral is chiefly carried on in Marseilles, Leghorn and Genoa. In Leghorn about 300 persons are employed in conducting the operations and the Coral thereof is exported to India, Persia, China and Japan. The branches of the Coral are cut in such a manner as may be convenient and advantageous, according to their shape and freedom from flaws. They are afterwards ground into beads and polished with oil.

Engravings.

On account of its softness the Coral is often used for Cameo. At the sale of the Empress Eugènie's \$ 382

THE CORAL.

jewels by Messrs. Cristie and Manson (1872), a very fine suit of carved Coral and gold ornaments fetched a very high value. Fine specimens of carved Coral are not at all rare.

Coral as known to the Ancients: Its uses.

ACCORDING to a Greek tradition, the Coral was supposed to have sprung out of the blood dropping from the head of Medusa, which Persues had deposited on some branches near the sea-shore and which, on becoming hard, was taken by the seanymphs and planted in the sea. Pliny termed it "Dendrites" and "Corallum." It was dedicated by the Romans to Jupiter and Apollo.

The Coral is not so much liked in Europe as it was in former times. In the beginning of the present century, however, it was set in gold or silver and was used in ear-rings, bracelets, necklaces and baby-rattles in the nursery of the middle and upper classes of people. In the oriental countries it is held in great favour. The worm-eaten Coral and especially that of the dark red variety is in great demand in certain parts of India. One house of Naples is reported to export Rs. 80,000 worth of Coral to Calcutta, and India is said to spend 20 lacs of Rupees a year for the purchase of this commodity. Coral is very profusely worn by the Eastern nations in strings, on turbans and on the handles of swords and daggers. The Brahmins and Fakeers, use the Coral beads as rosaries to count their

prayers. The rich wear the red Coral on their head, throat and legs. Some writers say that there is scarcely to be found an Indian who does not wear Coral in some or other part of his body. The Chinese mix the red Coral with Jade beads and wear them as ornaments for the neck and head. It is also worn in Spain and in the West Indian Islands by the Negroes.

The Price of Coral: Its Imitations.

CORAL is found of several colours, all shades of red and pink, green, brown, yellow, white and black. The last three varieties are not of much value. The most beautiful production is called the "flower of blood." The rose-tinted ones, on account of their resembling the fanciful shapes assumed by pink Pearls, obtain the highest price. These sell for £100 to £200 per ounce. A single large bead or drop will fetch £30 to £40. The next in quality is the pale-coloured one, which sells from £10 to £100 per ounce. The price of the other red varieties ranges according to colour, between £2 and £20 per ounce. The red Coral was once considered the most valuable. But present fashion awards the palm to the pink ones.

Th Coral is often imitated by bone, horn, and ivory, stained with cinabar—also by a composition of gypsun, gum and cinabar.

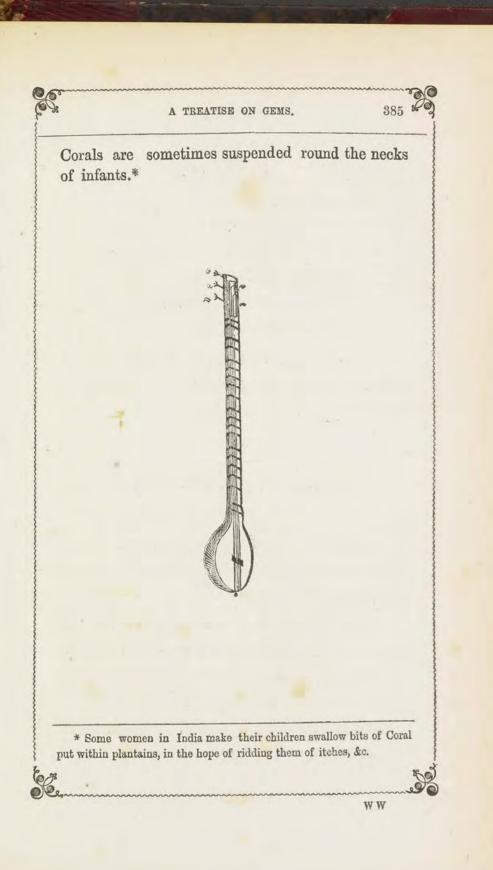
Sol

383 20

THE CORAL.

Marvellous and Medicinal Powers attributed to Coral.

In the most ancient times the Coral was held in great esteem. But at the time of Pliny, its influence was evidently not much appreciated, as in one of his works, he remarks that "formerly it was deemed excellent as an antidote to poison." In the Middle Ages, it regained its attributes, both as a medicine and as a charm. It was then considered as a powerful astringent and a talisman against enchantments, witch-craft, venom, epilepsy, assaults of Satan, &c. &c. &c. From an old work quoted by Brand, it appears that, "Witches tell that this stone withstondeth, lyghtenying and putteth it as well as whirl-windes, tempestes, and the stormes, from shippes and houses that it is in." Pierre de Rosnel says, that if worn by a man, it would deepen in colour and look lively; and would become pale and livid, if worn by a woman or by a man who is ill and likely to die. It would stop hemorrhage, if hung round the neck. Bœtius de Boot says, that he was himself cured of a dangerous pestilential fever by taking six drops of tincture of Coral. Armand de Villenevee prescribes 10 grains of Coral, to be given to an infant, in its mother's milk, (provided this be the first child and its first food), in order to preserve it from epilepsy or any other fit, throughout life. In the modern times, the power of the red Coral in withstanding witchcraft is believed in some nurseries and



not noin

मगिमाचा।

अय मरकतम्।

मू चम्।

तुरुष्कविषयास्त्रोधित्रमीपविषमस्यत्ते । भवेन्मरकतं रत्नं गुणो दोषोऽस्य कथ्यते ॥ ३५७ ॥ तचाकठोर ग्रुककण्डशिरीषपुष्प-खद्योतष्टष्ठवरणाद्वत्रीवत्तानां ।

कह्लारपचक्रमुजङ्गम्जाञ्च पच-

प्रान्तत्विघो मरकता: ग्रुभदा सवन्ति ॥ ३५८ ॥

तसिन्मरकतस्थाने यत्किञ्चिदुपजायते । तस्वर्वे विषरोगाणां प्रश्रमाय प्रचच्चते ॥ ३५९ ॥

मरकत उप्रधीत् पान्तेका वयान।

तर्जमा ।

तुर्किदेशके समुद्र के करिब नीचि जंची जमीनमे पान्ना पयदा छोता हैं; पान्नेका ज्जनर और खयेव मुफस्सल वयान छोता है। ३५७।

पान्नेके मध्ये यो कर्के प्र अर्थात् खुरधरा नहिं, और जिस्का रज़ सबुज ग्रुगेके गले, शिरीषफुल, खद्योतको पिठ, नद्द घास, सेवार, कोद्द फुलपात्ता और मयूरके पङ्घाके समान सबुज रज़, यही सब बऊत् आच्छा है। ३५८ ।

पान्नेकी खानसे जो कुच पयदा घोर, वच्च सब जच्चरके रोगको नाग कर्ता है। ३५ू८।

387 \$

EMERALD. TRANSLATION.

357. Emerald is produced in the undulating coast of the Black Sea belonging to Turkey. The good as well as the bad qualities of Emeralds will follow.

358. Those Emeralds that are smooth, and the color of which is like that of the parrot's throat, *acacia sirisa*, the glow-worm's back, new-born grass, *Vallisniria Octandra*, leaves of the water-lily or the peacock's tail, are auspicious.

359. Genuine Emeralds are infallible remedies for all cases of poisoning.

মরকত ৷

অন্থবাদ।

তুরুদ্ধের সমুদ্রসনিহিত বন্ধুর ভূভাগে মরকত রত্ন উৎপন্ন হয়, মরকতের গুণ ও দোষ ক্রমশঃ কথিত হই-তেছে। ৩৫৭।

মরকতের মধ্যে যে গুলি কর্ক শ নহে, এবং যাহাদের বর্ণ শুকপক্ষীর কণ্ঠ, শিরীষপুষ্প, খদ্যোতপৃষ্ঠ, নৃতন তৃণদল, শৈবাল, কহলার (স্থঁদি) ফুলের পত্র ও ময়ূরপুচ্ছের সদৃশ শ্র্যামল, সেই গুলি অতিশুভজনক। ৩৫৮।

প্রসিদ্ধ মরকতাকরে যাহা কিছু উৎপন্ন হয়, তৎসমু-দায়ের দ্বারা সর্ব্বপ্রকার বিষরোগ প্রশমিত হইয়া থাকে। ৩৫৯।

60

मगिमाचा।

मू चम्। सर्वमन्त्रौषधिगण्येंद्व श्रव्य' चिकिस्मितुं। महाहि दं ष्ट्राप्रभवं विषं तत्तेन शास्यति ॥ ३६० ॥ खन्यदप्याकरे तच यहोषेण विवर्ज्जितं । जायते तत्यविचाणासुत्तमं परिकीर्त्तितं ॥ ३६१ ॥ स्रुक्तं संख्यानग्रुण्यैः समरागं गौरवेण परिष्ठीनं । सवितुः करसंस्पर्शच्छवयति सर्व्वाश्चमं दीप्तगा ॥ ३६१ ॥ हित्वा च हरितभावं यस्यान्तविनिह्तिता भवेदीप्तिः । चचिरप्रभाप्रभाहतनवशादलमन्निमां भाति ॥ ३६३ ॥ यच्च मनसः प्रसादं विद्धाति निरौद्धितमतिमार्च । तम्मरकतं महागुणमिति रत्नविदां मनोटत्तिः ॥ ३६४ ॥

तर्जमा ।

सांपका जहर खगर मन्त्र और दायासे दूर न हो, वह पान्नेके जरियेसे नाथ होता है। ३६०।

पान्नेके खानसे चगर चौर कोद्र दुस्रे किसिम्की वे-चयवेव मणि पयदा हो, तो उस्को उमदा चयवा उत्तम कहते हैं। ३६९।

जो पादा गुणहीन और घोजनमे बछत् हाल्का, सब जगह रङ्गमे वरावर सूर्य्यको किरणसे स्पर्भ कर्के सब मकानको रोसन करे। खयबा जो रङ्गमे हाल्का, लेकिन उस्के भितरकी खामा जिस् तरह बिजलिके चमकने से घासके उपर देख्लाइ देति है, खथवा जिस्के देख्ने ही से मनमे बऊत् खुसी हासिल हो, रत्नपार्ची परिइतें को मतके खनुसार वही पादा ने हायेत् उस्टा ही हि इश्ह हाइ है श

389

TRANSLATION.

360. Such cases of snake-bite in which incantation and medicine are of no avail, are curable by Emeralds.

361. Even any other flawless gem assuming the form of an Emerald is highly prized.

362. An Emerald which is of one uniform color, although excessively light and devoid of any other good property, which illumines a place when exposed to the sun :

363. Which is not extremely green, yet the splendour of which looks like the lightning's play among fresh grass:

364. The sight of which instills the liveliest pleasure into the mind, is the very best of its kind.

অন্থবাদ।

যে সকল সর্পবিষ কোনরূপ মন্ত্র বা ঔষধপ্রয়োগদ্বারা নিবারিত না হয়, তৎসমূদায় মরকতদ্বারা শমতা প্রাপ্ত হয়। ৩৬০।

মরকতের আকরে যদি অন্য কোনরূপ নির্দ্দোষ মণি উৎপন্ন হয়, তাহাওউত্তম বলিয়া কীর্ত্তিত হইয়া থাকে।৩৬১।

যে মরকত গুণবিহীন ও ওজনে অতিশয় লঘু হইয়াও সর্ব্বত্র সমান বর্ণবিশিষ্ট এবং সূর্য্যকিরণসংস্পর্শে সমুদায় গৃহ দীপ্তিমান্ করে। ৩৬২।

যাহা নিতান্ত হরিদ্বর্ণ নহে, অথচ তাহার অন্তর্গত বিহ্যৎপ্রভা-প্রতিভাত নবতৃণদলের সদৃশ। ৩৬৩।

অথবা যাহা দৃষ্টমাত্রেই মনের মধ্যে নিরতিশয় আনন্দ উৎপাদন করে, রত্নতত্ত্ববিৎ পণ্ডিতদিগের মতে সেই মর-কতই অতি উৎকৃষ্ট। ৩৬৪। \$ 390

मणिमाला।

मलम।

यख भास्तरसंस्पर्शाद्वस्तन्यस्तो महामणिः । रुद्धयेदात्मपार्देख महामरकतं हि तत् ॥ ३६५ ॥ वर्षस्याति वज्जवात् यस्यान्तः स्वच्छकिरण्परीधानं । सान्द्रसिग्धविग्रुढं कोमलवर्हप्रमादिसमकान्ति ॥ ३६६ ॥ चलयोज्जूलया कान्तरा सान्द्रकरो विभासया माति । तद्पि न रुण्पवत् संज्ञामान्नोति हि ताहग्रींपूर्व्वां ॥ ३६७ ॥ चतुर्धा जातिभेदेख महामरकते मणौ । कायाभेदेन विज्ञेया चतुर्वर्णस्य लच्चणैः ॥ ३६८ ॥

तर्जमा।

जो पाचा चातपर रख्नेसे सूर्य्यके किरणके लाग्नेसे चप्ने किरणको नेकाले, चौर चारें। तरफको खुस्नमा करे, उस् पाचेको मचामरकत कचते हैं। ३६५ ।

रज़मे ने हायेत् ग हेरा, और जिस्का वीचका हिस्सा साफ, घन, अर्थात् गहेरा रज़, सिग्ध, और मयूरके पेंचिके समान कोमल किरणविशिष्ट, वही पान्ने मध्ये उत्तम पान्ना सुमार किया गया है। ३६६।

जो पाझा साफ रोसनविश्रिष्ठ, लेकिन बच्ची रोसनि चगर चच्चल चो,तो उस्को चोनेसे उस्का गुण पहिले वयान कियेज्जवे पान्नेकं समान नहि है। ३६७।

जिस् तरहसे बाह्मण, चन्निय, वैश्व चौर शूद्र चार जात हौते है, उसी प्रकार इस्मे महामरकत मणिमेभी चार जात है, झाया भेद चौर तरह तरहके लच्चणके द्वारा चार जातका भेद मालुम होता है। ३६८ ।

391

R.

TRANSLATION.

365. The Emerald which when placed on the palm, and exposed to the sun, scatters light all round, is termed a *Mahá Marakata*.*

366. An Emerald, which owing to its deep green has a densely transparent centre, the home of cool and gentle rays of the color of the peacock's tail, is a sterling gem.

367. If an Emerald is lustrous, but if its lustre is unsteady, it can never equal the above-mentioned one in value.

368. *Mahámarakatas* are divided into four castes like the Hindus, each caste being recognized by certain peculiarities of shade and by other marks.

অহ্বাদ।

যে মরকত করতলে স্থাপিত হইয়াও সূর্য্যকিরণসংসর্গে নিজকিরণ বিকীর্ণ করিয়া চতুর্দ্দিক রঞ্জিত করে, তাহাকে মহামরকত কহা যায়। ৩৬৫।

বর্ণের বাহুল্যপ্রযুক্ত যাহার মধ্যভাগ স্বচ্ছ, কিরণ-বিশিষ্ট, ঘন, স্নিগ্ধ ও ময়ূরপুচ্ছসদৃশ কোমল-কিরণ-পরিপূর্ণ, তাহা বিশুদ্ধ মরকতমধ্যে পরিগণিত। ৩৬৬।

যে মরকত উজ্জ্বল-দীপ্তিবিশিষ্ট, কিন্তু সেই দীপ্তি যদি চঞ্চল হয়, তাহা হইলে তাহার গুণ পূর্ক্বোক্ত মরকতের ন্যায় হইতে পারেনা। ৩৬৭।

মহামরকত মণির ব্রাহ্মণাদি চারিপ্রকার জাতিভেদ লক্ষিত হয়, ছায়াভেদ ও অন্থান্য লক্ষণদ্বারা সেই চারি জাতি পরিজ্ঞাত হওয়া যায়। ৩৬৮।

* Literally, the Great Emerald.

मणिमाचा ।

मूलम् । दोषाः सप्त भवन्तत्रस्य ग्रणाः पञ्चविधाः समृताः । भवन्तत्रष्टविधा च्छाया मणेर्मरकतस्य चि ॥ ३६९ ॥

अय मरकतदोषाः।

त्र सिग्ध' रूचमित्युक्तं व्याधिस्तसिन् घृते भवेत्। विष्फोटः खादं शपीते घृते श्रस्त इतो भवेत् ॥ ३७० ॥ गणाषाणे भवेदिष्टनाशो मरकते घृते। विच्छायं मलिनं प्रायो व्याधिस्तेन प्रजायते ॥ ३७१ ॥

तर्जमा।

मरकत मणि अर्थात् पान्नेमे सात प्रकारका अयेव और पांच प्रकारका ग्रुण और आट प्रकारको काया कइते है। ३६८।

पान्नेका अयेव ।

जो स्वामाविक सिग्ध नहि, उस्को रूच कहते है, एँ सा पान्ना पहेरनेसे विमारी होति है, और जो पान्ना किसी जगहे इल्दिका रङ्ग रख्ता है, उस्को विष्फोट कहते हैं, विष्फोट पान्ना पहेरनेसे प्रस्तघातसे मौत होति है। ३७०।

पायरके टुक्रेके सहितवाला पान्ना पहेरनेसे मनका अभिलाष नष्ट हौता है, और जिस्की आकार मलिन होए, उस्पान्नेको विच्छाय कहते है, ररसा पान्ना होनेसे तरह तरहकी विमारी पयदा हो। ३७१।

×

393

TRANSLATION.

369. Seven defects are mentioned as belonging to Emeralds, as also five good qualities and eight shades.

Defects of the Emerald.

370. An Emerald which is not cool, is called a *Rukshma*; it leads to disease. That which has a yellow spot, is called a *Bishfota*. Death from wounds inflicted by a weapon may be apprehended from wearing it.

371. An Emerald to which a stone fragment is inseparably attached, has a baleful influence. That which is dirty, is called a *Bic'c'háya*. Such an Emerald may bring on a variety of diseases.

अञ्चर्गान ।

মরকত মণির সপ্তবিধ দোষ, পঞ্চপ্রকার গুণ ও অফ্ট-বিধ ছায়া নির্দ্দিষ্ট আছে। ৩৬৯।

মরকতের দোষ।

যে মরকত স্বভাবতঃ অমিগ্ধ, তাহাকে রক্ষ কহে, তাদৃশ মরকতধারণে ব্যাধি হইয়া থাকে; যাহার একদেশ পীতবর্ণ, তাহার নাম বিষ্ফোট, বিষ্ফোট মরকত ধারণ করিলে শস্ত্রাঘাতে মৃত্যু ঘটিবার সম্ভাবনা। ৩৭০।

পাষাণখণ্ডযুক্ত মরকতধারণে ইম্টনাশ হয়, এবং যাহার আকার মলিন, তাহাকে বিচ্ছায় কহে, তাদৃশ মরকত হইতে নানাব্যাধি উৎপন্ন হইতে পারে। ৩৭১।

XX



CC .

मणिमाला।

मूलम्। कर्करं ग्रर्करायुक्तं पुचग्नोकभयप्रदं। जठरं कान्तिचीनं स्याइंष्ट्रिभ्यो भयमादिग्रेत्॥ ३७२॥ कुल्माषवर्णधवले धृते च्त्युभयस्भवेत्। इति दोषाः समाखाता वर्ण्यन्ते साम्प्रतं ग्रणाः॥ ३७३॥

च्रथ मरकतगुणाः ।

निक्सँ लं कथितं खच्छं गुरु स्याद्ग्रुरुतायुतं । सिग्धं रूचविनिक्सुंके मरजस्कमरेणुकं ॥ ३७४ ॥ सुरङ्गं रङ्गवज्जलमिति पच्च गुणाः स्नृताः । एतैर्युक्तं मरकतं सर्व्वपापभयापचं ॥ ३७५ ॥

तर्जमा।

चिनि चर्थात् सफेद शक्करके चूरके समान चूरयुक्त पान्नेको कर्कर कहते हैं, कर्कर पान्ना आओलातको नाश कर्ता है, और कान्तिहीन अर्थात् वेनुर पान्नेको जठर वोल्ते है, जठर पान्ना पहेरनेसे दांतकाट्नेवाले जानवरोंका भय पयदा हो । ३७२ ।

उर्दीके दालके समान वर्णविशिष्ट अधात् रज़वाला पान्ना पहेरनेसे मौतका भय घोए, यही सातप्रकारका अयेव वयान किया गया, सम्पूति गुणका वयान करते है। ३७३।

पान्नेका गुण ।

निर्मालत्व, गुरुत्व, सिग्धत्व, चरजस्कत्व चौर सुरङ्गत्व यही पांच गुण पान्नेके प्रधान गुण है, यही सव गुण्युक्त पात्रा सव पापको नाथ करता है। ३७४। ३७५।

395

TRANSLATION.

372. An Emerald containing gritty fragments is termed a *Karkara*. It causes the death of its owner's son; an ugly Emerald is called a *Jathara*. A *Jathara* Emerald renders one liable to bites.

373. The Emerald, the color of which is like that of *Máshakalái*,* is fatal to its wearer. These are the seven kinds of defects pertaining to Emeralds. I shall now mention the good qualities.

Good Properties of the Emerald.

374-375. Purity, weight, coolness, freedom from dust, and beauty, are the five principal qualities of Emeralds. Such Emeralds cleanse men from all sin.

অন্থবাদ।

শর্ক রাযুক্ত মরকত কর্ক র নামে অভিহিত, কর্ক র মর-কত পুত্রনাশক ; কান্তিহীন মরকতকে জঠর বলা যায়, জঠর মরকত দংষ্ট্রিভয়োৎপাদক । ৩৭২।

মাষকলাইয়ের ন্থায় বর্ণবিশিষ্ট মরকত ধারণকারীর মৃত্যু আসন্ন। এই সপ্তবিধ দোষের বিষয় বলা হইল, এক্ষণে গুণের বিষয় বলা যাইতেছে। ৩৭৩।

মরকতের গুণ ৷

নির্মালত্ব, গুরুত্ব, স্নিগ্নত্ব, অরজস্কত্ব ও স্থন্দরত্ব এই পাঁচটী মরকতের প্রধান গুণ, এই সকল গুণযুক্ত মরকত সর্ববাপক্ষয়কর। ৩৭৪। ৩৭৫।

* Vide antè.



मूलम्। धनधान्यादिकरणे तथा सैन्यक्रियाविधौ । विषरोगोपश्रमने कर्म्माखाथर्व्वणेषु च । श्रस्यते सुनिभिर्यस्नादयं मरकतो मणिः ॥ ३७६ ॥

त्रय मरकतच्छाया।

वर्हिपिच्छ समाभासञ्चासपच समाः पराः । हरित्काच निमाञ्चान्ये तथा प्रैवाल सन्निभाः ॥ ३७७ ॥ खद्यो तष्ट छ सङ्काणा वाल की र समत्विषः । नवणा दल सच्छायाः णिरीष कु सुमोपमाः ॥ ३७८ ॥ एवमष्टी समाख्याताण्वाया मरकतात्रयाः । छायाभिर्युक्त मेताभि: श्रेष्ठं मरकतं भवेत् ॥ ३७८ ॥

तर्जमा।

रत्नपारची पण्डित कहते है, के धनधान्यादि ज्यादा करनेकेवास्ते लठाइको वक्त, जहरके रोगकेवास्ते चौर चयव्ववेदके विधिके कर्म्या करणे समे उसी सव काममे पान्नेकी मणि वद्धत् चाच्छि है। ३७६।

मटूरकी पुंच, नीलकण्ठ पत्तीका पङ्घ, सवुज काच, श्रेवाल, मग्युगनीकी पिठ, शुगेके वाच्चे, नइ घास और शिरीषफुल, यही आटप्रकारकी काया पान्नेमे देख्लाइ देति है, और यही आट किसिमका कायाविशिष्ट पान्ना वज्जत् आच्छा है। ३७७। ३७८। ३७८।

397 20

TRANSLATION.

376. According to the authorities, the Emerald causes increase of wealth, brings about success in war, cures cases of poisoning, and renders successful the rites performed according to the *Atharva-Veda*.

Shades of the Emerald.

377-379. The shade of an Emerald is seen to resemble the hue of one or other of the following eight objects :--

The peacock's tail, the wing of the *Nilakantha*,* yellow glass, moss, the glowworm's back, the young of a parrot, fresh grass, or the *Sirisa*+ flower. Emeralds which possess these shades, are superior.

অন্থবাদ।

রত্নতত্ত্ববিশারদ পণ্ডিতেরা কহেন, ধনধান্যাদিরুদ্ধি-করণে, যুদ্ধে, বিষরোগনাশনে এবং অথর্ববেদোক্ত কর্ম্মে মরকত মণি অতিপ্রশস্ত। ৩৭৬।

মরকতের ছায়া।

ময়ূরপুচ্ছ, নীলকণ্ঠপক্ষিপক্ষ, হরিদ্বর্ণ কাচ, শৈবাল, খদ্যোতপৃষ্ঠ, শুকশিশু, নৃতন তৃণদল ও শিরীযকুস্থম, এই অফটবিধ পদার্থের ন্যায় ছায়া মরকতে লক্ষিত হয় এবং এই অফটপ্রকার ছায়াবিশিষ্টমরকতই সর্বব্র্জ্রেষ্ঠ ৷৩৭৭৷৩৭৮৷৩৭৯৷

^{*} A blue-necked jay. † Vide antè.



मणिमाला।

मूलम् । श्रैवालवन्नरीच्छायं खरङ्गं चासवर्जितं । खनघं तन्मरकतं प्राज्ञः सर्व्वविषापहं ॥ ३८० ॥ यत् सन्धिञ्च षितं रत्नमन्यन्मरकताद्भवेत् । श्रेयस्तामैने तद्वार्थ्यं क्रेतव्यच्च कथच्च न ॥ ३८९ ॥ रुचिमत्वं सहजत्वं दृश्यते श्रूरिभिः क्वचित् । घर्षयेत् प्रस्तरे व्यङ्गः काचस्तस्माद्विपद्यते ॥ ३८२ ॥ लेखयेन्नौहभ्द ङ्गेग चूर्णेनाथ विलेपयेत् । सहजः कान्तिमायाति रुचिमो मलिनायते ॥ ३८३ ॥

तर्जमा ।

जो पाना शेवारके समान कायायुक्त, यज्जत् सुन्टर-रड्ग और चासके अधेवसे वर्जित,परिएडत लोग उस्को वेकिमत अर्थात् अन्मोल और तामाम जहरेंाका नाश करनेवाला कहते हैं। ३८००।

पान्नेके सेवाय दोस्रा रत टुट जानेसे अपने भालाइ चाहेनेवाले उम्को कभी पहरेक़े नहि और खरिदेक़े नहि। ३८४।

जो पान्ना भुंठा मालुम होगा, उस्को किसी साच्चे पान्नेसे घिस्ना चाहिये, तवभुंठा पान्ना टुट जावेगा। ३००२।

लौइन्ट क्र (एक किसिम्के लोहेको कलमके उड़िया जिस्से तालपचपर लिख्ते हैं) से खत्देकर चूना लागा-नेके फुंठा पाझा मलिन हो जावेगा और चामल पाझा वज्जत्माफ होगा। इट्र ।

TRANSLATION.

399 20

380. An Emerald which is furnished with a shade like moss, which is of a fine color and which is free from flaws, is a priceless gem, and is considered an antidote to poisons of all kinds.

381. Any gem excepting an Emerald found to be broken should not be worn ;—nay, should not be bought by one who has a care for his good.

382. Any Emerald which raises doubts as to its genuineness, should be rubbed against a real one, when the former, if false, will be broken.

383. Or scratch an Emerald with Lauhavringa,* and then smear it with lime. By this process a false Emerald will grow exceedingly dim, while a real one will attain additional brilliancy.

অন্থবাদ।

যে মরকত শৈবালের ন্থায় ছায়াবিশিষ্ট, অতিস্থন্দর বর্ণযুক্ত এবং ত্রাসবর্জিত, পণ্ডিতেরা তাহাকে অমূল্য ও সর্ব্ববিষনাশক বলিয়া থাকেন। ৩৮০।

মরকত ভিন্ন অন্থ রত্ন ভগ্ন হইলে শ্রেয়োহর্থী ব্যক্তি কখনই তাহা ধারণ, এমন কি ক্রয়ও করিবেন না। ৩৮১।

যে মরকতকে ক্নত্রিম বলিয়া সন্দেহ হইবে, তাহাকে কোন অক্ত্রিম মরকতের সহিত ঘর্ষণ করিলেই ক্রত্রিমখানি ভগ্ন হইয়া যাইবে। ৩৮২।

লোহভঙ্গ (একপ্রকার লোহলেখনী, উড়িয়ারা যাহা-দ্বারা তালপত্রে লিখিয়া থাকে) তদ্ধারা অঙ্কিত করিয়া চূণ লেপন করিলে কৃত্রিম মরকত অত্যস্ত মলিন হইয়া যাইবে এবং অকৃত্রিম মরকত অধিকতর উজ্জ্বল হইবে। ৩৮৩।

* The iron pen with which an Uriya writes on his palm leaf.

400 g

मणिमाला।

मूचम्। भन्नातकः पूतिका च तदर्णस्यातुयायिनः । मणेर्मरकतस्यैते लचणीया विजातयः ॥ ३८४ ॥ चौमेण वायमा घृष्टा दौप्तिं त्यजति पूतिका । लाघवेनैव काचस्य प्रक्या कर्त्तुं विभावना ॥ ३८५ ॥ तुलया पद्मरागस्य यन्मूख्यसुपजायते । लभतेऽभ्यधिकं तस्मान्मणिर्मरकतं ग्रुमं ॥ ३८६ ॥ तथा च पद्मरागाणां दोषेर्मुर्ख्यं विष्ठीयते । ततोऽस्मिन्नधिका चानिदौषिर्मरकते भवेत् ॥ ३८७ ॥

तर्जमा ।

जिस् पाच्नेका रङ्ग भेला या पुंद्र शाकके समान है, बह्त विजातिमे सुमार किया गया है। इष्८।

रेशमी काप्ड़ से घिस्ने से पोतके रे सा रज़दार मुंठा पाता अप्ने के चमक कोड़ देगा, और सवुजकाचका वनायाज्ज्या पात्रा चालका चोनेसे अनायास मालुम चो जावेगा। इष्-पू।

एक चादद माणिक, एक चादद पान्ना चगर चोजनमे समान घो, तो पद्मरागसे पान्नेका दाम ज्यादा घोगा।३८६।

जिस् अयेवसे पद्मराग अर्थात् माणिकका दाम कम छोता है, पान्नेका उष् अयेव छोनेसे वज्जत् दाम कम छोगा। इष्०।

इति मरकतका वयान।

TRANSLATION.

401 \$

384. An Emerald which resembles in color the *Bhelá*^{*} fruit or *Putiká* is not classed with first-rate Emeralds.

385. A *putiká*-colored \dagger false Emerald on being rubbed with a piece of linen, will lose its brightness; and a false Emerald composed of yellow glass can easily be detected by its lightness.

386. If a Ruby and an Emerald weigh equally, the Emerald is the more precious.

387. That defect, the existence of which lessens the price of a Ruby, reduces that of an Emerald still more.

অহ্বাদ।

যে সকল মরকতের বর্ণ ভেলা বা পৃতিকা শাকের সদৃশ, তাহারা বিজাতিমধ্যে পরিগণিত। ৩৮৪।

ক্ষেমিবস্ত্রে ঘর্ষণ করিলে পৃতিকার ন্যায় বর্ণবিশিষ্ট কৃত্রিম মরকত স্বীয়দীপ্তি পরিত্যাগ করিবে, এবং হরিদ্বর্ণ কাচদ্বারা কৃত্রিম মরকত প্রস্তুত করিলে লঘুভারতাদ্বারা তাহা অনায়াসে উপলব্ধি হইবে । ৩৮৫।

একখণ্ড পদ্মরাগ ও একখণ্ড মরকত যদি ওজনে সমান ভারী হয়, তাহা হইলে পদ্মরাগ অপেক্ষা মরকতের মূল্য অধিক হইবে। ৩৮৬।

যে দোষে পদ্মরাগের মূল্য অল্প হইয়া থাকে, মরকতে সে দোষ থাকিলে তাহার মূল্য অত্যন্ত অল্প হইবে। ৩৮৭।

ইতি মরকত।

YY

* A certain fruit with which Hindu washermen mark the clothes. + A species of culinary plant. \$ 402

 THE EMERALD.

THE EMERALD.

Its properties.

HE beautiful green color which the Emerald possesses has not been surpassed by any other gem. This color is in pleasing contrast with the lime-stone matrix in which the gem is found. Formerly it was supposed that the coloring matter of the Emerald was the oxide of chrome, but the quantity of chromic acid, obtained by Mr. Lewy, on analysis, was so small as to be inappreciable. He gives it as his opinion that the beautiful tint of the Emerald is produced by some organic substance, which, he imagines, is a carburet of hydrogen, similar to that termed chlorophylle, which constitutes the coloring matter in the leaves of plants. The Emeralds of the darkest tint contain the largest amount of organic matter; and it is remarkable as a test that at a low heat the Emerald loses the color and becomes white and opaque, whilst the minerals of which the coloring matter is chrome (as the chrome Garnet, "Uwarowite") remain unaffected by intense heat. It is possible that the organic coloring matter of the Emerald may be derived from the decomposition of the animals whose remains are now fos silized in the rock which forms the matrix of the gem. This rock, as stated before, is a lime-stone slightly bituminous, often black with white veins, and con-

403 80

taining ammonites and other shells. Mr. Lewy has also arrived at the conclusion that the Emerald has been formed in the wet ways, that is to say. it has been deposited from a chemical solution. This stone has the same chemical properties as the Beryl or Aquamarine-except in color, which, in the case of the latter, is light blue or sea-green. It belongs to the hexagonal system of crystallization and is found in hexagonal prisms truncated at both ends. Its hardness is between 7.5 and 8. It is scratched by Spinel and can scratch Quartz with difficulty, (though specimens vary in this respect.) It is the lightest of all hyalines, its specific gravity being from 2.67 to 2.75, and its bulk is very large, compared to its weight-it being nearly double the size of a Sapphire of equal weight. It is transparent and its lustre is vitreous. It does not loose its beauty by artificial light. It is so brittle and is so soft just when it is taken out of the mine, that it crumbles by friction, but hardens by being exposed to the air. On account of this softness, it loses somewhat of the intensity of its color by long use. It possesses double refraction, though in a very small degree and acquires positive electricity by friction. It generally remains unchanged before the blow-pipe, and if it changes at all, it becomes a shade cloudy. With borax it fuses into a pale green substance much like glass. Acids cannot affect it, but it can be slowly dissolved with microsmic salt, (salt of phos£ 404

THE EMERALD.

phorus). It is composed of silica 68.5; alumina, 15.75; glucina, 12.50; peroxide of iron, 1; lime, .25; oxide of chrome, .3, the rest being made up of traces of magnesia, lime and soda. Its cleavage is imperfectly basal.

Where found.

The Emerald is now to be found in all the four quarters of the globe.

Europe.—Emeralds of the finest quality have been found in the Ural and Altai mountains. The first Emerald, found in this place (in 1830), was discovered accidentally by a charcoal-burner, at the root of a tree in the district of Perni, (east side of the Ural). A regular working of the bed, which followed at once, resulted in the discovery of several good Emeralds, (one of which weighed $101\frac{1}{4}$ carats). The supply has now diminished. Several dark-green and six-sided stones are supplied by Salzburg in Austria. These are not so very transparent as they should be.

Asia.—Several beds of Emeralds are found on the Chinese borders of Siberia and in parts of Burmah, in sands, or beds of small rivers, mixed with pure gold and Spinel. It is a matter of question whether India has ever produced Emeralds. Some that are sent to Europe bear marks of unfinished cutting, (evidently performed by the Indian lapidaries,) and have to be recut there, in order, that they might have their proper beauty.

405 %

These are so very unlike in nature to those that belong to South America, that all conjecturers have been at a loss to account for their real locality. A large Emerald, of a medium-sized hen's egg, presented to the Queen Victoria, by the King of Oudh, is said to have been found in Burmah.

Africa.—Those found in Egypt are the most esteemed. Pliny mentions the rocks about Coptos, as containing the celebrated mines of old. According to Mahomed Ben Mansur (13th century), the Emerald mines were situated on the borders of the land of the Negroes, which are still in the possession of the Khedive* De Laet points out the same locality in the 17th century. The mines most known at present are in the mountain of the Sahara, and the beds of the river Harrach (in Algiers), where it joins the river Qued Bouman. Some large specimens have been found in the Dolomite mountains.

America.—This is the place from which the best Emeralds come. The conquest of Peru by the Spaniards has opened a rich field to merchant-jewellers. The conquerors got possession of several largesized stones, one of which was as big as a pigeon's egg. A large number of Emeralds was taken from the temple of the Sun. When one of the Peruvian chiefs fell into the hands of the Spaniards, he had on his person a collar of Emeralds of large size and of

* This word is evidently a form of the Sanskrit word *Khitipa*, which means literally, *Ruler of the land*.

THE EMERALD.

great lustre. They also took possession of the large collection of Emeralds which had remained for centuries in charge of the priests of "Esmeralda"* -a large Emerald of the size of an ostrich's egg, which was supposed by the natives of Manta Valley to have been the abode of the goddess of the same and which was worshipped by them on occasions of high festivals, by the offering of as many of her own daughters (small Emeralds), as they could afford to bring. A Dominican friar, who accompanied the Spaniards, declared that the test of the true Emerald was its infrangibility. The ignorant soldiers, who knew nothing of the brittle character of the stones, began to put them to the test as dictated by the priest, by placing them under the hammer-the result being, as may be imagined, the indiscriminate destruction of a vast number of good and large Emeralds. It is said that the advice of the friar proceeded from interested motives, his object in diminishing the number of Emeralds obtained, being to sell those that he had collected for himself, to the best advantage. Most of the Emeralds now come from Santa Fé and the Tunka Valley, between the mountains of New Granada and Popagan. The Peruvians believed that the Eme-

* Stevenson, in his "Residence in South America, Vol. II.," speaks of the neighbourhood of Las Esmeraldas, as follows; "I never visited it, owing to the superstitious dread of the natives who assured me that it was enchanted and guarded by an enchanted dragon, which poured forth thunder and lightning on those who dared to ascend the river !"

407 %

×

ralds ripened in the matrix just as the fruit does upon the tree; that it was first colorless, and became gradually green, that corner first, which faced the sun. In corroboration of this belief, Pierre De Rosnel, in his book published in 1664, speaks of a Peruvian, who had seen, in Cuzco, an Emerald, a corner of which was green, and the remainder purely white. Philip II. was desirous of obtaining this marvel, but unfortunately the owner of it had shortly before caused the white corners to be rounded off, thinking that this peculiarity detracted from its merit.

The Emerald as known to the ancients.

THAT the Emerald was known to, and much used by, the ancients, admits of no question whatever. It is called in Arabia, Zamarut; in Chaldean, Ismaragdon; in Greek, Smaragdos; in Latin, Smaragdus; in Spanish, Esmeralda; in French, Emerande; in Italian, Smeraldo. It will appear that the name has undergone but little change in its course through the various countries and that it is evidently derived from the Sanskrit term, "Marakata." Ornaments made of this stone have been excavated from Pompeii and Herculaneum. Similar ornaments have been found in the ruins of ancient Rome and on the Egyptian mummies. Theophrastus says that "the Smaragdus possesses also some peculiar properties, for, it assimilates the color of the water into which it is thrown

\$ 408

THE EMERALD.

to its own color." "It is also good for the eyes ; on which account, people wear ring-stones made of it, for the sake of looking at them." Pliny writes about it at great length. In one place he says ;--" It is said that the tomb of Hermias, a prince of that island, which stood on the coast near the Tunnyfishery, was surmounted by a marble lion, the eves of which were made of these Emeralds. (a proof of their large size and little value), and shot forth such lustre upon the sea as to scare away the fish; nor could the cause for a long time be discovered, until the gems in the eyes were changed." The Emerald was for a long time called the Neronianus, on account of its being a great favorite of the Emperor Nero, who used to see the feats of the gladiators, through an eye-glass of Emerald.* Seneca speaks of Democritus of Thrace as having been possessed with the power of imitating the Emerald and of throwing the fire and color of this stone into a common pebble. Isidorus (Bishop of Seville, 630 A. C.) speaks of the Emerald thus :-"It surpasses in greenness all green stones and even the leaves of plants, and that it imparts to the air around it a green shimmer; that its color is most soothing to the eyes of those engaged in cutting and polishing the stone." Psellos, in the

^{*} Maximilian II. was credited with the possession of a ring set with an Emerald, by the reflection on which he discovered one of his courtiers helping himself to the contents of a gold cup, (filled with ducats—a present to the Emperor), while all were occupied in looking at a grand show, out of the windows of the reception room.

11th century, speaks of it ;--" It is leek-green, playing easily into gold and blue, and that it has power, when mixed with water, to heal leprosy and other diseases." An Emerald mine, unquestionably known to the ancients, was discovered in the mountains of Zebarah, (near the Arabian sea,) by Monsieur Caillaud, a French traveller who had undertaken a scientific expedition, at the request of the Pacha of Egypt. He saw ropes, baskets, lamps, levers, tools and utensils of various kinds, lying about all over the place. The Persians used the Emerald, in preference to all other gems, for adorning their jewelled goblets. Ben Mansur says, "several bits of Emerald united together upon one surface, by means of mina (green glass) are called Astar." This was evidently borrowed of the Romans. The tradition of the Sacro Catino may have given the idea to the ancient nations. The Sacro Catino was the celebrated Emerald dish, which the Queen of Sheba had, along with other gems, offered to Solomon, (who deposited it in the Temple,) and out of which Jesus Christ was said to have eaten the Last Supper. It was taken out of Palestine by the Genoese Crusaders in the 12th century, and was pledged by them for 9,500 livres. It was afterwards redeemed and placed in the church of San Lorenzo, guarded by Knights of Honor and exhibited once a year with great ceremony. It was then seized by the French and carried to Paris, where, after careful examination, it

ZZ

4.09 20

THE EMERALD.

was pronounced to be a *piece of green glass*. At the Congress of Vienna (1815), Victor Emmanuel, the King of Italy, insisted upon having the sacred dish, only for the purpose of restoring it to the church of San Lorenzo. The Italians say, that the substitution of the green glass for the real dish was made by the guardians of the sacred relic, before it was taken to Paris.

In the Middle Ages, the Emerald was used to ornament church treasures. In the tiara of the Popes, there was an Emerald, one inch long and $1\frac{1}{4}$ inch thick. There was also a brilliant Emerald in the Crown of Charlemagne.

Ben Mansur divides the Emerald into 7 classes, according to color :—I. The grass-green, (like the beautiful color of the little worms that are often seen in the grass.) II. The Basil-green. III. The Leaf-green. IV. The Verdigris-green. V. The Euphorbium-green. VI. The Myrtle-green. VII. The Soap-green, (which is the worst quality—pale, opaque, and resembling frozen oil.)

The Emerald has been in use amongst the Hindus from time immemorial. They use it profusely in ornaments and fancy articles. It is used as a pendant for the ear and bracelet for the arm. Ranjeet Sing used a bracelet made of one of the finest Emeralds known. Emeralds are often drilled through and strung together to form beads or noserings. They are used in snuff-boxes or as paperslice, hooka-pipe, &c.

411 80

X

60

Engravings on Emerald.

PLINY says, that on account of its beauty and costliness, "by the common consent of mankind, the stone was spared, being not allowed to be engraved." The fact is, that engraved real Emeralds are seldom met with. A very few can be mentioned. One bore the intaglio head of the Emperor Hadrian, another, that of his consort Sabina, a third, the heads of both facing each other. An intaglio head of the Solar Lion, in full relief, with open jaws, furious and life-like, was engraved upon an Emerald of a very fine color and lustre and of very great value. The Devonshire parure also shows a very large and beautiful Emerald cut into a Gorgon's head in high relief. The Persians were in the habit of engraving upon Emeralds the figures of eagles or beetles, believing in their power of procuring royal favors and of averting tempests. One of these charms had engraved upon it a head of Jupiter within a coiled serpent resting upon a crocodile, surrounded by the symbols of the The celebrated five Emeralds, which Planets. Fernando Cortez brought from the "Golden Castile" (America,) and gave as a wedding present to his bride in 1529, were wonderful specimens of Mexican ingenuity. "The first was in the form of a rose; the second is in that of horn; the third, like a fish with eyes of gold; the fourth was like a little bell with a fine Pearl for the tongue; on the rim of

THE EMERALD.

which was the inscription in Spanish, 'Blessed is He Who created thee.' The fifth, which was the most valuable, was a small cup with a foot of gold, and with four little chains of the same metal attached to a large Pearl as a button." Several texts from the Koran have been found on the Emerald. The Hindus have sometimes these stones carved into figures of idols. In his "Narrative of a voyage round the world in 1835-6-7," W. S. W. Buschenberger, M. D., mentions the following :--" In the temple of Boudha, in Siam, there is the figure of the god two feet high, said to be cut of a single Emerald. This idol had two brilliants, flashing light through the temple, in place of eyes, which cost in Brazil twenty thousand Dollars. The value of the whole god s inestimable. I doubted its genuineness, but Prince Momfani assured me it was an Emerald, and not a Beryl as I suggested."

The Cutting of Emerald.

THE Emerald is cut on a copper wheel with emery and polished on a tin one with rotten stone. It is generally trap-cut. The object of cutting it as a brilliant, with rounded tables, is to disguise flaws which would otherwise come to view. The Emerald can be cloven at right angles to its axis. Advantage is taken of this by the Indians, in whose ornaments flat stones of large size are often seen, simply on this account.

413 %

The Price of the Emerald : its Flaws and Defects : Imitations.

In value, the Emerald ranks next to the Ruby. Latterly it has risen enormously in value and has become a great favorite, owing to its uniform pleasing effects, both by night and day. The price depends to a great extent upon its color; for example, A light color, almost white, is worth 5/ a carat. Lightest green 20/ ,, A fair body of color 100/ ,,

A fair body of color ... 100/ ,, Good color, with flaws, from £10 to £15 ,, Pure color and clear £20 to £30 ,, Very fine dark color, velvety, and without flaws, as high as

A perfect Emerald should be of a rich, soft, lively, pure, meadow green and without any flaws. But an Emerald without flaws is a rarity. Perhaps there is no other gem which suffers more from inequality of formation, color, transparency and from clouds and specks than the Emerald. The defect is inherent in the stone to such an extent that " an Emerald without flaws" has become a proverbial expression to mean unattainable perfection. Even the smallest Peruvian stone will show one or more specks when cut. In fact, the total absence of any flaws in it should put the would-be purchaser on guard, as there is no other precious stone which can be more perfectly imitated in glass or counterS +14

i de

THE EMERALD.

feited, nay, surpassed by paste. There were several pamphlets in Pliny's time, which gave directions for making counterfeit Emeralds. The Rock-Crystal had to be heated and plunged into Verdigris, dissolved in Turpentine. The Crystal became full of minute cracks, into which the coloring fluid entered and tinged the whole substance. Great care was taken in so forming the surface as not to shew these cracks prominently upon it. A large flat Emerald, if so held as to reflect the light, will look as if it is silvered at the back; its green will disappear when its plane is brought to certain angle with the incident ray and in the same position it will exactly appear as a bit of looking-glass. This singular change is not to be observed in any other colored-stone. Ben Mansur says, that an Emerald can be distinguished from the Jasper, the Green Laal (Spinel) and the Mina (green glass,) by its polish. In fact, the lustre of the Emerald even in the palest specimens is such as to make it impossible to be mistaken for any other stone of similar color. The ancient glass Emeralds were far superior to the modern pastes, in color, lustre and hardness. A specimen of the former, found at Rome, had been recut and set in a gold ring. Some jewellers, whenever they come across a fine green paste, get it cut and facetted for a ring-stone and sell it for an Emerald to the inexperienced. The Cingalese are known to collect the thick bottoms of wine-bottles, out of which they cut very good

60

415 80

Emeralds, which they sell to the sailors. The Brighton Emeralds are made of similar stuff. The lapidaries of the place purposely throw away the broken bottles into the sea, where, through the attrition of the shingle, they become transformed into natural pebbles and thus bring to the clever artists a good profit.

Pebbles of Quartz are often mistaken for Beryls and *vice-versa*. If Emerald or Beryl, the fracture will be in planes; if Quartz, it will never be in a straight line but conchoidal.

Marvellous and Medicinal Properties.

THIS stone was dedicated to Mercury and was supposed to bestow wealth, eloquence and a knowledge of futurity. Used, as an amulet, about the neck, or set in a ring, it preserved women in childbirth and put evil spirits and vain terrors to flight. It was an infallible test of chastity and betrayed or punished its violation by flying into pieces. The following lines by Miss Landon was evidently suggested by this particular virtue of the stone :—

> "It is a gem which hath the power to show, If plighted lovers keep their faith or no: If faithful, it is like the leaves of spring; If faithless, like those leaves when withering.

> > *

*

"Take back again your Emerald gem, There is no color in the stone; It might have graced a diadem, But now its hue and light are gone."

*

*

-16

THE EMERALD.

416

and the second se

According to an ancient author, "he who dreams of green gems will become renowned and meet with truth and fidelity." Even in the modern times, the fall of an Emerald from its setting has been considered an ill-omen. When George III. was crowned, a large Emerald fell from his diadem. The superstitious attribute to this—the loss of America during his reign.

Being like all precious stones, " of a cold, dry nature," the Emerald had very potent medicinal virtues. Applied to the lips, it stopped hemorrhage. When hung round a child's neck, it prevented epileptic fits. It was a restorer of sight and memory. Where it failed to cure any disease or prevent any evils, it shivered into atoms, "being," says Bœtius de Boot, "as it were, bound to expel the evil or confess itself vanquished in the combat it sustains." He also gives directions for extracting out of Emeralds the coloring matter, which, taken internally, was considered a powerful remedy for many di-Amongst the medicinal virtues of the seases. Emerald, he mentions its power of curing dysentry, epilepsy, venomous bites, and pestilential fevers, and gives the following prescription for them :--"Pound the Emerald in an iron mortar, sift the powder through muslin, then cover it with spiritus urinæ (Sal volatile); the spirit must be distilled off, leaving the powder of a grey color, but which will communicate that of the Emerald to spirits of wine."

Celebrated Emeralds.

THERE are few Emeralds which are known to possess any historic interest. A finger-ring, (diameter, $1\frac{1}{4} \times 1\frac{1}{8}$ inch), cut out of a solid piece of Emerald of the purest quality, with two Emerald drops and two collets set with Rose Diamonds and Ruby borders, ——once belonging to the Emperor Jehangir of Delhi, whose name is engraved on itwas presented by Shah Suja to the East India Company, and was afterwards purchased by the late Lord Auckland, Governor-General of India. It is now in the possession of Hon. Miss Eden. There is also one in the possession of Duleep Sing, which is three inches long, two inches wide and $\frac{1}{2}$ an inch thick. It is of a rare beautiful color and with very It was, we believe, shown in the few specks. Great Exhibition of 1851. The Russian, Saxon, and Papal Crowns contain beautiful and large Emeralds. There is a Crystal of Emerald in the Austrian treasurv which is said to weigh 2,000 carats. The Duke of Devonshire has one whose weight is nearly 9 ounces. It came from the Muzo Mines of New Granada, near Santa Fé di Bogota and was purchased by the Duke from Dom Pedro. It is two inches in diameter and is of the finest color. It is still uncut.

There are some very good Emeralds in Bengal, amongst which we may mention those that are in the estates of the late Rajah Chunder Nauth Roy, of Nattore, of the late Baboos Kally Coomar Tagore

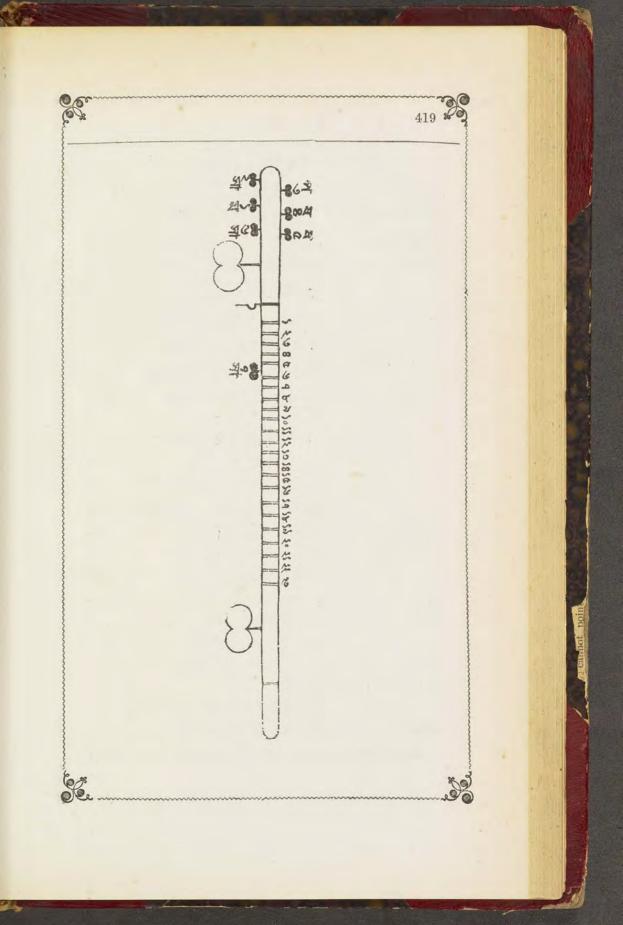
AAA

417 20

THE EMERALD.

and Soobuldas Mullick of Calcutta. Amongst the jewels, belonging to the estate of the Hon'ble Maharajah Joteendro Mohun Tagore, Bahadoor, is an Emerald of about 31 ratis and of exactly the same color as the green grass; another of about 9 ratis and a third of about 5, (the last, without any flaws whatever)—all set in rings. There is also a large stone set in a snuff-box and also one very beautiful paper-slice in the possession of the above Maharajah. One Emerald set in a ring, belonging to the estate of the late Hon'ble Prosonno Coomar Tagore, c. s. I., has engraved upon it, its owner's name in the Persian character. It is now in the possession of the Hon'ble Maharajah.







मगिमाला।

खय पुष्परागः । मूलम्।

त्रापौतपाण्डुक् चिरः पाषाणः युष्प्ररागसंज्ञस्तु । कौकण्टको नाम स्थात् स एव यदि लोज्ञितापीत: ॥ ३८८ ॥ त्रालोच्चितस्तु पौतः खच्छः काषायकः स एवोक्तः । त्रानील ग्रुक्तवर्णः सिग्धः सोमालकः स्वगुर्णेः ॥ ३८८ ॥ बत्यन्तलोच्चितो यः स एव खलु पद्मरागसंज्ञः स्टात् । ब्राप चेन्द्रनीलसंज्ञः स एव कथितः स्तनीलः सन् ॥ ३८० ॥ मूर्ल्यं वैदृर्य्य मणेरिव गदितं च्चस्थ रत्नशास्त्रविदा । धारणफलञ्च तहत् किन्तु स्त्रीणां स्ततप्रदो अवति ॥ ३८१ ॥

पुष्पराग ऋषीत् पुख्राजका वयान ।

तर्जमा।

योडा पीलापनलियेड्य मनोहर, योडा सफेद रङ्ग पत्यरको पुष्पराग अर्थात् पुखराज कहते हैं, वही पुख-राज योडा पीलापनलियेड्य लालरङ्ग होने से कौररखक कहलाता है, और योडा खुखीमायेल जरट् रङ्ग और खच्छ होने से काषाय कहलाता है, और योडा खुखी-मायेल सफेद रङ्ग और सिग्ध होने से सोमालक कह-लाता है, और बड्डत् लालरङ्ग होने से पद्मराग कह-लाता है, और बड्डत् नीला होने से दुन्ट्रनील कहलाता है। ३८८८ । ३८०।

रत्नपार्ची पण्डितलोग कहते हैं पुख्राजका मूल चौर पहेरनेका फल लभुनियाके समान है। खास् कर्त वांज स्त्री पुख्राज पहेरनेसे लेडक़ीवाली हो सक्ति। इट्हा

421 \$

K

THE TOPAZ, TRANSLATION.

388—390. A certain ash-colored stone having a beautiful yellowish shade, goes by the name of Topaz. If it is red with a yellowish shade, it is called *Kauruntaka*; if it is transparent and yellow with a pale-red lustre, it is called *Kasáyaka*; if it is cool and white with a pale-red shade, it is called *Somálaka*; if it is deep-red, it is called *Padmarága*; and finally, if it is deep-blue, it is called *Indraníla*.

391. In worth and use, (say the authorities) Topazes resemble the coral,—with this difference, that by wearing a Topaz, a barren woman can get a child.

পষ্পরাগ ৷

অহুবাদ।

ঈষৎ পীতের আভাযুক্ত মনোজ্ঞ পাণ্ডুবর্ণ প্রস্তরকে পুপ্প-রাগ কহে। সেই পুপ্পরাগ ঈষৎ পীতের আভাবিশিষ্ট লোহিতবর্ণ হইলে কৌরুণ্টক নামে, ঈষল্লোহিতের আভা-যুক্ত পীতবর্ণ ও স্বক্ষ হইলে কাষায়ক নামে, ঈষৎ লোহি-তের আভাযুক্ত শুরুবর্ণ ও স্নিগ্ধ হইলে সোমালক নামে, অত্যন্ত লোহিতবর্ণ হইলে পদ্মরাগ নামে এবং অত্যন্ত নীলবর্ণ হইলে ইন্দ্রনীল নামে কথিত হয় ৩৮৮০০৮৯০০০০।

মণিশাস্ত্রবিৎ পণ্ডিতেরা কহেন, পুষ্পরাগের মূল্য ও ধারণফল, বৈদূর্য্য মণির সদৃশ, বিশেষের মধ্যে পুষ্পারাগ ধারণ করিলে বন্ধ্যা স্ত্রীলোকও পুত্রবতীহুইতে পারে ৷৩৯১

मणिमाचा।

म्लम्।

भणपुष्प्रथमः कान्तत्रा खच्छभावखु चिक्रणः । युचदो धनदः पुण्यः पुष्परागमण्मितः ॥ ३८२ ॥ ईषत्पीतञ्च सच्छायं खच्छं कान्तत्रा मनोइरं । युष्परागं भवेच्छुद्वं कथितं रत्नकोविदैः ॥ ३८३ ॥ बच्चादिजातिभेदेन तद्विज्ञेयं चतुर्विधं । छाया चतुर्विधा तस्य सितापीतासितासिता ॥ ३८४ ॥

तर्जमा।

ग्रणके फुलक समान कान्तिविशिष्ट, खच्छ, चिक्रण, युखराज बक्तत् पाक और इसी तरहका युखराज पहेरनेसे वेलेड्केवाला लेड्केवाला और वेधन दौलतवाला होता है। ३८२।

रत्नपार्ची पण्डितके मतके चनुमार थोड़ा जरट् रङ्ग, कायाविश्विष्ट, खच्छ चौर मनोइर कान्तिविश्विष्ट पुखराज उत्तम है। ३८३।

जिस् तरहमे बाह्मण, चत्नि, वैश्व चौर यद्र चार जात होते हैं, उसी तरह पुखराजभी चार जात होता है चौर वही चार किसिमके पुखराजसे सफेद, जरद्, योड़ा सफेद चौर कृष्ण यही चारप्रकारकी काया निक्लति हैं। ३८१।

423 \$

TRANSLATION.

392. A Topaz, beautiful as the Sana* flower, transparent and smooth is sacred. By wearing this gem, a person who has no child may be blessed with one; and a poor man acquire riches.

393. According to the authorities, a Topaz which has a fine yellowish shade, and which is smooth, is excellent.

394. The Brahminical classification of castes holds also with Topazes : they emit white, yellow, whitish and black shades.

অন্থবাদ।

শণপুষ্পের ত্থায় কান্তিমান্, স্বচ্ছ ও চিরুণ পুষ্পরাগ অতিপবিত্র, এইপ্রকার পুষ্পরাগ ধারণ করিলে অপুত্র ব্যক্তি পুত্রবান্ ও নির্ধন ব্যক্তি ধনী হয়। ৩৯২।

রত্নবিৎ পণ্ডিতদিগের মতে ঈষৎপীতবর্ণ, ছায়াবিশিষ্ট, স্বচ্ছ ও মনোহর কান্তিমান্ পুষ্পরাগই উৎকৃষ্ট। ৩৯৩।

ব্রহ্মাদি জাতিভেদে পুষ্পারাগ চারিপ্রকার হইয়া থাকে, এবং পুষ্পারাগ হইতে শুরু, পীত, ঈষৎ শুরু ও কুষ্ণ এই চতুর্বিধ ছায়া নির্গত হয়। ৩৯৪।

* Cannavis Saliva.

A24

मणिमाचा।

मूलम्। खच्छायपौतगुरु गाचखरङ्गग्रुद्धं सिग्धञ्च निर्मालमतीव खटत्तग्रीतं। यः पुष्परागग्रकलं कलयेदसुष्य पुष्पाति कीर्त्तिमतिग्रौर्य्य खखायुरर्यान्॥ ३८५॥

क्तव्याविन्दद्भितं रूचं धवलं मलिनं लघु। विच्छायं शक्षरागारं पुष्परागं सदोषकम् ॥ ३८६ ॥

तर्जमा ।

जो चादमी उत्तम कायाविशिष्ट चौर वैच्चयेव जरट् रङ्ग, भारी, सिग्ध, वज्जत् साफ, गोल चौर ठाग्छा युखराज पहरे, उस्की नाम्बरी, वल, सुख, उमर चौर दौलत ज्यादा होति हैं। ३८५।

जो युखराज क्रिटेदार, नीचा उंचा, सादारङ्ग, योडा़ मयला, त्रोजनमे हाल्का, लमरङ्ग और दुधक, ऐसा युखराज बद्धत् खाराफ हैं। ३८६।

इति युखराजका वयान।



E.

425 20

TRANSLATION.

395. A man, who wears a faultlessly yellow Topaz possessed of a beautiful shade, weighty, exceedingly cool, flawless, and perfectly round, reaps fame, heroism, happiness, wealth, and length of days.

396. That Topaz which is spotted, rough, white, yet dirty, light, void of lustre, and containing grits, is noxious.

অহুবাদ।

যে ব্যক্তি উত্তম ছায়াবিশিষ্ট, পীতবর্ণ, গুরু, বিশুদ্ধবর্ণ, মিগ্ধ, অত্যন্ত নির্দ্মল, উত্তম গোলাকার ও অত্যন্ত শীতল পুষ্পরাগ ধারণ করে, তাহার কীর্ত্তি, শোর্ষ্য, স্থখ, আয়ু ও অর্থ বর্দ্ধিত হয়। ৩৯৫।

যে পুষ্পেরাগ বিন্দুচিহ্নাঙ্কিত, রূক্ষ, ধবলবর্ণ অথচ মলিন, ওজনে লঘু, ছায়াবিহীন ও শর্করাযুক্ত, সেই পুষ্পরাগ দোষদূষিত। ৩৯৬।

ইতি পুষ্পরাগ।



BBB

THE TOPAZ.

THE TOPAZ.

Its Properties.

2HE Topaz belongs to the trimetric or rhombic system of crystallization. Its specific gravity is greater than that of the Diamond-being from 3.6 to 4.2, but it is next to it in hardness-being 8 in the scale. It is scratched by Diamond only and can very easily cut Quartz. It possesses double refraction, though in a small degree; acquires electricity by heat, friction and pressure, and retains it for several hours. It is transparent and its lustre is vitreous. It is infusible in charcoal before the blow-pipe, but, under the influence of strong heat, the surface breaks immediately as blisters are formed thereon. With borax it fuses into clear glass and gets blue with cobalt solution. It yields hydrofluoric acid by the application of sulphuric acid, but is not affected at all by muriatic acid. Its cleavage is perfectly basal, *i.e.*, it breaks with a flat surface at right-angles with or across the prism. The Topaz is generally divided into two kinds, according to the difference in the chemical composition. Those called the Oriental Topaz, are composed of nearly pure alumina; those known as the Occidental, contain little more than 57 parts of alumina -the rest consisting of silica and fluorine.

63

Where found : Varieties of the Topaz.

THE Topaz is found in almost all the parts of the world, though it varies in color and appearance in almost every country, where it is met with. Next in importance to the Oriental Topaz, is that variety which comes from Brazil. Those from Villa Ricca have a deep orange tint. The crystals, seldom exceeding 2 or 3 inches in length, are generally found in soft loose sandy clay. Those that come from the province of Minas Geräes, are found in rounded pebbles, perfectly pure and colorless. These are called "pingas d'agoa" or "gouttes d'eau," or the "Novas Minas," and, by the Portuguese, the "Slave-Diamond." These are capable of much higher polish than rough crystal. Some specimens of this kind have been found in Tasmania, where also some blue and green ones have been discovered, though these are more water-worn than those of any other place. Topazes of a fine pale-blue color are also found in the east of Siberia, together with Beryl, Felspar, Quartz. &c.; also in the Ural, north of Katharinburg, in Graphic, Granite and Albite. The Saxon Topaz, found at Altenburg, is generally of a clear, transparent yellow, extremely hard and very brilliant. It becomes perfectly white by being put in a small crucible or in a tobacco-pipe, covered with ashes or sand, and subjected to heat. It is also found in the Voigtland, 2 miles from Anerback, sometimes covered with a yellowish marl. The

427 20

\$ 428

THE TOPAZ.

Bohemian Topaz is of a deep hyacinth and sometimes of a brown hue. The so-called German Topaz is nothing more than a sort of glassy spar. The Topaz is also found in Connecticut, the United States, Peru, Ceylon, Asia-Minor, Great Britain, and Ireland, and the Hebridis.

The Topaz as known to the Ancients.

THIS stone was called in Hebrew,—" Pittdoh," by Professor Aaron Pick, and "Pittdoh," by Gesenius, who (the latter) thought, that it was derived from the Sanskrit word *Pita* (yellow) and that the Greek "Topásion" is a transposition from "Pittdoh" to "Tipdoh." But the Topazion (found in an island of the same name in the Red Sea,) is not what is known as the present Topaz. Topazion is the modern Peridot, while, according to some, Chrysolite was the ancient name for the Oriental Topaz. The Topaz is one of the stones noticed in the Bible and was, in the Middle Ages, considered to be the emblem of Apostle James the Younger. It was also held in high esteem by the Greeks and Romans.

Cutting and Engraving.

THE Topaz is cut on a leaden wheel with emery and polished with tripoli. The form of cutting is the

429 20

36

full Brilliant, leaving the table smaller and the bezil rather deeper than in the Diamond. The grain (which is the technical expression for the cleavage surface) is well nigh impossible to polish and it becomes necessary for the lapidary to take a small angle from the cleavage plane, instead of cutting it flat, in order that the highest degree of brilliance might be obtained. Now-a-days, few stone-cutters pay the necessary amount of attention to secure the intense whiteness and lustre, which it should have, and the consequence is, a well-cut Topaz has become a rare article. The *Goutte d'eau*, if cut as a Brilliant, with a small table, will make a beautiful ornament.

There are still to be found several intaglios engraved on this stone by the Greeks. The Emperor Hadrian (Hadrianus Guildmus of Naples) was said to possess a Topaz seal-ring, upon which the following lines were engraved :—

> "Natura deficit Fortuna mutatur Deus omina Cernit."

Pliny says, that this stone was found in the Alabaster mines, near the Egyptian city of Thebes. In the Bibliotheque Royal in Paris, is a signet-ring of Topaz, upon which the portraits of Philip II. and Don Carlos, are deeply cut. There is also a Topaz, of a citron-yellow tint, which represents an Indian Bacchus. There is in St. Petersburg a specimen of excellent workmanship on the Topaz,

00

and the second se

THE TOPAZ.

upon which is engraved the Constellation of Sirius. A Persian jeweller is reported to be in the possession of a Topaz amulet, through which the words "From God alone is success" are bored, in Arabic characters. During his visit to Rome (1524 to 27), Cellini mentions, as one of the three finest antiques procured by him from that place, a perfect Topaz, as big as a hazel-nut, upon which was engraved a head of Minerva. But whether the stone was a real Topaz or not is a matter of question.

Its Price : Imitations.

THE Topaz is not so much liked now as it was 50 years ago. The fact is, it is now only used in the cheapest jewelry, in the jewelling of common Swiss clocks and for optical purposes. The rough stones, used for optical purposes, realize from 5 to 10s. per pound avoirdupois. The pink Topaz fetches better value-the price ranging between 40s. to £20 per ounce, according to the depth of the pink color. The Topaz is called by different names according to the difference of color in the specimens :- The Nova Mina is colorless ; The Brazilian Sapphire is light blue; the Aquamarine is greenish; the Brazilian Chrysolite is greenish yellow; the Brazilian Ruby is the artificially obtained pink or rose color. It should be distinctly borne in mind that the fine pink in the Topaz is not natural;

431 %

it is obtained by covering a brownish yellow Topaz with sand and putting it to a low red heat. The experiment can also be tried by wrapping up the stone in German tinder, bound with thin iron wire, and then exposed to heat, either by setting fire to it or by putting it before the blow-pipe. Those which are of the peculiar brown color obtain this pink hue; while the pale yellow ones become permanently white. The Topaz can be distinguished from the Chrysoberyl or a yellow Sapphire by putting their electrical properties to the test. A yellow variety of the Quartz is sometimes sold for the Topaz, but a careful reference to the characteristics of each will set the question of identity at rest. The Cairn-Gorm (a variety of the Quartz) is often called by the term "false Topaz," owing to its similarity with the stone. The Egyptian Topaz is sometimes passed off for the Oriental, but it is less hard. The true Topaz should be of a bright citron, and at times, of a bright clear gold color. The soft satin-like hue is the one most preferred.

Marvellous and Medicinal Properties attributed to the Topaz.

LIKE the Ruby, the Topaz was gifted with the power of giving light in the dark. A Topaz given by Lady Hildegarde, (wife of Theoderic, Count of Holland) to Monsieur Adelbert, was known to give such a brilliant light throughout the chapel where

THE TOPAZ.

it was kept, that prayers could be read without the help of a lamp. According to the Ancients, the Topaz would become pale and obscure if it came in contact with poison. It soothed anger and quenched the heat of boiling water. It drove away sadness and night-mares, strengthened the intellect, sharpened the wit, bestowed courage and if bound on the left arm or hung round the neck, set in gold, it dispelled enchantments. If worn on the left hand, it preserved from sensuality. It was also supposed to possess great medicinal virtues. When powdered and taken in wine, it cured asthma, sleeplessness and many other diseases.

Celebrated Topazes.

THE finest Topaz on record is the one which Tavernier saw in the treasury of Arungzebe, when he had an audience with that Emperor in 1665. It weighed $157\frac{3}{4}$ carats and was of an exactly octagonal shape, with two rows of small facets, along the top of the besil. It was purchased by the Emperor, at Goa, for Rs. 1,80,000.

The Braganza, of which fuller notice has been taken under the heading, "Celebrated Diamonds," is universally believed to be a white Topaz of unusual brilliancy and extraordinary weight. There is a heavy crystal at St. Petersburg, which is $4\frac{3}{4}$ inches long and $4\frac{1}{2}$ wide, weighing 31tbs. A big lump of white Topaz, now in the British Museum,



CCC

was many years ago used by a London Marine store-dealer as a door-weight, and afterwards sold by him for 3 shillings. Its weight is about 12 lbs. avoirdupois.

There is, in the possession of the Hon'ble Maharajah Joteendro Mohun Tagore, Bahadoor, a very large Topaz, of a beautiful citron tint, weighing about 103 ratis, of very great brilliance and without any flaws whatever. There is also one, with the Maharajah, which is of a smoke-color and weighs about 200 ratis. It forms the pendant to a neck-lace of his family-idol at Moolajore.



मणिमाला।

ग्रयेन्द्रनील: ।

म्लम्।

इन्द्रनोलस्य सम्भूतिः सिंच्चलद्वीपमध्यतः । नद्या रावणगङ्गायाः कूले पद्माकरे स्मृता ॥ ३८७ ॥ तचासिताज्जच्चभ्रदसनामिश्टङ्ग-ण्रार्ङ्गायुधाङ्गच्चरकण्डकलापिग्रच्छैः । ण्रुक्ते तरैच कुस्उमैर्गिरिकर्णिकाया-स्तस्मिन् भवन्ति मणयः सट्टणावभासः ॥ ३८८ ॥

इन्द्रनील या नीलम्का वयान।

तर्जमा।

सिंछलद्वीपनें चन्तर्गतमे रावणगङ्गाने नरिद पद्मानर-

देशमे इन्ट्रनील या नोला पयदा होता है। ३१७। तामाम इन्ट्रनीलका रङ्ग समान नहि होता, कोइ कोइ नीलकमल, नीलास्वर, बज्जत् साफ तलवार, स्वमर, छष्ण-जीका वदन, महादेवजीका कण्ट, मयूरके पुंछका चांद, श्रीर काले अपराजिताका फुलके समान है। ३९८ ।

SAPPHIRE.

"_____Now glow'd the firmament With living Sapphires_____"

Par. Lost. B. IV.

435 20

TRANSLATION.

397. The Sapphire is found in the country of *Padmákara* near the river Rávana Gangá in Ceylon.

398. All Sapphires are not of the same color. Those found in Ceylon resemble one or other of the following objects:—The blue lotus, a cloth dyed in blue, a polished sword, the *Bhramara*,* Srī Krishna,† Mahádeva's throat,‡ the eye in a peacock's tail, the black *aparájitá*.§

अथ रेन्मुनील। অন্থবাদ।

সিংহল দ্বীপের মধ্যগত রাবণগঙ্গার সমিহিত পদ্মা-কর প্রদেশে ইন্দ্রনীল উৎপন্ন হয়। ৩৯৭।

ইন্দ্রনীলের মধ্যে কতকগুলি নীলপদ্ম, নীলবসন, স্থমা-র্জিত করবাল, ভ্রমর, জ্রীরুঞ্চ, মহাদেবের কণ্ঠ, ময়ূর পুচ্ছান্ত-গত চন্দ্রক, ও রুফ্টাপরাজিতাপুষ্পের সদৃশ হয়। ৩৯৮।

* The black bee.

† A God analogous to the Cupid of classical mythology. His color is represented as beautifully gray.

 \ddagger The throat of the Great Destroyer of the Hindu Triad is blue. He swallowed the poison that arose at the far-famed churning of the 'Vasty Sea'—along with the moon, the nectar 'the fair and lovely $Sr\bar{v}$ '—the Impersonation of all lovelinesss and grace—Mahádeva took in the poison to save Nature and her works, but could not swallow it—a passage in Hindu Mythology rivalled only by the Sufferingat Calvary.

§ A name applied to several plants, Clitoria Ternatea, Marsilia Quadrifolia, Sesbania Ægyptiaca.

मणिमाचा।

मूलम्। अन्ये प्रसन्नपयसः पयसांनिधातु-रखुलिषः शिखिगलप्रतिमास्तयान्ये । नोलीरसप्रभववुदुद्भाञ्च केचित् केचित्तया समदकोकिलकण्डभासः ॥ ३८८ ॥ रवस्प्रकारविस्रष्टवर्णे शोभाभिभासिनः । जायन्ते मणयस्तस्तिन्द्रिनीला मच्चाग्रणाः ॥ ८०० ॥ श्वे तनीलं रक्तनीलं पीतनीलमयापि वा । ऋष्णनीलं तथा च्चे यं वाद्यणादिकमेण तु ॥ ८०९ ॥ छाया चतुर्विधा तस्या ग्रृणु वच्चामि लच्चणं । सितच्छायो भवेदिप्रस्तास्रच्छायस्तु चन्त्रियः । धीतच्छायस्तु वैस्थः स्याद्रुषलः कृष्णदीधितिः ॥ ८०२ ॥

तर्जमा।

ससुन्ट्रका साफ पाणि, मयूरका गला, नौलरङ्ग जलका बुट्बुट्रा और कोकिलका कण्ड इच्ची सव चीजोंके समान रङ्ग इन्ट्रनीलमे देखा जाता है। और इसी किसिमका इन्ट्रनील सिंहलदेश्रमे पयदा होता है। ३८८। ४००।

जिस् तरहरे वाह्मण, चनिु, वैश्व और अट्र चारजात होते हैं, उसी तरह नीलम्मेभी चारजात होते हैं। सफेदीमायेल नीला, खुखीमायेल नीला, जरदीमायेल नीला और सेयाहीमायेल नीला यही चारजात होता है। ४०१।

दूसी चारजातका इन्ट्रनील चारजातके कायाके जरि-वेसे जाना जाता छैं; बाह्मणवर्णकी सफेद काया, चत्ति-वर्णकी सुख काया, वैद्यवर्णकी जरद् काया और श्रद्रवर्णकी सेया काया तजविज् कि गेद्र हैं। ४०२।

437

TRANSLATION.

399—400. The 'dark blue ocean,' the peacock's throat, the bubbles of blue water and the throat of the mad *Kokila*.* These kinds of the Sapphire are generally found.

401-402. A blue Sapphire with a white shade is a Brahmin; a blue one with a red shade is a Kshetrya; a Sapphire of the same color with a yellow lustre is a Vaisya; and finally a blue Sapphire shining in dark lustre is a Sudra.

অন্থবাদ।

সমুদ্রের নির্ম্মল জলরাশি, ময়ুরের কণ্ঠ, নীলরসের বুদ্বুদ্ ও মত্তকোকিলকণ্ঠ, এই সকল পদার্থের সদৃশ বর্ণ ই সচরাচর ইন্দ্রনীলে লক্ষিত হয়, এইপ্রকার বর্ণবিভূষিত ইন্দ্রনীল সিংহলে জন্মিয়া থাকে। ৩৯৯। ৪০০।

ব্রাহ্মণাদি বর্ণভেদে ইন্দ্রনীলের শ্বেতের আভাযুক্ত নীল, রক্তের আভাযুক্ত নীল, পীতের আভাযুক্ত নীল এবং ক্নফের আভাযুক্ত নীল, এই চতুর্বিধ বর্ণভেদ হইয়া থাকে। ৪০১।

উক্ত চারি জাতি চারিপ্রকার ছায়া দ্বারা পরিজ্ঞাত হওয়া যায়, ব্রহ্মবর্ণের শ্বেতচ্ছায়া, ক্ষত্রিয়বর্ণের রক্তচ্ছায়া, বৈশ্যবর্ণের পীতচ্ছায়া এবং শূদ্রবর্ণের কৃষ্ণচ্ছায়া নির্দ্দিষ্ট হইয়াছে। ৪০২।

* Vide antè.

मूलम्। यथा च पद्मरागाणां जातकचितयं भवेत्। इन्द्रनीलेघूपि तथा ट्रष्टव्यमविश्वेषतः ॥ ८०३ ॥ यस्य मध्यगता भातिनीलिस्पेन्द्रायुधप्रभा । तमिन्द्रनीलम्तियाज्जमें हांघें भुवि दुर्लमं ॥ ८०८ ॥ यस्तु वर्णस्य भूयस्त्वात् चौरे शत्रुपे स्थितः । नीलभावं नयेत् सर्व्वं महानीलः स उच्यते ॥ ८०५ ॥ इन्द्रनीलस्तु नीलात्मा पद्मरागस्तु लोहितः । यानीलश्कास्तिग्धय्य मणिभरकता भवेत् ॥ ८०६ ॥ यानीलश्कास्तिग्धय्य मणिभरकता भवेत् ॥ ८०६ ॥ यानीलश्कास्तिग्धय्य मणिभरकता भवेत् ॥ ८०६ ॥ यागोहितमापीतच्च स्त्वच्चं काषायकं विदुः । यापीतपाण्डुपाषाणः पुष्परागोऽभिधोयते । तमेव लोहिताकारमाज्ञः कौरण्डकं वुधाः ॥ ८०७॥ तर्जमा।

उत्तम, मध्यम और अधम अर्थात् पहिला, दोस्रा और तिस्रे दर्जेके हिसावमे जिस् तरहेसे पद्मराग तिन किसिम्का होता है, उसी तरहेसे नौलाभी तिन किसिम्का होता है । ४०३ ।

जिस् इन्द्रनीलके बीचमे इन्द्रधनुकके ममान आभा निकेल्ति है, वह इन्द्रनील बज्जत् दुर्लभ है, खनायास मिल्नेसे बज्जत् किमतको विकता है । ४०४।

जो इन्ट्रनील अपने एकशौगुणे दुधमे रहनेसे तामाम दुधको नीलरङ्ग कर्दे, उस्को महानील वोल्ते हैं । १०५। रत्नके मध्ये जो नीलरङ्ग, वह इन्ट्रनील; जो स्नुखी-मायेल, वह पद्मराग; जो सवुजरङ्ग, वह पान्ना; जो थोड़ा नीलापनलियेज्ज्वये और थोड़ा स्नुख, वह काषाय; जो पीलापनलियेज्ज्वये और थोड़ा स्नुख, वह काषाय; जो पीलापनलियेज्ज्वये थोड़ा सादा, वह पुख्राज और वही पुख्राज स्नुखरङ्ग होनेसे कौरग्डक कहलाता हैं । १०६ । ४०७ ।

×

439

TRANSLATION.

403. As Rubies are good, middling and bad,—so it is also with Sapphires.

404. That Sapphire whose interior gleams with the iris, is a rare gem of priceless worth.

405. That Sapphire which being thrown into a quantity of milk a hundred times its bulk, paints the whole mass with its native blue, is entitled a mahánīla.

406-407. Of gems, those which are blue, are Sapphires; those which are red, are Rubies; those which are green, are Emeralds; those which are red with a shade of yellow are *Kasáyas*; those which are ash-colored with a yellow shade, are *Pushparágas*; those of the last which are red, are called *Kaurandakas*,

অন্থবাদ।

উত্তম, মধ্যম ও অধমভেদে পদ্মরাগ যেমন ত্রিবিধ হয়, ইন্দ্রনীলও সেইরূপ ত্রিবিধ হইয়া থাকে। ৪০৩।

যে ইন্দ্রনীলের মধ্যহইতে ইন্দ্রায়ুধের ন্যায় আভা বিনিঃ-স্থত হয়, সেপ্রকার ইন্দ্রনীল অতিছর্লভ, দৈবাৎ প্রাপ্ত হইলে মহামূল্যে বিক্রীত হইতে পারে। ৪০৪।

যে ইন্দ্রনীল শতগুণ ছগ্ধে নিক্ষিপ্ত হইয়া নিজনীলবর্ণে সমুদায় ছগ্ধকে নীলবর্ণ করে, তাহাকে মহানীল বলে।৪০৫।

রত্নের মধ্যে যেগুলি নীলবর্ণ, তাহারা ইন্দ্রনীল; যে গুলি লোহিতবর্ণ, তাহারা পদ্মরাগ; যেগুলি হরিদ্বর্ণ, তাহারা মরকত; যেগুলি ঈষৎপীতযুক্ত লোহিতবর্ণ, তাহারা কাষায়; যেগুলি ঈষৎপীতের আভাযুক্ত পাণ্ডুবর্ণ, তাহারা পুষ্পরাগ এবং সেই পুষ্পরাগ লোহিতবর্ণ হইলে কৌরণ্ডক বলিয়া অভিহিত হইয়া থাকে। ৪০৬। ৪০৭।

मणिमाचा।

अथेन्द्रनीलगुणाः।

मूलम्। गुरु: सिग्धद्य वर्णाढ्यः पार्श्व वर्त्ताे च रद्धकः । इन्द्रनीलः समाख्यात: पत्रभिः खमहागुर्णैः ॥ ४०८ ॥ प्रमाणेऽत्यो गुरुमौने कुलट्टद्विकरो गुरु: । स्रे हं स्ववन्निवामाति सिग्धो धनविवर्द्धनः ॥ ४०८ ॥ वालार्क्काभिमुखो नीलो वमन्नीलां ग्रिखां हि यः । वर्णीढग्रो नाम नीलोऽयं धनधान्यविवर्द्धनः ॥ ४१० ॥

नीलाका गुण।

तर्जमा ।

ग्रुकल, सिग्धल, वर्णाक्यल, पार्खवर्त्तिल और रज्जकल यही पांच तरहका गुणयुक्त इन्द्रनील अेष्ठ है। ४०८ ।

जो इन्द्रनील कट्मे कोटा, और ओजनमें भारी, उस्को ग्रुक कहते हैं, गुक इन्द्रनील आवलात्की ज्यादाभी कर्ता हैं; और जिस्के होनेंसे हामेसा सहव्वत् होति ह, उस्को सिग्ध कहते हैं; सिग्ध इन्द्रनील दौलतकी टह्य कर्ता हैं। ४०१।

सुवच्चके सूर्य्य के सामने रख्नेसे जिस् इन्द्रनीलसे नील-वर्ण भिखा निक्ले, उस्को वर्णाढा कच्चते चैं; स्रौर वर्षाढा इन्द्रनील जरियेसे धन और धान्यकी टट्ठि चोति चै। ४१०।

441 80

Qualities of the Sapphire.

TRANSLATION.

408. Weight, coolness, depth of color, the quality of being $p\bar{a}rsvavart\bar{i}^*$ and beauty, invest a Sapphire with matchless worth.

409. That Sapphire which combines great weight with small bulk is called $Guru^{\dagger}$: such a gem conduces to increase of family. That which always gives out moisture is called *Snigdha*.[‡] A *Snigdha* Sapphire brings on accession of wealth.

410. That Sapphire which, on being exposed to the morning sun, flames in a blue effulgence, is termed *Varnādhya*. It brings prosperity.

ইন্দুনীলের গুণ।

অহুবাদ।

গুরুত্ব, মিশ্বত্ব, বর্ণাচ্যত্ব, পার্শ্ব বর্ত্তিত্ব, ও রঞ্জকত্ব, এই পঞ্চবিধ গুণভূষিত ইন্দ্রনীলই শ্রেষ্ঠ। ৪০৮।

যে ইন্দ্রনীল প্রমাণে অতিঅল্প হইয়াও ওজনে অধিক ভারী হয়, তাহাকে গুরু কহে, গুরু ইন্দ্রনীল বংশবৃদ্ধিকর; যাহা হইতে সর্ব্বদা স্নেহ নির্গত হয়, তাহার নাম স্নিগ্ধ, স্নিগ্ধ ইন্দ্রনীল ধনবৃদ্ধিকারক। ৪০৯।

প্রাতঃকালের সূর্য্যাভিমুথে ধারণ করিলে যে ইন্দ্রনীল হইতে নীলবর্ণ শিখা নির্গত হয়, তাহাকে বর্ণাচ্য বলা যায়, বর্ণাচ্য ইন্দ্রনীল দ্বারা ধনধান্ডাদি রদ্ধি প্রাপ্ত হয়।৪১০।

DDD

* See page 443. + Literally heavy. ‡ Vide ante.

10°	
De	442

E S

मगिमाला।

मूचम्। स्फाटिकं रजतं स्वर्णं मन्यदा वस्तु तैजसं। पार्क्ष स्थितं नीलमणेः पार्श्ववत्ती यग्रः प्रदः ॥ ४११ ॥ च्रात्र्ययं यस्य नीलस्य तमसेव समाटतं। रज्ज्ञको नाम नीलोऽयं चीयग्रःकुलवर्द्वनः ॥ ४१२ ॥

अधेन्द्रनीलदोषाः।

दोषान्नीले प्रवच्धासि नाम भिर्ले चण्ये घट्। अभ्व अपटलच्छाया चास खिचक एव च। स्टद्म्स गर्भरौच्छाणि सहानीले घुटू वर्णं॥ ४१३॥

तर्जमा।

जिस् इन्ट्रनीलके एक जगहमे स्फटिक, रूपी, सौणा अथवा औरकोद चमकनेवाला पदार्थ देखा जाय, उस्का नाम पार्खवक्ती अर्थात् लाजवर्क्त कहते हैं; उस्के पहेरनेसे नाम्बरी होति हैं। 888 ।

जो इन्द्रनील किसी वर्त्तनमे रख्नेसे तामाम वर्त्तनको हाव्यारङ्ग कर्दे, उस्का नाम रच्चक हैं; रच्चक इन्ट्र-नील दीलन, नाम्बरी और आवलातकी ष्टड्वि कर्ते हैं। ४९२।

नीलाका खयेव।

अभ्वक, चास, चिचक सृद्गर्भ, अम्मगर्भ और रौच्च यही कप्रकारका अधेव इन्द्रनील में होता है। ४१३।

443 20

TRANSLATION.

411. That Sapphire through which any lustrous substance such as crystal, silver, gold, is seen, is entitled *pārsvavartī*. A *pārsvavartī* Sapphire brings on fame.

412. That Sapphire which, when placed in a pot, darkens it all through, is called *Ranjaka*. This gem increases wealth and is conducive to fame and increase of family.

Defects of the Sapphire.

413. Avraka, Trása, C'itraka, Mridgarva, Asmagarva and Raukshya are the six defects of Sapphires.

অহুবাদ।

যে ইন্দ্রনীলের একদেশে স্ফটিক, রজত, স্বর্ণ বা অন্থ কোন তৈজস পদার্থ লক্ষিত হয়, তাহার নাম পার্শ্ববর্তী, পার্শ্ববর্তী ইন্দ্রনীল হইতে যশোলাভ হয়। ৪১১।

যে ইন্দ্রনীল কোন পাত্রে স্থাপন করিলে সমুদায় পাত্রটী কুষ্ণ্যবর্ণ ধারণ করে, তাহার নাম রঞ্জক, রঞ্জক ইন্দ্রনীল লক্ষ্মী, যশ ও বংশ বর্দ্ধন করে। ৪১২।

रेन्म्रनीलित प्राय।

অভ্রক, ত্রাস, চিত্রক, মৃদ্গর্ভ, অশ্মগর্ভ, ও রোক্ষ্য, এই ছয়প্রকার দোষ ইন্দ্রনীলে লক্ষিত হইয়া থাকে। ৪১৩।



ego o

म्लम् ।

त्रम्वत् पटलं यस्मिन् तदभ्वकमिति स्मृतं । धारणे तस्य सम्यत्तिरायुच्चैव विनन्धति ॥ ८९८ ॥ मेदसंत्रयकत्त्रासस्तेन दंछि, भयं भवेत् । चित्रवर्णे द्रवाभाति चित्रकः कुलनाग्रनः ॥ ८९५ ॥ मृत्तिका यस्य गर्भस्था लच्चते रत्नकोविदैः । मृत्तिकागर्भकं नाम तग्दोषजनकं भवेत् ॥ ८९६ ॥

तर्जमा।

जिस् इन्द्रनीलके उपरके हिस्से में चश्वकके समान काया मालुम हो, उस्की चश्वक कहते हैं; इस् तरहका इन्द्र-नील पहेर्नेसे उगर और दौलत नाश होति है। ४९४।

जिस् निशानके जरियेसे द्रन्ट्रनील टुटा मालुम हो, उस्को चास कहते हैं; चास अयेवका दन्ट्रनील दांत काटनेवाले जानवारोंका खौफ पयदा करता है। जो दन्ट्रनील कोद्दप्रकारका रङ्ग रख्ता हो, उस्का नाम चिचक; चिचक अयेवका द्रन्ट्रनील कुलका नाश कर्ता है। ४९५।

जिस्के वौचके हिस्से में माट्टिके एँमा मालुम होए, उस्को मृद्गर्भ कहते हैं; मृद्गर्भ अयेवका नीला जिल-दिको विमारी पयदा कर्ते हैं। ४९६।

445 20

E

TRANSLATION.

414. A Sapphire the surface of which wears a mica-like sheen, goes by the name of *Avraka*. Such a gem brings about loss of wealth and life.

415. That mark in a Sapphire which at first sight looks like a rift, is called Trása. A Trása renders one liable to bites. That Sapphire which is party-colored, is called *C'itraka*: it causes loss of family dignity.

416. The Sapphire which contains dirt, has the sobriquet of *Mridgarva*. This gem produces a variety of skin-diseases like itching.

অহ্বাদ।

যে ইন্দ্রনীলের উপরিভাগে অভ্রের ত্যায় ছায়া দৃষ্ট হয়, তাহাকে অভ্রক কহে, এইপ্রকার ইন্দ্রনীলধারণে আয়ু ও সম্পত্তি বিনষ্ট হয়। ৪১৪।

যে চিহ্ন দ্বারা ইন্দুনীলকে সহসা ভগ্ন বলিয়া বোধ হয়, তাহাকে ত্রাস কহে, ত্রাসদ্বারা দংষ্ট্রিভয় উৎপন্ন হয়। যাহা নানাবর্ণে চিত্রিত, তাহার নাম চিত্রক, চিত্রক দোষে কুল বিনষ্ট হয়। ৪১৫।

যাহার মধ্যভাগে মৃত্তিকা সন্নিহিত থাকে, তাহাকে মৃদ্গর্ভ কহে, মৃদ্গর্ভদোষ হইতে গাত্রকণ্ডু প্রভৃতি নানা ত্বকের রোগ উৎপন্ন হয়। ৪১৬।

60

मणिमाला।

मूलम्। इषत् प्रलच्चते गर्भे चभ्मगर्भं विनाशकत् । शर्करामित्रितं वत्तु तद्रीच्चं कथितं वुधैः । तस्मिन् धृत दरिद्रत्वं देशत्यागच जायते ॥ ४९७ ॥ दोषैस्यको ग्रणैर्थु क इन्द्रनीलो महामणि: । वस्य हत्ते भवेत्तस्य चायुर्वलयशस्करः ॥ ४९८ ॥ इन्द्रनीले धृते शुद्धे शौरिरेव प्रमीदति । चार्युः कुलं यशो वृद्धिलच्चीः शौभा च वर्द्धते ॥ ४९८ ॥ धार्य्यमाणस्य ये दोषाः पद्मरागमणेर्गुणाः । धार्णादिन्द्रनीलस्य तानेवाप्नोति मानवः ॥ ४२० ॥

तर्जमा।

जिस् इन्ट्रनीलकी अन्टर पाथरका सा टुक्रा मालुम होए, उस्का नाम अफ्रगभे कहते हैं, अफ्रगभका नीला जान मारडाल्ता हैं। जिस्मे चिनिके समान सफेट क्रिटे सालुम हो, अर्थात् दुधक हो, उस्को रौच कहते हैं; रौच्य अयेवका इन्ट्रनील जो आदमी पहेरे, उस्को देश छोड़कर सागना हो। ४१७।

वेश्वयेव ज्जनरवाली इन्द्रनीलमणि जिस्के पाश रहे, उस्की उनर, जोर और नाम्बरी ज्यादा होए । ४१८ ।

जो आदमी वेखयेव इन्द्रनील पहेरता है, नारायण उस्मे खोस होता है; और उस्की उमर, खान्दान, नाम्बरी, अक्केल, दौलत और ए खिर्य ज्यादे होए। 8१८।

गुणयुक पद्मराग पहेर्नेसे जो फय्दा होता है, गुणयुक इन्द्रनील पहेर्नेसे बहो फय्दा होता है, द्ययेवदार माणिक पहेर्नेसे जो लोक्शान होता है, द्ययेवदार इन्द्रनीन पहेर्नेसे वही, लोकशान होता है। ४२०।

TRANSLATION.

417. That which contains gritty fragments, is called *Asmagarva*. This defect is destructive. That which is rough, is called *Raukshya*. Banishment is the consequence of wearing this jewel.

418. A flawless, sterling Sapphire brings its wearer, strength, fame and length of days.

419. The man who wears a Sapphire of spotless chastity, finds favor with *Náráyana** and acquires longivity, family dignity, fame, understanding and wealth.

420. Those good and bad consequences which follow the wearing of a Padmarága combining good and bad qualities, are also produced by the wearing of a Sapphire of a like nature.

অন্থবাদ।

যাহার অন্তরে প্রস্তরখণ্ড লক্ষিত হয়, তাহার নাম অশ্ম-গর্ভ, অশ্মগর্ভ দোষ বিনাশের হেতু। যাহা শর্করাযুক্ত, তাহাকে রেক্ষ্যি বলে, রেক্ষ্যদোষাঞ্রিত ইন্দ্রনীলধারী ব্যক্তিকে দেশত্যাগ করিতে হয়। ৪১৭।

দোষহীন অথচ গুণযুক্ত ইন্দুনীল মণি যাহার নিকট থাকে, তাহার আয়ু, বল ও যশ রদ্ধি হয়। ৪১৮।

যে ব্যক্তি বিশুদ্ধ ইন্দ্রনীল ধারণ করে, নারায়ণ তাহার প্রতি প্রসম হন, এবং তাহাতে আয়ু, কুল, যশ, বুদ্ধি, লক্ষ্মী ও সমৃদ্ধি বর্দ্ধিত হয়। ৪১৯।

গুণসম্পন্ন এবং সদোষ পদ্মরাগ ধারণে যে গুণ ও যে দোষ হয়, ইন্দুনীলেরও তদ্ধপ হইয়া থাকে। ৪২০।

* The Preserver of the Hindu Triad.

मणिमाचा।

मूचम्। गुरुभावकठिनभावावेतेषां नित्यमेव विज्ञेयौ । काचाद्ययावदत्तरविवडॅंमानौ विश्वेषेण ॥ ४२१ ॥ तदाकरससुद् सूतो मत्तभृङ्ग्ससद्युतिः । दौप्तिच्छायाममाविष्टो स्त्रामरो मणिकच्यते ॥ ४२१ ॥ दौप्तिच्छायाममाविष्टो स्त्रामरो मणिकच्यते ॥ ४२२ ॥ चारकता यदा तत्र तदा टिट्टिमसंज्ञितः । तस्य धारणमाचेण गर्भिणो स्त्रो प्रसूयते ॥ ४२३ ॥ यत् पद्मरागस्य महाग्रुणस्य मूर्व्यं भवेन्त्राषसक्तसन्मितस्य । तदीन्द्रनौचस्य महाग्रुणस्य सुवर्णसंख्याातुच्तितस्य मूर्ल्यं ॥ ४२३ ॥

तर्जमा ।

भारी चौर सक घोनेसे इन्ट्रनीलको साचा समक्तुना चाहिये, चर्यात् काचसे फरक कर्ना चाहिये । ४२१ ।

इन्ट्रनीलके खानमेसे स्वमरको एँसे रङ्गका दीप्ति चौर कायाविशिष्ट जो मणि पयदा घोति घै, उस्को स्वामर कइते है। ४२२।

जिस् इन्द्रनीलमे घोड़ा सुखीमायेल चाभा मालुम घो, उस्को टिट्टिभ कहते हैं; टिट्टिभ जातका मणि गर्भिणी स्त्रीका गर्भवज्जत् जलद चारामरे खालास कर्ता है। ४२३।

मचागुणसम्पन्न पद्मराग मणिका जो दाम छोता है, गुणसम्पन्न इन्ट्रनीलकाभी वच्ची दाम छोता है। ४२४। इतिनीलाका वयान।

449 20

TRANSLATION.

421. A Sapphire is distinguishable from glass by weight and hardness only.

422. A shining gem which is found in Sapphire quarries, resembling the *Vramara*, and furnished with a shade, is called *Vramara*.

423. That Sapphire which shows a dash of red, is called a *Tittiva* (amethyst). No sooner a woman who is in her family way, wears a *Tittiva* than she is delivered of her child, with perfect ease.

424. The price of the best Sapphire is equal to that of the best *Padmarága*.

অহুবাদ।

গুরুত্ব ও কাঠিন্য অন্থ্যারেই ইন্দ্রনীলকে কাচ হইতে পৃথকু বলিয়া পরিজ্ঞাত হইতে পারা যায়। ৪২১।

ইন্দ্রনীলের আকরে ভ্রমরের ন্থায় বর্ণ, দীপ্তি ও ছায়া-বিশিষ্ট যে মণি উৎপন্ন হয়, তাহাকে ভ্রামর মণি কহে। ৪২২।

যে ইন্দ্রনীলে ঈষৎ লোহিতের আভা দৃষ্ট হয়, তাহাকে টিট্টিভ কহে, টিট্টিভজাতীয় মণিধারণমাত্রেই গর্ভিণী স্ত্রী স্থখে সন্তান প্রসব করে। ৪২৩।

মহাগুণসম্পন্ন পদ্মরাগ মণির যেরূপ মূল্য হয়, গুণশালী ইন্দ্রনীলেরও তাদৃশ মূল্য হইয়া থাকে। ৪২৪।

रुতि रेखनील।

EEE

A 450

63

THE SAPPHIRE.

THE SAPPHIRE.

Its Properties.

HE Sapphire is a variety of the Corundum and is of the same composition, hardness and electricity as the Ruby, differing from it only in color, which varies from white to the deepest blue and black. The true Oriental Sapphire is of a clear, beautiful, azure blue, (of the shade formerly called "Bleu du roi,") soft, rich and velvety, neither too light nor too dark. But the blue is seldom pure or spread all over the stone. It is sometimes mixed with black which gives it an inky appearance; and sometimes with red, which, though difficult to be seen by day, can be found out by candle-light. Sometimes a Sapphire is found exhibiting a variety of colors. The asteriated or Star Sapphire is usually of a greyish-blue color, and shows, under the microscope, "thread-like shafts, directed towards the faces of the six-sided prisms, said to be spaces left at the moment of crystallization; and it is the reflection of light from these which gives to the stone its star-like brilliancy." "The Star Sapphire is also known under the title of Astrapia (lightning stone), from its supposed action in a colorless or an azure ground, sending out, as it were, rays of lightning diverging from the centre."

C.

Where found.

451 80

IN former days, Sapphires were found in Persia and Arabia. The best stones now come from Mo-gast and Kiat-pyan, in Burmah, and from Siam. Those that are found in Ceylon are smallsized and rather rose-colored. The blue Sapphire is found in many parts of North America. A fine red Sapphire is said to have been found in South America, with the Diamond. Specimens of the blue and white Sapphires are found in Ballarat, (in Victoria) and near the Pearl river in New South Wales, Australia. The Sapphire is also found in several countries of Europe; on the tops of the Iser Mountains in Bohemia, and in the beds of the river Iser; also in Saxony and Saxon Switzerland.

Sapphire as known to the Ancients.

THE Sapphire of the present day was known to the ancients as the Hyacinthus. Pliny believed, that it was so called on account of its resemblance to . the colour of the flower of the same name. Solinus says :—" Amongst these things (in Ethiopia) of which we have treated, is found also the Hyacinthus of a shining *cerulean* color; a stone of price, if it be found without blemish, for it is extremely liable to defects." What was called Sapphirus by the classical authors now goes by the name of Lapis-Lazuli. Sap phire was, in old Arabic, termed "Sappeer," to scratch; and in the Syriac and Hebrew languages, it was called by

Color

THE SAPPHIRE.

similar expressions,—probably, on account of the great hardness of the stone and of its power of *scratching* any other stone, (except, of course, the Diamond.) According to the Ancients, those Sapphires which were of an indigo or very deep color were the male; the pale blue ones, the female. According to Ben Mansur, the *Jacut* had six divisions; *viz.*, the red, the yellow, the black, the white, the green or peacock-colored, and the blue or smoke-colored. Sapphire came under the last heading—blue, which had three sub-divisions, *viz.*, the light blue, the Lapis-Lazuli blue and the indigo blue, each of which, again, had peculiar grades of tint.

Engraving and Cutting.

THE Sapphire being a very hard stone renders itself difficult of being engraved upon. There are still to be found a few specimens of the ancient intaglios, amongst which may be mentioned a magnificent head of Jupiter. This stone was one inch in diameter and was quite accidentally found in the pommel of a Turkish Dagger. In the Marlborough collection is found a Medusa's head in nearly full face, engraved on a very clear and beautiful Sapphire; also, the head of Caracalla, on a stone of $\frac{3}{4}$ inch in length and $\frac{1}{2}$ in breadth. A large pale stone was seen in 1860, in the hands of Mr. Boocke, on which was engraved the figure of an actor in front of an altar, with another actor

4 53 %

imitating his gesticulations. The Signet of Constantius II, a Sapphire of 53 carats, represented that Emperor as spearing a large wild boar, before a reclining female figure. There was another stone, heart-shaped, of a beautiful color and $1'\frac{1}{2}\times 1'\frac{1}{4}$, in dimensions, lately seen in the London market, on which was engraved the figure of Hebe feeding the Eagle. Amongst the modern works of Art may be mentioned the portrait of Pope Paul III, executed on a beautiful Sapphire, $\frac{3}{4}$ of an inch square. There is also one pale Sapphire of an octagonal shape, upon which is the bust of Henry IV, with the initials C. D. F., engraved upon it by Coldoré. In the cabinet of Strozzi, in Rome, is a Sapphire, upon which is the profile of Hercules engraved by Cincius. A Sapphire has also been seen in England, on which are engraved the crest and arms of Cardinal Wolsev.

The Brilliant-cut shows the lustre of the stone to the best advantage.

Its Price : Flaws and Defects : Imitations.

SAPPHIRES do not, like the Rubies, rise in value according to their size, but like the Diamonds, in proportion to their color, purity, and symmetry. When a Sapphire is too thick in proportion to its surface, its value is not to be estimated by the weight it actually possesses, but by the weight it should have, if it were properly proportioned. A fine, perfect, evenly-colored, spread Sapphire,

678

 THE SAPPHIRE.

under one carat, if English cut, is worth from £4 to £12; if foreign cut, from £2 to £5; if, of one carat, from £12 to £25. The value of the Star Sapphire, (which the Hindus did and do hold in great veneration), if small, is from £2 to £10; if large, from £10 to £100. A really fine Sapphire should appear blue, as well by day as by night. It has often been noticed that two Sapphires which appear to be of the same color by day, differ widely, by night. "In many of these stones, where the color is partially dark, the lapidary has a method of cutting, by which he takes away the dark colored part, with the exception of a small spot reserved for the cullet, whilst the upper part of the stone is perfectly white; so that when such a stone is looked at from the table, it will present a most vivid hue, often superior in appearance to those stones which are colored throughout. If the stone be held in a pair of ordinary forceps-or corn-tongs, as they are termed in the trade—an inch beneath the surface of clean water, the parts of the stone colored and uncolored will be distinctly apparent." This test might advantageously be applied to all other stones.

The Oriental Sapphire is most highly admired and is consequently of very great value. A *perfect* stone of this species, weighing about 3 carats, fetches even far higher price than a Diamond of similar weight and quality. But, like the Emerald, it is rarely free from imperfections, which generally

E.

QA

consist of clouds, milky semi-opaque spots, white glassy stripes, cracks, knots, a congregating of colors at one part and silky flakes on the table. The spots are sometimes removed and the color equalized by burning the stone in a crucible, with sand and iron filings, but this process involves serious risks. The white Sapphire resembles the Diamond to such an extent, that when well cut and polished, it may pass for the latter. The deception can be detected by taking the specific gravity of each, or by testing the hardness with another Sapphire or with a Diamond. The pale Sapphire, by being rendered perfectly colorless by exposure to a regulated heat, and thereby made to acquire great lustre, has often been sold for the real Diamond. The distinction between this uncolored stone, the white Topaz and the true Diamond can always be made by remembering the fact that neither of the two possesses the iridescence which the Diamond always exhibits when catching the light at a certain angle.

The doublets or semi-stones are counterfeit stones composed of two pieces of crystal, with a color between them so arranged as to make the whole substance appear colored. These are often made use of to cheat the inexperienced. The color may partly point out the imitation; and more specially, the inspection of the girdle, where the inferior stone has been joined. The top of a Sapphire is in some cases genuine, and the under part, a gem of less

455 20

THE SAPPHIRE.

value, as for instance, Garnet. Sometimes the under part is glass, artistically joined with the top, with cement. In this case, the application of the file to both the parts at once detects the imposition. Stones that are of a pale color or of little lustre are generally set with a back, often with a colored foil, to add to their beauty. Those that are set "azure" or open, have the interior of the setting enamelled or painted, to throw a tint of color into the gem.

The doublets are often sold by the Cingalese at Colombo, to Europeans and to the passengers by the P. & O. Co.'s steamers. Sometimes blue glass, cut into facets, are sent there from Birmingham and Paris, in order that they might pass for real Sapphire and stones of similar color.

Marvellous and Medicinal Properties attributed to the Sapphire.

EPIPHANES mentions that the vision which appeared to Moses on the mount was in a Sapphire and that the first tables of the law, given by God to Moses, were of Sapphire. It was dedicated by the Greeks to Apollo and was, when consulting his oracle, worn by the inquirer, on account of its divine nature, which was supposed to secure him an early and favorable answer. St. Jerome, in explaining the 19th chapter of the prophecy of Isaiah, states that the Sapphire procures royal favors, softens the anger of the enemies, frees people from enchantment and obtains for them

release from captivity. If placed on the heart, it bestows strength and energy. It prevents evil and impure thoughts. Owing to its coldness to the touch, due to its great density, it was thought to have the power of extinguishing fire. It "is said to grow dull, if worn by an adulterer or lascivious person," or by an intemperate man. If "worn in a ring or in any other manner," it "is able to quench concupiscence, and for that reason, is proper to be worn by the priest-hood and by all persons vowed to perpetual chastity." For this reason, perhaps, this stone has been used, to adorn the episcopal ring of office, from the commencement of the Middle Ages down to the present time. The ring of the Abbot of Folleville, the oldest ecclesiastical jewel yet in existence is set with a large Sapphire. Great medicinal virtues have been attributed to the stone. Placed on the heart, it cured fever ; on the brow, it stopped hemorrhage. It was an excellent preserver of eye-sight. If Sapphire powdered and made into a pill, were placed on the eyes, it would draw out any dust or small insect or any other foreign substance that might have fallen into them, and cured them also of inflammation or irritation by small-pox or any other disease. The application had to be renewed daily for sometime. If the powder were taken internally with milk, it would prove a sovereign remedy for pestilence, fevers, poison, hysteria, &c. The Sapphire is such a deadly enemy to poison that

67

ple.

457 80

8:0)

00

THE SAPPHIRE.

if put into glass, or on the mouth of a phial that contained a spider or any other venomous reptile or insect, it would immediately kill it.

Celebrated Sapphires.

A VERY large Sapphire of 951 carats in weight, of a beautiful blue color and without a single flaw was seen by the English Ambassador, who had, on some occasion, been sent to Ava. In the Musèe de Mineralogie of Paris, is another very beautiful and flawless Sapphire, weighing 1321's carats. This stone, called the "Wooden Spoon-sellers," from the occupation of the poor man of Bengal who was credited with its discovery, came somehow in the possession of the House of Rospoli in Rome, and subsequently of a German Prince, who sold it to Perrèt, a French jeweller, for 1,70,000 francs, a sum known to be far less than its true value. It is lozenge-shaped and has six faces. The treasuries and regalias of Europe contain some very good Sapphires. There are also some large and beautiful specimens to be seen in the Green Vaults at Dresden. Amongst the several valuable stones to be found in the Russian treasury is one of a light-blue color, which once belonged to Mr. Hope. There is one Sapphire of considerable beauty and size in Vienna. An English lady had a large-sized Sapphire, which she sold and replaced by such a skilful imitation as to hood-wink the jeweller, who estimated it, for probate duty, at £ 10,000. The disappointment of the legatee, who

459 80

H

came in possession of it, after paying the legacy duty may well be imagined. An oval Sapphire and a drop of a considerably large size and of great purity, belonging to a Russian Countess, were shown in one of the Paris Exhibitions and attracted the notice of all. Several magnificent Sapphires, from the collection of the late Mr. H. T. Hope, were shown in the London Exhibition, where also Mr. A. J. Hope exhibited his well known "Sapphire Marveilleux," which is blue by day and amethystine by night. There is a very large Sapphire, (partly drilled), in the State Crown of England, purchased for it by His Majesty the late King George IV.

A very good Sapphire was once seen with a Mohunt of Mirzapore. Rai Buddree Dass Mokeem has in his possession a small and beautiful stone set; in a ring. The Hindus have a prejudice against this stone and consider it to be the bringer of misfortune. In consequence of this notion, some of them would invariably keep a stone on trial for several days before they would make final settlement with the sellers. Hence, perhaps, the paucity in the number of Sapphires in their possession.

मणिमाला।

कके तनम्।

म्बम्।

सिग्धा विश्रद्धाः समरागिणय चापीतवर्णा ग्रुरवो विचित्राः । चासवणव्यालविवर्जिताय कर्कतनास्ते परमाः पवित्राः ॥ ४२५ ॥ वर्णेन तद्रुधिरसोममधुप्रकाण-मातामृपीतद्द्वनोच्चूलितं विभाति । नीलं गुनः खलु सितं कलुषं विभिन्नं

व्याखादिदोषकरणेन न तदिभाति । ४२६ ॥

कर्के तकका वयान।

तर्जमा।

सिग्ध, वेखयेव, सव जगह समान रज़, थोड़ा जरद् रज़, खोजनमे भारी, देख्नेमे मनोहर खौर चास, उंचा नीचा खयेव वगैरहसे पाक, कर्केतक बड़त् उमदा है ।४२५। खुनके समान सुख, चन्द्रसाके समान सफेद, मधुके समान कम जरद् रज़, तांवेके समान थोड़ा लालरज़, खागके समान उज्जूल, नीलरज़ खयवा बड़त् सफेद कर्केतक पापका नाथ कर्नेवाला है, लेकिन खुब साफ नावानानेके खयेवसे चमक देनेवाला नहिं होता । ४२६ ।

461

60

CHRYSOBERYL.

TRANSLATION.

425. A Chrysoberyl which is cool, pure, uniformly colored, slightly yellow, heavy, singularly fine and free from such defects as *Trása*, is the best of all.

426. A Chrysoberyl which is blood-red, pale like the moon, slightly yellow like honey, light-red like copper, yellow, bright like fire, blue, or white, purges sin away; but sometimes has not that glitter which it has, owing to the defective art of the lapidary.

অথ কক্কে তন ৷

অন্থবাদ।

মিগ্ধ, বিশুদ্ধ, সর্ব্বত্র সমান বর্ণবিশিষ্ট, ঈষৎ পীতবর্ণ, ওজনে গুরু, বিচিত্র এবং ত্রাসব্রণাদিদোষ-বিবর্জিত কর্কে-তন অতি উৎকুষ্ট। ৪২৫।

রুধিরের ন্যায় লোহিত, চন্দ্রের ন্যায় পাণ্ডুর, মধুর ন্যায় ঈষৎ পীত, তাত্রের ন্যায় ঈষৎ লোহিত, পীত, অগ্নির ন্যায় উজ্জ্বল, নীল এবং গুরুবর্ণবিশিষ্ট কর্কেতন পাপনাশক এবং সংক্ষারকের দোষে ইহা তাদৃশ দীপ্তিশালী হয় না। ৪২৬। **G** 462

मणिमाला।

मूलम्। पर्चेण काञ्चनमयेन तु वेष्ठयित्वा इन्हो गलेऽघ घृतमेतद्तिप्रकाशं। रोगप्रणाश्चनकरं कलिनाश्चनत-दायुस्तरं कुलकरञ्च खखप्रदञ्च ॥ ४२७ ॥ रवस्विधम्बद्धगुर् काणमावहन्ति कर्क्वे तनं शुभमलङ्घृतये नरा ये । ते पूजिता बद्धधना बद्धवान्धवाञ्च नित्योज्जूला: प्रसुदिता त्रपि ते भवन्ति ॥ ४६८ ॥ कर्क्वे तनं यदि परीचितवर्षरूपं प्रत्यग्रमाखरदिवाकरछप्रकाशं। तस्योत्तमस्य मणिशास्त्रविदा महिन्ना तुल्यन्त मूल्यसुदितं तुलितस्य कार्य्यं ॥ ४२८ ॥

तर्जमा।

कर्कतक मणि सोनेके पचमे मोड़ करके गले अथवा घातमे पहेरनेसे देख्नेमे बच्चतू आच्छा मालम घोता है, रोग और कलियुगके दोषको नाथ कर्ता है, और उमर, खान्दान, खखकी टड्डि कर्ता है। ४२०।

जो चादमी इम् किसिम्का बज्ज गुणमम्पन्न वैचयेव कर्केतक गइनेकेवाक्ते पहेरता है, वह चादमी लोगममाजमे पूजित चौर बज्जत् दौलतमन्त, बज्जत् भाइ वादरवाला, तेजस्ती चौर हामेगा खुस्रहता है । ४२८ ।

कर्कतक मणि अगर परीचा कियाज्जया वर्णविशिष्ट, और सूर्य्यके समान आच्छि रौसनि पावे, तो रलपार्ची परिएडतेांके मतके अनुसार उस्का दाम उस्क ओजनके समान होगा । ४२८ ।

इति कर्कतकका वयान ।

E.

463 50

TRANSLATION.

427. A Chrysoberyl when set on gold and worn on the neck or the hand, is very fine to look at, removes diseases and various vicious properties, and increases life, family and happiness.

428. The man who wears a sterling Chrysoberyl free from every defect, is honored among men, acquires wealth, friends, fame and contentment.

429. If the color of a Chrysoberyl challenges scrutiny, and if it flames like the sun, it fetches (so say the authorities) a price proportionate to its weight.

অহুবাদ।

নক্রিনমণি স্থবর্ণের পাত্রে মুড়িয়া গলে অথবা হস্তে ধারণ করিলে দেখিতে অতিস্থন্দর হয়, রোগ ও কলিদোষ নাশ করে এবং আয়ু, বংশ ও স্থখরদ্ধি করে। ৪২৭।

যে ব্যক্তি বহুগুণসম্পন্ন নির্দ্দোষ, কর্কে তন রত্ন অলঙ্কা-রের নিমিত্ত ধারণ করে, সে মানব লোকসমাজে পূজিত, বহুধনের অধীশ্বর, বহুবান্ধব, দীপ্তিমান ও নিত্য সন্তুষ্ট হয়। ৪২৮।

কর্কে তন যদি পরীক্ষিত বর্ণবিশিষ্ট এবং সূর্য্যের ত্থায় স্থপ্রকাশিত হয়, তাহা হইলে মণিশাস্ত্রবিৎ পণ্ডিতদিগের মতে তাহার মূল্য ওজনের অন্থরূপ হইবে। ৪২৯।

ইতি কক্ষেঁতন।

THE CHRYSOBERYL.

THE CHRYSOBERYL.

Its Properties.

HE Chrysoberyl, otherwise called the Oriental Chrysolite, is a brilliant stone, the color of which, varies from asparagus-green to grassgreen, greenish-white, and yellowish-green. It belongs to the trimetric or rhombic system of crystallization and possesses a vitreous and oily lustre. It varies from being perfectly transparent to nearly opaque. Its cleavage is parallel to the faces of the right-angled prisms; it breaks with a conchoidal fracture rather uneven. Its specific gravity is from 3.6 to 3.8. It is brittle and translucent; possesses double refraction in a high degree, and acquires by friction positive electricity, which it has the power of retaining for several hours. It is infusible before the blow-pipe alone, but with borax or salt of phosphorus, melts with difficulty into clear glass. It is 8.5 in the scale of hardness, scratching Quartz easily and being scratched by the Sapphire, Ruby &c. It is not affected by acids but with a solution of cobalt, it becomes blue. Its composition has been ascertained to be about 80 per cent. of alumina, and 20 of glucina, with traces of protoxide of iron, oxides of lead and copper, according to color and locality.

800

R

Where found.

465 80

THE Chrysoberyl is found in rolled pebbles in Ceylon, Brazil, Moravia, Pegu, and in the river Tajowaja in the Ural Mountains. The last variety shows by reflected light, an emerald-green hue, and by transmitted light, a red one, and is called the Alexandrite, after Alexander, the Emperor of Russia. This stone is also found on the east side of Borneo, mixed with gold dust, Diamond, Topaz, &c. It has latterly been found at Haddam, Connecticut, at Greenfield near Saratoga, New York, and in the granite of Orange Summit, Vermont.

Mode of Cutting.

THE transparent yellow Chrysoberyl, which is the variety used in jewelry, is cut in the brilliant form, on a copper wheel with emery and polished with tripoli. The semi-transparent varieties, known as the Cymophanes, and the "Cat's-eyes" of commerce, possess an opalescence and are generally cut en cabchon.

The Chrysoberyl as known to the Ancients.

CHRYSOPRASE appears to have been the gem which was the Chrysoberyl of the Ancients. The name Chrysoberyl is formed of two Greek words, signifying "Golden," and "Beryl." Cymophane is derived from two words, which mean "wave," and "appear;" perhaps, so-called, on account of its variable color.

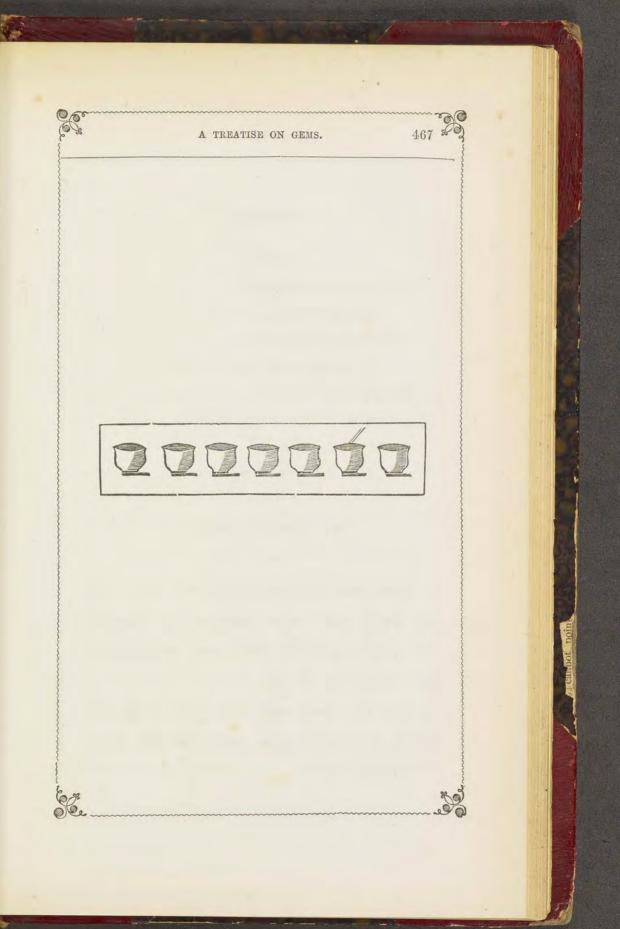
GGG

THE CHRYSOBERYL.

Its Price.

THE transparent yellow Chrysoberyl now being out of fashion and rarely mounted as ornaments, fetches but a nominal value. But the Cymophane or the Chrysoberyl Cat's-eye is worth a good deal; its price varying from £100 to £200 or £300, in proportion to the distinctness and brilliancy of the ray of light across the stone. This gem is considered very lucky by the people of the East, and even by those of the West, and consequently it is getting more valuable than before. An English nobleman is reported to have paid so much as £1000 for one of these. Its beauty is enhanced if surrounded with brilliants or rubies.

The transparent yellow Chrysoberyl, or the Indian Chrysolite must not be confounded with the true Chrysolite, with which it materially differs in hardness and specific gravity; the latter being 6 to 7 in the scale of hardness, and its specific gravity, from $3\cdot3$ to $3\cdot5$. The Chrysolite, moreover, contains a large element of iron in its composition, and can easily be dissolved into a jelly by sulphuric acid. The Chrysoberyl differs also from the yellow Topaz, in one important point, *viz.*, that of not acquiring electricity by heat.





CO?

मणिमाला।

ग्रय पुलकः।

मलम्।

दासाईवागदवमेकलकन्यकादौ युद्धाद्धनचौद्रच्णालवर्णाः । गन्धर्ववङ्किकदलीसहग्रावसासः एते प्रग्रस्ताः पुलका प्रसूताः ॥ ४३० ॥ गङ्गाङाश्वद्धाः पुलका प्रसूताः ॥ ४३० ॥ गङ्गाङाश्वद्धाः प्रदिष्ठाः परसाः पविचाः ।

माङ्ग्ल्ययुक्तावज्जभकिचित्रा टह्यिप्रदाक्ते पुलकाभवन्ति ॥ ४३१ ॥

त्रय पुलकका वयान ।

तर्जमा।

दर्का, वग्दाद, नर्म्यदानदीके किनारेके देशमे पयदा ऊये ग्रुझाके सुखके समान कालारङ्ग, मधु, कमलकी जडु, कस्तूरी, आग और केलेके गाइके समान रङ्गदार पुलक बज्जत् आच्छा है। ४३०।

शङ्घ, सफेद जमल, भ्वमर और सूर्य्यके समान वर्ष-विशिष्ट और सूतदार पुलक वज्जत्पविच स्वीर मङ्गल कर्नेवाला है। ४३४।



GARNET.

TRANSLATION.

430. THE Garnet is produced in the country of *Dásarha* (Dwáraká) in Bagdad, in the shores of the Narbudda, &c. Of Garnets, those which are colored like the black spot in the *Gunjā*, like honey, the stalk of the lotus, the musk-deer, fire, or the plantain-tree, are first-rate.

431. A Garnet which is colored like the conch, the lotus, the black bee, or the sun, and which is strung on a thread, is sound and auspicious, and heralds good fortune.

অথ পুলক।

অহুবাদ।

দাসার্হ (দ্বারকা) বাগদব (বোগ্দাদ) নর্ম্মদানদীর তীরস্থ প্রদেশোৎপন্ন, গুঞ্জাঞ্জন (কুঁচের শীর্ষদেশস্থ রুষ্ণবর্ণ), মধু, মুণাল, কস্তৃ্রীমৃগ, অগ্নি ও কদলীর্ক্ষের ন্থায় বর্ণবিশিষ্ট পুলক রত্নই অতিপ্রশস্ত। ৪৩০।

শঙ্খ, পদ্ম, ভ্রমর ও সূর্য্যের ন্যায় বর্ণশালী এবং সূত্রোপ-লক্ষিত পুলক অতিপবিত্র, মঙ্গলজনক এবং রুদ্ধিপ্রদ বলিয়া নির্দ্দিষ্ট আছে । ৪৩১ ।



मगिमाला।

मूलम् । काकाश्वरासमधूगालटकोग्ररूपै-र्य घ्रेः समांगरुधिराद्र सुखैकपेताः । खत्युप्रदाखु विदुषा परिवर्ज्जनीया मूल्यं पलस्य कथितञ्च ध्रतानि पञ्च ॥ ४३२ ॥

तर्जमा ।

काक, घोड़ा, गाधा, शेयाल, लेकड़ वाघा, घाड़गेक्वाके सुखके मांसके समान निशानवाला पुलक मौत कर्ता है, इसीवास्ते पण्डितलोग उस्को कोड़नेको कचते हैं। और एक पल ओजनके पुलकका दाम पांच शौ रूपेयातक घो सक्ता है। ४३२।

इति मुचलका वयान।



E.

R

(P)

471 20

TRANSLATION.

432. A Garnet which is colored like the crow, the horse, the ass, the jackal, the bull, or the bloodstained beak of a vulture holding a piece of flesh, brings on death; and the authorities advise us to shun it. A Garnet which weighs one pal,* is worth five hundred Rupees.

অন্থবাদ।

কাক, অশ্ব, রাসভ, শৃগাল, রক এবং সমাংসরুধিরার্দ্রমুখ গৃধ্রোপলক্ষিত পুলকধারণে মৃত্যুঘটনার সম্ভাবনা, অতএব পণ্ডিতেরা তাহাকে পরিত্যাগ করিতে বিধি দেন এবং পল-পরিমিত পুলকের মূল্য পঞ্চশত মুদ্রা পর্য্যন্ত হইতে পারে। ৪৩২।

ইতি পুলক।

* Equal to 4 kar shas.

63

THE GARNET.

THE GARNET.

Its Properties.

211E Garnet belongs to the monometric or cubic system of crystallization, and is, for the most part, found in rhombic dodecahedral crystals, also massive and in small pebbles in rivers and alluvial deposits. It is 6.5 to 7.5 in the scale of hardness. It can scratch Quartz slightly and is scratched easily by Ruby or Sapphire. Its specific gravity is from 3.5 to 4.3. Its lustre is vitreous and in some cases resinous. It varies from being transparent to being nearly opaque. Its fracture is uneven or sub-conchoidal. It possesses simple refraction, acquires positive electricity by friction, and has a sensible effect on the magnetic needle. It is fusible before the blow-pipe and melts down to a black enamel. The Garnet is composed of silex, alumina, and a small proportion of oxide of iron, from which it derives its beautiful color. This stone is found of many colors-red, brown, yellow, white, green, black.

Its Varieties : Where found.

PERHAPS there is no other stone which varies so much in color, shape, and crystallization as the Garnet. It is to be found in almost all parts of the world.

The Almandine or Precious Garnet is found in the Zillerthal and Tyrol, in parts of Norway

473 20

and Sweeden, Switzerland, and Spain, and differs from the common Garnet only in color;—that of the former having a blue tinge mixed with the red; that of the latter being blood-red, slightly tinged with brown. The name Almandine, is according to Pliny, derived from the city of Alabanda (in Carien), where this gem was cut and polished. The Garnet is also found in Greenland, United States, Mexico, Brazil, and many other places in America. Some very fine crystals have been found near Oven and the Peel River in Australia.

The Syrian or Oriental Garnet varies in color from the deepest crimson to a violet purple. It is so called, because it comes from Syrian (or *Siriam*), the capital of Pegu. It is also found in India and Ceylon.

The Pyrope or Bohemian Garnet is of a fine bright deep-red color and is found in Bohemia, Saxony, and other parts of Germany. Its specific gravity is a little lower than that of the Almandine, but it is one of the hardest stones of the Garnet family. It is called by some jewellers, the Vermilion Garnet, or the Vermeille, on account of its unmixed red color.

The Essonite or the Cinnamon stone is, as its name indicates, of a reddish-yellow color, resembling that of the cinnamon, and comes principally from Ceylon. It melts very easily and is much softer than the other varieties—it being 6.5 to 7, in the scale of hardness.

ННН

\$ 474

THE GARNET.

A new variety of the Garnet has found its way into the market, from Siberia. It is very brilliant and of a beautiful green color.

The other varieties come under the province of the mineralogist rather than that of the jeweller, and are as follows :—

The Grossularite, found in Siberia, is of a greenish, and sometimes black color.

The Succinite, found in Piedmont, is of a yellow hue, of the same composition as the above.

The Colophonite and Melanite, found in Norway and America, are Garnets of the iron-lime species; the one being brown and the other black.

The Leucite, found in Siberia and in the lava of the Vesuvius, is a silicate of alumina and potash, and is of a white color.

The Spessartine, found at Spessart in Germany, and in Sweden and Finland, is brown and is a Garnet of the alumina-maganase species.

The Uwarowite, found in Siberia, is of a bright green and belongs to the lime-chrome class of Garnets. The name is derived from Uwarow, the President of the Imperial Academy of St. Petersburg.

Cutting and Engraving.

BOTH the common Garnet and the Almandine are frequently cut in facets and polished. When the Almandine is cut *en cabochon*, it is called the Carbuncle; *i. e.*, when it is cut with a convex

4.75 %

* 0)

00

E.

66

surface,—the back being generally hollowed out in order to show off the color of the stone to advantage and also to enable the jewellers to "foil" it, for the purpose of selling it as a Ruby.

The Oriental Garnet is cut with emery or Garnetpowder, on a copper wheel and polished on lead with tripoli, when faceted. The practice is to keep it thin. It is sometimes cut into beads and strung as necklaces.

The Bohemian Garnet is cut as a Brilliant, but more frequently as a Rose, and mounted as a *pavè*.

The Essonite or Cinnamon stone, is, according to some, "cut thin on account of the depth of color with a pavilion-cut below and a broad table above, bordered with small facets."

The Garnet is easily engraved upon, on account of the small degree of hardness it possesses. Formerly, engravings on this stone were very frequently executed as evidenced by the several beautiful specimens now found in Paris, Turin, Rome, and St. Petersburg. The Greeks do not appear to have made an extensive use of the Garnet for the purpose of engraving. But the Romans have left splendid engravings on this stone. In the Marlborough Cabinet is a large Indian Garnet, upon which is engraved the head of the Dog-star Sirius. in full relief, and with open jaws, the interior of the mouth being very faithfully represented. In the possession of the same Cabinet, is a celebrated Almandine, with the heads of Socrates and Plato

6 \$ 476

THE GARNET.

engraved upon it. Several Garnets have been found to bear the image and superscription of different Sassanian kings.

Several antiques of Garnet have been seen. amongst which may be mentioned a cup, "hollowed out of a solid Garnet, as large as a half goose-egg, and which was engraved internally with the name of its ancient owner, Codrus; and a heart-shaped tablet (Hertz collection), covered with a long Gnostic formula on both sides, an Alexandrian work of the third century, is 21 by 11 inches in extent, showing the immense magnitude of the crystal from which it has been sawn." In the catalogue of the French Crown jewels, (1791) are mentioned "an oval cup of a single Garnet, rich in color, $3 \times 2\frac{1}{2}$ inches wide, and 3 inches high, valued at 12,000 francs; and a round cup of oriental Garnet, full of flaws, 3 inches wide by 15 deep; a third is vermeille d'Allemagne, $2\frac{1}{5}$ deep, at 6,000 francs; besides six others of less size."

The Garnet as known to the Ancients.

According to some conjecturers, "Garnet" is an Italian corruption of "Garamanticus," an inferior kind of the Carbunculus of Pliny; according to others, the word is derived from the German "Granat owing to the similarity of its color to the blossom and kernel of the pomegranate. According to some others, the name is derived from "Granium," a grain, on account of its being often found in that

477 20

condition. The name is no doubt modern, but the stone itself was well-known to the Ancients.

Theophrastus and Pliny make copious mention of a stone which exactly answers to our description of the Garnet. It came under the heading of Carbunculus, which Pliny divided into male and female; the former being of a brilliant, the latter of a duller lustre. It has been supposed, from the character of the species as described by that eminent naturalist, that the male Carbuncle was our Ruby, the female, our Garnet. Pliny describes "vessels of the capacity of a pint formed out of Carbuncle devoid of all lustre or beauty of color." These vessels are conjectured to have been formed out of the massive varieties of the Garnet.

Its Price : Imitations.

THE Garnet was at one time in great demand for jewelry purposes, but now its commercial value has considerably gone down, owing to its being out of fashion and abundant supply. A Carbuncle of a large size, if pure and free from flaws, will yet fetch as much as £20. One of the size of half-a-crown is said to have been lately sold for £50. The Bohemian Garnet is held in great esteem in Turkey, Austria, and Transylvania, and is sold at very high prices. 600 gulden, or £60, is known to have been asked in Vienna, for a necklace of beads. The Almandines, that come in abundance from Ceylon are, if of a certain size,

63

THE GARNET.

of a fine rich hue and perfectly flawless, worth from £8 to £10 each. One Garnet of this description weighing five carats, had been put down for 1,200 francs, in the catalogue of French Jewels mentioned before. The Bohemian Garnet of the size of a hazel nut, would, according to De Boot, be worth as much as a Ruby of the same size. But in De Laet's time, (about 50 years later), both the Indian and Bohemian varieties had diminished in value.

The Almandines set with backs and foils are often sold to the uninitiated, for Ruby. The Essonite sometimes passes for the Hyacinth or Jacinth, with which, however, it differs in essential particulars. Some jewellers frequently confound the one with the other. Then, some of the varieties of the Garnet itself are confounded with each other. The Almandine, the most valued kind, is a stone of great lustre, and, if, of the first quality, cannot easily be detected from the purple Spinel. The Visuvian Garnet is hardly distinguishable from an Essonite.

The common Garnet is exactly of the color of Burgundy wine, more or less diluted, according to its quality. The Bohemian variety differs from it in its chemical composition, but not much in appearance, except that it is brighter and clearer. The Syrian Garnet is sometimes made to compete with the Amethyst. But it can be distinguished from the latter by the disadvantage of its losing

200

its lustre and assuming an orange tintbycandlelight.

479 %

Marvellous and Medicinal Properties.

IN the Middle Ages, the Garnet was a gem of great value and was considered to possess the same marvellous and medicinal virtues as the Ruby.

Celebrated Garnets.

GARNETS of extraordinary size have been found in the Cabinet of the Marquis de Drèe; amongst which, may be mentioned one Syrian Garnet, of very good quality, octagonal in shape, which measured $7\frac{1}{5}\times 6\frac{2}{5}$, and was valued at 3,550 francs; another of a flame color, which was $10\frac{2}{5}\times 6\frac{1}{5}$ in measurement, and valued at 1,003 francs.





मगिमाला।

ग्रय रुधिराख्यम्।

मूलम्।

तच्चेन्द्रगोपकलितं शुकवक्रुवर्णं संख्यानतः प्रकटपीलुमनानगार्चं । नानाप्रकारविहितं रुधिराख्यरत-सुड्टृत्य तस्य खलु मर्व्वममानमेव ॥ ४३३ ॥ मध्वेन्ट्रपार्य्डरक्षतीवविशुद्धवर्णं तच्चेन्द्रनीलसहर्शं पटलादिकं स्थात् । रेखर्यत्रश्वत्यजननं कथितं तदेव पक्तच्च तत्किल भवेत् स्डरवज्रवर्णं ॥ ४३४ ॥

ग्रय रुधिराख्यका वयान।

तर्जमा।

वीरबज्जद्टीके ऐसा चिच्चविशिष्ट, खगेके ठेांटके समान लालरङ्ग और फुटन्त फुलके समान रतनो रुधिराख्य कइते हैं। 8३३।

जिस् रुधिराखने भीचने हिस्सेमे चन्द्रमाने समान पाराडुवर्ण, और आसपाश वेश्वयेव इन्द्रनी लने समान नील-रङ्ग, वही प्रकार रुधिराखा पहेरनेसे रेखयं की टह्वि होति है। और रुधिराख्य खुव पक्नेसे सुरवज्रके समान वर्णविश्विष्ट होता है। 8 ३ 8 ।

इति रुधिराख्यका वयान।

481

E

CARNELIAN.

TRANSLATION.

433. A GEM which is marked like the cochineal, or which is red like the beak of the parrot, and which is shaped like a blown flower is a Carnelian.

434. A Carnelian, the interior of which is purely pale like the lunar lustre, and the side of which is like the Sapphire, brings its wearer wealth. When a Carnelian attains its perfect developement, it has a color like the lightning.

অথ ৰুধিৱাখ্য।

অহ্বাদ।

ইন্দ্রগোপকীটচিহ্নে চিহ্নিত, শুক পক্ষীর ওঠের ন্যায় রক্তবর্ণ, প্রস্ফুটিত পুপ্পের ন্যায় আকারবিশিষ্ট রত্নকে রুধিরাখ্য কহে। ৪৩৩।

যে রুধিরাখ্যের মধ্যভাগ চন্দ্রের ত্থায় বিশুদ্ধ পাণ্ডুবর্ণ, তৎপাশ্ব ইন্দ্রনীলসদৃশ বর্ণবিশিষ্ট, সেই প্রকার রুধিরাখ্য ধারণে ঐশ্বর্য্য-রুদ্ধি হয়। রুধিরাখ্য অতিপরিপক হইয়া স্থরবজ্রের ত্থায় বর্ণবিশিষ্ট হইয়া থাকে। ৪৩৪।

ইতি কৃধিরাখ্য।

III

S 482

THE CARNELIAN.

THE CARNELIAN.

Its Properties.

3HE Carnelian belongs to the Quartz species and is a variety of the Chalcedony ;- the liver-colored or brownish-red varieties being called the Sard, and the bright red, white and yellow ones, the Carnelian. It is chiefly found in dense imperfect balls; often, however, in obtuse-angled pieces. It is of a cloudy, waxy and semi-transparent lustre. Its hardness is a little less than that of the Chalcedony. It is a fact that its color becomes brighter and intensified by long exposure to the sun, and that by the application of too much heat, it becomes white and pale. The jewellers classify the different kinds of the Carnelian by the following names. "1st, Masc., or Carnelian of old stone, dark red. 2nd, Fem., pale red passing into yellow. 3rd, Sarder, brown, passing into pomeranian and yellow. 4th, Sardonyx, where layers of the Sarder alternate with layers of white. 5th, Carnelian Onyx, blood-red stripes playing into white. 6th, Carnelian Bervl. a whitish yellow."

Where found.

THE finest specimens are found in Cambay and Surat, in India and in Arabia. They are also to

483 20

S.

be found in Saxony, Scotland, Ireland, New Zealand, and in the rivers of Uruguay. They are also said to be found in Egypt.

Cutting and Engraving.

THIS stone is cut on a leaden plate with emery and polished on a wooden one with pumice-stone. The finishing polish, is, however, given on a plate consisting of lead and tin, with water. It is generally cut into squares, hexagons or octagons; sometimes round, or by giving the upper part which is called the *treppen* or graduated cut.

The artists of the classical times preferred this stone for cameos, probably on account of its pleasing color and of its possessing a degree of hardness, suited for the execution. In the collection of the Emperor of Germany, is a Carnelian, one of the oldest Greek gems known, on which is engraved a winged Jupiter appearing to Semele, and another an opaque Sardonyx, with a draped figure of Venus represented on it. In the St. Petersburg collection, is a Carnelian, on which is engraved a man's head with a beard most cleverly arranged. It is a specimen of the art of the earliest period. In the British Musuem, is a specimen of the second period, in the shape of a Carnelian butterfly, with a figure of Venus, with large wings, and wearing a beautiful dress. In the Royal collection of Vienna is a Cornelian of the third period, representing Helena, with wings on her shoulders. A small Carnelian

A 484

THE CARNELIAN.

has been seen in the collection at Florence, bearing a head of Apollo. There is a very transparent Indian Carnelian in the Berlin Musuem, on which is engraved the head of Sextus Pompeius. There was once in the possession of Michael Angelo, a famous ancient stone, upon which was represented the birth-day festival of Dionysius. In cutting a Cameo from this stone, the snow-white layer is used for the figure; the red for the base work; and if it has a third layer of pure white, it serves for the hair of the figure. The natives of India cut the figure upon the hard molten mass which is produced by covering the stone with carbonate of soda, and putting it for some time to intense heat.

The Carnelian as known to the Ancients.

THIS stone was called in ancient times the Sardius or Sarda, which is derived, according to Pliny, from Sardis in Asia Minor, the place where it was first discovered; according to others, from the Arabic word, "Sered," which means "yellow," or "yellowish red." It is said, that the name came with the thing from Persia; and that the Babylonian mines produced the sort first known and most valued. Hence, perhaps, Epiphanius called this stone the Babylonian Sard. Luther translated the Hebrew word "Odem," or "Adam" (red), (vide Exodus, chap. xxvii, V. 17), by the term Sarda; and this fact confirms the assertion that

485 \$

603

the Sarda was a stone of a *red* color. The modern name Carnelian, is, by the generality of authorities, supposed to be derived from Corneus, or raw flesh, which it resembles in color. It is also spelt Cornelian, which name, according to Lessing, is borrowed from the French term Cornaline, or the cornel cherry, to which it is similar in color. Speaking of the Sard, Pliny mentions, in one place, that, "no other stone was so great a favorite with the Greeks as this: at least the plays of Menander and of Philemon revel in allusions to it." He also remarks that this stone is capable of very high polish, which it can retain much longer than any other gem. Ben Mansur divided the Carnelian into seven classes; viz., the liver-colored, rose-red, yellow, white, black, blue, and bi-colored (evidently including some species of the Agate under this designation). He remarked, "although a hard stone, it is commonly used for the engraving of signets upon." It was found in his time at Senaa and Aden in Yemen; on the confines of India and Rum (i. e. the Byzantine Empire), and in the neighbourhood of Basra.

Its Price.

THE Carnelian is not so much used in England as in Germany and Poland. The blood-red specimens are more valuable than the pale-red ones. The price, however, chiefly depends upon the degree of transparency, purity, beauty and

ole.

THE CARNELIAN.

flawlessness of the stones. The abundant supply of the Brazilian stones has sensibly affected their market value, as also the Oberstein method of coloring precious stones. The stone-cutters and polishers in Oberstein and Idar have attained signal success, in not only coloring the surface of the stones but their inner depths. It is said that the Agate merchants at Idar had learnt the use of the honey in coloring the stones from the Romans, who, again, came by the secret either by reading Pliny's works on the subject, or from tradition. The so-called "Carnelian of Brazil" is worked in large quantities in these places.

This stone is profusely used for rings, seals, watch-keys, and other objects of adornment. It is particularly suited for seals, as it can be very easily taken out of the heated sealing wax, without destroying the impression.

Marvellous and Medicinal Virtues attributed to the Carnelian.

EPIPHANIUS speaks of the Sard as having been supposed to cure tumours and all wounds made by iron. Marbodus, in the 11th century, remarked, that the Carnelian drove away evil spirits and preserved harmony. In the Middle Ages it was supposed to give success in law-suits and bring riches to the owner. Albert Magnus declared that the Sard exhilarated the soul and banished fear and enchantments. The Carnelian, made into powder,

487 %

was supposed to be a sovereign remedy for infections, noxious vapours, hemorrhage, &c. It was also an excellent dentifrice. De Laet (in 1647), has described, from personal experience, its power of stopping the bleeding from the nose, and the necessity of wearing rings, cut entirely out of the stone. Some Italians still use rings like these for the same purpose.

(er

60

मणिमाला।

त्रय स्फटिकम् । म्लम्।

हिमालये सिंहले च विन्ध्याटवीतटे तथा । स्फटिकं जायते रतं नानारूपं ममप्रभं ॥ ४३५ ॥ हिमाद्री चन्द्रमङ्काशं स्फटिकं तद्विधा भवेत् । सूर्य्यकान्तञ्च तचैकं चन्द्रकान्तं तथापरं ॥ ४३६ ॥ सूर्य्यकान्तञ्च तचैकं चन्द्रकान्तं तथापरं ॥ ४३६ ॥ सूर्य्यकान्तं तदाखातं स्फटिकं रत्नवेदिभिः ॥ ४३७ ॥ पूर्णेन्दुकरसंस्पर्शादच्ततं स्ववति चणात् । चन्द्रकान्तं तदाखातं दुर्लभं तत्कलौ युगे ॥ ४३८ ॥

ग्रथ स्फटिकका वयान।

तरजमा।

हिमालय पर्व्वत, सिंहलदेश, विन्धापर्व्वतको जङ्गलके करिवके जमीनसे बड़त् रौसन तरह तरहका स्फ्राटक पयदा होति है। 8३४ू।

हिमालय पर्व्वतमे पौर्णमासीके चांदके समान सफेदरङ, सूर्य्यकान्त और चन्द्रकान्त नामे दोकिसिमका स्फटिक पयदा होता है। ४३६ ।

जो स्फटिक सूर्य्यके किरणके स्पर्श्वसे आग देता है, रत-पार् चौ परिइत उस्को सूर्य्यकान्त अर्थात् अतसी सीसा कहते है। ४३७।

पौर्णमासीके चांदके किरणके स्पर्शसे जो स्फटिक उपन्त देता है, उस्को चन्द्रकान्त कहते हैं, कलियुगमे चन्द्रकान्त स्फटिक बज्जत दुर्लेभ है। ४३८ ।

489 20

THE QUARTZ.

TRANSLATION.

435. A VERY bright Quartz is found in the Himalayas, Ceylon, and the forests in the Vindya Mountains.

436. Two kinds of Quartz, respectively called Súrya-kánta and Chandra-kánta,* are produced in the Himalaya. These are deliciously bright as the moon.

437. That Quartz which flames in sunshine, the authorities call S'urya-kánta.

438. That Quartz which runs nectar when the moon at its full bathes it with its balmy influence, is called *Chandra-kánta*.

অথ স্ফটিক ৷

অন্থবাদ।

হিমালয় পর্বত, সিংহল দেশ ও বিদ্ধ্যপার্বতীয় আরণ্য প্রদেশের সমিহিত ভূভাগে অতিপ্রভাশালী নানাবিধ স্ফটিক উৎপন্ন হয়। ৪৩৫।

হিমালয় পর্ব্বতে পূর্ণচন্দ্রসদৃশ শুক্লবর্ণ সূর্য্যকান্ত ও চন্দ্রকান্ত নামে দ্বিবিধ ক্ষটিক উৎপন্ন হয়। ৪৩৬।

যে ক্ষটিক সূর্য্যের কিরণসংস্পর্শে বহ্নি উদ্গীরণ করে, রত্নতত্ত্ববিৎ পণ্ডিতেরা তাহাকে সূর্য্যকান্ত কহেন। ৪৩৭।

যে দকল স্ফটিক হইতে পূর্ণচন্দ্র-কিরণ-সংসর্গে অমৃত ক্ষরিত হয়, তাহা চন্দ্রকান্ত নামে অভিহিত হইয়া থাকে। ৪৩৮।

* Lit., Sun-like and Moon-like.

JJJ

मणिमाचा।

मूलम्। चित्र्याटवीतटे देशे जायते मन्दकान्तिकं॥ ४३८ ॥ विन्ध्याटवीतटे देशे जायते मन्दकान्तिकं॥ ४३८ ॥ सिंचले जायते कष्णमाकरे गन्धनीलके । पद्मरागभवे व्याने विविधं स्फ्रटिकस्भवेत्॥ ४४० ॥ चत्यन्तनिर्मालं खच्छं स्तवतीव जलं शुचि । ज्योतिर्ज्यालगास्तिष्टं सुकज्योतीरसं दिज ॥ ४४९ ॥ तदेव लोचिताकारं प्रोक्तं राजमयं शुर्भ । चानीलं खर्णेयुक् यन्तु राजवर्त्तसुदाह्वतं । बह्मसूचमयं यन्त् प्रोक्तं व्रह्ममयं दिज ॥ ४४६ ॥

तर्जमा।

विन्ध्यपर्व्वतके जङ्गलके करिवकी जमीनसे जो स्फटिक पयदा चोता है, वह अशोकफुलके पद्धवके समान काया-युक्त और आनारदानेके समान प्रथाविशिष्ट चोता है, लेकिन ऐसा रौसन नहिं होता है। ४३९।

हिमालय देशके गन्धनीलकनामे खानसे छाष्पारङ्ग स्फटिक पयदा चौता चै। चौर जिस् जगच पद्माराग मणि पयदा चोति चै, चेंाचा स्फटिकभी तरच तरचका पयदा चोता चै। ४४०।

जो स्फटिक बज्जत् साफ, और जिससे साफ पाणि निक्ले, और आगकी तरह रौसन, उसको सुक्रज्धोतीरस कहते हैं, और ऐसा जातका स्फटिक लालरज़ होनेसे राजवत्त वोला जाता है, नौलरज़ होनेसे उम्को राजमय कहते हैं और जनेडके समान निशान होनेसे उस्को ब्रह्ममय कहते हैं। 888 । 888 ।

491 20

not non

TRANSLATION.

439. Those Quartzes that are found in the wilds of the Vindya, are furnished with a shade like the leaves of the $Asoka^*$ flower, and with a brightness like the seed of the pomegranate; but are not so fair.

440. A quarry named *Gandha-nílaka* in Ceylon, produces a black Quartz. Those places that bring forth the *Padma-raga*, also bring forth various kinds of the Quartz.

441—442. Those Quartzes that are entirely free from flaws, which exude a pure transparent water and which are glorious as the fire, go by the name of Muktajyotirasa. When these are red, they are called Rájavartas; when bluish, Rájamayas; and when like the holy thread, Brahmamayas.

অন্থবাদ।

বিদ্ধ্যপর্ব্বতের অরণ্যসমিকটে যে সকল স্ফটিক জন্ম, তাহারা অশোককুস্থমের পল্লবের ন্থায় ছায়াযুক্ত ও দাড়িমের বীজের ন্থায় প্রভাবিশিষ্ট হয়, কিন্তু তাদৃশ কান্তিবিশিষ্ট হয় না। ৪৩৯।

সিংহলদেশে গন্ধনীলকনামক আকরে ক্নম্ণবর্ণ স্ফটিক উৎপন্ন হয় এবং যে সকল স্থানে পদ্মরাগ জন্মে, তত্তৎ-প্রদেশে বিবিধ স্ফটিক জন্মিয়া থাকে। ৪৪০।

যে সকল ক্ষটিক অত্যন্তনির্দ্মল, নির্দ্মল বিশুদ্ধ জলআবী এবং অগ্নির ন্থায় তেজংপুঞ্জ, তাহাকে মুক্তজ্যোতীরস কহে। তজ্জাতীয় ক্ষটিক লোহিতবর্ণ হইলে রাজবর্ত্ত, ঈষৎ নীলবর্ণ হইলে রাজময় এবং ভ্রহ্মসূত্রময় (পৈতার ন্যায় চিহ্নবিশিষ্ট) হইলে ব্রহ্মময় নামে অভিহিত হইয়া থাকে। ৪৪১। ৪৪২।

* Vide antè.



मणिमाला।

मूलम्।

चाकाश्वश्रद्धं तेलाखं नेचाजं स्क्रटिकं दिज। च्रणालश्रद्धधवलं किच्चिदर्णान्तरान्वितं ॥ ४४३ ॥ न तु तुल्यं चि रतानामयवा पापनाश्रनं । संस्कृतं शिस्पिना सद्यो मूर्ल्यं किच्चिब्बभेत्तत: ॥ ४४४ ॥

तर्जमा।

आकाशने समान निम्नेल स्फटिकको तैलाख्य कहते हैं। चांखकी सफेदी, सफेद कमल, कमलकी जड़, शङ्घके समान सफेदरङ्ग चौर कोद्र रङ्ग होने चौर चौर रत्नके समान इज्जतके काविल, चौर पापका नाश कर्नेवाला नहिं होता है, लेकिन कारिगर चोस्तादके हातका बनाया ज्जया कुछ किमत रख्ता है। 88३। 888।

इति स्फटिकका वयान ।



493 20

E.

60

TRANSLATION.

443—444. A *Taildkya* Quartz is pure as the Heavens. When a Quartz is like the white lustre of the eye, the lotus-stalk, or is white like the conch, or is colored like any other object, it is not so valuable, or for that matter, so sacred as other gems. But when a Quartz is refined by a skilful lapidary, it may turn u t a good gem.

অন্থবাদ।

আকাশের ন্যায় নির্ম্মল স্ফটিককে তৈলাখ্য কহে। স্ফটিক চক্ষুর ক্ষেত্র, বা শ্বেতপদ্ম, বা মৃণাল, অথবা শম্ভের ন্থায় ধবলবর্ণ কিম্বা অন্থ কোন বর্ণান্বিত হইলেও অপরাপর রত্নের সদৃশ গৌরবান্বিত বা পাপনাশক হইতে পারে না, তবে নিপুণ শিল্পী দ্বারা উত্তম সংস্কৃত করিলে স্ফটিকের মূল্য কিঞ্চিৎ রুদ্ধি হয়। ৪৪৩। ৪৪৪।

ইতি স্ফটিক।

THE QUARTZ.

THE QUARTZ,

Quartz belongs to the hexagonal BHE or rhombohedral system of crystallization. There are many varieties, however, which are found massive and compact. The specific gravity of each of the varieties, is from 2.5 to 2.8; its hardness 7 in the scale. In the transparent specimens, the lustre is vitreous, in the opaque ones, it is rather resinous. The fracture is conchoidal and the cleavage not very distinct. It possesses double refraction and acquires positive electricity by friction. The Quartz is formed of pure silica or silicon 48.04 and oxygen 51.96. It is not affected by any acid but hydrofluoric. It is infusible before the blowpipe, but when put before the flame of the oxyhydrogen jet, it melts and then can be drawn into fine threads, and at last becomes volatalized. If one piece of Quartz is rubbed with another, both become phosphorescent and " emit an empyreumatic odour."

Its Varieties.

ALL the varieties of the Quartz are of the same composition and have the same properties. The difference of color in the specimens gives us the different names. The whole family of Quartz may be classed under three heads :---

The Vitreous—or transparent. The Resinous—or opaque.

X

The Jaspery—or the specimens possessed of the dull color and opacity of the Jasper.

495 80

not not

The following Stones come under the 1st Class :-

THE Rock Crystal, (of a white color); the Amethyst, (of a fine violet color); the Cairn-gorm, (so-called, on account of its being found in the Cairn-gorm mountains of Scotland), also called the False Topaz, (of a brown and yellow color); and the Aventurine (of a grey, brown or reddish-brown color.)

The following Stones come under the 2nd Class; (i. e., Chalcedonic Variety):--

THE Chrysophrase (of a fine apple-green); the Onyx (with a blackish, brownish or greenish layer); the Sardonyx (having red, or brownish and white layers); the Sard (of a brownish red) and Carnelian (red, white and yellow); the Chalcedony (of a greyish, or milky-white or pinkish color); the Chalceydonyx (having alternate stripes of white and grey); the Mocha-stone (or Moko-stone, "containing infiltrated dendritic oxides of maganese and iron, which gives it the appearance of containing vegetable remains"); the Plasma (of a grass or olive-green color, with yellow and white specks); the Agate (of various colors); and the Quartz Cat's-eye.

The following belong to the 3rd Class:-

THE Jasper (yellow, red, green, black and brown); and the Blood-stone or Heliotrope (of a dark-green color, sprinkled with blood-red specks).

Fuller notice will be taken of some of these stones, in their proper places.

मगिमाला।

ग्रथ भोग्नम्।

मूलम्। कलिङ्गे मगधे चैव मलये च हिमालये | भोषारत्नसमुत्पत्तिस्तस्य लचणमुच्यते ॥ ४४५ ॥ पुका: णङ्घाङानिभा: प्र्योणाकसन्निभा: प्रभावन्त: । प्रभवन्ति ततस्तरुणा वज्रनिभा भौषापाषाणा: ॥ ४४६ ॥ हेमादिप्रतिवर्द्व गुद्धमपि उद्यद्या विधत्ते यः । भौषामणिं ग्रीवादिष् स सम्पदं सर्व्वदा लभते ॥ ४४७ ॥

ग्रय भीममणिका वयान।

तर्जमा।

कलिज़देश, मगधदेश, मलयगिरि और हिमालय पर्व्वतमे भौग्नारत पयदा होता है, तपसील वार उस्का वयान होता है। 884 ।

भौषामणि शङ्ख, सफेद कमलके समान सफेद रङ्ग; सोणा-फुलके समान जरद्रङा खौर नया होनेसे हीरेके समान चमक देनेवाला है। ४४६ ।

जो चादमी वेचयेव भीक्षरत सोणेमे जड़ू कर्के गले चयवा चातके पहेरे, वह चादमी हामेसा तरह तरहके दौलतका हिस्सादार है। ४४७।

4.97 8

THE ROCK CRYSTAL.

TRANSLATION.

445. THE Rock Crystal is produced in Kalinga, Magadha, and the Malaya and Himalaya Mountains. Its properties I shall now describe.

446. A Rock Crystal is sometimes white like the conch or the lotus,—sometimes it is yellow like the *Syonaka* flower. When fresh, it is dazzling like the diamond.

447. A man who wears a sterling Rock Crystal set on gold, acquires success in life.

অথ ভীয়া।

অন্থবাদ।

কলিঙ্গ ও মগধপ্রদেশে এবং মলয় ও হিমালয় পর্ববেত ভীম্মরত্ন উৎপন্ন হয়, ক্রমশঃ তাহার লক্ষণাদি বলা যাই-তেছে। ৪৪৫।

ভীম্মমণি শঙ্খ ও পদ্মের ন্থায় শুক্ল, শ্যোণাকপুষ্পের ন্থায় পীত-বর্ণবিশিষ্ট এবং নৃতন অবস্থায় হীরকের ন্থায় প্রভাশালী হইয়া থাকে। ৪৪৬।

যে ব্যক্তি বিশুদ্ধ ভীষ্মরত্ন স্থবর্ণবদ্ধ করিয়া গ্রীবাদিতে ধারণ করে, সে ব্যক্তি সর্ব্বদা নানাসম্পদ্ভাগী হয়। ৪৪৭।

KKK

SE.

मगिमाचा।

मूलम् ।

गुणयुक्तस्य तस्वैव धारणान्मुनिपुङ्जव । विषाणि तानि नम्धन्ति सर्वाण्येव मच्चीतले ॥ ८८८ ॥ विषमा नावाधन्ते ये तमरण्यनिवासिनः समीपेऽपि । द्वीपिटकण्ररभकुद्धरसिंचव्याघादयो चिंस्ताः ॥ ८८९ ॥ ग्राम्यन्ताद्भुतान्यपि सपरिएडजाखुटचिकविषाणि । सलिलाग्निवैरितस्करभयानि भीमानि नम्धन्ति ॥ ८५० ॥ ग्रेवलवलाच्चकाभं परुघं पीतप्रभं प्रभाच्चीनं । मलिनद्यति विवर्णे दूरात्यरिवर्ज्जयेत् प्राज्ञः ॥ ८५० ॥

तर्जमा।

गुणशाली भीषारत पहेरनेसे सव किसिम्का जहेरका दोधनाश होता है, और लेकड वाघा, सेर, शरम (एक किसिम्का घाट पाचोंका हिंसक चंधति दारिन्दा जानवार), हात्शी, सेर वगैरह जङ्गलके रहनेवाले हिंसक जानवार उस्के पाशभी चा नहिं सक्ते । 88८ । 88८ ।

भीषारत पहेरने वे वसांय, चूया, बिच्छुका जहेर चौर जल. आग, दुस्मन और चोरका डर नहि रहता। 8५०।

सेवार, मेधके समान रज़दार, कर्क्स, जरद्रज़, वेचमक, मवला और बद्रज़ भौध्यमणिको परिइतलोग दूरचीसे कोड्नेको कघते हैं । ४५१।

S.

4.99 %

TRANSLATION.

448—449. A good Rock Crystal is an infallible remedy in all cases of poisoning. Wild animals like the leopard, *Sarava* (an eight-footed beast), the elephant, the lion and the tiger, cannot approach this gem.

450. It neutralizes snake, rat, and scorpion poisons, and the wearer need never fear drowning, fire or a thief.

451. A moss-colored, cloud-like, rough, yellow, dull, dirty and discolored Rock Crystal the authorities shun from a distance.

অন্তবাদ।

গুণশালী ভীম্মরত্ন ধারণ করিলে সর্ব্বপ্রকার বিষদোষ প্রশমিত হয়, এবং দ্বীপি, শরভ (এক প্রকার অফ্টপাদ হিংস্রক জন্তু), হন্তী, সিংহ ও ব্যান্স প্রভৃতি অরণ্যবাসী বিষম হিংস্র জন্তুবর্গ তাহার সমীপেও আগমন করিতে পারে না। ৪৪৮। ৪৪৯।

ভীষ্মমণি ধারণ করিলে সর্প, ইন্দুর ও রশ্চিকের বিষ, এবং সলিল, অগ্নি, শত্রু ও তস্করের ভয় প্রশমিত হয় ।৪৫০। শৈবাল ও মেঘের ন্যায় বর্ণবিশিষ্ট, কর্ক্ শ, পীতপ্রভা-

শোষাল ও মেথের ভার বণাবালক, কন্ধল, সাওপ্রভা-শালী, হীনপ্রভ, মলিন ও বিবর্ণ ভীম্নমণিকে পণ্ডিতেরা দূর হুইতে পরিত্যাগ করিবেন। ৪৫১।

मणिमाला।

मूलम् । मूल्य प्रकल्पत्रमेषां दुधवरैर्देश्वकालविज्ञानात् । दूरेभूतानां बज्ज किञ्चित्निकटप्रसूतानाम् ॥ ४५२ ॥

तर्जमा।

पग्डितलोग देश और समयके भेदसे भोषामणिका मोल ठिक कर सक्ते हैं, अर्थात् बऊत् दूरदेशका पयदा ज्जया भोषामणिका ज्यादा और नज्दिक् देशमे पयदाज्जया भोषा-मणिका कम दाम कहते हैं। ४५२।

इति भीषामगिका वयान।

501 80

TRANSLATION.

452. Rock Crystals vary in price (say the authorities) in accordance with time and place,—*i.e.*, a Rock Crystal coming from a distant country, is more, and that produced near, is less precious.

অন্থবাদ।

পণ্ডিতেরা দেশকালভেদে ভীষ্মাণির মূল্যের তারতম্য করিয়া থাকেন, অর্থাৎ বহুদূরদেশোৎপন্ন ভীষ্মরত্নের অধিক এবং নিকটস্থ প্রদেশোৎপন্ন ভীষ্মরত্নের অল্প মূল্য নির্দ্দেশ করেন। ৪৫২।

ইতি ভীশ্ন।

THE ROCK CRYSTAL.

THE ROCK CRYSTAL,

Its Properties.

HE color of the Rock Crystal varies from pure white, to greyish white, yellow white, yellowish-brown, clove-brown and black. This stone sometimes contains a mixture of mica, rutile, tourmaline, topaz, chlorite, &c., and in some specimens possesses a cavity containing water with an air-bubble in it, which moves as the stone is turned. There are some pieces of this nature coming from Madagascar, which emit a smell like that of burnt oil when subjected to friction.

Where found.

THIS stone is found in numerous places, among which may be mentioned, several places in Ireland, Scotland, France, Hungary, India, Ceylon, Brazil, Canada, Australia.

Cutting and Engraving.

THE Rock Crystal is cut on a copper wheel by means of emery and polished with tripoli. It is generally cut in the form of a brilliant, rose or table. Splinter of Diamond is used, in case it is required to be drilled. Diamond-powder is necessary for engraving, and sometimes a device is etched on the stone with fluoric acid. Amongst the engravings on the Rock-crystal, may be mentioned, "the contest between Hercules and Antæus,"

503 %

and an image of Arsinoë, drawn by Satyreius. In the British Museum may be seen a stone of $7 \times 3\frac{1}{2}$ inches in dimension, upon which is engraved the "Crucifixion."

The Rock Crystal as known to the Ancients: Its Uses.

THIS stone was extensively known to the ancient nations. The Egyptians used it for making cylinders, scarabæi, &c. Theophrastus mentions that it was selected for seals. Pliny says, that it was very largely used for house ornaments. Its name (derived from the word "Crystallus") signified " ice," and the Ancients thought it to be ice congealed by intense cold, and that it could only be found in the frozen regions. Some of them would not even expose it to great heat, lest it should melt. The Emperor Nero is said to have possessed a pair of beautiful Crystal Cups, which he broke asunder, out of jealousy and anger, when he heard of the loss of his kingdom. The Empress Livia gave to the Capitol of Rome, a piece of Crystal, weighing 50fbs. The Roman doctors used the Crystal-balls as lenses, in order to burn out sores. On account of its hardness and superiority to glass, this stone is used for making lenses for spectacles, and is then known as the pebble. The natives of India hollow it out into cups, goblets &c., of very great thinness, and often cover them in beauti-

D.

6

and the second s

THE ROCK CRYSTAL.

ful ornamentation. The Chinese use it for the same purpose. The Japanese cut it into large round balls, which are said to be used for cooling the hands. The Indians believe the Crystal to be the mother or external husk of the Diamond—calling the Diamond, the ripe, and the Crystal, the unripe Diamond.

Its Price : Imitations.

THE price depends upon the quality and size required for particular purposes. Those, for instance, that suit for lenses, vary from 2s. to 15s. per pound avoirdupois, but those of a larger size, intended for cups, dishes, &c., and the execution of which is attended with considerable time and risk, fetch a very great price. The green, pink and various other colored beads, which are sold in Switzerland and Germany, are made of crystals colored, by being exposed to heat and put to various chemical solutions. The sudden change of temperature causes the Crystal to crack all over, and the solution easily enters the pores of this stone, and to the naked eye, gives it the appearance of being colored throughout. The Rock Crystal is used for rings, pins, earrings, seals, caskets, &c., and specimens of these, found in private hands, are still highly valued, though the glass imitations and the abundant supply from Madagascar, have considerably lessened its price. Strass or paste is often sold for Crystal (when

803

505 %

LLL

63

pure and free from air-bubbles,) but it can be easily made out by its greater weight and inferior hardness.

Marvellous and Medicinal Properties.

In the middle Ages, this stone was believed to be an enemy to poison and had the virtue of betraving its presence either by breaking into pieces or becoming obscured. The famous "Show Stone" of Dr. Dee, a sphere of 3 inches in diameter, was known to possess magical properties, and would show to those that consulted it future events and distant persons. This stone may still be seen in the British Museum. The Crystal, powdered and mixed with wine, was a sovereign remedy for dysentery. Orpheus recommended it as the medicine for diseases of the kidneys. Marbodus mentions, that Crystal powdered and mixed with mulsum (wine and honey,) if used by women suckling, would give them an abundant supply of milk. Pieces of Crystal were supposed to allay the thirst of fever, if held against the tongue of the patients.

Celebrated Rock Crystals.

CRYSTALS, of various sizes and in various forms and of considerable value, may be seen in private collections and in public Museums. The finest

THE ROCK CRYATAL.

work in Rock Crystal in existence, is said to be an urn, $9\frac{1}{2}$ inches in diameter, 9 inches high, and this, together with the pedestal, is made of one entire piece. The upper part contains a representation of Noah asleep, his children holding a covering, and a woman bearing in her hands a basket of fruit. This urn belonged to the French Crown, and was, at the time of the Revolution of 1791, estimated at more than 1,000,000 francs.



